

# उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय



169

इलाहाबाद

DFD - 05

फैशन डिजाइनिंग



DFD - 05

पंचम खण्ड - बेसिक सिलाई

शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, इलाहाबाद - 211013



उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

डी०एफ०डी० 05

फैशन डिजाइनिंग

कास्ट्यूम डिजाइन एवं फैब्रीकेशन

ब्लॉक

५

बेसिक सिलाई

यूनिट-१

टूल्स तथा मशीन

यूनिट-२

बेसिक हाथ तथा मशीन की सिलाई

यूनिट-३

ओपनिंग फेसिंग तथा प्लीट्स

यूनिट-४

कफस, बैन्ड्स, शीयरिंग तथा पॉकेट्स

## ब्लॉक-१

### पाठ्यक्रम प्रतिरूप

इस ब्लॉक में पैटर्न बनाने और गारमेन्ट की सिलाई में काम आने वाले विभिन्न यंत्रों के विषय में पढ़ेंगे। हाथ तथा मशीन की सिलाई जो वस्त्रों की सिलाई में प्रयोग होते हैं, के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस ब्लॉक में वस्त्रों के विभिन्न भागों की सिलाई के विषय में बताया गया है कि किसके बाद क्या सिलना चाहिये—जैसे कि कफ बैन्ड, सामने की पट्टी, शीयरिंग तथा पाकेट्स आदि।

### बेसिक स्टिचिंग

#### यूनिट-१

##### टूल्स और मशीन

इस यूनिट में वस्त्रों के बनाने में जो यंत्र तथा औजार प्रयोग होते हैं उनके बारे में बताया गया है।

#### यूनिट-२

##### बेसिक हाथ तथा मशीन की स्टिचेस

इस यूनिट में बेसिक टाय और मशीन द्वारा बनाये स्टिचेक जो वस्त्रों की बनाने काम आते हैं।

#### यूनिट-३

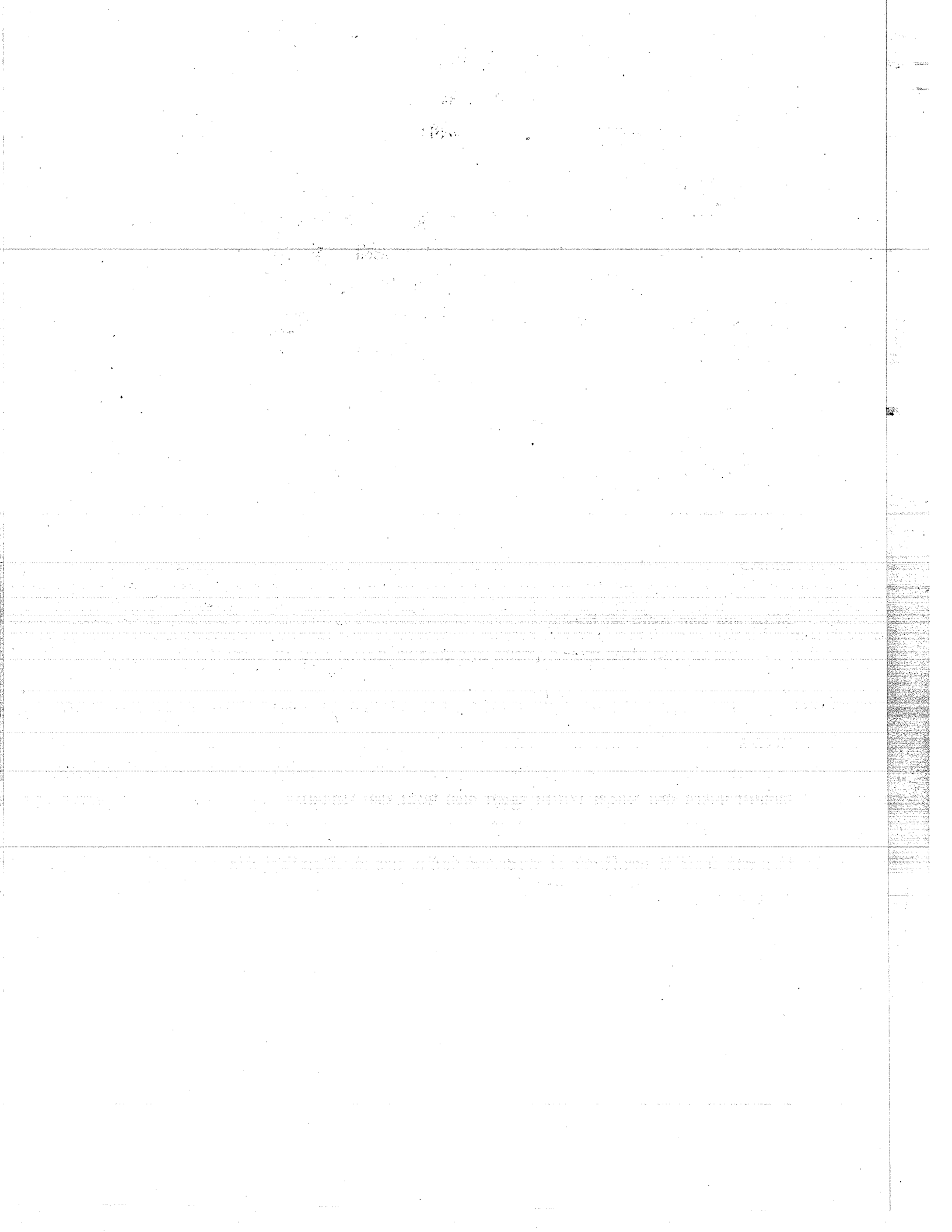
##### ओपनिंग फेसिंग तथा प्लीट्स (सामने खुलने वाली पट्टी तथा प्लीट्स)

यह यूनिट आपको वस्त्र के सामने की पट्टी किस प्रकार बनाई जाती है तथा किस तरह सफाई के साथ किनारे पर कपड़ा मोड़ा जायेगा, साथ ही प्लीट्स किस तरह डाली जाती है, के बारे में अवगत करायेगा।

#### यूनिट-४

##### कफ, बैन्ड्स, शीयरिंग और पॉकेट्स

यह यूनिट आपको वस्त्रों में पॉकेट, कफ, बैन्ड, शीयरिंग तथा पॉकेट्स कैसे बनाई जाती है; साथ ही किनारे कैसे मोड़े जाते हैं और कपड़े में प्लीट्स कैसे डाले जाते हैं, से अवगत कराता है।



संरचना

- १.१ यूनिट प्रस्तावना
- १.२ उद्देश्य
- १.३ टूल और मशीन
- १.४ साराँश
- १.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- १.६ स्वाध्ययन हेतु
- १.१ यूनिट प्रस्तावना

इस यूनिट में वस्त्रो को बनाने में जो यंत्र तथा औजार प्रयोग किये जाते हैं, उसके विषय में विस्तार से बताया गया है।

१.२ उद्देश्य:-

फैशन डिजाइनर के लिये यह आवश्यक है कि वह उन यंत्र तथा औजारों को, जो वस्त्रो के बनाने में काम आते हैं, के विषय में जानें।

१.३ यंत्र तथा मशीन

आप द्वारा वस्त्र बनाने से सम्बन्धित प्रयोग किये जाने वाले औजारों के नाम नीचे दिये गये हैं।

कैंची

एक बड़े साइज की कैंची, जितनी बड़ी से आप काम कर सकें। कैंची के ब्लेड्स २० सेमी० लम्बे हो सकते हैं। कढ़ाई के काम आने वाली कैंची के ब्लेड्स स्लेन्डर और ४ से ६.५ सेमी० लम्बे होने चाहिए। (१ १/२ से २ १/२ इंच) लम्बे जिनके ब्लेड्स सामने से पतले व तेज नोंक हो। इनका स्टील बहुत अच्छा होना चाहिये, जिससे साफ व अच्छी कटिंग हो सके।

## वस्त्र काटने की मेज

आदर्श टेबल १ मीटर चौड़ी और लम्बाई जरूरत के अनुसार, जिस पर कपड़ा बिना मोड़े फैलाया जा सके। इतनी बड़ी मेज छोटी जगह में रखना कठिन होता है। अतः ७० सेमी० और २ मीटर लम्बी मेज ठीक रहती है। फोल्डिंग 'कैन्टीन टाइप' टेबल या डेकोरेटिव टेबल भी काम में लाई जा सकती है। प्लाइवुड या चिपबोर्ड पर भी काम चलाया जा सकता है यदि टेबिल की तरह सपोर्ट देकर खड़ा कर दिया जाये।

## मीटर स्टिक

यह एक चिकनी सरफेस का होना चाहिये जिसके दोनों किनारे पर मेटल लगा हो। आप इसे १/२ मी० स्टिक में भी काम करने के लिए असानी से पा सकते हैं।

## टेप मेजर (नापने का टेप)

एक फाइबर ग्लास टेप या नायलॉन टेप जिसके सिरे मेटल के हो।

## पिन्स

पिन बहुत अच्छी स्टील और बहुत अच्छी पालिश वाली होनी चाहिये जिससे कपड़े पर निशान न छोड़े। २ १/२ सेमी० लम्बी आम इस्तेमाल के लिये; इससे लम्बी (यदि सम्भव हो) तो मोटे तथा ढीले वूवेन फ़ैब्रिक पर लगाने के लिये; छोटी तथा फाइन् (लिलिपिन) फाइन् फ़ैब्रिक तथा पापलीन में काम करने के लिये होते हैं।

## सिलाई के लिये

नीचे लिखी चीजें सिलाई के लिये होती हैं। इन्हें जब आपको जिस चीज की जरूरत हो खरीद लें। शुरू करने के लिये सब की जरूरत नहीं होती है।

## सूइयाँ

सूइयाँ की साइज ९ से लेकर १२ नम्बर तक होती है। जो नीचे लिखी टाइप में मिलती है।

## इद्राज

लम्बी सूई गोल छेद के साथ मिलिनरी के लिये प्रयोग की जाती है।

## बिटवीन्स

छोटी सूई जिसका छेद अण्डे की तरह होता है। यह 'एग आई बिटवीन्स' कहलाती हैं। हाथ की कढ़ाई के काम आती हैं।

## कढ़ाई रफू एवं क्रवेल

यह लम्बी आँख व नुकीले सिरों की होती है।

## सेल्फ थ्रेडिंग नीडिल (अपने आप धागा डालने वाली सूई)

धागे को सूई के ग्रूव के ऊपर रखा जाता है और इसे नीचे की ओर जोर से सूई की आँख में खींचा जाता है। यह मोटे मैटेरियल को टैकिंग करने में काम आती है। यह यहाँ फाइन साइज में नहीं मिलती है।

## थिमबल

मेटल तथा प्लास्टिक के थिमबल ६ से ११ नम्बर की साइज में मिलते हैं। इन्हें बीच वाली अंगुली में पहना जाता है। यह बहुत टाइट फिट नहीं होनी चाहिये।

## सिलाई का धागा

प्योर सिल्क धागा- यह प्योर सिल्क वेलवेट और ऊन के लिये अच्छा है। मर्सैराइज्ड कॉटन धागा, कॉटन, लिनेन व रेयान के लिये तथा स्पिन टेरीलीन धागा एक्रेलिक्स के लिये होता है। मशीन कढ़ाई का धागा मशीन से बने बटन होल और कढ़ाई की स्टिचेस के लिये होता है।

## लिनेन धागा बटन पर सिलाई के लिए

बटनहोल में ऍठन देने का काम खासतौर पर भारी वस्त्रों में तथा संजावटी सिलाई के लिए किया जाता है।

## टैकिंग धागा

यह धागा कच्चा सॉफ्ट तथा सस्ता होता है, जिसको कपड़ों से बिना नुक्सान पहुँचाये निकाला जा सकता है। अधिकतर सफेद रंग में मिलता है। कभी-कभी कुछ काले रंगों में मिल जाता है। आमतौर पर ४० या ५० गेज में मिलता है।

## ट्रेसिंग व्हील तथा पेपर

कपड़े के उल्टी तरफ पैटर्न निशान बनाने के लिये विशेष कार्बन पेपर तथा ट्रेसिंग व्हील मिलता है। ट्रेसिंग व्हील केवल वस्त्र अर्थात् फर्म कपड़े पर ही काम में आता है, जिससे इसके दाँते से कपड़े के तार कट न जायें। अतः यह हल्के रंगों पर ग्लेज्ड कॉटन तथा पतले कपड़े पर प्रयोग न करें।

## शाप्स

गोल आँखों के साथ औसतन लम्बाई।

## टेलर्स चाक

यह कपड़े पर निशान लगाने के लिये प्रयोग होता है। इसका रंग कच्चा होता है तथा ब्रश करने से साफ हो जाता है। सफेद चाक, रंगीन की अपेक्षा हटाना सरल होता है।

## बीज वैक्स

इससे धागे को वैक्स किया जाता है। धागा बटन लगाने के काम आता है।

## छोटी कैंची

तेज छोटी कैंची धागे काटने, ट्रिमिंग, स्निपिंग के काम आती है।

## बटन होल कैंची

इस कैंची में एक छोटा स्कू लगा रहता है जिससे बटन होल की लम्बाई फिर करी जा सकती है।

## पिकिंग शीयर

यह कैंची सिलाई के किनारी काटने के काम आती है। कपड़ा काटने के लिये काम में नही लाना चाहिये।

## अनपिकर

यह सिलाई खोलने के काम आती है। बटन होल आदि भी कर सकते है। यह



ध्यान पूर्वक काम में लाना चाहिये क्योंकि इसके ब्लेड बहुत तेज होते हैं। यह अनेक प्रकार की मिलती है।

### गेज

इसका प्रयोग कपड़े की चौड़ाई तथा दूरी नापने के लिये किया जाता है। जैसे— बटनहोल की दूरी या हेम की चौड़ाई नापते हैं। यह बहुत तरह के मिलते हैं, या अधिक दूरी पर फिट किये जा सकते हैं। कार्डबोर्ड पर अलग-अलग दूरी पर निशान लगाकर बना सकते हैं।

### पिन कुशन

यह मोटे ऊनी कपड़े से बनाया जा सकता है। इसके अन्दर पतली लकड़ी की दोलन, घोड़े के बाल, प्लास्टिक फोम भरी जा सकती है। पिन कुशन ईलास्टिक पर काम करके, रिस्टबैन्ड बनाकर पहना जा सकता है। यह बहुत उपयोगी होता है।

### हेम मार्कर

अनेक प्रकार के हेम मार्कर बाजार में मिलते हैं। इनसे हेम की चौड़ाई मार्क की जाती है। कुछ में स्लॉट कटा होता है, जिसमें चाक से निशान बनाया जाता है। कुछ में सेट चौड़ाई के लिये निशान बने होते हैं। उसे रखकर फैब्रिक पर पिनस लगा दी जाती है।

### ड्रेस फार्मस

ड्रेस फार्मस कई तरह के मिलते हैं। यह तार की बनाकर, प्लास्टिक चढ़ा होता है। लकड़ी या कार्डबोर्ड की बनाकर, पैडिंग चढ़ी होती है। यह ड्रेसेज के लिये लाभदायक होती हैं, परन्तु जरूरी नहीं होती। यह आपको आगे पढ़ाया जायेगा।

### प्रेसिंग के लिए

जैसे ही आप यस्त्र बनाना शुरू करेंगे, आपको निम्न चीजों की जरूरत पड़ेगी।

### आयरन

एक साधारण प्रेस की जरूरत घरेलू प्रेस के लिए होती है, स्टीम आयरन पतले फाइन कपड़ों के लिये जरूरी होती है।

## आयरनिंग बोर्ड

इसमें अच्छी पैडिंग होनी चाहिये और ऊपर का कवर ऐसा होना चाहिये जिसे हटाकर धोया या बदला जा सके।

## स्लीव बोर्ड

यह आयरनिंग बोर्ड की तरह पैडिंग तथा कवर्ड होता है। गारमेन्ट के छोटे-छोटे हिस्सों को प्रेस करने के काम आता है; जैसे डार्ट, कन्धे की सिलाई आदि।

## प्रेसिंग कुशन

यह प्रेस, आर्महोल सिलाई तथा कर्वड जोड़ के लिए उपयोगी होती है। इसे कैलिको के दो ओवल टुकड़ों से बनाया जाता है। (ड्रेसिंग को हटाने के लिए उबालें), प्रत्येक को २० सेमी० गुणा ३० सेमी० कपड़ा लेकर सिल लें, तथा कपड़े की क्लिपिंग या साइस्ट से स्टपड कर लें।

## प्रेसिंग मिट

यह हाथ के ऊपर से फिसल सकता है और घुमावदार जगहों के लिये उपयोगी होता है। एक पेपर टुकड़ा १० १/२ बाई १५ सेमी० बायें तरफ से फोल्ड, सीधी साइड ऊपर किनारे से काट दें। यह कर्व में आयेगा, अब इसे खोल लें, यह 'अंगूठे-नाखून' के शेष में आयेगा।

बिना ब्लिच्च पहले से ही उबले कैलिको कपड़े को लम्बाई में मोड़े, तथा पेपर पैटर्न का फोल्ड कपड़े पर सीधा नीचे की ओर से रखें। बिना सीम के काटें, फिर दूसरा टुकड़ा उसी तरीके से काटें। हर पीस फोल्ड रखें तथा ६ मि०मी० सीम के संग कटे हिस्से को मशीन कर लें। ८ सेमी० खुला छोड़ें जिससे कॉटन, ऊन या वैडिंग भर लें। पैडिंग को एक अच्छी मोटाई का बनायें, बीच में ४ सेमी० मोटा होना चाहिये। लेकिन किनारे पर पतला हो। इसका खुला मुँह बन्द कर दें। दो पैडेड सेक्शन मिलाकर रखें। इसको बाहर की तरफ सिलाई करें। सिलाई का धागा बाँध दें, इसे उलट लें। सिलाई अन्दर चली जायेगी, मिट तैयार है।

## पैडेड रोल

यह प्रेसिंग सिलाई के लिए उपयोगी है, जिसकी सीम लाइनें फैब्रिक के सीधी

ओर को दर्शाती हैं। रोल की कर्वड सतह, आयरन के भार को सीधे सिलाई पर पड़ने देती हैं। रोल को झाड़ू के हत्थे, पैडेड तथा कैंलिको से कर्वड करके बनाया जा सकता है।

### प्रेसिंग कपड़ा

आपको मसलिन के दो लम्बाई की जरूरत होगी, जिसे ड्रेसिंग को हटाने के लिए ऊबाल लें। पहला पीस ४५ सेमी० चौड़ा तथा ६० सेमी० लम्बा होना चाहिए, तथा इसका प्रयोग गीली प्रेसिंग के लिए होता है। दूसरा छोटा हो सकता है तथा इस कपड़े पर 'सूखी प्रेस' करी जाती है, जो निशान बनाने के लिए होगी, यदि प्रेस सीधा वस्त्र पर प्रयोग किया जाये।

### वैलवेट बोर्ड

यह वैलवेट को प्रेस करने के काम आता है, परन्तु जरूरी नहीं है। प्रेस को सीधा खड़ा करें, उस पर गीला डैम्प कपड़ा डाल दें और वैलवेट की सिलाई डार्ट इसके सामने रखकर प्रेस करें।

### टर्किश टोवलिंग

जब एम्ब्रोस्ड फैब्रिक, उठे हुये पैटर्न और लेस आदि को प्रेस करना हो तो यह जरूरी है कि प्रेसिंगबोर्ड चार से आठ परत, पैटर्न की मोटाई पर निर्भर करते हुए टर्किश टोवेल से कवर किया गया हो।

### लकड़ी का डंडा

यह एक मोटा, लकड़ी का चिकना, लगभग ३० से०मी० लम्बा और ६ सेन्टी चौड़ा होता है। इसका प्रयोग ऊनी कपड़ों को भाप में बीट करने तथा ऊन को ब्लेन्ड रखने, चौड़ाई के क्रम में रखने, जैकेट के कोनों में शार्प किनारे रखने, दो तरफ़ी तथा कॉलर दार बनाने में किया जाता है।

### सिलाई मशीन

#### मशीन का चुनाव

आजकल दो प्रमुख प्रकार की घरेलू सिलाई की मशीन बनाई जा रही हैं। एक

सीधी सिलाई वाली, दूसरी स्विंग मीडिल वाली। सब मशीनें बिजली से चल सकती है। यद्यपि कुछ हाथ से चलने वाली मशीने भी बनती हैं, सब में सीधी सिलाई होती है।

सीधी सिलाई करने वाली मशीन में रनिंग स्टिच के अलावा कुछ करने के लिये, कुछ पुर्जे अलग से लेने होते हैं। स्विंग मीडिल वाली मशीन सीधी सिलाई के आलावा बहुत से नये स्टिचेज व कढ़ाई के विभिन्न स्टिचेज बना सकती है। बिना अलग से पुर्जे लगाये, इसकी सूई इधर-उधर घूम सकती है।

स्विंग मीडिल मशीन को दो श्रेणी में बाँटा जा सकता है। पहला पूरी आटोमैटिक तथा दूसरा सेमी आटोमैटिक। सेमी आटोमैटिक मशीन, पूरी आटोमैटिक मशीन जैसी अधिक महँगे की अपेक्षा कुछ महँगे आटोमैटिक स्टिचेज बनाती है।

सिलाई मशीन की बाजार में बहुत स्पर्धा है। बराबर नये मोडेल उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए अधिक सुधार के साथ अनेक किस्मों में आते रहते हैं। आटोमैटिक स्टिचेस का चुनाव उनका प्रयोग करके करते हैं, तथा कुछ किस्मों में गियरिंग डिवाइस भी होती है जो उन्हें दो विभिन्न गतियों से काम करने में सहायक होती है।

जब आप मशीन खरीदने का विचार बनायें तब आपको मशीन के बाजार को अच्छी तरह परखना चाहिये। पहले आपको यह सोचना जरूरी है कि आपको किस तरह की मशीन की जरूरत है और आप कितना उसके लिये खर्च कर सकते हैं। जितना भी मशीन के बारे में पढ़ सकते हैं पढ़ें, और अधिक से अधिक मशीनें चलाकर देखें। मशीनों के डिमोन्स्ट्रेशन लेने के बाद स्वयं दो, तीन दिन चलाकर देखें। अगर हो सके तो एक सप्ताह के लिये ट्रायल पर घर पर रखें। एक अच्छा डिमोन्स्ट्रेशन किसी भी मशीन को प्रयोग करना आसान बना देता है, लेकिन याद रखें कि आप उसका भुगतान करने जा रहे हैं तथा आपको इसे चलाने की पूरी तरह जानकारी होनी चाहिए। निश्चित करले की आप मशीन को आराम पूर्वक उठा या रख सकते हैं, विशेषकर तब जब आपके पास इसको रखने के लिए कोई स्थाई जगह न हो।

सभी मशीनों के साथ एक निर्देश पुस्तिका होती है। उसको अच्छी तरह पढ़ें और निश्चित कर लें कि आपको मशीन खोलने तथा चलाने में कोई परेशानी नहीं होगी जब तक मशीन की बनावट में कोई यांत्रिक गड़बड़ी न आये।

### **मशीन का प्रयोग एवं रख रखाव**

भाग के सही तनाव हो। किसी भी गारमेंट की सिलाई करने से पहले अपनी

सिलाई के तनाव को वस्त्र के टुकड़े के एक फोल्ड पर जाँच लें। मशीन से धागा तथा बोबिन से धागा बिल्कुल वहाँ से जहाँ कपड़े की मोटाई फिगर एक में मिल जाती है, इन्टर लॉक होना चाहिए।

अगर सूई का धागा कपड़े पर फ्लैट आता है तो बोबिन का धागा उसके ऊपर लूप बनाता चलता है, जैसा कि फिगर २ में दिखाया गया है। ऊपर का धागा यदि टाइट है तब उसे ढीला करना होगा। यह निर्देश पुस्तिका में दिया गया होता है।

यदि बोबिन का धागा बहुत टाइट है तब स्थिति उल्टी होगी, जैसा की फिगर ३ में दिखाया गया है। इसे ऊपर के टेन्शन को टाईटेनिंग द्वारा सीधा रखकर ठीक किया जा सकता है, लेकिन अगर यह ऊपर से ठीक नहीं होता तब बोबिन के किनारे लगे छोटे पेंच को ढीला करके ठीक कर सकते हैं। ये सभी बहुत फाइन ऐडजस्टमेंट होते हैं तथा कोई भी पेंच पुनः सिलाई करने से पूर्व बहुत ज्यादा घूमना नहीं चाहिए।

### **सफाई करना एवं तेल डालना**

मशीन को बराबर मुलायम कपड़े से सफाई करते रहना चाहिये। मुश्किल जगहों पर ब्रश से सफाई ठीक रहती है। कपड़े के निकले फलफ मशीन में भर जाते हैं, या मशीन सिलाई ठीक नहीं करती है, इसलिए इसे ब्रश से निकाल लेना चाहिये विशेषतया बोबिन के चारों ओर से ब्रश से निकालें (इसके लिये विशेष लिन्ट ब्रश बाजार में मिलते हैं)।

मशीन में अधिक तेल डल सकता है, लेकिन अक्सर मशीन में तेल कम डाला जाता है। मशीन से आठ घंटे काम करने बाद अच्छी किस्म का मशीन तेल डालना आवश्यक है। तेल उन जगहों पर डालें जहाँ-जहाँ मशीन की निर्देश पुस्तिका में दिखाया गया है।

बिना धागा डाले मशीन को प्रेशर फुट के सहारे, कुछ मिनट तक चारों, तेल खपने के लिए चलायें, फिर सावधानी पूर्वक एक मुलायम कपड़े से मशीन पर लगे अतिरिक्त तेल को पोछ दें। अन्त में कपड़े का एक टुकड़ा मशीन में रखें तथा बिना धागा डाले ही मशीन आगे पीछे चलायें। इससे जितना तेल मशीन सोखेगी, बाकी का तेल कपड़े पर आ जायेगा और आपके गारमेंट में तेल नहीं जायेगा।

### **सूईयों, धागा और सिलाई**

यह बहुत अवश्यक है कि फैब्रिक के हिसाब से सही साइज की सूई तथा धागा

काम में लेना चाहिये। पुनः स्पष्ट तथा विविध जानकारी इसके संग मशीन की पुस्तिका में दी गई होती हैं। सामान्य दिशानिर्देश चार्ट इस मैनुअल में आगे दिया जायेगा।

**मशीन के काम न करने के कारण और उपचार**

**सूई टूटने से बचाने के लिए**

- १- सदा अच्छी गुडवत्ता की सूई प्रयोग करें जो मशीन में टाइट फिट हो जाये।
- २- मशीन में धागा डालने से पहले सूई की अवस्था को ठीक से जाँच कर लें।
- ३- काम करने से पहले सभी पुर्जों के ठीक से टाइट होने की जाँच कर लें।
- ४- मैटेरियल तथा धागे के हिसाब से सूई चुनें।

**यदि मशीन भारी चल रही है तो समस्या के कारण हो सकते हैं**

- १- धूल या कपड़े के रोयें मशीन में फर्सं हों।
- २- तेल की कमी
- ३- धागे का सिरा बोबिन या शटल में फस गया हो

**यदि सुई का धागा बरबार टूटे तो समस्या के कारण हो सकते हैं**

- १- अनुचित धागा;
- २- कसा खिंचाव;
- ३- धागा ठीक न हो;
- ४- सूई ब्लन्ट कर रही हो या ठीक न लगी हो;
- ५- प्रेसर फूट उचित तरीके से न लगा हो;
- ६- धागे की खराब किस्म।

**यदि बोबिन य शटल का धागा टूटे तो समस्या के कारण हो सकते हैं**

- १- बॉबिन का धागा ठीक न भरा हो;
- २- बॉबिन की टेन्शन टाइट हो;
- ३- बॉबिन का धागा बहुत टाइट लगा हो;
- ४- बॉबिन बहुत अधिक भरा हो।

यदि मशीन सिलाई छोड़े तो समस्या के कारण हो सकते हैं

- १- सूई ठीक नहीं लगी हो;
- २- सूई घिसी या टेढ़ी हो;
- ३- सूई धागे के हिसाब से पतली हो;
- ४- काम करने के पार्ट्स में घूल हो।

सिलाई के दौरान कपड़े में सिकुड़न की समस्या के कारण हो सकते हैं

- १- टाइट टेन्शन;
- २- ऊपर का धागा ठीक से नहीं डाला गया हो;
- ३- प्रेशर फुट पर दबाव बहुत कम या बहुत अधिक पड़ रहा हो;
- ४- फैब्रिक के हिसाब से धागे ना चुनना, विशेषकर सिन्थेटिक फैब्रिक पर।

**मशीन के पुर्जे**

मशीन के पुर्जे सीधी सिलाई वाली तथा स्विंग सुई वाली दोनों मशीनो में होते हैं। मशीन बनाने के आधार पर या तो ये पुर्जे मशीन के साथ मिलते हैं या इन्हे अलग से खरीदना होता है।

**पाइपिंग या जिप फुट**

यह बहुत उपयोगी पुर्जा है जिससे सिलाई पाइपिंग या जिप के बहुत करीब से की जा सकती है, तथा सूई के बायें व दायें दोनो ओर भी सिलाई की जा सकती है।

## नैरो हैमर

यह बिना प्रेसिंग और कच्चा किये ही दुहरा मोड़कर सीधा हैम करता है।

## बटनहोल फुट

स्विंग निडिल मशीन— एक विशेष प्रकार का फुट, गेज मशीन से बटन होल बन जाता है।

## बटन होलर

सीधी सिलाई मशीन के लिये महंगा पुर्जा होता है (कुछ स्वचालित मशीनो के लिए), जो इन्हे मशीन द्वारा बटनहोल बनाने के लिए प्रोड्यूस करता है।

## बटन फूट.

(स्विंग निडिल मशीन के लिये)— मशीन द्वारा बटन सिलने के लिये एक फुट होता है; इसका प्रयोग डोम्स बटन के लिए नहीं किया जा सकता है।

## डार्निंग फुट

(स्विंग निडिल मशीन के लिए)— डार्निंग तथा कुछ मशीन कढ़ाई के लिए स्विंग निडिल मशीन का प्रयोग होता है।

## डार्निंग पुर्जे

(सीधी सिलाई की मशीन के लिए)— सीधी सिलाई मशीन डार्निंग के लिए तैयार की जाती हैं।

## गैदरिंग फुट

पतली तथा शीर फैब्रिक को गैदर कर स्टिच करता है।

## स्विंग निडिल फुट

यह (स्विंग निडिल मशीन)— सूई को किनारे—२ सिलाई के योग्य बनाता है।



अतिरिक्त सिलाई के पुर्जे

यह (सीधी सिलाई की मशीन)– एक बहुत महँगा पुर्जा है जिसे वस्त्र को किनारे–र घुमाते हुए जिग–जैग सिलाई के लिए बनाया जाता है।

क्लोथ या सीम गाइड:- फैब्रिक के किनारे से बराबर दूरी बनाकर सिलाई करता है। इसका स्क्रू नीचा करके एडजस्ट किया जा सकता है।

एज रिटचर:- यह स्लाट्स का एक चुनाव होता है, जो वस्त्र के किनारे से एक बराबर दूरी बनाकर सिलाई करने में सहायक होता है।

क्विल्टर :- इस फुट और गाइड का प्रयोग पैडेड कपड़े को क्विल्ट करने के लिए होता है; गाइड सही साज सज्जा की सीम के लिए भी लाभकारी है।

रफलर:- यह गैदर या प्लीटेड फ्रिल बनाता है तथा (कुछ जगहों में) एक ही समय में फ्रिल को वस्त्र के दूसरे टुकड़े से जोड़ने में भी सहायक होगा।

बाइन्डर:- यह एक प्रक्रिया में स्वतः ही वॉयस बाइन्डिंग को सीधे या कर्वड एज से जोड़ती है, लेकिन विशेष चौड़ाई की फोल्डेड बाइन्डिंग आवश्यक है।

टकर:- यह बराबर टॉके बराबर दूरी पर लगाता है।

**ब्लाइन्ड हेमर**

यह (सीधी रिटच मशीन के लिए) सीधी सिलाई मशीन को ब्लाइन्ड हेमिंग सिलाई के लिए सहायक बनाता है।

**हाथ की सिलाई के लिए सही स्थिति**

जब हाथ की सिलाई करना हो तो यह बहुत अच्छा होगा कि आप प्रसन्न व रिलैक्स रहें, न कि नर्वस व परेशान। निश्चित कर लें कि आपके पास पर्याप्त समय है, क्योंकि आपको मूवमेन्ट की रिदम की आवश्यकता हो सकती है तथा आपकी सिलाई पर अनियमित टेन्शन होगा। प्रतिदिन एक बटनहोल बनाने का विचार या एक ही समय में हेमिंग की १० सेमी बनाना एक बड़ी भूल होती है।

बिना हथ्थे वाली एक कुर्सी पर अपने काम करने की मेज के साथ आराम से बैठें। आप आराम के लिए एक नीची सुविधापूर्ण कुर्सी भी ले सकते हैं, लेकिन निश्चित कर लें कि आपको अपना काम ऊपर उठा कर करना होगा तथा बहुत झुककर बैठने की

स्थिति से बचना होगा। अच्छी रोशनी से परिपूर्ण जगह पर काम करें जहाँ परछाई कपड़े पर न पड़े तथा आपकी आवश्यक सामग्री आपकी पहुँच में हो। धागे का छोटा टुकड़ा प्रयोग करें जो ३० से ३५ से०मी० से ज्यादा न हो क्योंकि आप इसे केवल अपना हाथ घुमाते हुए असानी से खींच सकते हैं। लम्बे धागे की वजह से आपको अपना कंधा तथा कभी-कभी सिर भी घुमाना होगा; इससे आपकी स्टिचिंग रिदम प्रभावित होगी तथा काम पर असर भी पड़ेगा।

### सूई और धागा

'बिटवीन्स' हाथ की सिलाई के लिए सबसे अच्छी सूई होती है; यह छोटी होती है तथा इसका छेद अंडे के आकार का होता है। अगर यह उपलब्ध न हो तब 'शार्प्स' का प्रयोग करें जो साधारण लम्बाई की और गोल छेद की होती है। सूची में सूई के आकार तथा धागे की किस्मों के बारे में दर्शाया गया है।

### सूची-१ हाथ की सिलाई के लिए सूई तथा धागे

फैब्रिक:- फाइन् फैब्रिक:- सिल्क, फाइन् कॉटन, आरगैन्डी, शिफोन आदि; प्राकृतिक रेशे; सिन्थेटिक।

धागे:- प्योर सिल्क; ५० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन; प्योर सिल्क स्पन या गोसामर टेरीलीन।

सूईयाँ:- नम्बर ६-११, ६-११, ६-११

फैब्रिक:- मीडियम फैब्रिक:- कॉटन, लिनेन, लाइट वूक, रेयॉन, आद; ऊन; लिनेन तथा कॉटन; रेयान।

धागे:- प्योर सिल्क, ४० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन; ४० या ५० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन।

सूईयाँ:- ७ से ६, ८ से ६, ७ से ६

फैब्रिक:- हेवी फैब्रिक:- कोट फैब्रिक, थिक ट्वीड, डेनिम, सेल क्लॉथ आदि; ऊन; कॉटन।

धागा:- प्योर सिल्क:- ४० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन

सूईयाँ:- ७ से ८, ७ से ८

सदैव सही आकार की सूई तथा धागे का प्रयोग उस वस्त्र के लिए करें जिस पर आप सिलाई कर रहे हैं। अपनी मशीन की निर्देश पुस्तिका से जाँच करें, लेकिन ७ सामान्य दिशा निर्देश के लिए सूची २ में चार्ट दिया गया है।

सूची-२ मशीन की सिलाई के लिए सूई तथा धागा

### फैब्रिक

फाइन् फैब्रिक:- सिल्क, फाईन काटन, आरगैन्डी, शिफॉन आदि; प्राकृतिक रेशे सिंथेटिक।

धागा:- प्योर सिल्क; ५० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन; प्योर सिल्क; स्पन या गोसामर टेरीलीन।

सूईयाँ:- ब्रिटिश:- १०-११, १०-११, १०-११, ६; कन्टीनेन्टल:- ८०, ७० से ८०, ८०, ७०

फैब्रिक:- मीडियम फैब्रिक:- कॉटन, लिनेन, पतली ऊन, रेयॉन आदि; ऊन, लिनेन और कॉटन रेयान।

धागा:- प्योर सिल्क:- ५० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन; ५० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड।

सूईयाँ:- ब्रिटिश:- १४-१६, १४-१४; कन्टीनेन्टल:- ६०-१००, ६०, ६०

फैब्रिक:- हेवी फैब्रिक:- कोट फैब्रिक, थिक ट्वीड, डेनिम, सेल क्लॉथ, आदि; ऊन; डेनिम, सेल क्लॉथ।

धागा:- प्योर सिल्क; ४० मर्सीराइज्ड या साटिनाइज्ड कॉटन।

सूईयाँ:- ब्रिटिश:- १६ से १८, १६ से १८; कन्टीनेन्टल:- १०० से ११०, १०० से ११०

सूईयाँ प्रयोग करने से घिस जाती हैं तथा उन्हें निरन्तर बदलते रहना चाहिये। सूई की लाइफ आपके प्रयोग करने पर है, वह कितने दिन चले। लेकिन एक नई सूई सप्ताह में एक बार एक ड्रेस मेकर के लिए बदलना बुरा नहीं है।

स्टिचिंग:- सीधी सिलाईयाँ लगाने के लिए अभ्यास की जरूरत पड़ती है। शुरू करने के लिए लाइन वाला पेपर लेकर बिना धागा डाले मशीन चलायें। लाइन का प्रयोग मार्ग

दर्शन के लिए सीधी लाइन बनाने हेतु करें। जब आप इसमें दक्ष हो जायें तब सूई बदलें (पेपर इसे घिसा दिया होगा) मशीन में धागा डालें और पट्टी दार कपड़े के एक टुकड़े पर सीधी लाइन का अभ्यास करें।

अब प्लेन कपड़े का एक टुकड़ा लें, इसके चारों ओर छोटी हेम मोड़ लें, टॉकें लगायें और प्रेस करें। इसे मशीन में लगायें और सीधी सिलाई करें, उन्हें एक समान दूरी पर रखें, जैसा की फिगर ३० में दिखाया गया है। ऐसे ही आप एक लाइन से दूसरे लाइन तक कोनों को मोड़ने का अभ्यास कर सकते हैं।

एक कोना मोड़ने के लिए, प्रेसर फुट को ऊपर करें लेकिन सूई को कपड़े में ही रहने दें। सूई का प्रयोग पिबोट की तरह करें, कपड़े को दायें ओर ६० अंश पर मोड़ दें, प्रेसर फुट को नीचे कर सिलाई शुरू करें।

अन्त में, सिलाई का अभ्यास (सीधी ओर से) हेम के किनारे के साथ करें। सीधा रखने की कोशिश करें तथा सिलाई हेम के बराबर रहे लेकिन ऊपर न जाये।

#### स्टिच साइज:-

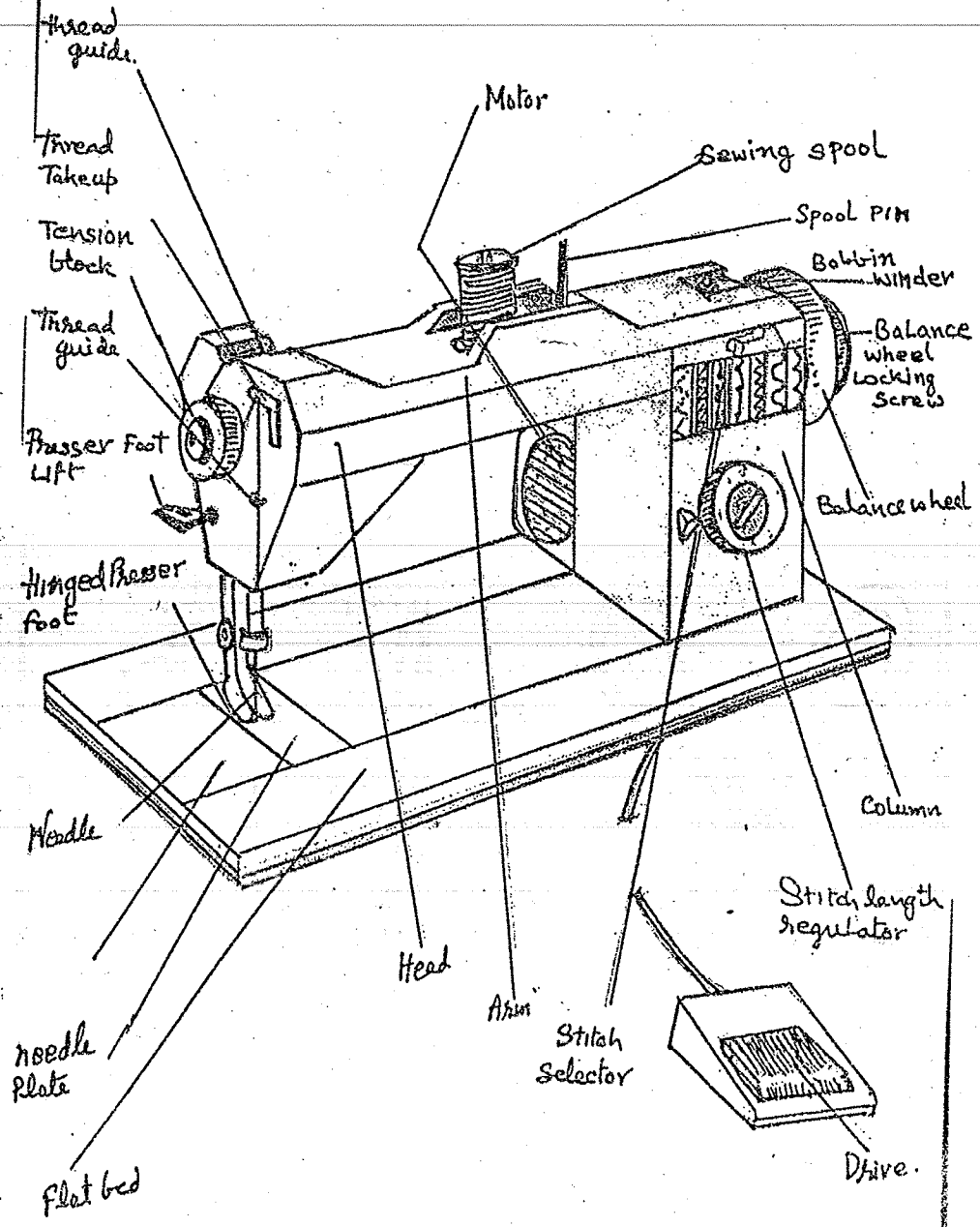
सभी मशीनों में स्टिच की लम्बाई बदली जा सकती है तथा जब आप सिलाई कर रहे हों तो यह जरूरी है कि फैब्रिक के हिसाब स्टिच की लम्बाई रखें। गलती अक्सर ऐमेचर द्वारा प्रयोग किये गये छोटे सिलाई की वजह से होती है। ज्यादातर कपड़े की मोटाई पर निर्भर करता है, कि कितनी परत आप स्टिच कर रहे हैं तथा कपड़ा प्राकृतिक या सिंथेटिक फाइबर का बना है।

#### सिलाई के आकार के लिए सूची

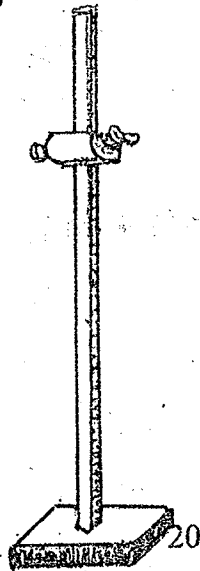
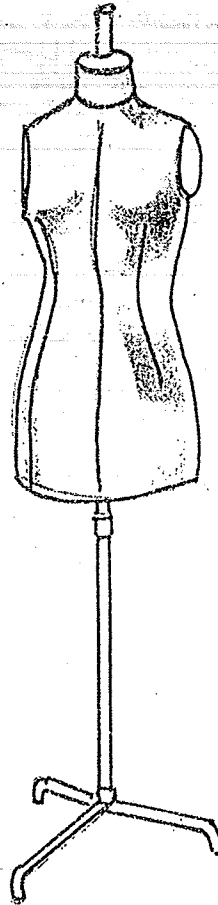
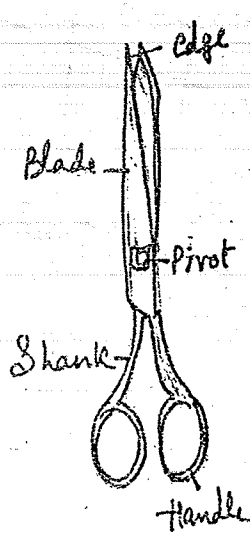
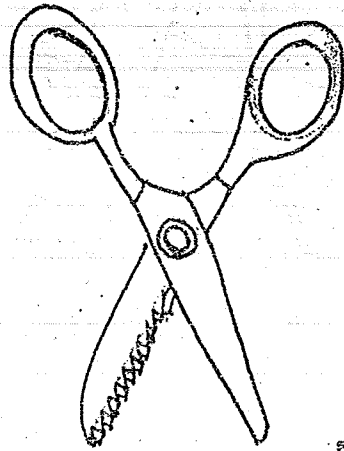
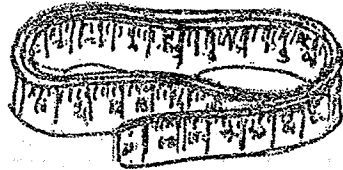
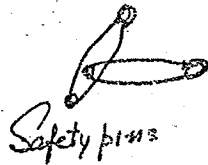
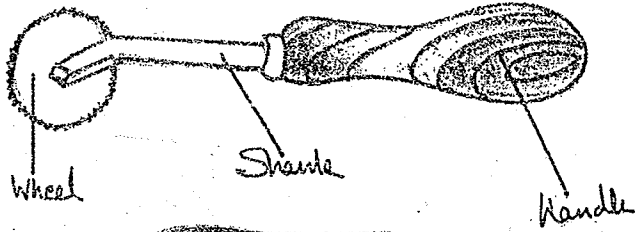
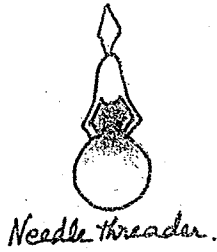
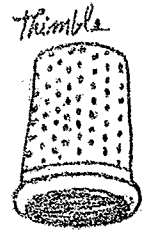
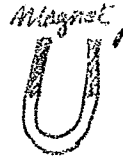
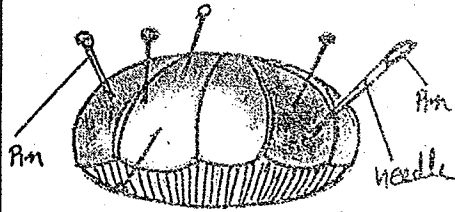
फैब्रिक का वजन	सिलाई से०मी० में
फाइन	५-८
मीडियम	३-४
हेवी	२-३

आप की मशीन पर स्टिच रेगुलेटर कई सिलाईयों के टर्म में से०मी० से शायद रेगुलेटेड न हों; यदि हों भी तो वह सही नाप न दें। सिलाई की पंक्ति की सेटिंग हेतु काम करके देखें, इसे से०मी० में चिन्हित कर लें तथा सेंटी मीटर से सिलाई की संख्या को गिन लें।

DRAWING OF A MACHINE



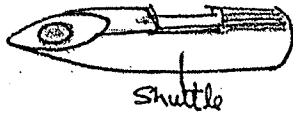
SEWING EQUIPMENT



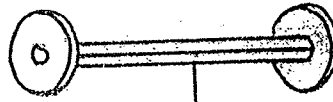
Dress maker's model

Skirt marker

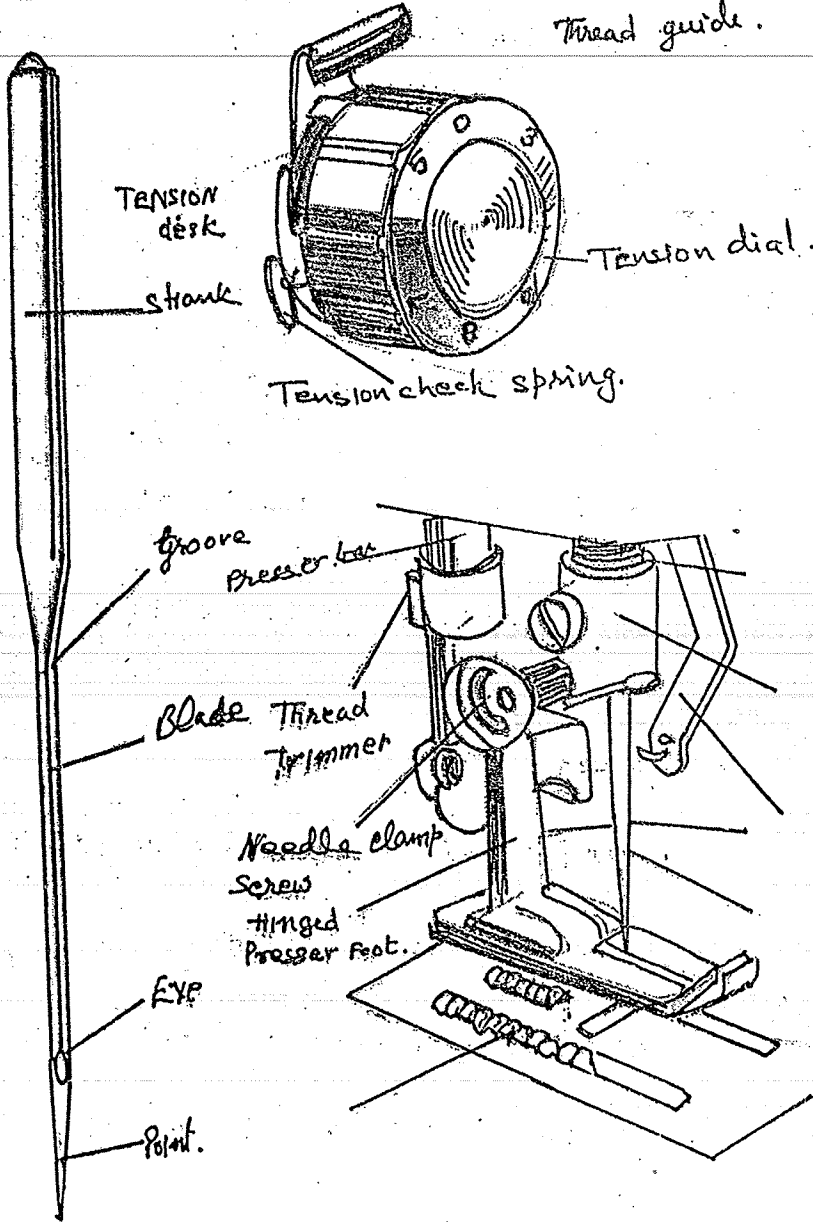
SEWING EQUIPMENT



Shuttle



Bobbin  
Thread guide.



TENSION  
dial

Tension dial.

Shank

Tension check spring.

Groove

Presser bar

Blade

Thread  
trimmer

Needle clamp

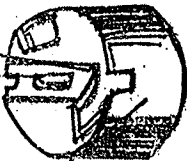
Screw

Hinged  
Presser foot.

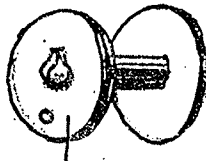
EYE

Point.

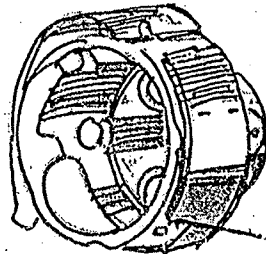
Latch  
Lever



Bobbin case



Bobbin



Hook

## अभ्यास:-

१- इस यूनिट में जितने पुर्जे की लिस्ट हैं उनको देखें और उनको लगाना सीखें।

## १.४ सारांश:-

नीचे दिये टूल्स कपड़ों के निर्माण में प्रयोग होते हैं-

कैंची, कटिंग टेबल, मीटर रिस्टक, नाप-टेप, पिन्स, सूईयाँ, स्ट्राज, बिटवीन्स, कढ़ाई, क्रेवेल, डार्निंग, स्वतः धागा डालने वाली सूई, थिम्बल, सिलाई धागा, टैकिंग धागा, ट्रेसिंग व्हील, पेपर, शार्पस, टेलर्स चाक, बीज वैक्स, छोटी कैंची, बटनहोल कैंची, पिंकिंग शीयर्स, अनपिकर, गागेज, पिन कुशन, हेम मार्कर तथा ड्रेस फार्मस्।

प्रेस करने के लिये आयरन, आयरनिंग बोर्ड, स्लीव बोर्ड, प्रेसिंग कुशन, प्रेसिंग मिट, पैडेड रोल, प्रेसिंग क्लथ, वेलवेट बोर्ड, टर्किश टोवलिंग तथा लकड़ी का क्लैपर। मशीन के पार्ट्स के अलावा पाईपिंग या जिपर फुट, नैरो हेमर, बटनहोल फुट, बटनहोलर, बटन फुट, डार्निंग फुट, डार्निंग पुर्जे, गैदरिंग फुट, स्विंग निडिल फुट, अतिरिक्त सिलाई के पुर्जे, क्लथ या सीम गाइड, एज रिटचर, क्विल्टर, रफ्लर, बाइन्डर, टकर तथा ब्लाइन्ड हेमर।

## १.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ एक साधारण सिलाई मशीन का डाईग्राम बनायें और उसे लेबिल करें।

प्रश्न-२ मशीन में धागा टूटने के क्या कारण होते हैं?

प्रश्न-३ मशीन को कैसे साफ करेंगे तथा तेल कैसे डालेंगे?

प्रश्न-४ हाथ तथा मशीन की सिलाई के लिए धागे पर एक सारांश लिखें।

प्रश्न-५ प्रेसिंग यंत्रों की सूची बनायें।

## १.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुडज हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप एनसाइक्लोपीडिया ऑफ निडिलक्राफ्ट, बाई जूडी ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।



### संरचना

- २.१ यूनिट प्रस्तावना
- २.२ उद्देश्य
- २.३ हाथ तथा मशीन की सिलाईयों के बेसिक्स
- २.४ साराँश
- २.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- २.६ स्वाध्ययन हेतु
- २.७ यूनिट प्रस्तावना:-

वस्त्र निर्माण के लिए मशीन एवं हाथ की सिलाई से सम्बन्धित आवश्यक बेसिक्स के बारे में यह यूनिट बतायेगा।

### २.२ उद्देश्य:-

उद्योग जगत में प्रत्येक सिलाई का मतलब पैसे के खर्च से है तथा प्रत्येक अतिरिक्त सिलाई का मतलब पैसे की बर्बादी से है। इसलिए एक फैशन डिजाइनर के लिए आवश्यक है कि उसे हाथ व मशीन की सिलाई से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के बेसिक्स की जानकारी होनी चाहिए तथा यह भी जानना जरूरी है कि कहाँ, कौन सी सिलाई प्रयोग में लानी चाहिए।

### २.३ हाथ तथा मशीन की सिलाईयों के बेसिक्स:-

#### सामान्य सिलाई की तकनीक:-

वास्तव में सिलाई एक वस्त्र का प्रमुख तरीका है तथा सामान्य पहनावे के साथ उसके लाइफ टाइम को भी बढ़ाना चाहिए। पहनावे के लिए सभी सिलाईयों काफी मजबूत होनी चाहिए तथा सिलाई के प्रकार वस्त्र के लिए परिपूर्ण होने चाहिए।

धागे तथा सूई सावधानी पूर्वक चुने जाने चाहिए, तथा धागे के सभी कोने

सुरक्षित बंधे होने चाहिए। मशीन की सिलाई मजबूत होती है और इसलिए जहाँ भी सम्भव हो प्रयोग करें, उचित हाथ की सिलाईयाँ अपना स्थान लेती हैं जब मशीन वस्त्र के बाहरी खूबसूरती को कम करेगी।

#### धागे:-

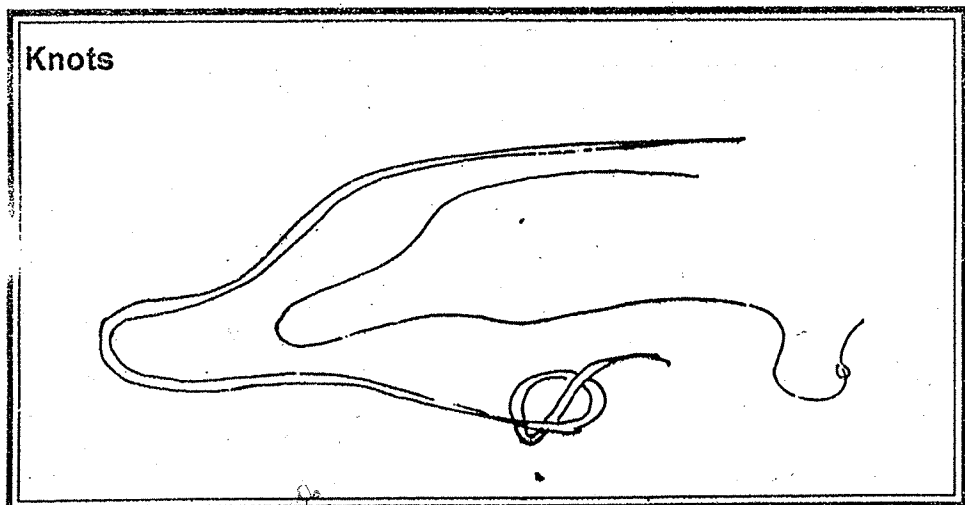
हाथ और मशीन दोनों की सिलाई के लिए कपड़े के रंग की अपेक्षा धागे का थोड़ा गहरा शेड प्रयोग में लायें; रील पर अपने प्रभाव की अपेक्षा धागा थोड़ा हल्का काम करता है। अच्छी हाथ की सिलाई के लिए लगभग ३५ से०मी० की लम्बाई से अधिक लम्बा धागा प्रयोग करना कठिन होता है, इन्हे कपड़ों के बीच से डालने एवं निकालने में भी काफी परेशानी होती है। टैकिंग के लिए धागा लम्बा किया जा सकता है क्योंकि इसमें लम्बे स्टिच किये जाते हैं तथा इसे कपड़े में बहुत पास से नहीं किया जाता है।

#### सूई में धागा डालना:-

अपने बायें हाथ के अनामिका तथा अँगूठे के बीच में सूई को पकड़ें तथा धागे को टैकिंग करें जैसे यह स्पूल से आता है (टैंगलिंग से बचें), इसे अपने दाहिने हाथ के अनामिका तथा अँगूठे के बीच से पकड़ें। सूई के छेद से धागा डालें।

#### गाँठें:-

जहाँ गाँठ की आवश्यकता हो, धागे का अन्तिम छोर अपने बायें हाथ की अँगुली के ऊपर रखें तथा इसे अपने बायें अँगूठे से पकड़ें। धागे को उँगली के चारों ओर लायें तथा इसको इसके अन्तिम छोर से क्रॉस करें। अपने अँगूठे को अपनी अँगुली के ऊपर से पुश करें, इस प्रकार धागा द्विस्ट हो जायेगा, तथा फिर गाँठ पूरी करने के लिए



खीचें।

**डबल बैक स्टिच:-**

अधिकतर हाथ की सिलाई डबल बैक स्टिच से शुरू और समाप्त होती है। सूई को कपड़े में डालें और एक छोटी सिलाई आगे की ओर करें। फिर सूई को वापस पहले डाले गये उसी बिन्दु पर ले जाकर निकालें। सूई को पुनः डालें और दो या तीन बार सिलाई का दोहराव करें जब तक धागा कपड़े को मजबूती से न पकड़ ले।

**अस्थायी सिलाईयाँ-**

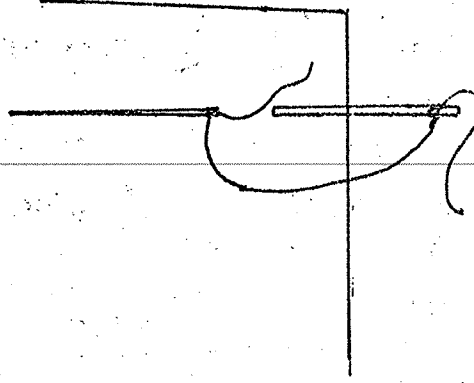
**टैकिंग:-**

टैकिंग कपड़े पर पैटर्न मार्किंग उतारने की एक अस्थायी सिलाई होती है तथा स्थायी सिलाई पूर्ण होने तक वस्त्र में पकड़ बनाये रखने के लिए की जाती है।

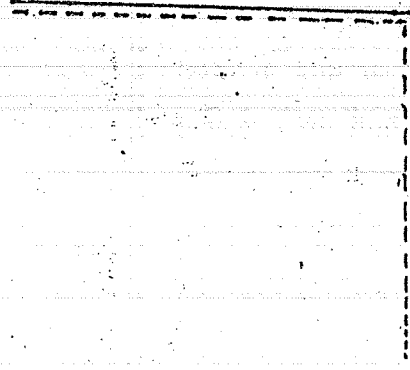
टेलर्स टैकिंग कपड़े पर पैटर्न मार्किंग उतारने के लिए लगाई जाती है। इसे कपड़ा काटने के बाद लेकिन कपड़े पर से पैटर्न हटाने से पूर्व किया जाना चाहिए।

**डबल स्टिच टेलर टैकिंग:-**

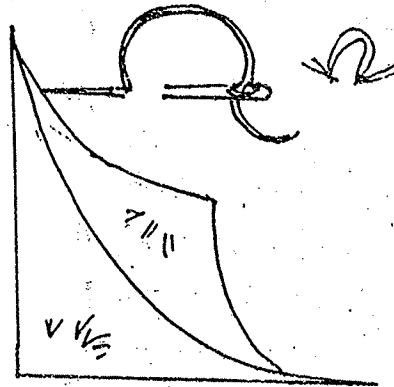
**Double back stitch**



**Tacking**



**Double-stitch tailor tacking**



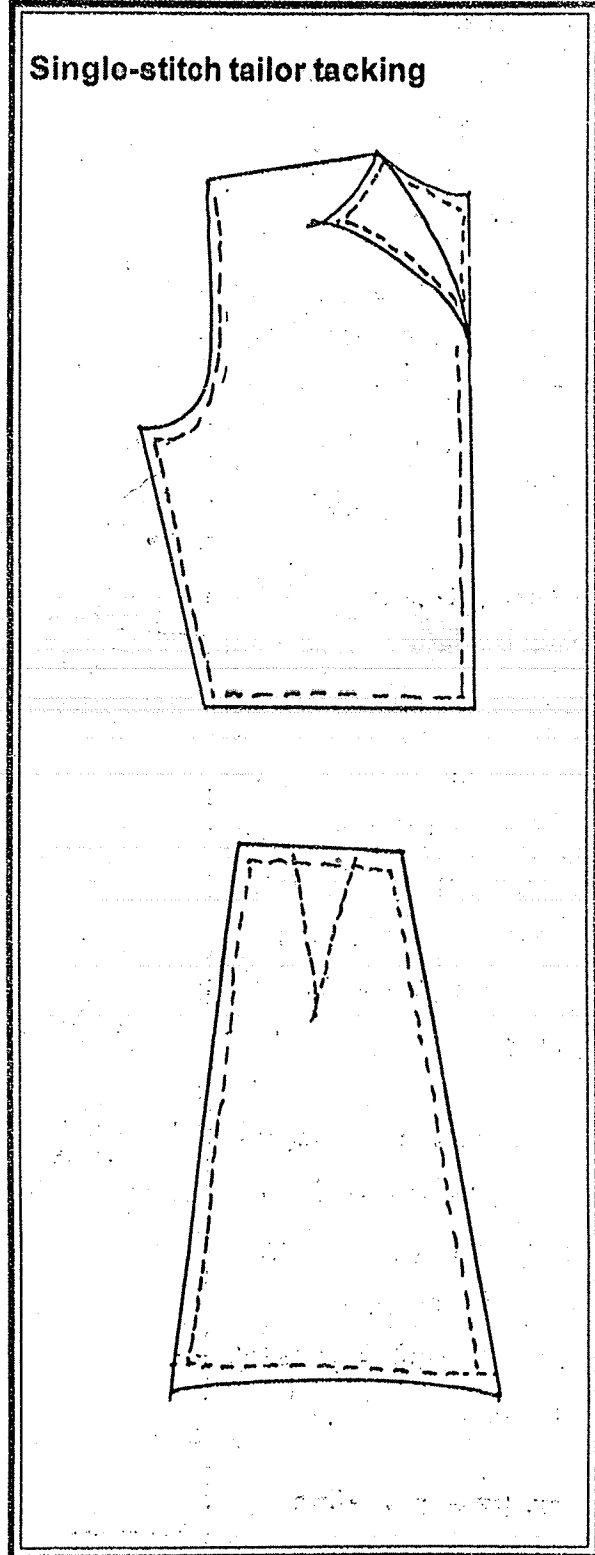
डबल स्टिच टेलर टैकिंग का प्रयोग डार्ट, बटन तथा बटनहोल, पॉकेट, प्लीट, ड्रेपिंग इत्यादि, की स्थिति को मार्किंग करने के लिए की जाती है। जटिल शैलियों में जहाँ अनेक प्रतीक पैटर्न पर प्रयोग किये जाते हैं, वहाँ पर यह सलाह दी जाती है कि विभिन्न रंगों के धागों का प्रयोग करें तथा प्रत्येक प्रतीक दर्शाने के लिए रंगों की लिस्ट बना लें।

डबल धागे से, एक छोटी सिलाई दोनो मोटाई की परतों से, धागे का पीछे का सिरा छोड़ते हुए करें। एक लूप छोड़ते हुए बैक स्टिच करें। एक दूसरा पीछे का सिरा छोड़ते हुए धागे को सिनप करें।

**सिंगिल स्टिच टेलर टैकिंग:-**

सिंगिल स्टिच टेलर टैकिंग सीम लाइन, सेंटर फ्रन्ट तथा वस्त्र के पीछे के हिस्से आदि में मार्क करने के लिए होती है। दोहरे धागे से, दोनों परतों में सीम लाइन के बराबर ६ मि०मी० मैटेरियल छोड़ते हुए टैकिंग करें। सिलाई २५ मि०मी० लम्बे टाइट घुमाव और ५० मि०मी० लम्बी सीम पर हो।

जब सभी पैटर्न मार्किंग की टैकिंग समाप्त हो जाये, तब पैटर्न तथा वस्त्र के बाकी की परतें धीरे-धीरे सावधानी पूर्वक हटा दें क्योंकि धागा दोनों परतों पर एक टफ छोड़ते हुए सिनिप्पड़ हो सकता है।



## ड्रेस टैकिंग:-

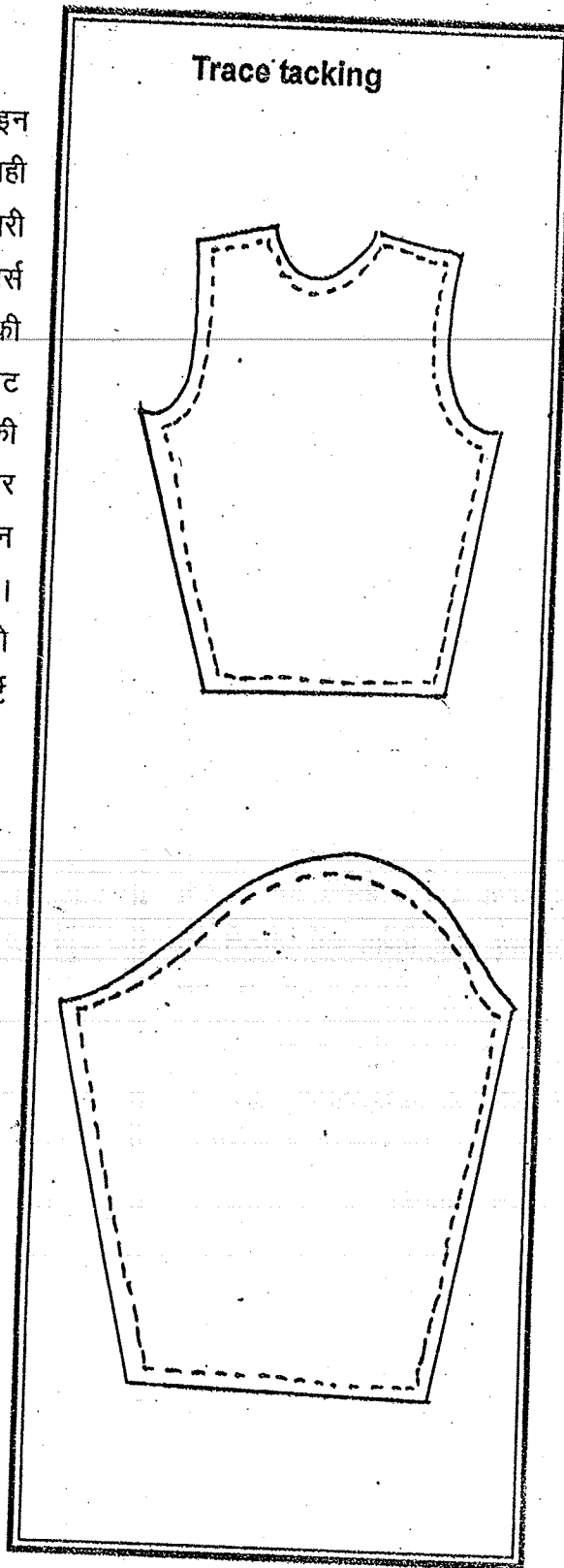
ड्रेस टैकिंग सीम लाइन मार्किंग करने का सबसे अधिक सही तरीका है; यह फाइन या स्लीपरी कपड़े पर ठीक रहता है जहाँ टेलर्स टैक नहीं टिकता है। पेपर पैटर्न की सीम एलाउन्स को मोड़ दें या काट दें। एक दफती का टुकड़ा कपड़े की परतों के बीच लगा दें। ड्रेस मेकर टैकिंग से पैटर्न की आउट लाइन कपड़े की एक परत से मार्क कर दें। कोनो पर, कपड़े के निरन्तर एज को काट दें, और फिर शुरू करें। डार्ट मार्क तथा संतुलन करना न भूलें।

जब एक तरफ पूरा हो जाये तब पैटर्न को हटायें, इसे दूसरी ओर पिन करें तथा मार्किंग का दोहराव करें।

## टैकिंग सीम्स:-

दोनों एजों को जोड़ने के लिए एक संग पिन करें, पिन से सीधे एंगल पर जोड़ें। कपड़े को मेज पर फ्लैट रखें तथा रखे गॉठ लगाकर, सीधी तरफ से बाँये तरफ दोनों थिकनेस से काम शुरू करें, एक उचित टैकिंग स्टिच का प्रयोग करते दो या अधिक बैक स्टिच से कपड़े को फिनिशिंग करें। टैकिंग समाप्त होने के बाद कपड़े से पिन निकाल दें।

## एकसार टैकिंग:-



बराबर टैकिंग का अर्थ है एक बराबर स्टिचेस लें, यह बहुत मजबूत तरीका नहीं है; सिलाईयों इसलिए १० मि०मी० से ज्यादा अधिक लम्बाई की नहीं होनी चाहिए।

#### अनियमित टैकिंग:-

यह मजबूत होती है, और अति शीघ्र पूरी की जा सकती है। ३ मि०मी० लम्बाई की १२ मि०मी० इन्टरवाल्स पर नियमित छोटी स्टिचेस लें।

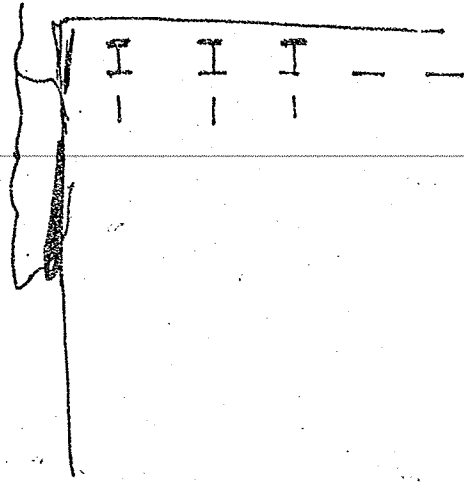
#### ड्रेस मेकर टैकिंग:-

यह सबसे मजबूत तरीका है तथा इसका प्रयोग वहाँ करना चाहिए जहाँ विशेष फर्म जोड़ने की आवश्यकता हो। दो, ३ मि०मी० की स्टिचेस, ३ मि०मी० के अलावा १२ मि०मी० के इन्टरवाल पर लें।

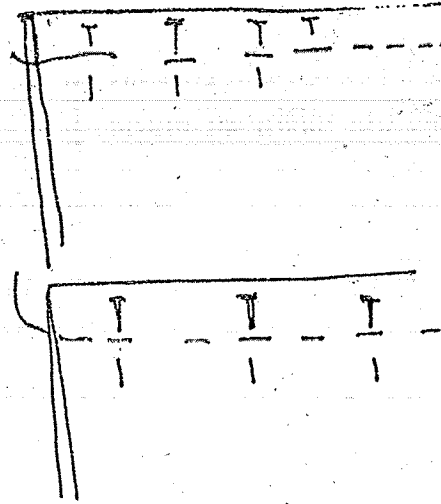
#### मशीन टैकिंग:-

अधिकतर आधुनिक मशीनें मशीन टैकिंग के लिए एक बड़ी स्टिचेस बनायेगी। कुछ निर्माण कर्ता के द्वारा रिकमेन्डेड किया जाता है कि ऊपर के धागे का टेन्शन ढीला हो, क्योंकि टैकिंग नीचे के धागे को खींचकर असानी से निकाली जा सके। इस बिन्दु की जाँच अपनी मशीन की पुस्तिका से कर लें।

#### Even tacking



#### Uneven tacking



कुछ सिंग निडिल मशीनो में विशेष टैकिंग की सिलाई होती है, लेकिन पुनः

इसका विवरण मशीने की निर्देश पुस्तिका में मिलेगा।

### स्लिप टैकिंग:-

इसे फैब्रिक के सीधी ओर किया जाता है और इसलिए इसका प्रयोग फिटिंग अल्टरेरेशन को मार्क करने के लिए किया जाता है, या उस अवसर पर जहाँ पैटर्न ठीक से जोड़ना हो जैसे- पट्टियाँ, चेक्स इत्यादि। अतः कपड़े के एक किनारे, सीम लाइन पर मोड़ें।

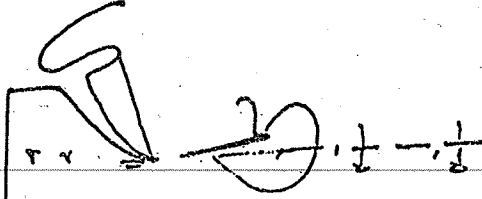
फोल्डेड एज को सीम लाइन से दूसरे एज पर पिन करें। इसे सीम से सीधे एंगल पर पिन करें।

एक बराबर टैकिंग स्टिचेस, अल्टरनेटली फोल्ड तथा सीम लाइन पर, एकल एज से करें।

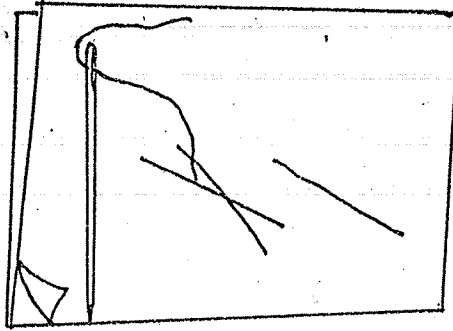
### डायगोनल टैकिंग:-

इसे कपड़े के दो टुकड़ों को एक संग जोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ एक से अधिक टैकिंग की पंक्तियों की जरूरत होती है जैसे- जब आप कॉलर से एक इन्टर फेसिंग जोड़ रहे हों या कपड़े में अस्तर इत्यादि लगा रहे हों।

### Slip tacking.



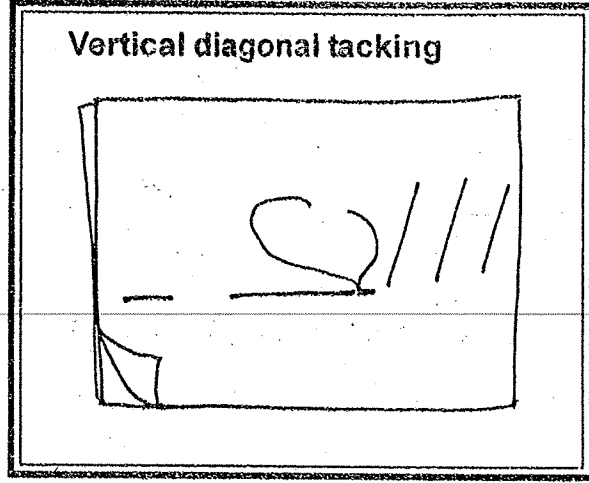
### Diagonal tacking



इस वर्तिकली या होरीजेन्टली दोनो तरीको से किया जा सकता है।

**वर्टिकल डायगोनल टैकिंग:-**

एक १२ मि०मी० की स्टिच लें, २ से०मी० डायगोनली गिरायें, फिर एक दूसरी १२ मि०मी० की स्टिच लें। पुनः पहली स्टिच पर डायगोनली वापस जायें, धागे को सीधा रखते हुए काम आगे बढ़ायें तथा दोहराव करें।



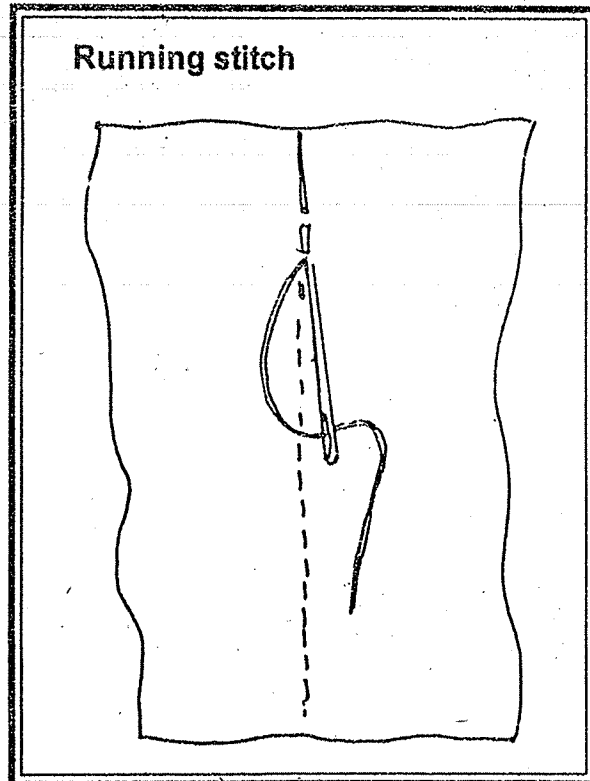
**स्थाई हाथ की कढ़ाई:-**

हाथ की सिलाई काफी सन्तोषजनक तथा सहज हो सकती है, यदि आप सही सूई और धागे का प्रयोग करते हैं तो यह अच्छे परिणाम हेतु कठिन नहीं होती है। साथ ही कपड़े की किस्म, मोटाई तथा जो सिलाई का प्रयोग आप कर रहे हैं उसका भी ध्यान दिमाग में रखना होगा।

वे लोग जिनको अधिक गर्मी लगती है और हाथ में पसीना आता है उन्हें अपने पास स्टार्च का एक बैग उस पर लगाने के लिए रखना चाहिए। यदि आप बाँये हाथ से काम करते हैं और नीचे दिये गये झाईग्राम को करने में परेशानी होती है, तब शीशे के सामने उसे टॉग लें।

**रनिंग स्टिच:-**

डबल बैक स्टिच से शुरू करें। पुनः सूई कपड़े में डालें, और दो या तीन बराबर





छोटे स्टिचेस लें, इनसे धागा खींचें और फिर दोहरायें। आपके स्टिचेस कपड़े की मोटाई के बराबर उतने छोटे होने चाहिये जितने फाइन फैब्रिक पर कम से कम २ मि०मी० होंगे। डबल बैक स्टिच से समाप्त करें।

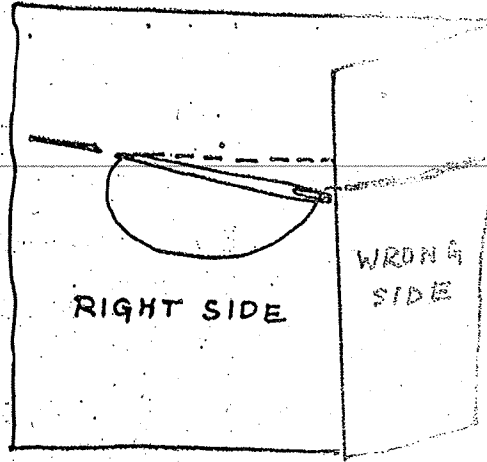
### बैक स्टिचिंग:-

इस सिलाई का प्रयोग वहाँ करें जहाँ अधिक मजबूती की जरूरत होती है। डबल बैक स्टिच से शुरुआत करें। आगे के ओर एक छोटा स्टिच लें और सूई को वापस ले आयें जहाँ पहले सूई डाली थी। पुनः सूई डालें और एक स्टिच आगे की ओर दो बार पहली स्टिच की तरह ही लम्बी लें। इस सिक्वेन्स का दोहराव प्रत्येक सिलाई बनाते हुए, पूर्व में की गई सिलाई के पीछे सूई रखते हुए करें तथा इसे एक स्टिच से बाहर लाते हुए कपड़े के नीचे की ओर से आगे बढ़ें, जहाँ सिलाई ओवर लैप कर रही हो। डबल बैक स्टिच से समाप्त करें।

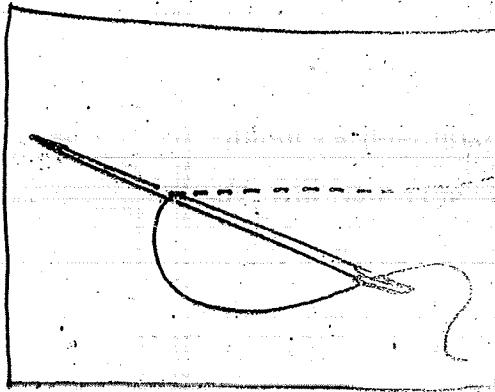
### आधा बैक स्टिच:-

यह बैक स्टिच से कम मजबूत होती है, इसे उसी तरीके से किया जाता है, लेकिन पूर्व

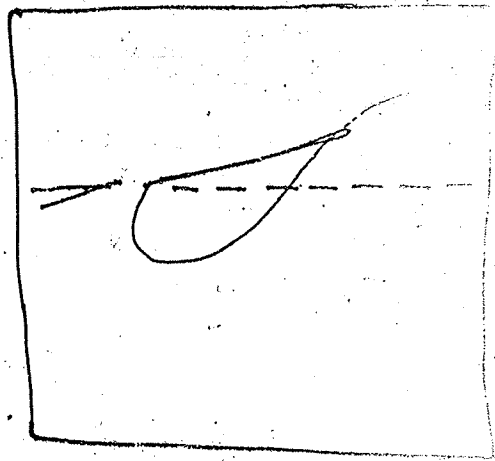
### Back stitching



### Half back stitch



### Small back stitch



मे की गई स्टिच के कोनों में सूई डालने के बजाय इसे केवल आधी दूरी पर डाला जाता है।

### छोटा बैक स्टिच:-

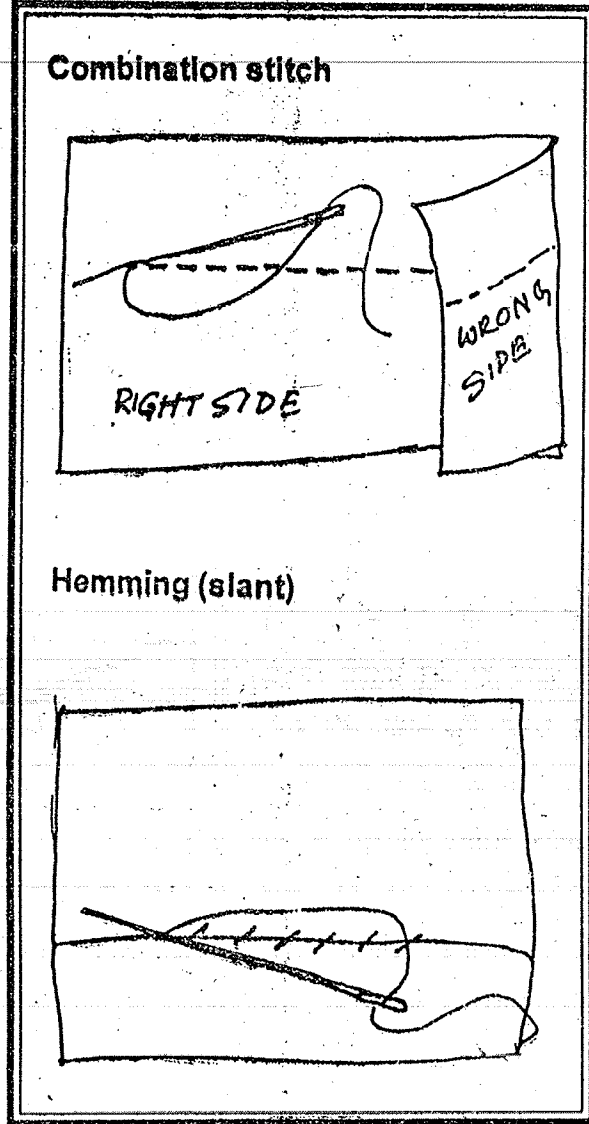
यह भी बैक स्टिच की तरह बनता है, लेकिन सूई को वापस कपड़े के केवल एक धागे पर लाकर किया जाता है। यह प्रयोग हेतु अच्छी स्टिच है जब जिप को हाथ से इन्जर्ट किया जाता है।

### मिला जुली स्टिच:-

यह रनिंग और बैक स्टिच मिला जुला मिश्रण एक मजबूत रनिंग स्टिच बनता है। रनिंग स्टिच के लिए काम शुरू करें, लेकिन प्रत्येक तीन रनिंग स्टिच के बाद एक छोटा बैक स्टिच लिया जाता है। गैदरिंग (फिगर १६)। एक गॉठ से शुरूआत करें। स्टिचिंग लाइन के बराबर एक फाइन रनिंग लाइन बनायें फिर इसके बराबर ३ मि०मी० या ६ मि०मी० पर दूसरी रनिंग लाइन बनायें। दोनों धागों को एक साथ खींचते हुए इच्छित लम्बाई आगे खींचें। गैदर को यथा स्थान, धागे को उठाते हुए एक पिन के चारों ओर कपड़े के टैक होने तक, पकड़े रखें। गैदरिंग का धागा सीम सिल जाने के बाद हटाया जा सकता है।

### हेमिंग (स्लैन्ट):-

दायें से बायें काम करें। शुरू करने के लिए, धागे को हेम के फोल्ड से बाँये



से दाँये चलायें। हेम से अपनी सूई लायें, इसे 3 मि०मी० आगे ले आयें, एकल कपड़े का केवल एक या दो धागा उठायें, क्योंकि कपड़े के दूसरे ओर कोई भी स्टिचिंग न आने पाये, तथा हेम के एज से सूई वापस स्लैन्ट करें।

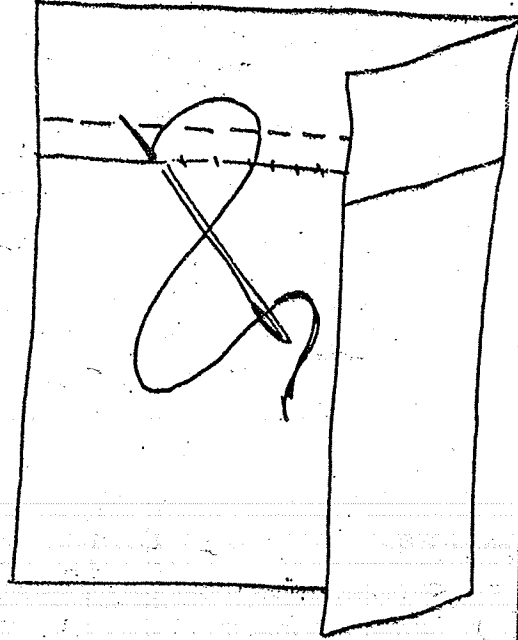
यह प्रयोग करने के लिए एक अच्छी स्टिच है जब हेमिंग बायस करें, जैसा कि यह निश्चित करता है कि खिंचाव कपड़े के सीधे ग्रेन पर होता है तथा यह बबलिंग को प्रिवेन्ट करने में सहायता करता है। सूई को हेम से पीछे चलाते हुए समाप्त करें।

#### हेमिंग (वर्टिकल):-

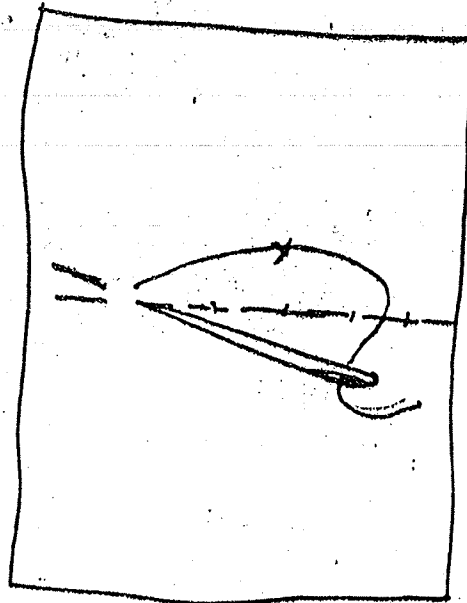
दाँये से बाँये काम करें, तथा हेमिंग स्लैन्ट की तरह काम की शुरुआत करें। हेम से सूई लें। इकहरे कपड़े से एक या दो धागा इस बिन्दु के ठीक नीचे से उठायें, पुनः कपड़े के दूसरी ओर बिना धागा दिखाये, तथा हेम के एज में सूई पीछे स्लैन्ट करें। यह एक सूटेबिल स्टिच होती है जब मशीन स्टिचिंग में हेमिंग हो (जैसा कफ पर), ऊपर की तरफ बाँयस जैसी स्थिति को छोड़कर। एक स्टिच प्रत्येक मशीन स्टिच से से होकर ली जानी चाहिए।

#### स्लिप हेमिंग:-

#### Hemming (vertical)



#### Slip hemming

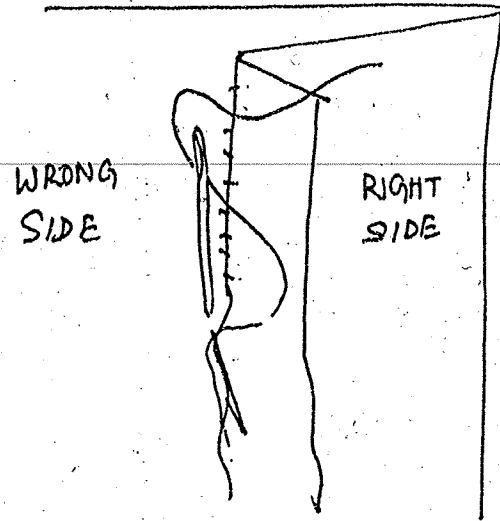


दाँये से बाँये काम करें तथा हेमिंग स्लैन्ट की तरह शुरूआत करें। हेम से होते हुए सूई लें, एकहरे कपड़े के एक या दो धागे को उठाये, निश्चित कर लें कि कपड़े के दूसरी ओर कोई भी सिलाई न दिखे, सूई को हेम के फोल्ड से ३ मि०मी० से ६ मि०मी० तक (कपड़े के अनुसार) आगे पुस करें, सूई को पुनः आगे ले आयेँ और पुनरावृत्ति करें। फोल्ड मे एक बैक स्टिच लेकर समाप्त करें तथा सूई को फोल्ड के पीछे से चलायेँ।

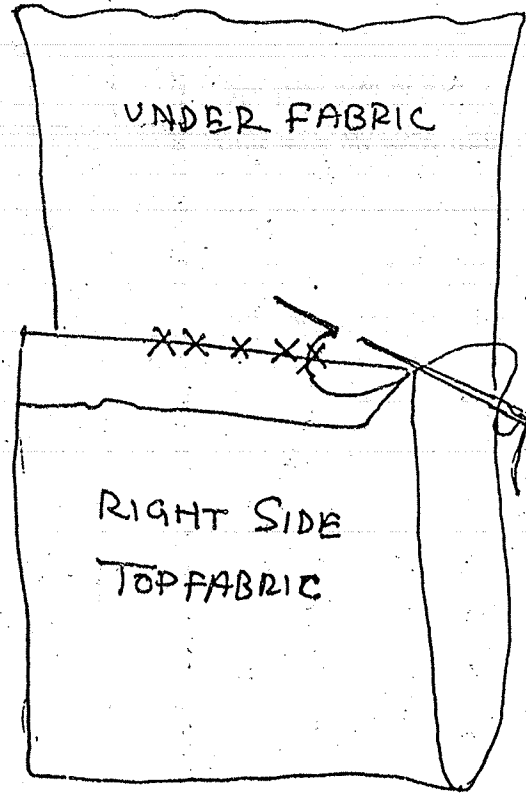
#### स्लिप स्टिच:-

दाँये से बाँये काम करें। हेम मे दोहरे बैक स्टिच से शुरूआत करें। हेम के ऊपर के एज को ६ मि०मी० द्वारा वापस मोड़े, मुड़े हुए पिछले किनारे को अपने बाँये अँगुली के विपरीत, सिलाई को ठीक रखने के लिए पकड़े रखें। कपड़े के दो या तीन धागे को उठायेँ, क्योंकि कपड़े के दूसरी ओर कोई भी सिलाई नही दिखती है, फिर हेम मे एक रनिंग स्टिच लें। पुनरावृत्ति करें। करीब आधे दर्जन स्टिचेस बना चुकने के बाद धागे को साधारणतयः खीचें। हेम मे दोहरे बैक स्टिच से समाप्त करें।

#### Slip stitch



#### Herringbone



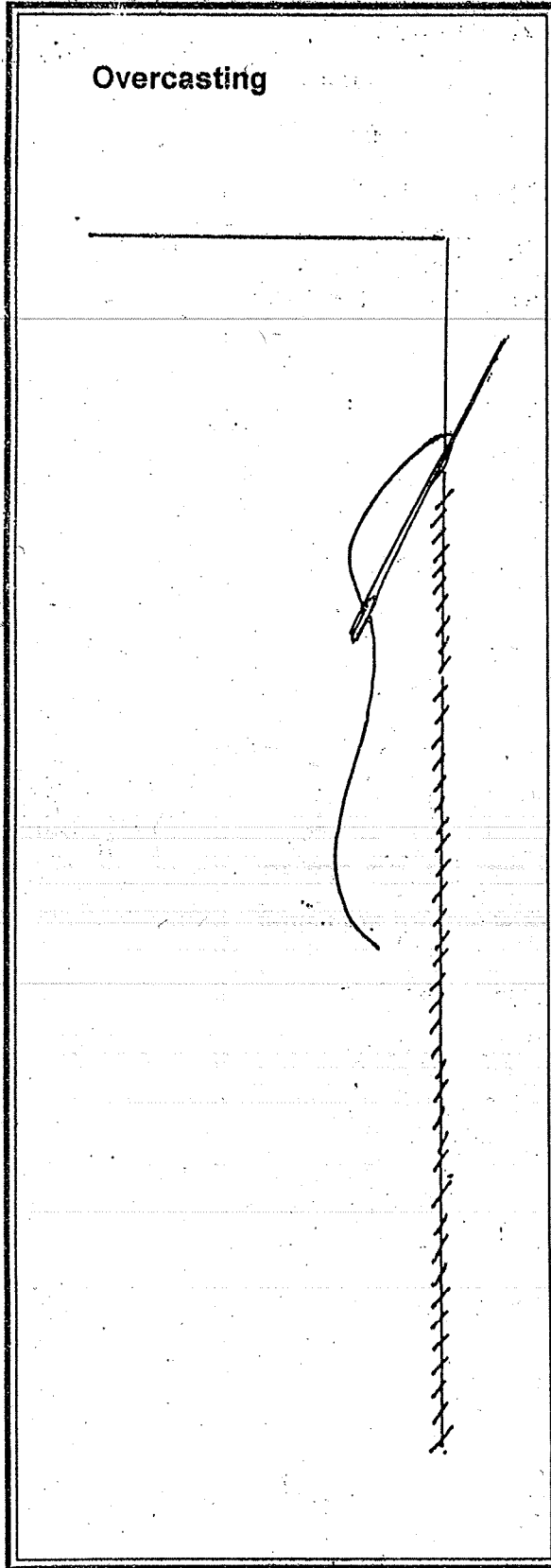
इस स्टिच का प्रयोग दो फोल्डेड कोनों को जोड़ने के लिए भी किया जाता है और कभी-कभी इसे लैडर स्टिच भी कहा जाता है।

**हेरिंगबोन:-**

बाँये हाथ के सबसे ऊपर के कपड़े पर से दोहरे बैक स्टिच से शुरूआत करें। बाँये से दाँये काम करते हुए, नीचे के कपड़े के पीछे की ओर एक छोटी स्टिच लें, सूई को दाँये लेकर, सबसे ऊपर के कपड़े पर पीछे की ओर एक छोटी स्टिच लें। जब हेरिंगबोन का प्रयोग एक हेम रखने के लिए करें, तो सिलाइयों को टाइट रखने के बजाय ढीला रखें, या कपड़े के दाँये ओर एक एज भी दिखा सकते हैं। इस स्टिच का प्रयोग एक एज के ऊपर कपड़े के एक टुकड़े को दूसरे के ऊपर पकड़ने के लिए किया जाता है; जैसे— एक जैकेट के अन्दर की ओर इन्टरफेसिंग की जाती है।

**ओवर कास्टिंग:-**

कपड़े के किनारे से ३ मि०मी० नीचे से बैक स्टिच से शुरूआत करें, जिसे आपको अपने बाँये हाथ के अँगुली के ऊपर से पकड़ना होगा क्योंकि इसे कपड़े पर नहीं सिला जाता है। अपने बाँये कंधे



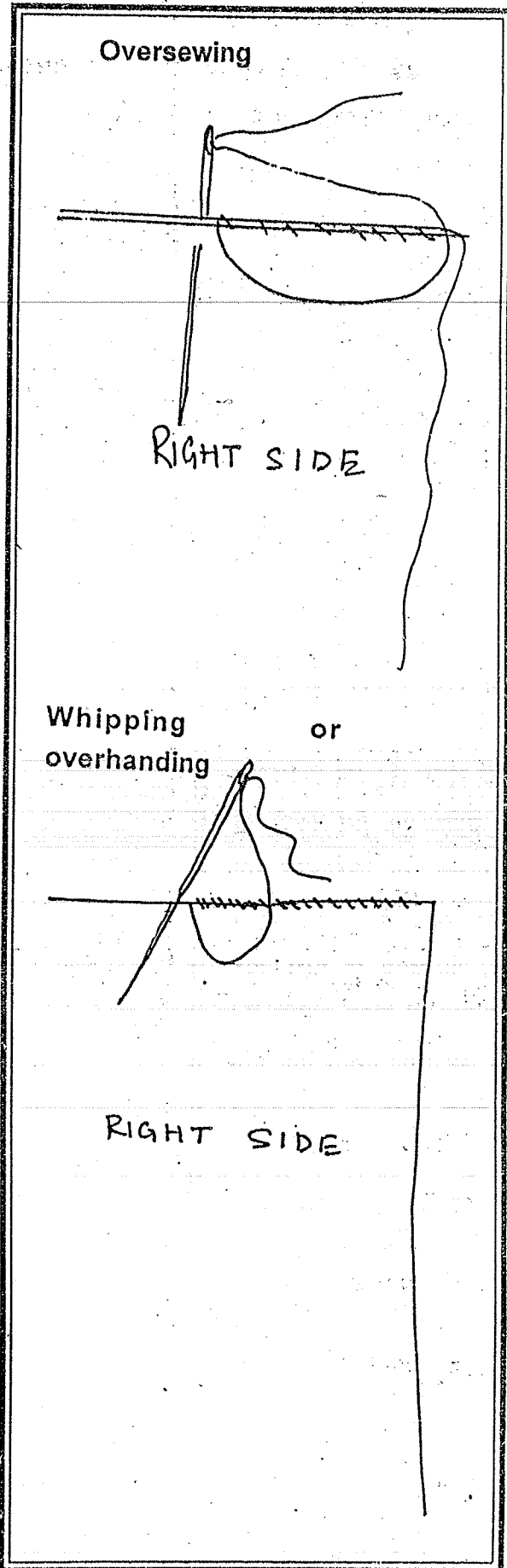
को दर्शाते हुए सूई की सहायता से बाँये से दाँये काम करें जैसे यह कपड़े से होता हुआ आता है। सिलाईयाँ २ से १२ मि०मी० होनी चाहिए बाकी, कपड़े की मोटाई के हिसाब से होनी चाहिए। जैसा की धागा एज के ऊपर से गुजरता है, यह तरीका कच्चे एज की सफाई के लिए उपयोगी होता है। धागे को कपड़े के पीछे से चलाते हुए समाप्त करें।

#### ओवर सेविंग:-

बैक स्टिच एक फोल्ड में ले। सूई को सीधा अपनी ओर प्वाइन्ट करते हुए दाँये से बाये काम ऐसे करें जैसे यह कपड़े से आते हुए लगे। अपनी सिलाईयाँ को इतनी करीब तथा फाइन रखें जितनी सम्भव हो, केवल एक धागा उठाते हुए तथा बैक स्टिच से फोल्ड के अन्दर की तरफ समाप्त करें। यह एक वस्त्र से लेस एजिंग जोड़ने के लिए या दो फिनिश एजों को एक साथ जोड़ने के लिए काफी लाभकारी है।

#### व्हिपिंग या ओवर हैन्डलिंग:-

धागे के सिरे को अपने अंगूठे से पकड़ कर कई स्टिचेस पूर्ण होने तक काम करें। ओवर



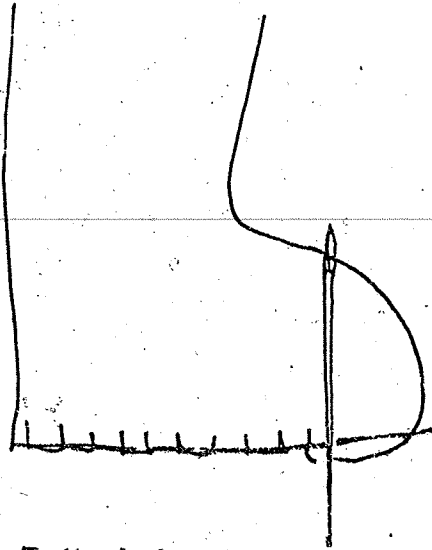
सेविंग की तरह दायें से बायें काम करें, लेकिन सूई से अपने बायें कंधे की तरफ उठाते हुए। इसमें ओवर सेविंग से फर्क सिर्फ इतना है कि स्टिच केवल टेढ़ी रहती है।

### लूप स्टिच:-

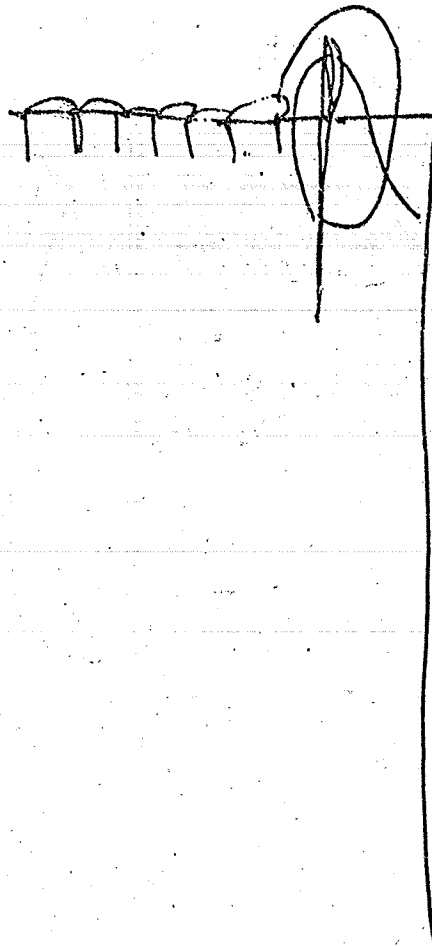
काम करने हेतु एज की तरफ तीन छोटे रनिंग स्टिच से शुरू करें। ये स्टिचेस पिछले स्टिच के धागे से ढके रहेंगे। बाये से दाये काम करते हुए, सूई को कपड़े के किनारे आवश्यक स्टिच के डेपथ पर डालें। इसे वर्टिकली नीचे की ओर जहाँ से पहली स्टिच की थी, गुजारते हुए लें जैसा कि फिगर 2c में दिखाया गया है। समाप्त करने के लिए धागे को वापस पहले से ही किये गये स्टिचेस से उल्टी ओर जाकर बुनें।

इस स्टिच का प्रयोग कच्चे एजो की सफाई के लिए कढ़ाई में, तथा वर्कड लूप बनाने के लिए और कम्बल के हेम के बार के लिए भी किया जाता है। सिलाई के अलावा आकार तथा दूरी, प्रयोग किये जाने वाले चीजों के अनुसार भिन्न होता है।

### Loop stitch

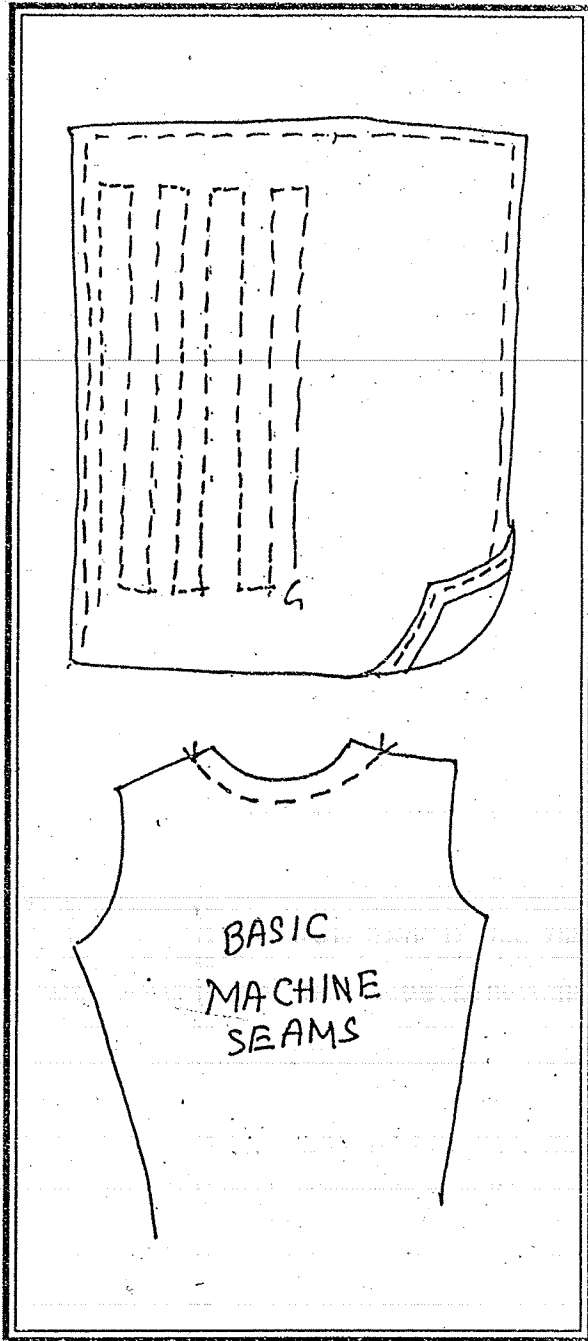


### Buttonhole stitch



### बटन होल स्टिच:-

जितना चौड़ा स्टिच बनाना हो वहाँ ऊपर की तरफ तीन रनिंग स्टिच लेकर शुरू करें, क्योंकि बटन होल स्टिच से, रनिंग स्टिच ढक जायेगी। काम के पीछे से सूई ले तथा फिर कपड़े के ऊपर से कुछ धागा एज से लें। सूई के छेद से दो धागे वाइन्ड करें, बिन्दु को उस दिशा में घेरे जहाँ से सिलाई काम के लिए होती है। सूई इससे खीचें और धागे के ऊपर से ड्रॉ करें, क्योंकि परिणाम स्वरूप गॉठ कच्चे एज पर पड़ जाती है। सिलाई का कार्य एकसार तथ करीब से करें, प्रत्येक के बीच पर्याप्त जगह छोड़े जिससे कि गॉठे बहुत घनी न लगें। धागों को उल्टी ओर सिलाई के पीछे से चलाते हुए समाप्त करें।



यह सिलाई द्वारा बनी फर्म गॉठों के एज का प्रयोग न केवल बटनहोल बल्कि जब एक मजबूत व साफ फिनिश की जरूरत हो तो की जाती है। इसका प्रयोग प्रेस-स्टड्स, हुक्स, आँखे व कढ़ाई में सिलाई के लिए भी होता है।

### स्थाई मशीन स्टिचेज:-

मशीन की सिलाई का प्रयोग वस्त्र के बेसिक निर्माण में होता है क्योंकि यह मजबूत होती है और शीघ्र हो जाती है। कुछ स्थानों पर इसका प्रयोग ठीक नहीं रहता जैसे मुलायम हेम और कुछ कपड़ों पर मशीन से काम करना कठिन होता है (जैसे



बैलवेट) बिना किसी देखभाल तथा तैयारी के।

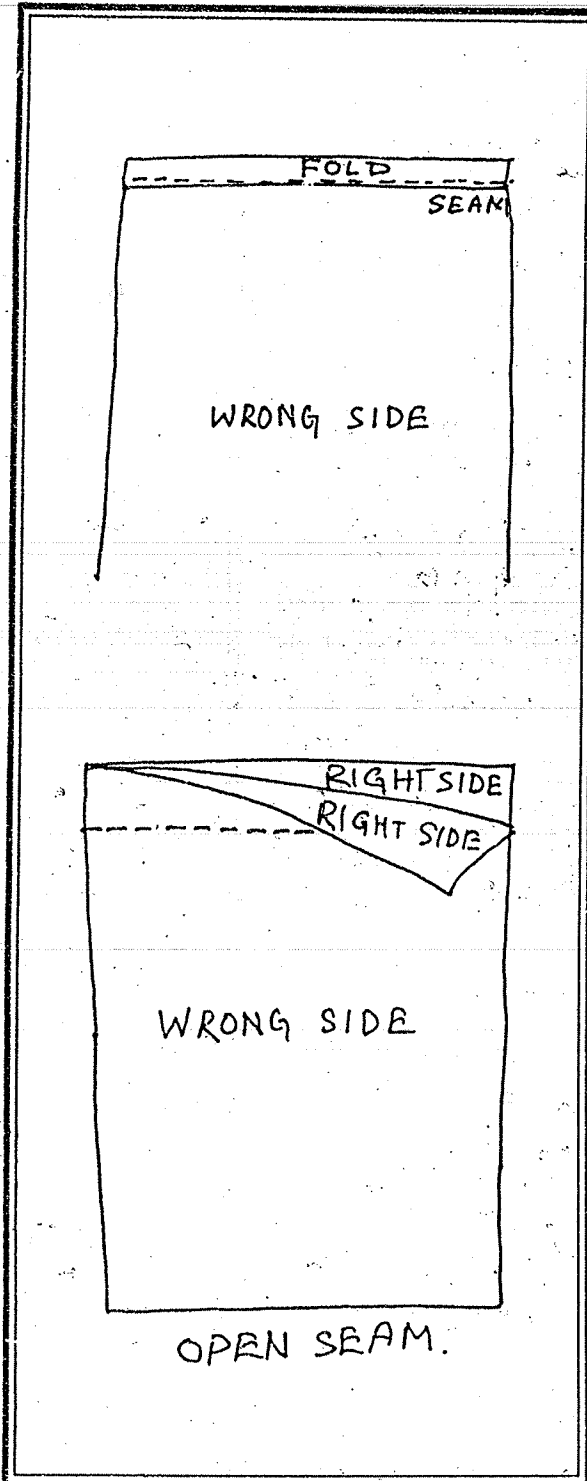
अच्छी मशीन की सिलाई के लिए, कपड़े के अनुकूल सूई तथा धागा चुनना जरूरी है। धागे का शोड कपड़े के रंग से एक नम्बर अधिक होना चाहिये। कपड़ा सिलाने से पहले स्टिच की लम्बाई व धागे का खिंचाव सदैव जाँच लें।

सबसे पहले कपड़े को प्रेस कर लें, जहाँ तक हो सके सीधी तरफ से सिलाई करें, तथा ठीक सिलाई के लिए मशीन को नियंत्रित करने के लिए बैलेन्स व्हील का प्रयोग उस बिन्दु पर करे जहाँ विशेष ध्यान देने की जरूरत हो।

जहाँ तक सम्भव हो, सारा कपड़ा मशीन के बाईं ओर रखना चाहिये जहाँ इसे असानी से रखने की जगह होती है। मशीन करते समय कपड़े को खींचें नहीं। कपड़े को सीधा रखकर फुट के नीचे चलने दें, फुट अपने आप कपड़े को दबाकर निकलता जाता है।

**बेसिक सीम:-**

बेसिक सीम कपड़े के दो टुकड़ों को मजबूती तथा बिना सिकुड़ने के जोड़ने एक तरीका है। यह जोड़ने का तरीका बहुत ही स्टाइल से जोड़ने के साथ मजबूत होता है। गारमन्ट धुलाई के साथ चलता है। सीम की चौड़ाई फैब्रिक के



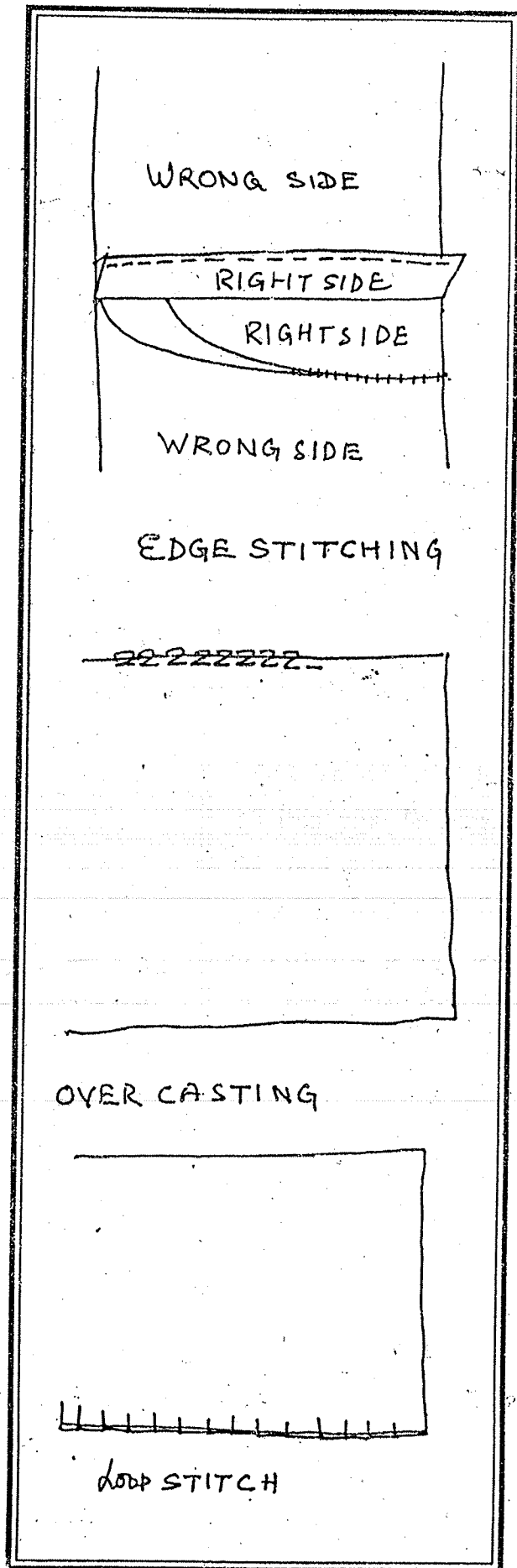
ऊपर निर्भर करती है यदि कपड़ा पारदर्शी है तब सीम बहुत सफाई से लगानी होगी यदि गारमेन्ट का साइज कसा रखना है तब इसकी सीम लाइन बुल्की नहीं होनी चाहिए।

### ओपेन सीम:-

इस सीम का प्रयोग ड्रेसेज मे बहुत अधिक होता है। कपड़ों का सीधा ओर उसके सीम लाइन से एक साथ मिलाकर रखें और पिन लगा दें, तथा स्टिचिंग लाइन पर टैक कर लें। अब स्टिचिंग टैक लाइन के जितना पास कर सके करें। टैकिंग धागे को निकाल दें तथा प्रेस खोलें। इस सीम के कच्चे किनारों को फिनिशिंग की जरूरत होती है। मोड़ का कपड़ा एक बराबर होना चाहिये तथा सफाई के बाद १२ मि०मी० से कम नहीं होना चाहिए।

### एज स्टिचिंग:-

इस तरह की सिलाई कॉटन तथा सभी पतले कपड़ों पर होती है। दोनों कपड़ों पर मिला कर, सिलाई करके उसको पलट कर प्रेस कर लें। सीधी तरफ पर किनारे के पास सिलाई लगाने के बाद अन्दर के रफ किनारे का कपड़ा काट दें, सीधी



तरफ फिर प्रेस करें।

### ओवर कास्टिंग- बाई हैंड:-

यह प्रयोग विशेषकर फ्रेडिंग कपड़ों पर काम के लिए होता है।

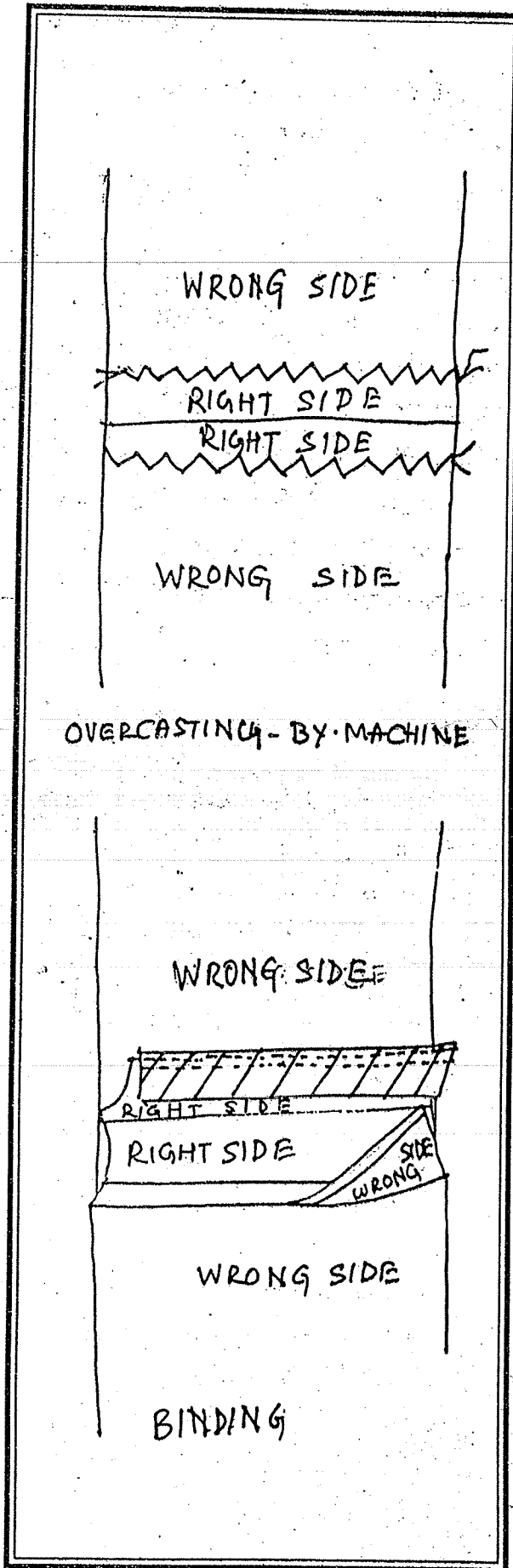
### लूप स्टिच:-

इसे कभी-कभी 'ब्लैकेट स्टिच' भी कहा जाता है। यह विशेषकर कच्चे एजो वाले फ्रेडिंग कपड़ों के लिए काफी उपयोगी होता है। इस स्टिच का प्रयोग १ १/२ से १२ मि०मी० की दूरी तक के अलावा कपड़े की मोटाई के अनुसार होता है।

### मशीन द्वारा ओवर कास्टिंग:-

यह भी फ्रेडिंग फैब्रिक पर की जाती है। जिग-जैग स्टिच सिंग नीडिल मशीन से करें। घरेलू मशीन पर ठीक पुर्जा लगाकर कर सकते हैं। जिग-जैग की लम्बाई या चौड़ाई कपड़े पर निर्भर करती है। ढीली बनी फैब्रिक पर छोटी जिग-जैग की जाती है। कपड़े के किनारे को मोड़ कर जिग-जैग करना चाहिये। इसके मोड़ने से धागा सूई में नहीं आयेगा। मशीन जैग नहीं होगी।

### बाइन्डिंग:-



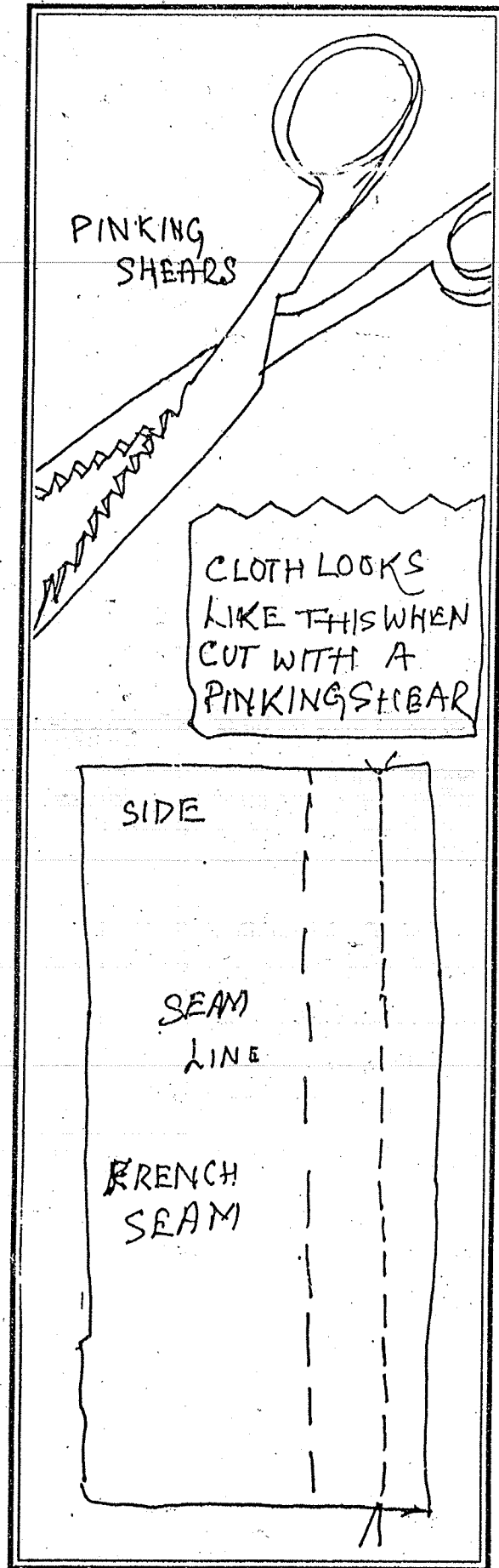
यह मध्यम और पतली फ्रेडिंग फैब्रिक पर काम आती है। कपड़े को टेढ़ा अर्थात एक कोने से दूसरे कोने पर काटिये। व्यापारिक बाइन्डिंग चौड़ी होती है। सीधी साइड पर बाइन्डिंग रखकर मशीन करें। उल्टी साइड मोड़कर प्रेस कर लें। बाइन्डिंग की चौड़ाई रख, बाकी कपड़ा मोड़कर हेमिंग मशीन से करें। मशीन बाइन्डर पुर्जा भी काम में ला सकते हैं (कुछ केवल विशेष चौड़े कोर्स वाले सूती बाइन्डिंग के साथ काम करेंगे।

#### पिकिंग:-

यह सीम के लिये कपड़े को पिकिंग शीयर से काटा जाता है। इसका प्रयोग बिना फ्रेडिंग के फैब्रिक पर जहाँ नीटनिंग के दूसरे तरीके बुल्की हो सकते हैं, किया जा सकता है। यह मजबूत फिनिश के लिये नहीं होता।

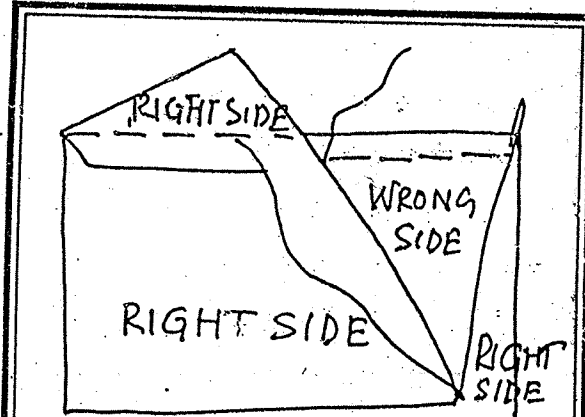
#### फ्रेन्च सीम:-

यह भारी और अपने आप सफाई से होने वाली सीम पतले तथा फ्रेडिंग फैब्रिक और गारमेन्ट पर होती है, जो लान्डरी में या बार-बार धोये जाते हैं। बच्चो के कपड़ो पर टेढ़े आकार को सीधा करने के लिये कट लगाना जरूरी होता है जिससे सीम लाइन पलैट रहे।



फैब्रिक को उल्टी तरफ मिलाकर पिन करें। सीम लाइन को टैक करें। सीम लाइन की चौड़ाई कपड़े की मोटाई और फ्रेइंग की टेन्डेन्सी पर तय होती है। ६ एम. एम. से अधिक नहीं होनी चाहिये। टैकिंग के बराबर सिलाई लगायें तथा इसी पर इस दूरी पर सीम अलाउन्स में सिलाई करें।

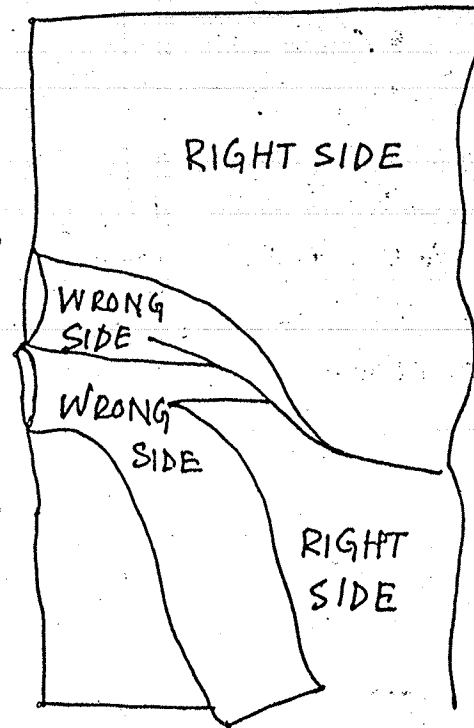
टैकिंग धागा हटा दें और सीम को खोल कर बाद में एक साइड कर प्रेस कर लें। किनारा ट्रिम कर दें लेकिन पतले कपड़े (जैसे नायलॉन) सीम के बहुत पास नहीं होना चाहिये। फैब्रिक उलट लें जिससे दोनों सीधी साइड एक तरफ आ जायें; अपनी अंगुली और अंगूठे से सिलाई रोल कर लें, जिससे जोड़े एकदम किनारे पर हों। सीम लाइन टैक करें और प्रेस कर दें।



सिलाई के खराब किनारे अब सीम में पूरी तरह से मिले होने चाहिए। सीधी और उल्टी ओर दोनों तरफ प्रेस करें। सीम लाइन गारमेन्ट के पीछे की ओर रहेगी।

**मशीन फेल सीम:-**

यह फ्लैट, मजबूत सीम मोटे भारी कपड़ों पर ठीक नहीं रहती। फैब्रिक के सीधे तरफ दो सिलाई लाइनें दिखाई देती हैं। लेकिन इस सिलाई के किसी भी तरफ, सीधा ओर कपड़े की शैली तथा इच्छित फिनिश के अनुसार प्रयोग किया जा सकता है।



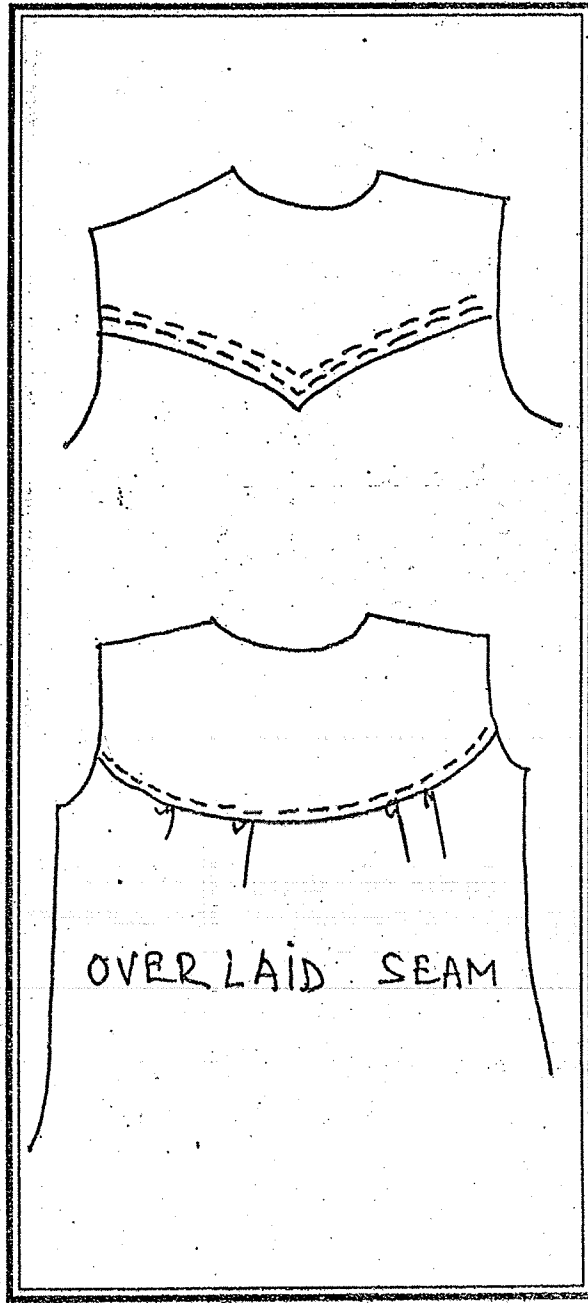
**MACHINE FELL SEAM.**

### ओवर लेड सीम:-

यह सीम आमतौर पर सीधी ओर मशीन से की जाती है। यह यह पूरी तरह सजावटी हो सकती है या फिर जहाँ गैदरिंग की जरूरत हो वहाँ प्रयोग की जा सकती है।

कपड़े के ऊपर के टुकड़े या सादे भाग को उल्टी ओर के नीचे से फिटिंग लाइन पर मोड़े, टैक करें, प्रेस करें तथा इसे दूसरे भाग के ऊपर की ओर फिटिंग लाइन को मिलाते हुए स्थानान्तरित करें।

प्रेस करें तथा जितना सम्भव हो सके, करीब से मशीन चलायें। मशीनिंग के आगे की पक्तियों किनारे से ६ मि० मी० की होनी चाहिए। पीछे की ओर सफाई से कच्चे किनारे की फिनिशिंग करें, या तो ओवर कारस्टिंग द्वारा या फिर जिगजैग सिलाई के द्वारा।



### अभ्यास-

१- पाठ्य मे दिये गये सभी हाथ व मशीन की सिलाइयों के नमूने तैयार करें

### २.४ साराँश:-

वस्त्रों के निर्माण के समय हाथ व मशीन की सिलाइयों की आवश्यकता पड़ती है। धागों तथा सूइयों के चुनाव के अलावा हाथ तथा मशीन की सिलाइयों भी काफी स्पेसिफिक होती हैं तथा वस्त्रों पर आधारित, कपड़ा तथा वह भाग जहाँ सिलाई पूर्ण की

जाती है भी काफी स्पेसीफिक होती है।

विभिन्न प्रकार के हाथ की सिलाईयाँ हैं— टैकिंग, डबल स्टिच टेलर टैकिंग, सिंगल स्टिच टेलर टैकिंग, ट्रेस टैकिंग, इवेन टैकिंग, अन इवेन टैकिंग, ड्रेस मेकर्स टैकिंग, मशीन टैकिंग, स्लिप टैकिंग, डायगोनल टैकिंग, वर्टिकल डायगोनल टैकिंग, रनिंग स्टिच, बैक स्टिचिंग, हाफ बैक स्टिच, छोटी बैक स्टिच, कम्बिनेशन स्टिच, हेमिंग स्लैन्ट, हेमिंग वर्टिकल, स्लिप हेमिंग, स्लिप स्टिच, हेरिंग बोन स्टिच, ओवर कारस्टिंग, ओवर सेविंग, व्हिपिंग या ओवर हैडिंग, लूप स्टिच, बटन होल स्टिच।

विभिन्न प्रकार की सीम हैं— ओपेन सीम, एज् स्टिचिंग, ओवर कारस्टिंग बाई हैन्ड, लूप स्टिच, ओवर कारस्टिंग बाई मशीन, बाइन्डिंग स्टिच, पिकिंग, फ्रेंच सीम, मशीन फेल सीम तथा ओवर लेड सीम।

## २.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ वस्त्र के निर्माण में हाथ की सिलाई का क्या महत्व है?

प्रश्न-२ वर्टिकल तथा स्लान्टिंग हेमिंग में क्या अन्तर है?

प्रश्न-३— स्थाई हाथ की सिलाईयाँ क्या होती हैं?

प्रश्न-४ फ्रेंच सीम क्या है?

प्रश्न-५ हाथ व मशीन द्वारा ओवर कारस्टिंग में क्या अन्तर है?

## २.६ स्वाध्ययन हेतु

१— गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इन साइक्लोपीडिया ऑफ़ नीडिल क्राफ्ट बाई जूडी ब्रिटेन, ईबुरी प्रेस प्रकाशन।

**संरचना**

- ३.१ यूनिट प्रस्तावना
- ३.२ उद्देश्य
- ३.३ ओपनिंग, फेसिंग एवं प्लीट्स
- ३.४ सारांश
- ३.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

३.६ स्वाध्ययन हेतु

**३.१ यूनिट प्रस्तावना:-**

यह यूनिट आपको वस्त्र में ओपनिंग बनाने के तरीकों को, किनारे के फिनिश के साथ सिखाता है तथा वस्त्र में प्लीट्स कैसे डालते हैं के बारे में भी सिखाता है।

**३.२ उद्देश्य:-**

कपड़ों की सिलाई में ओपनिंग, फेसिंग एवं प्लीट्स बहुत ही महत्वपूर्ण पक्ष हैं तथा इनकी अच्छी फिनिश ही किसी गारमेन्ट के अच्छे या खराब होने का मापदण्ड है। यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार के ओपनिंग गारमेन्ट में कैसे लगाये जाते हैं तथा इनमें पाइपिंग, फेसिंग और प्लीट्स कैसे डाले जाते हैं के बारे में भी बतायेगा।

**३.३ ओपनिंग, फेसिंग एवं प्लीट्स:-**

**फेसिंग:-**

**उद्देश्य:-** फेसिंग कपड़े के किनारे से फिनिशिंग करने की एक विधि है। फेसिंग शोप में एक किनारा ठीक उसी तरह काटा जाता है जैसा की सामने का किनारा होता है और यह लगभग ५ से ७.५ से०मी० (२ ये ३ इंच) चौड़ा होता है।

फेसिंग को सीधी तरफ रखकर सिलाई कर उल्टी तरफ मोड़ा जाता है और उल्टी तरफ रखकर सीधे तरफ मोड़ कर हैकिंग की जा सकती है। यह एक ही तरफ



दिखाई देती है सीधी तरफ या उल्टी तरफ। फेसिंग का आकार उसी ग्रेन से काटना चाहिए जैसे यह वस्त्र के सामने से दिखने वाला भाग हो।

केवल साधारण गोल-गले की फेसिंग के बारे में यहाँ बताया जा रहा है। स्लैस्ड, चौकोर तथा वी-गले की फेसिंग के बारे में आगे पाठ्य में बताया जायेगा।

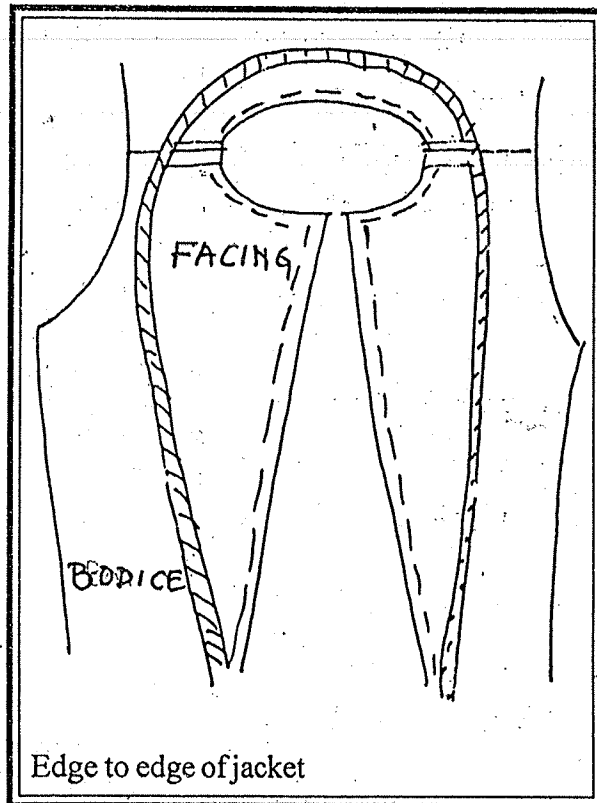
प्रयोग होने वाला समान:- फेसिंग कपड़े के ही रंग की हो सकती है, तथा एक ही प्रकार के कपड़े के लिए यह अलग रंग की भी हो सकती है (यदि इसका प्रयोग सीधी तरफ सजावट के लिए किया जाता है), या एक हल्के वजन के कपड़े में (जैसे लिनिंग, लॉन, नेट, नायलॉन ट्राईकोट)। रिबन, बाएस बाइन्डिंग, टेप या ब्रेड भी प्रयोग किये जा सकते हैं।

फेसिंग कालर के साथ या बिना कालर के भी लगाई जा सकती है।

**शेपड फेसिंग:-** इस तरह की फेसिंग गले, मुडड़े, आर्म होल, सामने की खुलने वाली जगह और शेपड (जैसे स्कैलोपड) हेम में भी जाती है। यदि अल्टरेशन वस्त्र के फिटिंग किनारे से हुआ है, जो सामने हो, तो फेसिंग मिलान से अल्टर होने चाहिए। यदि फेसिंग एक भाग से ज्यादा नहीं है (जैसे सामने और पीछे के गले की फेसिंग), तो इसे उस किनारे पर पड़ा रहने दें जो इससे जुड़े हैं, स्टिचिंग लाइन जो कपड़े पर दर्शाने के लिए हैं को निशान लगायें तथा टुकड़ों को मशीन करें।

#### नीटनिंग:-

बिना लाइन के गारमेन्ट में, फेसिंग के बिना जुड़े हुए किनारे को नीटनिंग की जरूरत होगी। यह गारमेन्ट से फेसिंग जोड़ने से पूर्व करना आसान होता है। प्लेन सीम की फिनिशिंग के लिए पहले से ही दिये गये कोई भी तैयार कपड़े प्रयोग किये जा सकते हैं, एज स्टिचिंग जो कि सामान्य रूप से ऐप्लाई की जा सकती है।



## अटैचिंग:-

फैसिंग को कपड़े पर सीधी ओर एक साथ, कपड़े के कच्चे किनारों, सीम इत्यादि को मिलाते हुए लगायें। तब इसे उस स्थान पर टैक करें तथा मशीन लगायें। यह स्टेज जो एक एज-टू-एज जैकेट के बोडिस के सामने तथा पीछे के स्थान पर सिले गये हैं को इलस्ट्रेट करता है।

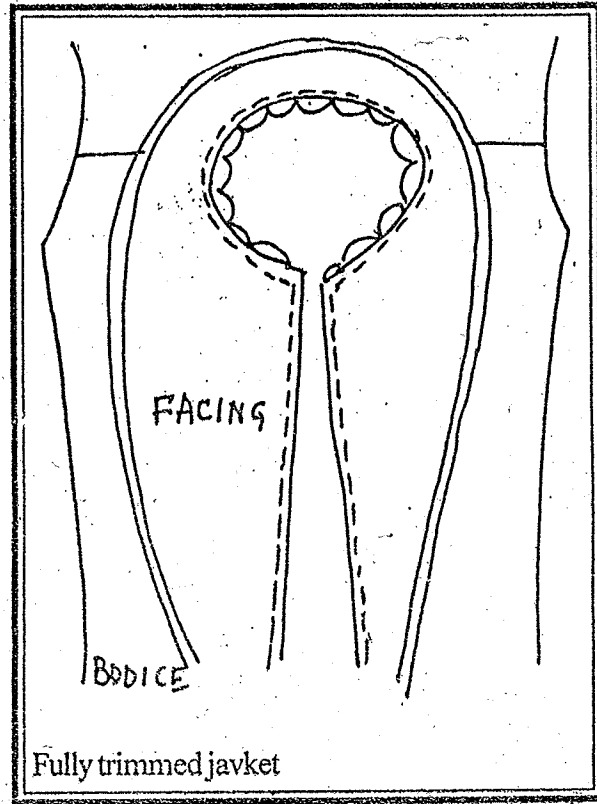
## ट्रिमिंग और लेयरिंग:-

गारमेन्ट में फैसिंग को उल्टी ओर मोड़ने से पहले आपको ट्रिम करने की जरूरत होगी तथा बुल्की फिनिश से बचने के लिए सावधानी पूर्वक क्रमशः इसे परतों में लगाना होगा। इसे निम्नवत किया जा सकता है।

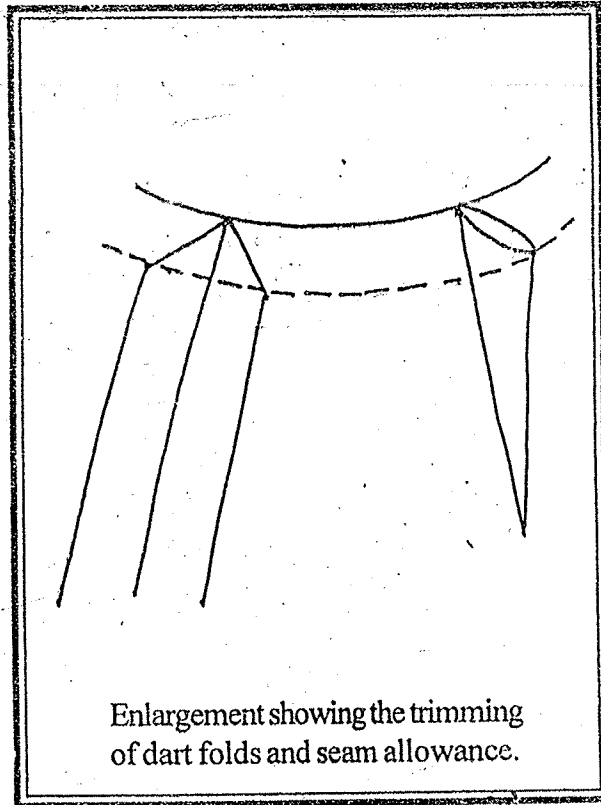
१- यदि इन्टरफैसिंग वस्त्र के सिलाई में ली गई है तब सिलाई के पास से उसे काटकर एक बराबर करना चाहिये।

२- फैसिंग काटकर ६ मि०मी० या १/४ इंच या उससे कम रखनी चाहिये। यह कपड़े पर निर्भर करता है कि कितने धागे निकलते हैं।

३- गारमेन्ट के किनारे को १० मि०मी० व ६ मि०मी० (३/८ व १/४ इंच) रख कर काट लें। यह कपड़े के धागे निकलने पर निर्भर करता है।



Fully trimmed javket



Enlargement showing the trimming of dart folds and seam allowance.

४- कार्नर पर टेढ़ा कट लगायें।

५- डार्ट के फोल्ड को टेढ़ा, सीम अलाउन्स के ऊपर जहाँ-जहाँ कपड़े का फोल्ड आये उसे वहाँ से काट दें।

६- मुड़े किनारों पर नीचे की ओर कट लगा दें, किनारे की दूरी १३ मि०मी० (१/२ इंच) होनी चाहिए।

आर्महोल नीचे कटे गले पर फेसिंग को मोड़ पर रखकर टैक कर दें, प्रेस कर लें। गारमेन्ट के मोड़ और फेसिंग को मिलाकर सीम लाइन से ३ मि०मी० पर एक मशीन लगायें। इससे फेसिंग सीधी तरफ नहीं मुड़ेगी, विशेषकर सिंगी फैब्रिक पर।

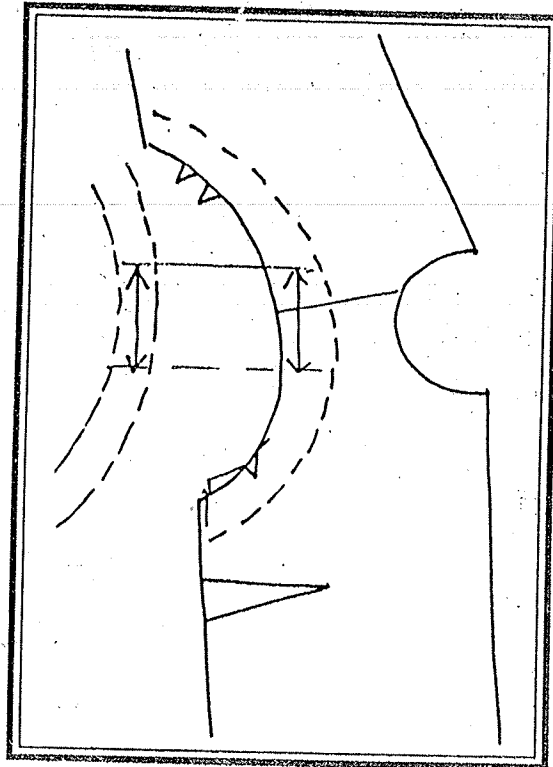
#### फिनिशिंग:-

फेसिंग को उल्टी ओर पलट दें। फेसिंग को उल्टी ओर थोड़ा खींचते हुए ३ मि०मी० (१/८ इंच) पर टैकिंग कर लें। बिना खींचे प्रेस कर लें। फेसिंग को नीचे हेम कर लें जहाँ यह सीम को काटती है। यदि जिप लगाई गई है, तब जिप के किनारे मोड़ कर फेसिंग के साथ फिनिशिंग कर दें।

#### गारमेन्ट या पैटर्न से शेपड फेसिंग काटना:-

यह कभी-कभी नेकलाइन के आकार को पलटने के लिए डिजाइरबिल होता है, या तो पैटर्न पर या जब गारमेन्ट आधा तथा पूरा बना हो, अतः उस स्थिति में एक नया पैटर्न फेसिंग के लिए आवश्यक हो सकता है। इसे बनाने के लिए नीचे दिये गये तरीकों का अनुसरण करें।

नई नेकलाइन ठीक से स्पष्ट बनायें तथा इसे पेपर पर ध्यानपूर्वक ट्रेस करें, आकार को एकदम ठीक तरह से दर्शाते हुए। नीचे की ओर ६.५ से०मी० (२ १/२

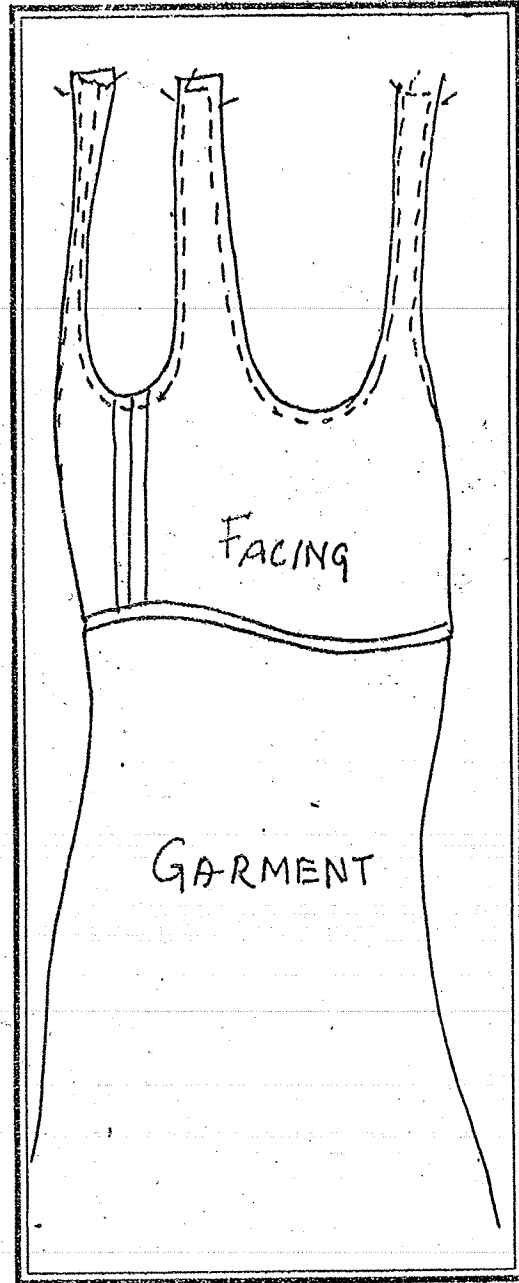


इंच) ट्रेसड नेकलाइन से कुछ बिन्दुओं पर निशान लगा दें, तथा इन बिन्दुओं को नेकलाइन के कर्व को दर्शाने के लिए जोड़े। सीम अलाउन्स (उसी चौड़ाई की जैसी गारमेन्ट पर है) नीचे तथा ऊपर व अन्तिम किनारे से जोड़े। ग्रेन लाइन को सावधानी पूर्वक निशान लगायें, यह ध्यान रखते हुए कि इसे इसे वस्त्र के ठीक उसी भाग की तरह होना चाहिए जिसके लिए फेसिंग इन्टेन्डेड की गई है।

आर्महोल के लिए पैटर्न भी ठीक इसी प्रकार बनाया जा सकता है। यदि आप बिना आस्तीन वाले ड्रेस में आस्तीन बनाना चाहते हैं तो यह याद रखें कि नीचे की सिलाई की लाइन बोडिस के निचले आर्म पर स्लाइटली होनी चाहिए।

आर्महोल की फेसिंग को बॉह के नीचे की सीम के साथ काटा जा सकता है तथा कंधे पर सीम एलाउन्स की स्थिति में नेक लाइन के लिए बताये गये तरीके के अनुसार किया जा सकता है। हालाँकि आस्तीन की फेसिंग अक्सर एक टुकड़े में केवल बॉह के नीचे सीम के साथ काटी जाती है। इस विधि के लिए पैटर्न या वस्त्र को एक साथ कंधे पर सही सिलाई के लाइन से जोड़े। आर्महोल की आउट लाइन को एक पेपर पर ट्रेस कर लें तथा नेक लाइन के लिए आगे बढ़ायें। इस प्रकार के एक पीस फेसिंग के लिए पीछे के बोडिस तथा सामने के बोडिस दोनों में ग्रेन लाइन रखना असम्भव है। नियम यह है कि ग्रेन लाइन सामने के बोडिस से ली जानी चाहिए।

आर्म होल एवं नेक लाइन फेसिंग को एक साथ जोड़े:-



बिना आस्तीन वाली शैली में चौड़े गले के साथ नैरा शोल्डर्स पाने के लिए, कभी-कभी कम्बाइन्ड नेक तथा आर्महोल फेसिंग का प्रयोग कन्धे पर बल्क से बचने के लिए किया जाता है। क्योंकि उल्टे ओर से फेसिंग को पलटना असम्भव होता है, यदि यह पूरी तरह नेक लाइन से जुड़ा हो तथा सीधी ओर आर्महोल हो, तो एक विशेष प्रकार की सिलाई ट्रिटमेन्ट की जरूरत होती है जैसा की नीचे की सूची में दी गई है। (इसे सफलतापूर्वक करने के लिए यह सलाह दी जाती है कि सभी सीम अलाउन्स को ट्रेस टैक कर लें)।

१- वस्त्र के अन्दर आर्म सीम को मिलाकर सिलाई करें, ट्रिम करें तथा प्रेस कर लें।

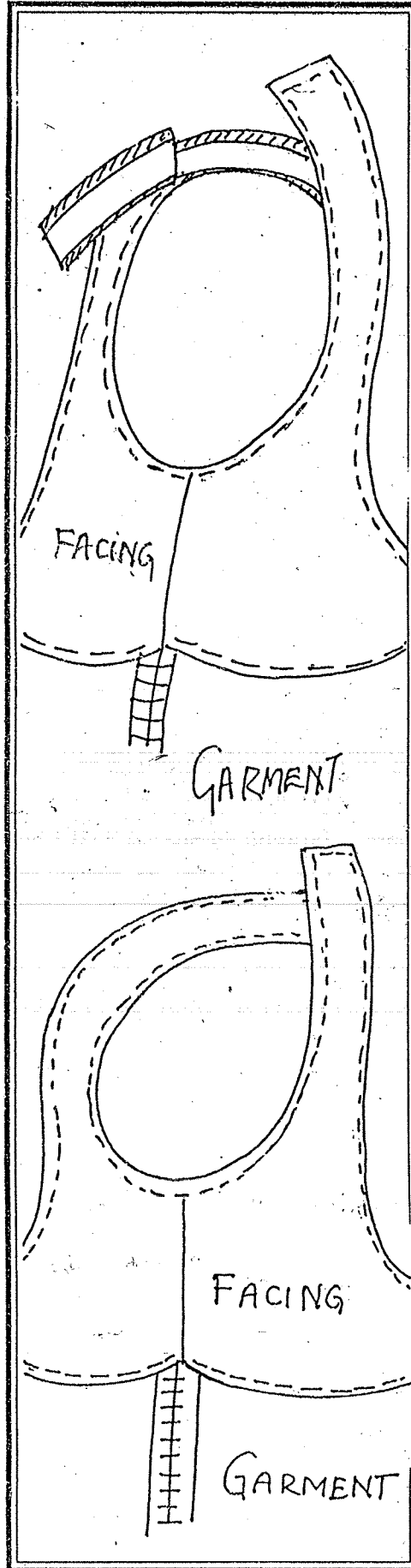
२- अन्दर आर्म सीम फेसिंग के साथ सिलाई करें। फालतू कपड़ा काट दें, खोलकर प्रेस करें।

३- गारमेन्ट तथा फेसिंग दोनों के कन्धे की सिलाई को खुला छोड़ दें।

४- नीचे की तरफ की फेसिंग जो सिली नहीं गई है उसे सफाई कर दें।

५- फेसिंग को गारमेन्ट की सीधी तरफ एक साथ रखें।

६- गारमेन्ट को आर्महोल तथा नेक फेसिंग के साथ टैक कर लें। २.५ से०मी० (१ इंच) कन्धे की सीम लाइन से नीचे रोक दें।



७- ट्रिम करके फेसिंग को उल्टी ~~रख~~ ~~कर~~ ~~लें~~।

८- नेक लाइन तथा आर्म होल में जहाँ तक बशीन कर ली है, टैक कर लें।

९- कन्धे के टुकड़ों को सीधी तरफ रखकर साथ में टैक कर लें। मशीन से कन्धे की सीम लाइन सिलाई कर लें। ट्रिम करके प्रेस करें।

१०- गारमेन्ट में बचे हुए आर्महोल के हिस्से की सीम लाइन एलाउन्स को टैक करें, ट्रिम करके प्रेस करें।

११- आर्महोल में सीम अलाउन्स फेसिंग पर बिल्कुल सिलाई लाइन के अन्दर की ओर मोड़े, टैक करें, ट्रिम करें तथा प्रेस करें।

१२- कन्धे के पिछले फेसिंग को कन्धे के सीम अलाउन्सेस से ट्रिम करें।

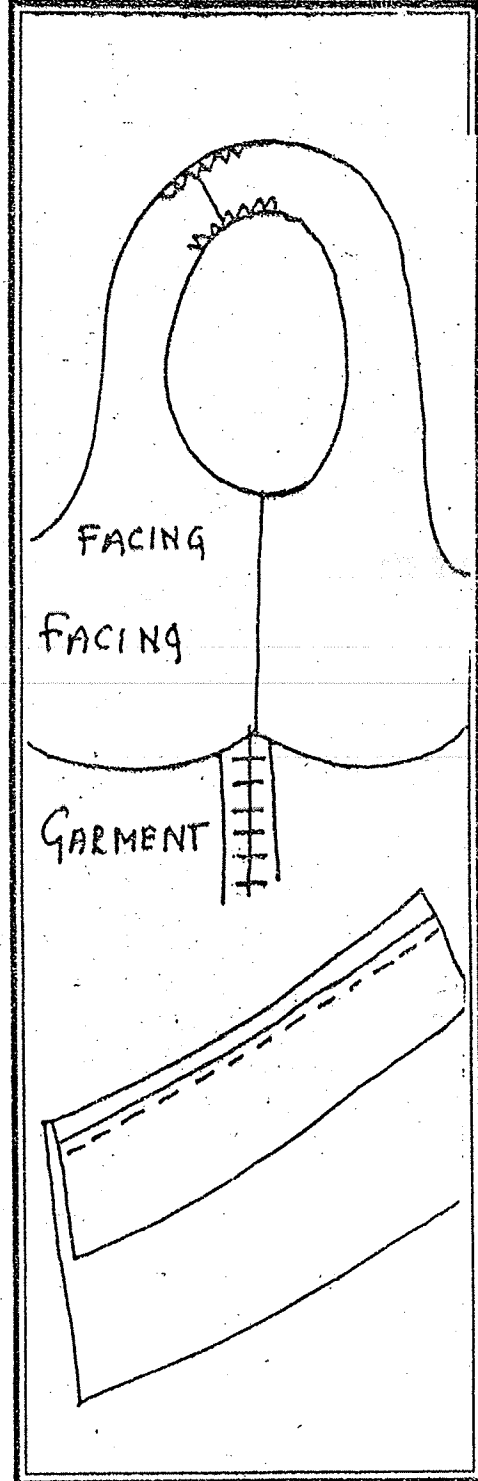
१३- आर्महोल की पीछे की फेसिंग को टैक करें तथा गारमेन्ट के फेसिंग के किनारों को हेम करें।

१४- भोड़े तथा सामने के कन्धे की सीम अलाउन्स पर टैक करें, ट्रिम करें तथा प्रेस करें। नीचे की ओर टैक करें तथा गारमेन्ट को हेम करें।

#### कन्धे फेसिंग:-

इनका प्रयोग नेकलाइन या आर्महोल पर या हेम पर हो सकता है तथा सही बॉयस पर कटना चाहिए। (निर्देश के लिए कैसे काटें तथा बॉयस पर कैसे जोड़े), आगे बताया गया है।

आर्म होल तथा गले के लिए ३.२



से०मी० (१ १/४ इंच) की पट्टी काटी जाती है तथा जिस लाइन को फेंस करना है उस पर सीधी तरफ पट्टी रख कर टैक कर दें। ट्रिम करके फालतू कपड़ा काट दें तथा उल्टी तरफ मोड़े। पट्टी की दूसरी तरफ से मोड़ लें, टैक करें तथा वस्त्र के हिस्से से हेम को स्लिप करें। अन्तिम चौड़ाई २ से०मी० (३/४ इंच) से ज्यादा नहीं होनी चाहिए तथा फेसिंग वस्त्र की सीधी ओर से दिखाई नहीं देनी चाहिए।

फाल्स फेसिंग अर्थात् ऐसी फेसिंग जिसकी सिलाई दिखाई न दे। इसके लिए ६.५ से०मी० (२ १/२ इंच) चौड़ी पट्टी तिरछी काटनी है। लम्बाई में यदि जरूरत हो तब जोड़ लग सकता है। गारमैन्ट में सीधी तरफ हेम लाइन नीचे ३ मि०मी० (१/८ इंच) पर निशान लगाकर उस पर रख कर टैक करें। उल्टी तरफ मोड़े। फोल्ड के पास टॉके लगायें और प्रेस करें। कटी तरफ पट्टी को मोड़कर टैक करें, गारमैन्ट पर हेम करके प्रेस कर दें।

**बाइन्डिंग:-**

**उद्देश्य:-**

खुले किनारे पर बाइन्डिंग लगाने से बहुत मजबूत हो जाती है और अच्छी व साफ फिनिश आती है। बाइन्डिंग गारमैन्ट के कपड़े से भी काटी जा सकती है और सजावटी बाइन्डिंग साटिन, ऊन या अलग रंग की भी लगाई जा सकती है।

गारमैन्ट के उल्टी तरफ, सीम जो कपड़े की एक परत को अच्छी फिनिश के लिए लगाया जाता है। दो परतों को जोड़ने के लिए और उनकी फिनिशिंग के लिए आर्महोल तथा ओपनिंग और किनारों पर भी प्रयोग होता है। बाइन्डिंग, एक परत जहाँ मोटा करने की जरूरत हो वहाँ डबल भी लगती है। इसे अन्दर तथा बाहर की ओर घुमाव तथा सीधी लाइन पर लगाया जाता है।

अच्छी बाइन्डिंग के लिए यह जरूरी है कि आप पट्टी सफाई से काटें और ध्यानपूर्वक लगायें। सजावटी बाइन्डिंग के लिए पतली मोड़े, जितना आपका कपड़ा सह सके।

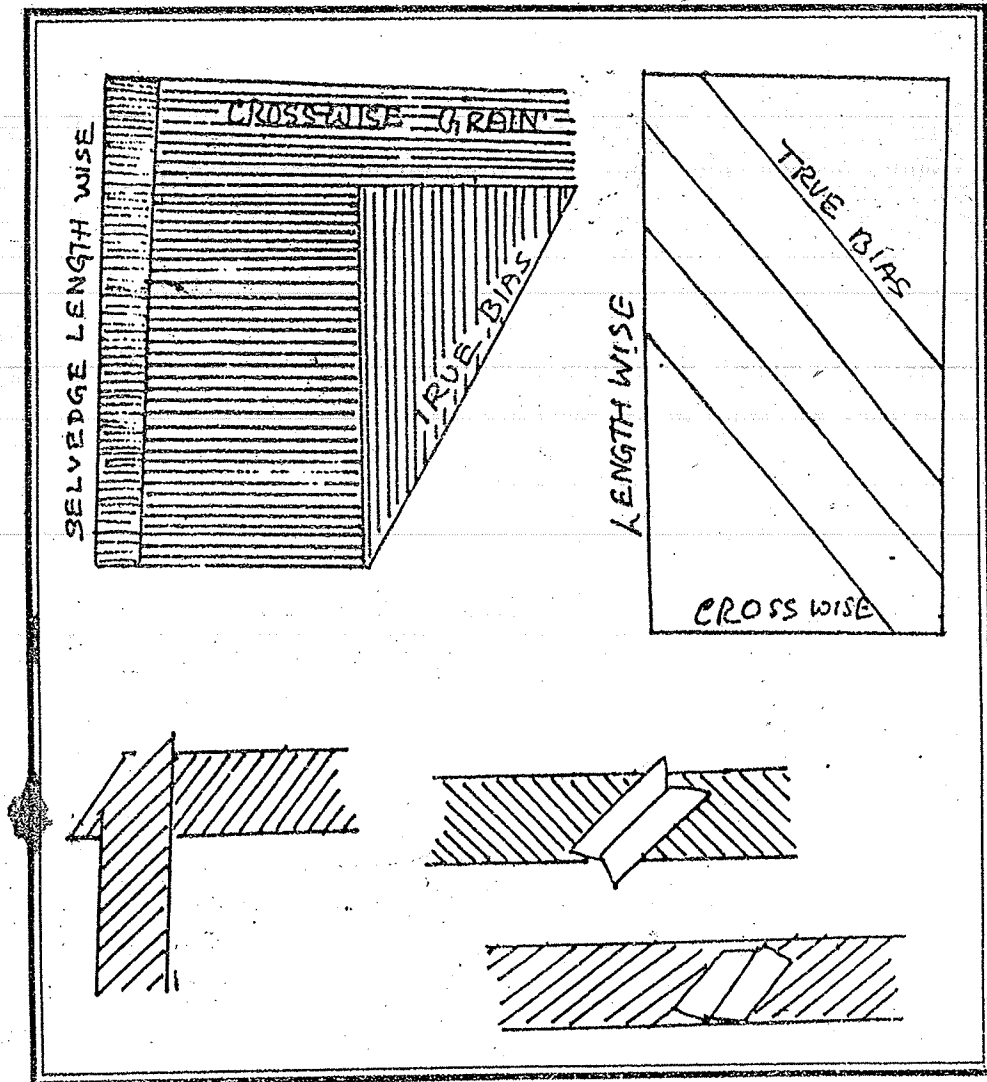
**बाइन्डिंग को काटना एवं जोड़ना:-**

इसे सदा एकदम तिरछा काटना चाहिये। इसके लिये एक चोखटा कपड़ा लें और एक कोने से सामने के कोने तक मोड़ लें। कोने मोड़ से सही माने में तिरछी बाइन्डिंग आती है। नये विद्यार्थी का कपड़ा सेल्वेज वाला ले लेना चाहिये। लम्बाई के

किनारे सेल्वेज पर रखते हुए, किनारा मिलाकर रखें। इस लाइन पर पूरे में पिन लगा लें, खोलकर रखें और टेलर चाक से जितनी चौड़ी पट्टी चाहिये उस पर निशान लगा लें। दोनों निशानों पर पट्टी काट लें।

लम्बी पट्टी बनाने के लिए कभी-कभी जोड़ भी लगाना पड़ता है। इसे एक या तो लम्बाई की ग्रेन में या फिर क्रॉस वाइस ग्रेन में सीधे धागे से जोड़ना चाहिए। पट्टियों को सीधी ओर एक साथ सीधे धागे को मिलाते हुए रखें, इस प्रकार पट्टियाँ सीधे एंगिल पर दूसरे को पकड़ेगी। कोनों को प्रत्येक छोरों पर बढ़ने दें क्योंकि पट्टियों की पूरी चौड़ाई में जोड़ सकते हैं। एक कोने से दूसरे कोने को टैक करें फिर मशीन चलायें। सीम को खोलकर प्रेस करें, तथा ट्रिम को सीम अलाउन्स से दूर खें जहाँ वे पट्टी की चौड़ाई से आगे बढ़े। जोड़ को फिनिश दें।

वाइन्डिंग को जोड़ना:-





बाइन्डिंग को मशीन तथा हेमिंग के द्वारा पूरी तरह मशीन की सिलाई से या फिर मशीन पर एक बाइन्डिंग जोड़ के साथ जोड़ा जा सकता है, लेकिन याद रखें की कुछ मशीन बाइन्डर अच्छे फैब्रिक के साथ काम नहीं करेंगे।

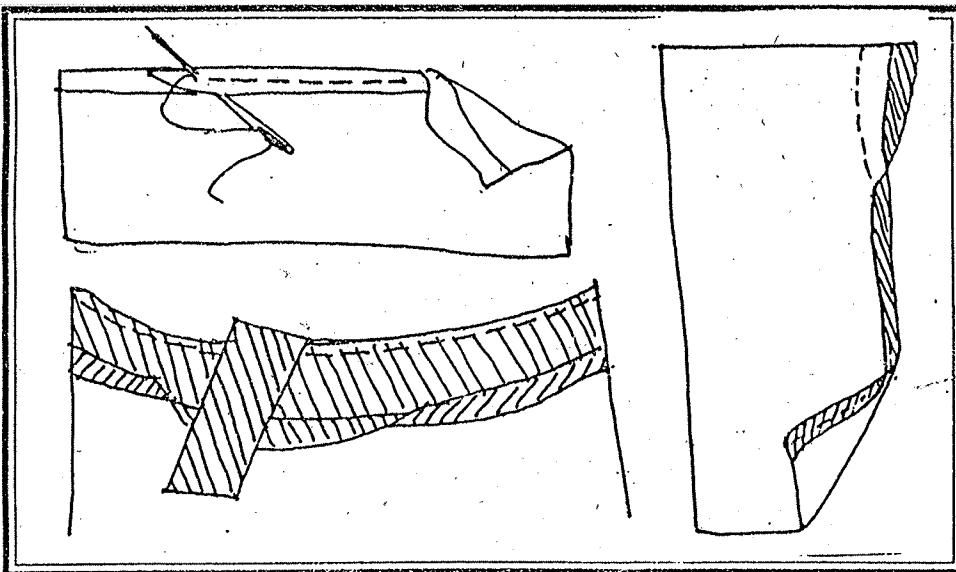
#### मैचनिंग तथा हेमिंग:-

जब बाइन्डिंग को गारमेन्ट के सीधी ओर से जोड़ना हो (जैसे एक नेक लाइन) तो इसे फिटिंग लाइन से सीधी ओर एक साथ, बाइन्डिंग को स्लाइटली स्ट्रेचिंग करते हुए टैक करें, तथा मशीन करें। बॉयस तथा सीम अलाउन्सेस को अन्तिम ऐच्छिक बाउन्ड के चौड़ाई के किनारों से ट्रिम करें। बॉयस को उल्टी ओर से मोड़े, अन्दर की ओर मोड़े (यदि जरूरी हो तो ट्रिमिंग करें), तथा मशीन की सिलाई में पूर्व के पाठ्य में वर्णित वर्णन की तरह हेमिंग स्लैन्ट का प्रयोग करते हुए टैक करें।

#### सरकुलर बाइन्डिंग जोड़ना:-

जब गोल आकार के कटे हुए कपड़े पर एक पट्टी जोड़ी जाती है (उदाहरणार्थ— मुडढ़े पर) तब पट्टी में जोड़ जहाँ वह मिलते हैं, सीधा लगाया जाता है, जहाँ पर पट्टी को जोड़ना है वहाँ पर २ इंच अतिरिक्त पट्टी छोड़नी चाहिए। मुडढ़े में यह जोड़ बगल में आता है जहाँ पर जोड़ सबसे कम दिखाई पड़ता है। अन्दर मोड़े तथा एक ६ मि०मी० या (१/४ इंच) किनारी को मिलायें तथा सीधी ओर भी क्रीज करें। क्रीज वाली रेखाओं पर दोनो तरफ टॉका लगायें, मशीन चलायें, ट्रिम करें और खोलकर प्रेस करें। पट्टी को यथा स्थान टॉककर खत्म करें तथा पिछले भाग में दिए गये निर्देशानुसार प्रक्रिया पूर्ण करें।

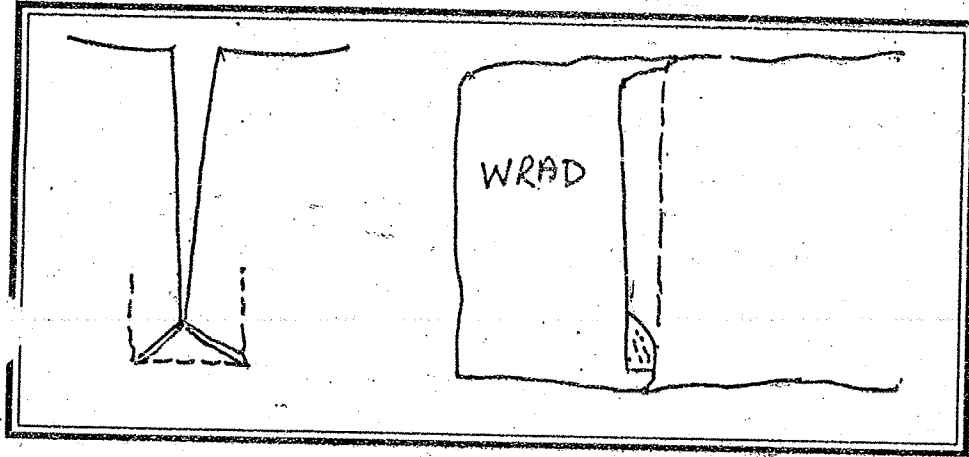
#### सारी बाइन्डिंग मशीन से लगाना:-



जब बाइन्डिंग को टैकिंग अर्थात कच्चा टॉके तब ज्यादा कपड़ा छोड़े जिससे उल्टी तरफ मोड़ने पर, दूसरे किनारे मोड़ने के बाद इतना रहें कि पहली सिलाई को ढक लें। हेमिंग के लिए सिलाई तक कपड़ा रहता है उसी पर हेमिंग की जाती है।

कच्चे पर मशीन कर लें तथा जैसा कि हेम बाइन्डिंग के लिए बताया गया है उसी प्रकार मोड़े, लेकिन बाइन्डिंग को उल्टी ओर पर इसके किनारे से मशीन की सिलाई को ढकने के लिए नीचे की ओर टैक करें। इसी किनारे पर मशीन लगायें।

**ओपनिंग:-**



**ओपनिंग के प्रकार:-**

ओपनिंग हर प्रकार के गारमेन्ट में होती है, तथा वे अन्य गारमेन्ट की अपेक्षा अधिक पहने जाते हैं क्योंकि वे पहनने और उतारने दोनों ही स्थिति में अधिक खिंचाव सहते हैं। अतिरिक्त वीक प्वाइन्ट की ओपनिंग से जहाँ कन्सीडरेबिल स्ट्रेन लिया जाना हो, बचना चाहिए।

ओपनिंग का चुनाव गारमेन्ट की किस्म, वजन, कपड़े की मोटाई तथा कपड़े पर ओपनिंग की स्थिति पर निर्भर करता है तथा यह सजावटी या जितना सम्भव हो सके इनकन्सपिसियस हो सकती है। ओपनिंग वहीं अच्छी होती है जो बाँधने और खोलने में आसानी से हाथ आ जाये। फैशन के हिसाब से आजकल पीछे की ओर लम्बी ओपनिंग गई है जो आसान नहीं होती है, इसमें जिप ही सबसे अच्छा पक्ष है।

ओपनिंग लम्बी होनी चाहिये जिससे वस्तु को आसानी से पहना व निकाला जा सके। कभी-कभी व्यवसायिक गारमेन्ट में ओपनिंग कुछ छोटी होती है अर्थात लम्बी ओपनिंग पीछे की तरफ छोटे कद के लिए। एक स्कर्ट ओपनिंग की लम्बाई का दिशा

निर्देशक है:-

हिप का नाप घटायें तथा कमर का नाप जोड़े  $2\frac{1}{2}$  से  $5$  से०मी० या (१ से २ इंच) ढीला।

ओपनिंग बाँधने के लिये बहुत ही मजबूत होनी चाहिये। सभी बन्धन दोहरे पर या मोटे मैटिरियल पर या कपड़े की एक परत को टेप बाइन्डिंग की एक परत बढ़ाकर या उल्टी ओर इन्टरफेसिंग करके सिली जानी चाहिए। जब ओपनिंग पूरी हो जाये तो फिटिंग लाइन बिल्कुल ठीक नाप की लाइन के ऊपर की ओपनिंग पर होनी चाहिए तथा परिणाम पाने का एक अच्छा तरीका फिटिंग लाइन को स्पष्ट रूप से टेलर टैक या कुछ अन्य मार्किंग विधियों से निशान लगा लेना चाहिए।

एक ही तरह की ओपनिंग गारमेन्ट के किसी भी हिस्से पर की जा सकती है; उदाहरण के लिए, एक वार्प और स्ट्रैप ओपनिंग का प्रयोग एक आस्तीन पर तथा एक ड्रेस के सामने के गले किया जा सकता है। इसी प्रकार फलाई-फ्रन्ट का प्रयोग ड्रेसों तथा जैकेट पर ट्राउजर की तरह ही भली-भाँति किया जा सकता है। इस भाग में दिये गये सभी उदाहरणों में ओपनिंग गारमेन्ट के एक भाग के इलस्ट्रेशन दिए गये हैं लेकिन अन्य उचित सामान्य प्रकार की ओपनिंग के चित्र आगे पाठ में दिए जायेंगे।

वार्प और स्ट्रैप:-

यह ओपनिंग का प्रयोग आस्तीन पर या एक ब्लाउज या ड्रेस की नेकलाइन पर से किया जा सकता है। इस उदाहरण में दिये गये नाप आस्तीन के लिए हैं, एक ब्लाउज या ड्रेस के सामने की ओपनिंग के लिए उनका नाप बढ़ाना पड़ेगा। वार्प तथा स्ट्रैप ओपनिंग भारी और मोटे मैटिरियल में ठीक नहीं रहता है।

१- स्वीव पर ओपनिंग की लम्बाई व स्थान पर निशान लगा लें तथा काट लें। धागे निकलने वाले कपड़े पर, कपड़ा काटने से पूर्व मशीन की सिलाई से कोनों को मजबूत कर लें।

२- ओपनिंग से  $1\frac{1}{4}$  से०मी० या (१/२ इंच) लम्बा वार्प काट लें तथा  $2\frac{1}{2}$  से०मी० या (१ इंच) चौड़ी पट्टी काटें। इसमें  $3/4$  से०मी० या (१/४ इंच) कपड़ा सीम अलाउन्स के लिए रखें।

३- उसी नाप के स्ट्रैप के साथ, ओपनिंग से  $2\frac{1}{2}$  से०मी० या (१ इंच) लम्बा प्वाइन्ट बनाने के लिए काटे।

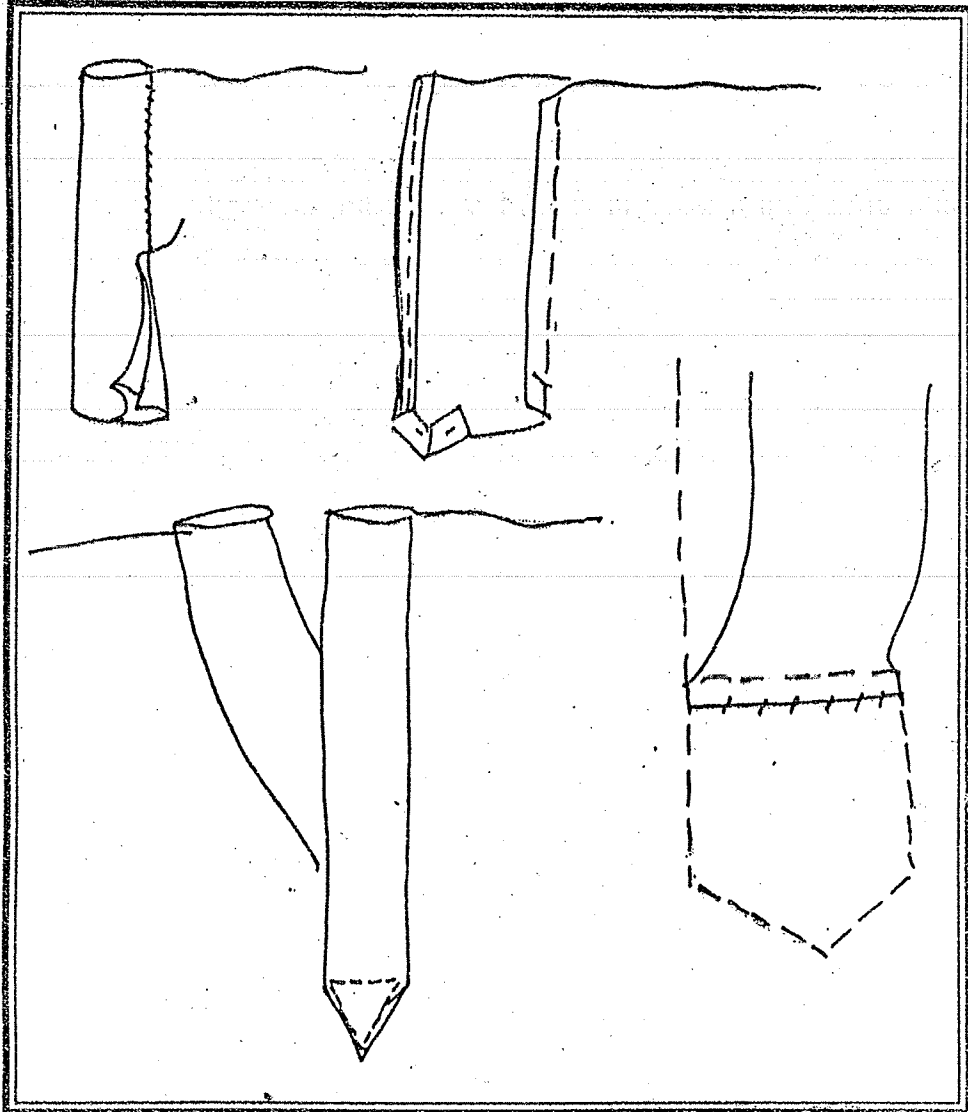
४- ओपनिंग पर सीधी तरफ वार्प के सीधी ओर को टैक करें। मशीन की सिलाई मे हेम करें।

५- ओपनिंग के उल्टी ओर स्ट्रैप के सीधी ओर को टैक करें, तथा मशीन करें। मोडे तथा दूसरे किनारे पर तथा प्वाइन्ट के किनारे पर सीम अलाउन्स को टैक करें।

६- स्ट्रैप को सीधी तरफ उलट लें। टैक किये गये किनारे को मशीन कर लें। वार्प को स्ट्रैप पर चढ़ाते हुए आगे सिलाई द्वारा प्वाइन्ट को गोल करें तथा मशीन की सिलाई की पहली लाइन तक मिला दें।

७- उल्टी तरफ उलटकर कच्चे किनारों को ओपनिंग के नीचे की तरफ हेम कर लें।

निरन्तर स्ट्रिप ओपनिंग:-



इस प्रकार की ओपनिंग स्लीव ब्लाउज या ड्रेस की नेक लाइन में बनाई जाती है। इस उदाहरण में दिये गये भाग आस्तीन के लिए हैं और आपको जहाँ भी इस तरह की ओपनिंग करनी हो उसी हिसाब से नाप बनानी होगी। इस प्रकार की ओपनिंग सूती कपड़े तथा हल्के वजन के कपड़े पर ठीक रहती है।

१- स्लीव पर ओपनिंग की लम्बाई तथा जगह पर निशान लगा लें। धागे निकालने वाले कपड़े पर स्टे स्टिच से  $9/3$  से०मी या ( $9/8$  इंच) से ओपनिंग के दोनों तरफ आखिरी प्वाइन्ट तक पक्का कर लें।

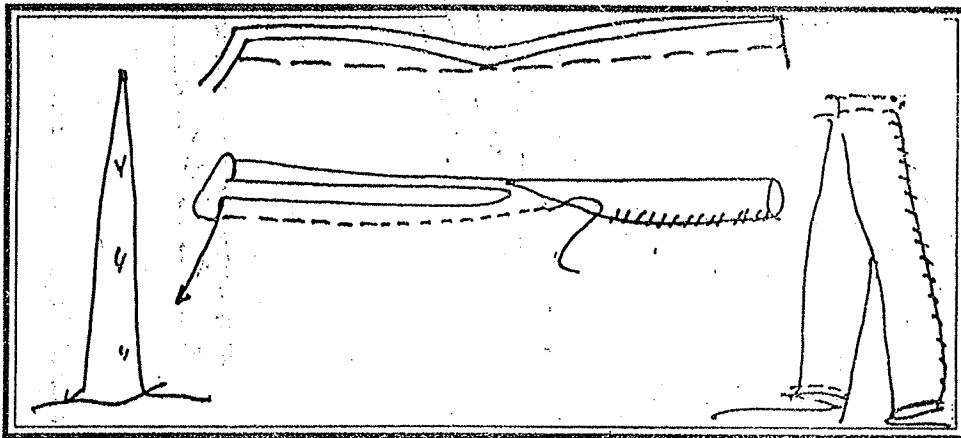
२- एक सीधी ग्रेन में पट्टी तैयार करें। यह बैंड की लम्बाई से दुगुनी तथा तैयार चौड़ाई से दुगुनी हो। इसमें मोड़ने का कपड़ा साथ में लें। यह  $9/2$  से०मी० या (३ इंच) हो।

३- स्लैश तथा सीधी ओर दोनों तरफ एक साथ कपड़ा खोलें, इससे पट्टी को टैक करें,  $9/3$  से  $3/8$  से०मी या ( $9/8$  से  $9/8$  इंच) सीम अलाउन्स (कपड़े पर निर्भर करते हुए) से सीम के किनारे को स्लैश के अन्तिम छोर पर से शुरूआत करें, तथा फिर  $9/3$  व  $3/8$  से०मी० या ( $9/8$  और  $9/8$  इंच) सीम एज के बीच भी यही प्रक्रिया करें तथा मशीन चलायें।

४- टैकिंग के कच्चे धागे निकाल दें, पट्टी को प्रेस कर लें तथा उल्टी ओर पलटें।  $3/8$  से०मी० या ( $9/8$  इंच) सीम अलाउन्स में मोड़े, टैक करें तथा हेमिंग वर्टिकल का प्रयोग करते हुए मशीन की सिलाई में हेम करें।

५- ऊपर चढ़े कपड़े को पीछे मोड़े तथा टैक करें। ओपनिंग के अन्तिम छोर पर, बैंड के किनारे के एक्रॉस ओपनिंग पर स्ट्रेन लेने के लिए मशीन चलायें।

इस निरन्तर पट्टी की ओपनिंग का प्रयोग सीम और स्लैश दोनों तरह किया



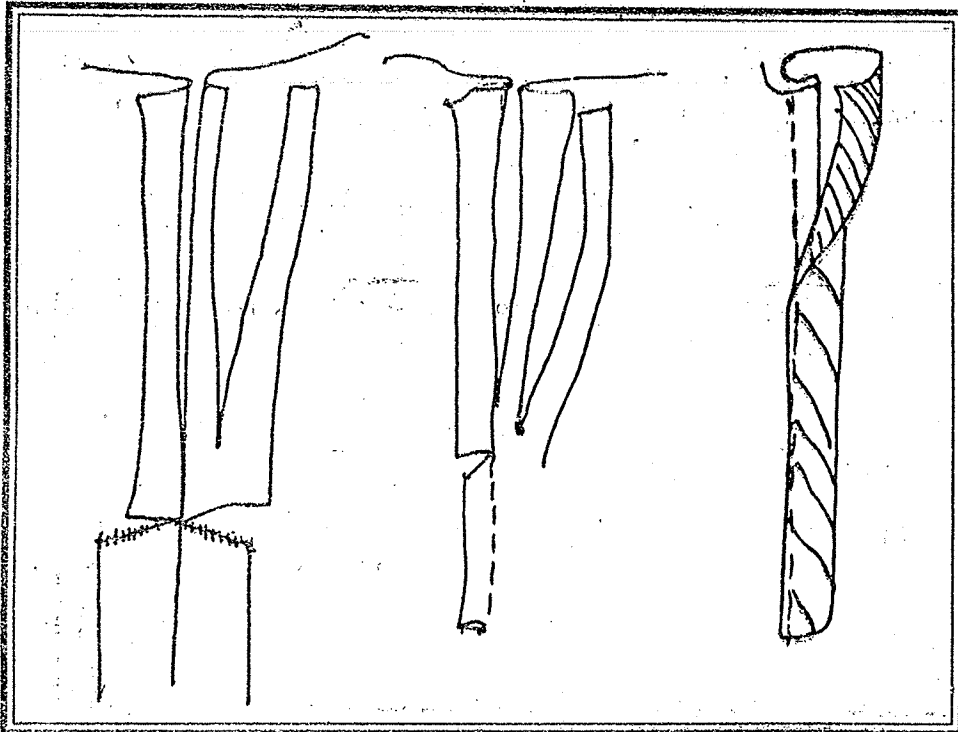
जा सकता है। इस प्रकार की स्थिति में सीम को ओपनिंग के नीचे तक सिलाई लगा लें। आखिरी प्वाइन्ट पर धागे को धीरे से रिवर्सिंग या डार्निंग द्वारा फास्टेन करें। सिलाई को खोलकर प्रेस करें। सीम के अन्त में सीम एलाउन्स को विलप कर दें। इस प्वाइन्ट से ऊपर सीम अलाउन्स को  $3/8$  से०मी० या ( $9/8$  इंच) रखकर ट्रिम कर दें और स्लैश की ही तरह आगे काम करें। विलप किए हुए सीम अलाउन्स के कच्चे किनारे को लूप स्टिच के साथ साफ कर लें। इस ओपनिंग को सादी सिलाई और फ्रेंच सिलाई में भी किया जा सकता है।

#### बाउन्ड ओपनिंग:-

इसका प्रयोग आस्तीन पर या नेकलाइन पर किया जा सकता है। आस्तीन को एक कफ से फिनिश किया जा सकता है तथा नेकलाइन को एक कॉलर के साथ; अतः पट्टी को निरन्तर आस्तीन या नेकलाइन के गोल किनारे के साथ किया जा सकता है। इस प्रकार की फिनिश पतले तथा पारदर्शी कपड़ों के लिए ठीक रहती है, तथा सजावट के रूप में अलग रंग के कपड़ों के साथ भी प्रयोग की जा सकती है।

१- ओपनिंग से दुगुनी लम्बी करीब २ से०मी० या ( $3/8$  इंच) चौड़ी क्रॉसवाइस अर्थात् तिरछी पट्टी तैयार करें।

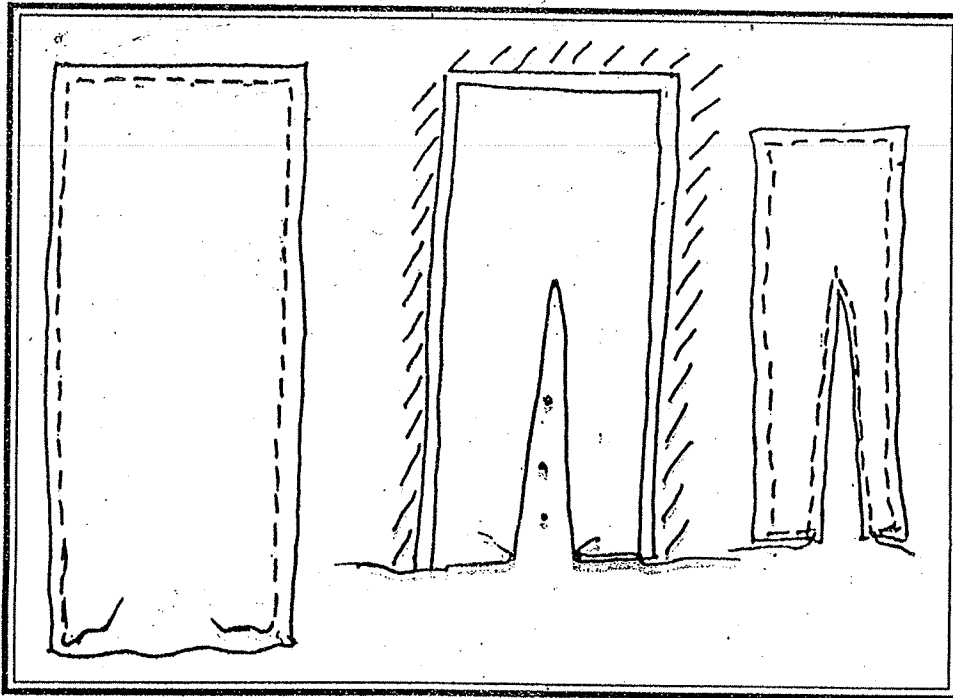
२- १, ३ और ४ स्टेप का प्रयोग निरन्तर पट्टी के लिए करें, लेकिन स्टेप ५ को छोड़कर स्लैन्ट हेमिंग करें, वर्टीकल हेमिंग नहीं।



## फेरुड रिलट ओपनिंग:-

इस ओपनिंग का प्रयोग स्लीव या नेकलाइन पर किया जा सकता है, नेकलाइन को ठीक से दिखाने के लिए फेरिंग बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार की फिनिशिंग ऊनी तथा भारी कपड़ों के लिए ठीक होती है, लाइनिंग या हल्के वजन के कपड़े के एक टुकड़े का प्रयोग फेरिंग पीस के लिए होता है।

- १- ओपनिंग की लम्बाई तथा स्थान पर निशान लगायें।
- २- ओपनिंग से  $9/2$  से०मी० या (१ इंच) लम्बी एवं ५ से ७  $9/2$  से०मी० या (२ से ३ इंच) चौड़ी आस्तीन के लिए फेरिंग काटें।
- ३- दोनों लम्बी ओर तथा एक छोटी ओर थोड़ा नैरो मोड़े तथा एज स्टिच करें।
- ४- ओपनिंग के ऊपर से जहाँ निशान लगाया है उस पर सीधी ओर एक साथ ग्रेन को मिलाते हुए फेरिंग के बीच का हिस्सा रखें। टैक कर लें, ओपनिंग के अन्त से सीम के किनारे  $3/8$  से०मी या ( $9/8$  इंच) सिलाई कर दें, लेकिन इसका प्वाइन्ट सीधा रहेगा।
- ५- प्वाइन्ट के अन्त तक स्लैश अर्थात काट लें। फेरिंग को उल्टी तरफ मोड़ लें। यदि जरूरी हो तो नीचे की तरफ टाका लगा लें। यदि आवश्यक हो तो ओपनिंग को एज स्टिच किया जा सकता है।



## प्लीटस:-

कपड़े के फोल्ड ही प्लीट्स होते हैं जो गारमेन्ट को फुलनेस देने के लिए बनाये जाते हैं। इनका प्रयोग सजावट के लिए भी किया जा सकता है, लेकिन इनका यह ऐस्पेक्ट बाद में विस्तार से किया जायेगा।

प्लीट्स प्रेस या बिना प्रेस, नैरो या चौड़े, सीधे या शेड वाले हो सकते हैं। प्लीट्स लगाने के बाद नीचे तक लटके रह सकते या स्टिच किये जा सकते हैं, या तो वस्त्र के उल्टी ओर न दिखने वाले, या सीधी तरफ सिलाई वाले हो सकते हैं।

जिन कपड़ों पर अच्छी क्रीज बनती है उसी कपड़े पर प्लीट्स को प्रेस करना चाहिए। यदि आपको शक है तब एक कपड़े का टुकड़ा लेकर गीला कपड़ा डालकर गर्म आयरन से प्रेस कर दें। जो कपड़े अच्छी तरह ड्रेप होते हैं उनमें प्लीट्स कम ही अच्छी पड़ती हैं। यदि इस तरह के कपड़े पर प्लीट्स चाहिये तब उन्हें खुला छोड़ देना चाहिए।

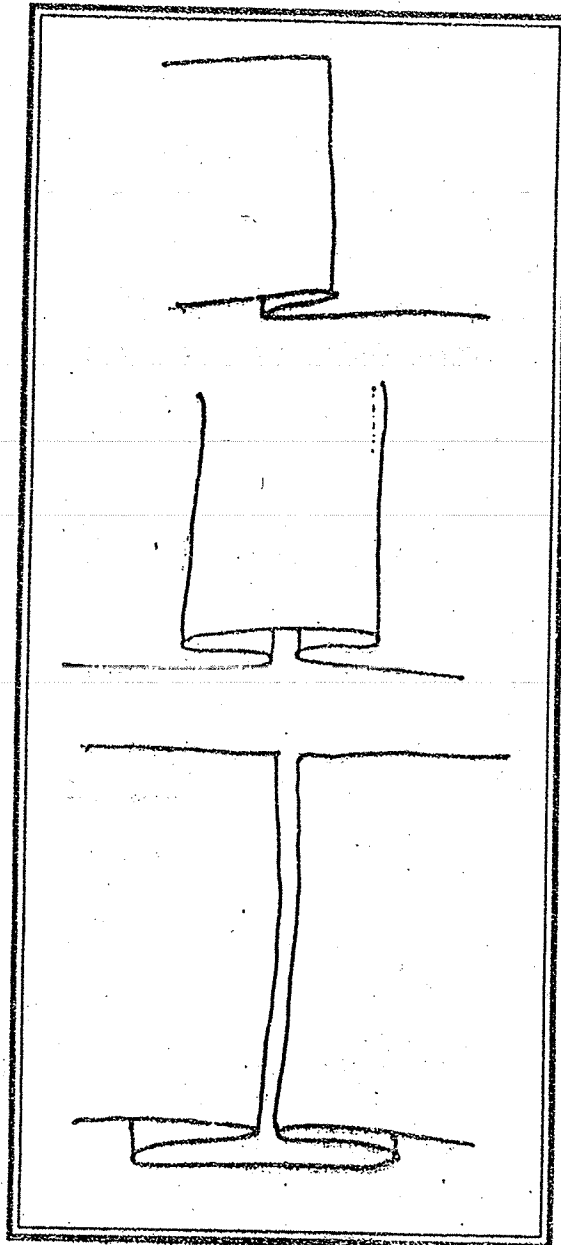
आजकल प्लीटेड कपड़ा बाजार में मिलता है। कुछ फर्म ड्रेस की जरूरत के हिसाब से प्लीट मार्क कर देती हैं।

### प्लीट्स की किस्में:-

**नाइफ प्लीट:-** प्लीट एक ही तरफ फोल्ड की जाती है। इसका प्रयोग एकहरा या ग्रुप में या स्कर्ट के चारों ओर कर सकते हैं।

**बाक्स प्लीट:-** दो प्लीटों को एक दूसरे से दूर फोल्ड करके बनाई जाती हैं। यह पूरी गहरी या कम गहरी भी हो सकती हैं।

**इन्वर्टेड प्लीट:-** एक दूसरे की ओर दो प्लीट को फोल्ड करके बनाया जाता है।





### स्ट्रेट इन्वर्टेड प्लीट विद् अन्डर

ले:- इसमे कपड़े की एक परत को उल्टी तरफ तथा एक नीचे पड़ी फोल्डेड होती है, या पीछे का टुकड़ा जहाँ प्लीट खुलती है टैक किया होता है।

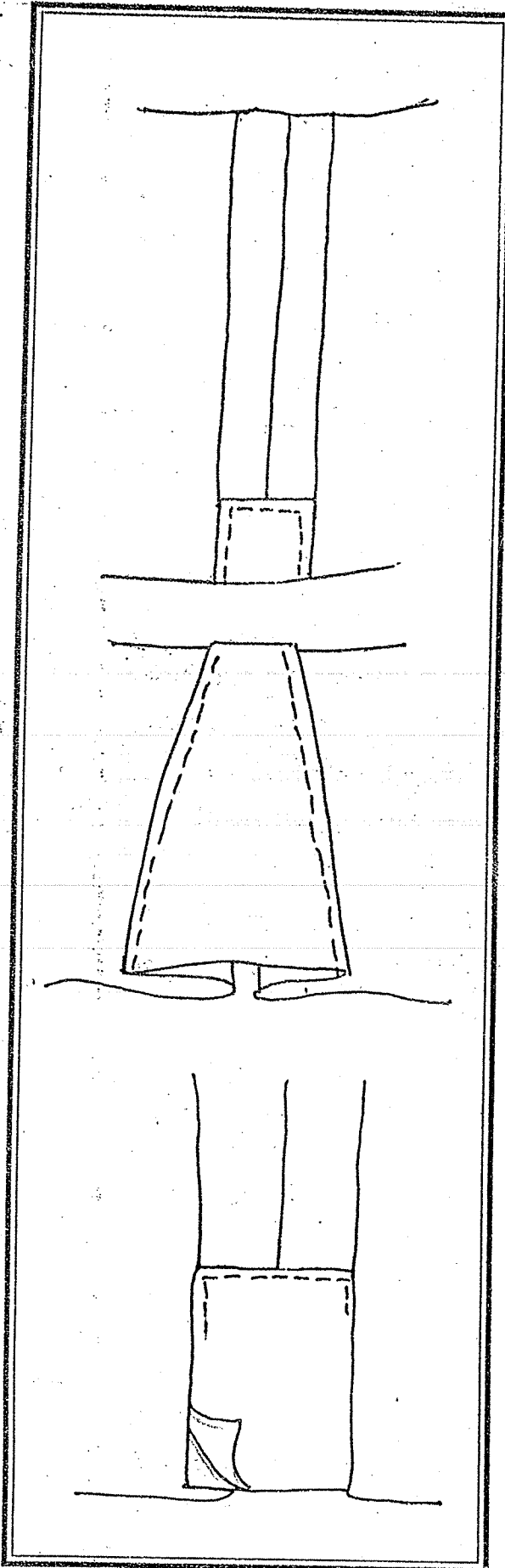
### शेपड इन्वर्टेड प्लीट विद् अन्डर

ले:- यह कमर से खुला छोड़ते हुए, पूर्व में दिखाये गये एक नीचे पड़ी या छोटी प्लीट के साथ लम्बी प्लीट हो सकती है। शेपड प्लीट, सीधी प्लीट की अपेक्षा अच्छी लटकती है।

डॉयर प्लीट:- नीचे पड़ी हुई सीधी इन्वर्टेड प्लीट की तरह ही होती है। लेकिन नीचे पड़ी हुई (जो प्रायः अन्डर लाइन होती है) प्लीट में जुड़ी केवल टॉप के एक्रॉस तथा किनारे से थोड़ा नीचे जाती है, बाकी हिस्सा फ्लैप की तरह रहता है। यह केवल बहुत छोटी प्लीट के लिए ठीक रहती है अन्यथा फ्लैप ओपनिंग से बाहर दिखाई देगी।

एकोर्डियन प्लीट:- यह बहुत छोटी स्ट्रेट प्लीटस है जो एकोर्डियन के नीचे पार्ट की तरह लगती है। इसी से इसका नाम रखा गया है। इसकी चौड़ाई ३ से १३ मि०मी० तक हो सकती है।

सनरे प्लीटस:- जो प्लीटस ऊपर



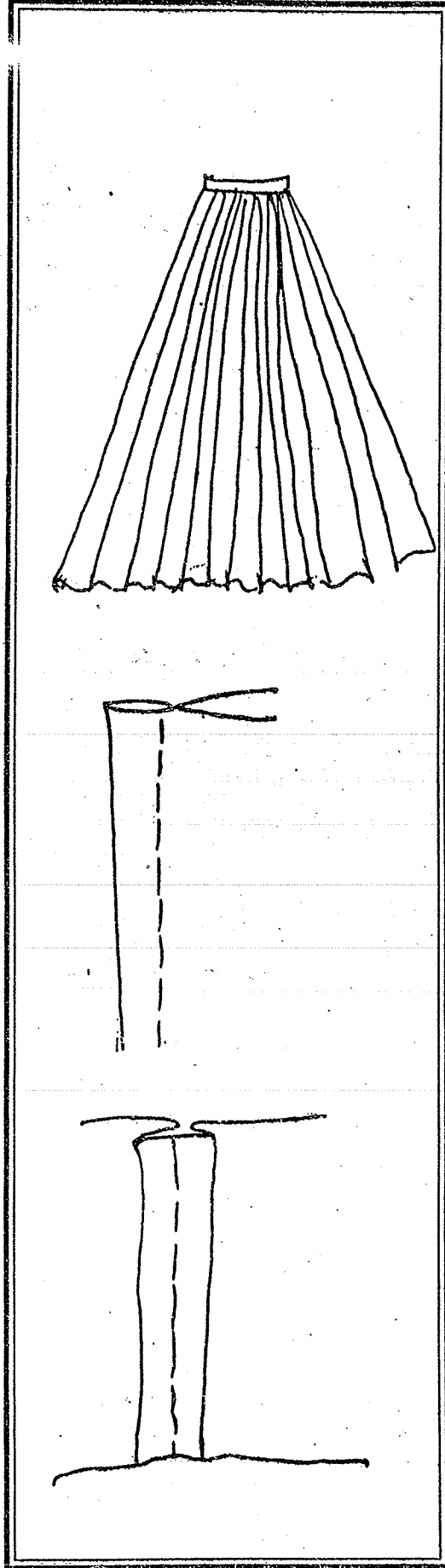
से कम चौड़ी तथा नीचे से अधिक चौड़ी होती है, इस प्रकार यह धर दिखाती है।

सामान्यतः ड्रेस मेकर द्वारा ना तो एकोर्डियन प्लीट का और ना ही सनरे प्लीट का प्रयोग किया जाता है। या तो पहले से प्लीटेड खरीदा जाता है या यह किसी प्रोफेशनल के पास प्लीट करने के लिए भेजी जाती है।

#### मेकिंग प्लीट्स:-

गारमेन्ट में प्लीट्स की जगह दर्शाने के लिए टेलर टैक से निशान बनायें। निशान को मिलायें तथा बिना प्रेस किए प्लीट के एक्सेप्शन से, जो नीचे की ओर केवल कुछ से०मी० पर टैक किए गए हैं, प्लीट को गारमेन्ट के नीचे से टैक करें। प्रेस करें। यदि प्लीट को मशीन नहीं किया गया हो, तो गारमेन्ट के पूरा होने तक केवल हेम के लिए जगह छोड़ दें। यदि प्लीट टाप स्टिच करनी हो तब सीधे तरफ जितना चौड़ा रखना हो मशीन कर लें। अन्त में डार्निंग कर आखिरी जगह भर दें।

जिन प्लीटों को मशीन करना हो उनमें एक साथ उल्टी ओर उनके लम्बाई के लिए, जहाँ से प्लीट छोड़नी है वहाँ से ऊपर कमर तक मशीन से सिलाई करें। अन्त में बहुत धीरे से



ढील प्वाइन्ट तक डार्निंग करें। ढील प्वाइन्ट टैकिंग हटा दें लेकिन हेम की जगह छोड़ते हुए गारमेन्ट पूरा होने तक इसे नीचे यथा स्थान पर रहने दें।

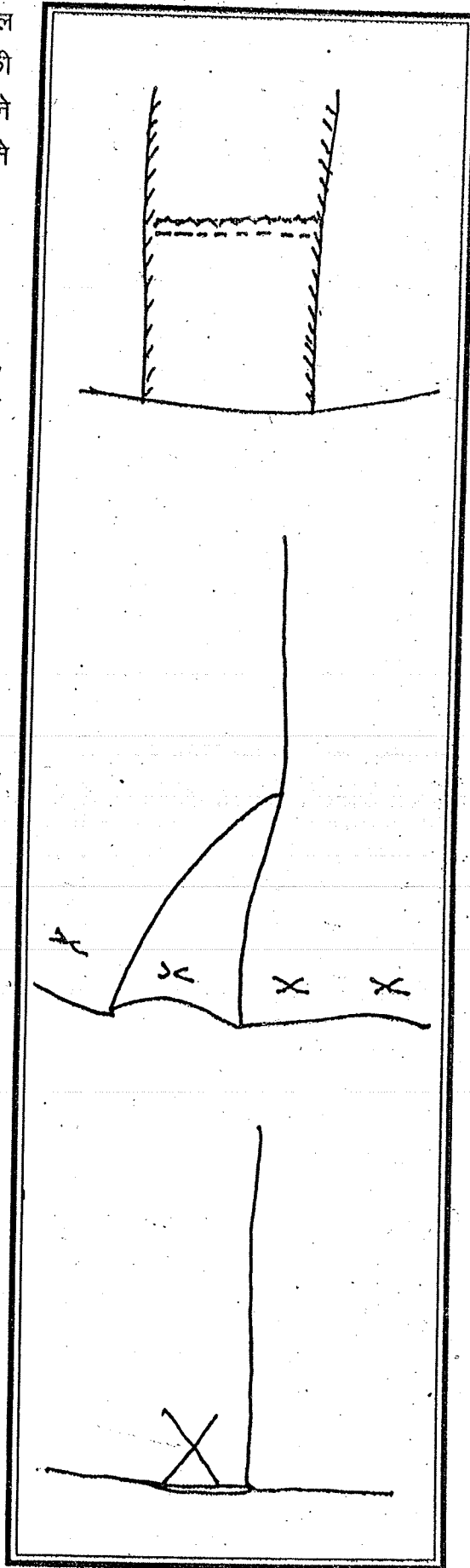
**अटैचिंग अन्डर:-**

नीचे डाली गई प्लीटों में, नीचे टैक करें तथा सीधी ओर के प्लीट से कमर तक पीछे मुड़े किनारों को मशीन कर दें। छोटी प्लीट्स अलग तरीके से बनती हैं।

१- अन्डरले प्लीट, प्लीट के रिलीज प्वाइन्ट से कम से कम ५ से०मी० ऊपर तक ही बनाया जाता है।

२- गारमेन्ट के नीचे से ऊपर तक यह प्लीट्स टैक कर मशीन करें, अर्थात् कमर तक या फिटिंग लाइन तक। प्लीट्स के बीच की सीम में स्टिच या पिबोट लगायें। सीधी तरफ कोई सिक्लाई या स्टिच नहीं दिखाई देनी चाहिये। गारमेन्ट को थोड़ा सा सीधी तरफ फोल्ड करें, जिससे अन्डरले केवल प्लीट में स्टिच कर सके। अन्त में मशीन के धागे से डार्न करें जहाँ प्लीट के बीच सीम पर मिलते हैं।

३- गारमेन्ट को बाई ओर पलट दें जिससे दूसरी ओर, पहले की तरह मशीन कर सकें।



8- सीम एलाउन्स को काटकर सफाई कर दें, अन्डरले की ऊपर सीम एलाउन्स को हेरिंगबोन स्टिच कर दें।

प्लीट्स का हेम लाइन पर काम:-

यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्लीट्स फोल्ड की है या सिलाई या अधिक सिलाई की है।

फोल्डेड प्लीटस:-

1- गारमेन्ट को ठीक से नाप लें और हेम लाइन ठीक बैठाये।

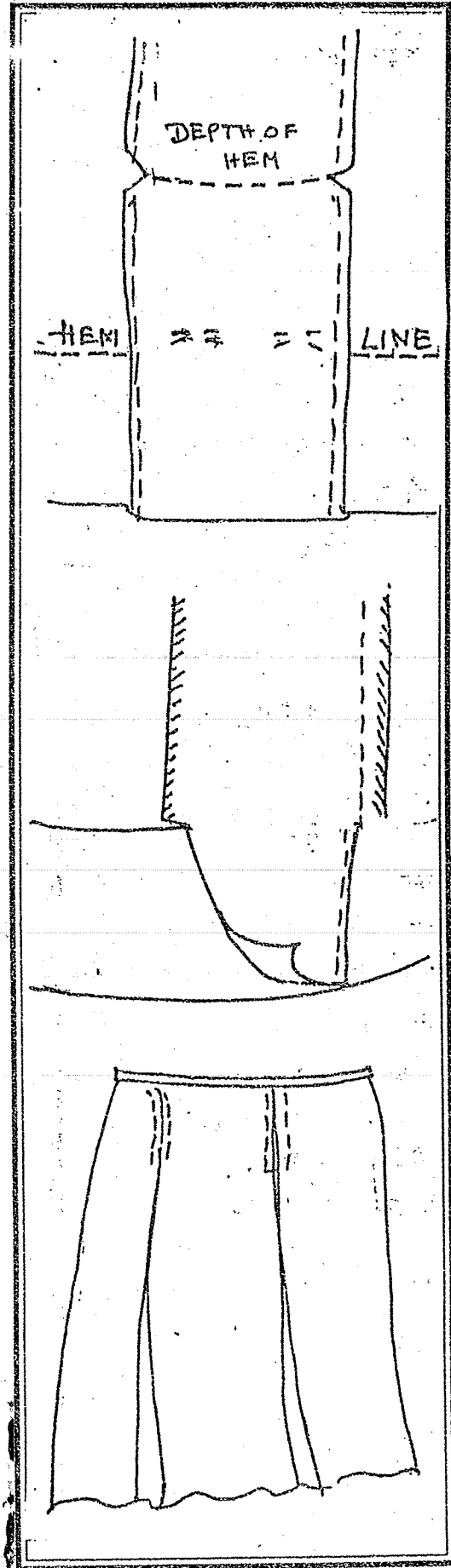
2- गारमेन्ट हटायें और हेम लाइन को डबल टेलर टैक का प्रयोग करते हुए इसे प्लीट्स के एक्रॉस मार्किंग के लिए निशान लगायें। आवश्यक गहराई के लिए हेम को ट्रिम करें।

3- प्लीट्स की टैकिंग निकाल कर प्लीट्स खोल लें। सभी परतों के बीच टेलर टैक से सिनिपिंग कर लें जिससे कि हेम की लाइन को प्लीट के सभी फोल्डों पर देखा जा सके।

4- हेम को मोड़े, प्रेस करें तथा फिनिश करें।

5- प्लीट्स को यथा स्थिति में मोड़ें। सीधी ओर पर क्रॉस स्टिच टैक से काम करें। ठीक से प्रेस करें।

6- गारमेन्ट के सीधी तरफ प्लीट



के फोल्ड को हेम से लेकर ऊपर तक स्टिच करें। यह वस्त्र पहनने पर फोल्डेड प्लीट की तरह प्लीट को ग्वाथारथान रखने में हेल्प करता है।

### सीम के संग प्लीट:-

ऊपर दिये गये १ से ३ तक के निर्देश को भी देखें।

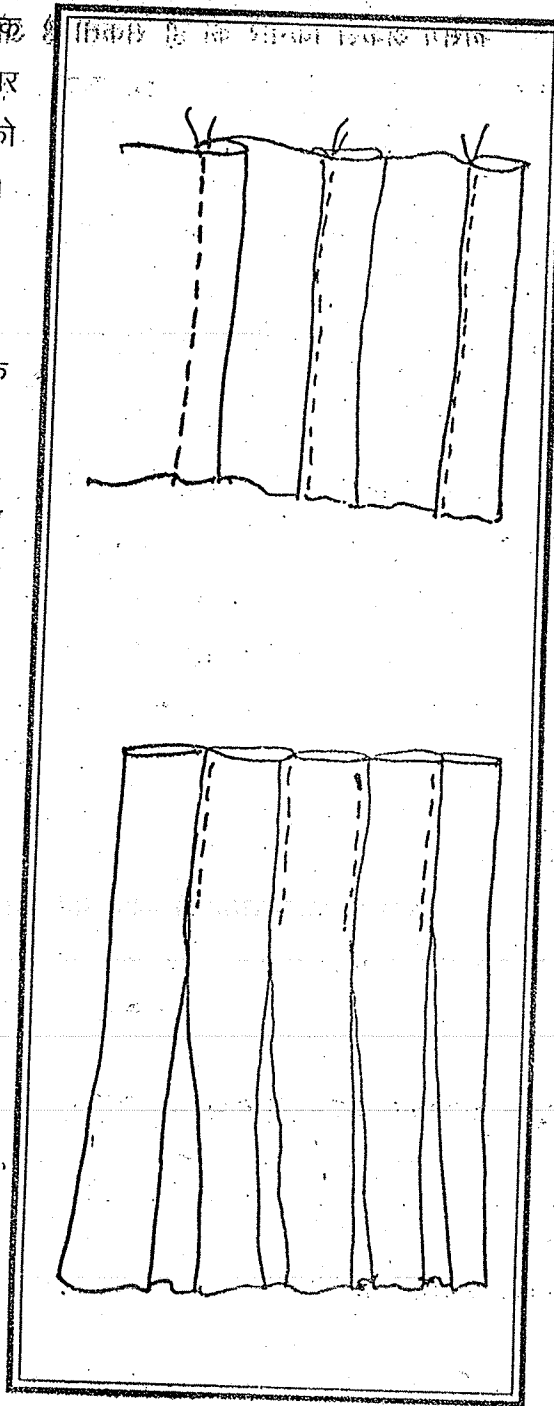
४. हेम की गहराई को हेमलाइन के ऊपर प्लीट पर मोड़ते हुए निशान लगायें। इस प्वाइन्ट पर सीम एलाउन्स को क्लिप करें।

५. क्लिप के नीचे सीम एलाउन्स को खोलकर प्रेस करें तथा लगभग ६ मि०मी० ट्रिम करें।

६. ऊपर दिये गये ५ की तरह प्लीट को फोल्ड करें।

७. सभी मोटाइयों से, हेम में प्लीट के फोल्ड को उल्टी ओर एज स्टिच करें।

८. लूप स्टिच के साथ क्लिप की सफाई करें।



### अभ्यास-

१- पाठ्य में दिये गये फेसिंग, ओपनिंग तथा प्लीट के नमूने तैयार करें।

३.४ सारौंश:- फेसिंग एक कपड़े के टुकड़े से किनारे की फिनिशिंग करने का तरीका है। यह सीधी तरफ रखकर उल्टी तरफ मोड़कर फिनिश किया जाता है। फेसिंग को किनारे की शेष से या कपड़े के बाँस पर काटा जा सकता है।

फेसिंग अकेले किनारे की हो सकती है और कालर के साथ भी लगती है, लेकिन कालर और फेसिंग के बारे में अलग से अगले पाठों में बताया जायेगा।

बाइन्डिंग किनारे की मजबूत व साफ फिनिश करती है। इसे गारमेन्ट के बचे हुए कपड़ों की तरह ही काटा जा सकता है, या सजावट के लिए विपरीत रंगों की भी प्रयोग किया जाता है जैसे— ऊन पर साटिन। अच्छे परिणाम के लिए बाइन्डिंग को बिल्कुल ठीक तरह से काटना चाहिए, सावधानी पूर्वक ऐप्लाई करना चाहिए, तथा फेब्रिक के हिसाब से पतला रखना चाहिए।

ओपनिंग हर प्रकार के वस्त्रों में होती है। इन पर पूरे गारमेन्ट से अधिक दबाव रहता है अर्थात् घिसती हैं। ओपनिंग को कहाँ और कितनी खोली जाये यह कपड़े के वजन, मोटाई तथा कपड़े से धागे निकलने या मजबूती, आदि बातों पर निर्भर करता है। पोजिशन अर्थात् कहाँ और कितनी ओपनिंग बनाई जाये, ओपनिंग न दिखने वाली हो या सजावटी हो, ओपनिंग काफी लम्बी होनी चाहिए जिससे गारमेन्ट को असानी से पहना या उतारा जा सके। विभिन्न प्रकार की ओपनिंग हैं— वार्प तथा स्ट्रेप ओपनिंग, निरन्तर पट्टियों वाली ओपनिंग, बाउन्ड ओपनिंग तथा फोल्ड रिबब ओपनिंग।

टेलर टैक से गारमेन्ट में प्लिट को ध्यान पूर्वक करें। मीड मार्किंग बिना प्रेस किये प्लिट्स पर जो प्रेस नहीं की जाती है और कुछ सेमी ही नीचे टैक की जाती है। प्लिट्स को कपड़े के नीचे तक सीधी ओर टैक करें।

### 3.5 स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-1 आप निरन्तर ओपनिंग कैसे बनायेंगे?

प्रश्न-2 फेसिंग क्या है?

प्रश्न-3 बाइन्डिंग किस प्रकार बनाई जाती है?

प्रश्न-4 प्लिट्स को टैक क्यों किया जाता है?

प्रश्न-5 वार्प एवं स्ट्रेप ओपनिंग क्या है?

### 3.6 स्वाध्ययन हेतु

1— गुड हाउस कीपिंग, स्ट्रेप बाई स्ट्रेप इन साइडलोपीडिया ऑफ नीडिल क्राफ्ट द्वारा जूडी ब्रिडेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।

### संरचना

- ४.१ यूनिट प्रस्तावना
- ४.२ उद्देश्य
- ४.३ कफ, बैन्ड, शीयरिंग तथा पॉकेट
- ४.४ सारांश
- ४.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- ४.६ स्वाध्ययन हेतु
- ४.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस यूनिट में आपको कफ, बैन्ड, शीयरिंग, पॉकेट तथा प्लीट लगाना बताया जायेगा। इसके साथ ही फैब्रिक का किनारा कैसे फिनिश किया जाता है, फैब्रिक पर प्लीट कैसे लगाये जाते हैं के बारे में भी बताया जायेगा।

### ४.२ उद्देश्य:-

कफ, बैन्ड तथा पॉकेट गारमेन्ट के बहुत ही आवश्यक पक्ष हैं। गारमेन्ट की फिनिशिंग एवं इसका अन्तिम स्वरूप कफ, बैन्ड पॉकेट तथा शीयरिंग पर निर्भर करता है।

### ४.३ कफ, बैन्ड, शीयरिंग और पॉकेट:-

#### कफ:-

कफ अनेक साइज एवं स्टाइल में बनते हैं। ये सीधे या शेप्ट, कसे या ढीले, ओपनिंग के साथ या बिना ओपनिंग के, गहरे या पतले हो सकते हैं। इनकी उत्पत्ति जरूरत के हिसाब से हुई है। स्लीव के नीचे कई हिस्से में दो, तीन परतों का कफ बनाना व्यावहारिक बात है। इसी हिस्से पर सबसे अधिक जोर पड़ता है। अब सजावटी कारण तथा फैशन के अनुसार अलग-अलग स्टाइल के कफ बनने लगे हैं।

कफ स्लीव की किसी भी लम्बाई पर लगाये जा सकते हैं। यह स्लीव की लम्बाई का हिस्सा भी हो सकते हैं, स्लीव के ऊपर पलट कर और सजावट के लिये भी लगाये जाते हैं। आमतौर पर डबल इन्टर फेसिंग से बनाये जाते हैं। फ्रिल तथा घेरदार कफ एक परत या फेसिंग के साथ बनते हैं।

यदि कफ स्लीव में लगाये जाते हैं तब स्ट्रेट कफ होते हैं। कफ अक्सर कपड़ा मोड़कर काटा जाता है। अगर कफ एक परत में शेष करके स्कैलप आदि में काटा है तब इसको फेसिंग के साथ फिनिश करना होगा। कफ मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं।

बिना ओपनिंग की स्ट्रेट बैन्ड जैसे एक छोटे ब्लाउज में कफ होता है। यह प्रकार का कफ कम पतला या चौड़ा या  $9\frac{1}{2}$  से०मी० या (३ इंच) तक गहरा एक या अधिक बटन का हो सकता है। इसे काफी गहरा बनाया जा सकता है क्योंकि इसे एक पुरुष के कमीज की तरह दोहरा मोड़ते हैं। इस स्थिति में इसमें बटन लिंक या कफ लिंक लगाये जाते हैं।

टर्न बैक कफ स्लीव का हिस्सा माना जाता है जो शार्ट स्लीव ब्लाउज या ड्रेसो में लगता है। इसे सीधी, ढीली आस्तीन को बढ़ाकर किया जा सकता है, स्लीव के आगे के हिस्से को पीछे मोड़कर कफ की शकल देते हैं। इसी प्रकार फिटेड आस्तीन को भी बढ़ाया जा सकता है, लेकिन तब कफ को आकार देकर अलग से फेसिंग लगाकर फिनिश करना होगा।

शेड कफ यानी टर्न बैक 'फलाई अवे' कफ की तरह होता है। यह अलग से काटकर आस्तीन में जोड़े जाते हैं, या आस्तीन को कफ के शेष में तथा सामने से बढ़ाया जा सकता है, जैसा कि ऊपर बताया गया है। शेड कफ को पूरी लम्बाई की आस्तीन के लिए पीछे मोड़ा जा सकता है (जैसे, कफ  $9\frac{1}{2}$  से १५ से०मी० या (५ से ६ इंच) लम्बे शेष का बाँह तक) या फ्रिल्ड या फ्लेर्ड की तरह आस्तीन से दूर रख सकते हैं।

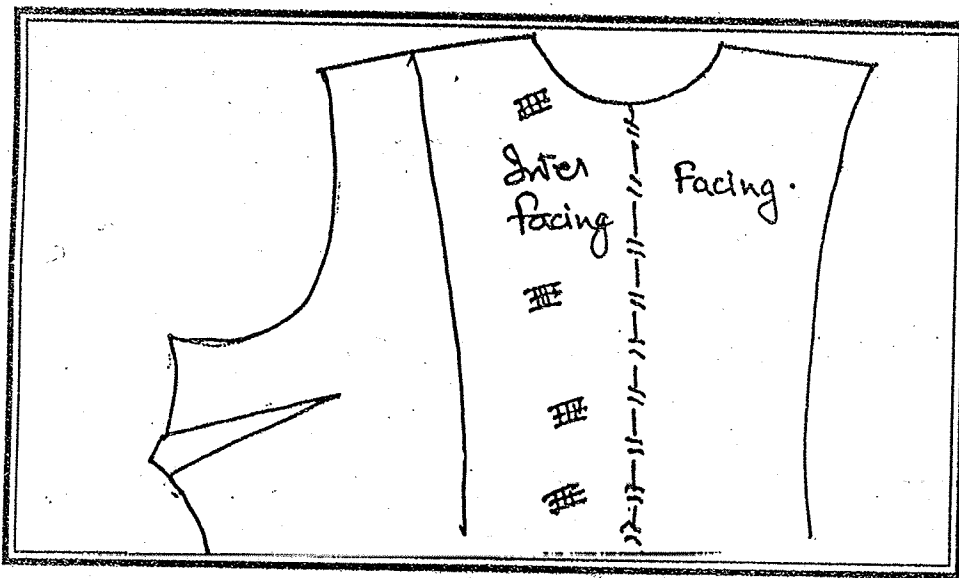
**कटिंग:-**

स्ट्रेट कफ को स्ट्रेन की दिशा में लम्बाई की ग्रेन के साथ काटा जाना चाहिए। इस तरह कभी-कभी इकोनॉमी के लिए इन्हे ६ वेपट धागे के क्रॉसवे ग्रेन पर काटा जाता है। इन्हे ठीक से इन्टर फेस करते हैं, इसे करना कठिन नहीं होता है।

स्लीव की लम्बाई कफ के साथ काटी जाती है। शेड कफ अलग-अलग तरीके से अपनी स्टाइल के अनुसार काटे जाते हैं। गहरे शेड कफ स्लीव की लम्बाई के साथ होते हैं। कभी स्लीव के नीचे के ग्रेन से मिलाकर काटे जाते हैं। अलग तरह के शेड



कफ अलग ग्रेन पर काटे जा सकते हैं। सजावट के हिसाब से घेक कपड़े में बायस तिरछे काटे जा सकते हैं। फ्रिल कफ स्ट्रेट कपड़े में काटे जा सकते हैं, लेकिन अगर इन्हें बायस पर तिरछा काटा जाये तो अधिक सुन्दर लगेंगे। फ्लेर्ड कफ को गोल या सीम्ड कपड़े के भाग की तरह काटा जा सकता है, या आस्तीन के किनारों को जोड़ने के लिए बीच में एक छेद के साथ पूरी घेर में काटा जा सकता है।



#### इन्टरफेसिंग:-

कफ लगाने के लिए इन्टरफेसिंग कफ के हिस्सों का सर्वश्रेष्ठ तरीका है जिसे अधिकतर ऊपर की ओर लगाया जायेगा। यह लेयर को अतिरिक्त मजबूती देता है जिससे पहनने में तनाव सहता है तथा, अच्छे कपड़ों में इन्टरफेसिंग दूसरी परतों की सीम एलाउन्स को छिपाने का काम करती है।

बुने हुए कपड़ों की इन्टरफेसिंग को कफ की तरह उसी ग्रेन पर काटा जाना चाहिए। हल्के वजन के इन्टरफेसिंग को सिलाई के साथ ही किया जा सकता है; तथा भारी इन्टरफेसिंग को स्टिचिंग लाइन के लिए हेरिंगबोन किया जाना चाहिए। जब कफ को फोल्ड के लिए काटा जाता है तो इन्टरफेसिंग को फोल्ड की लाइन से कैच स्टिच किया जाना चाहिए।

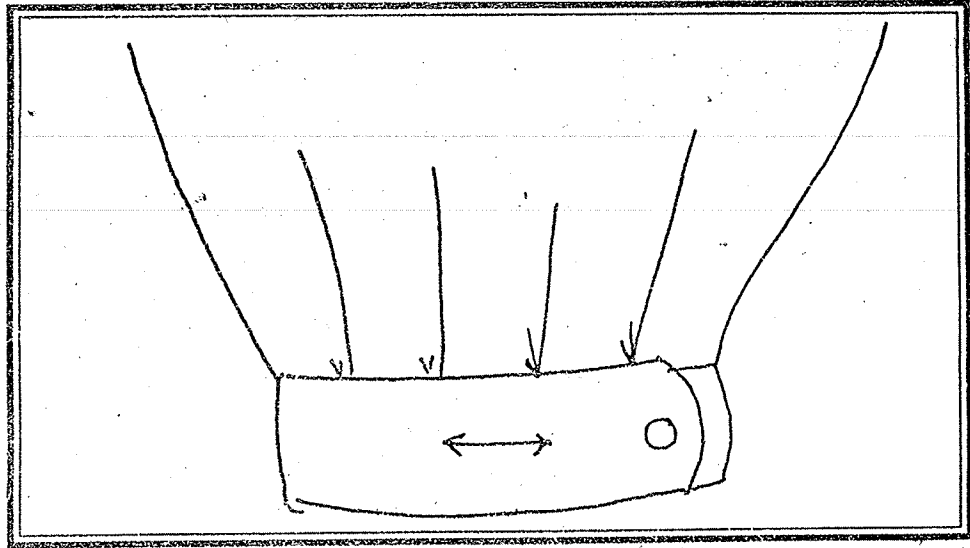
#### मेकिंग और अटैचिंग:-

हर प्रकार के कफ के साथ बनाने व जोड़ने का तरीका भिन्न होता है। कुछ में स्वयं ही सफाई हो जाती है जबकि कुछ में शेपड फेसिंग या तिरछी पट्टी से फिनिशिंग करनी होती है।

बटनहोल का काम अक्सर कफ का आस्तीन से जोड़ने से पूर्व ही कर लिया जाता है। वास्तव में जब यह पूर्ण हो जाती है तो प्रयोग किये गये बटनहोल के प्रकार पर निर्भर करती है। बटनहोल का काम आम तौर पर किया जाता है, और इन्हे कफ बन जाने के बाद पूरा किया जाता है। ध्यान दें कि कफ का साइज और फिटिंग नापना बहुत जरूरी है, अतः बटनहोल को आस्तीन से कफ जोड़ने से पूर्व ही बनाया जा सकता है, जबकि इसे करना आसान होता है। यदि बाउन्ड बटनहोल की जरूरत हो, तो इन्हे इन्टरफेसिंग को यथास्थान टैक कर चुकने के बाद, कफ के दोहरा बनने से पूर्व कमेन्सड किया जा सकता है।

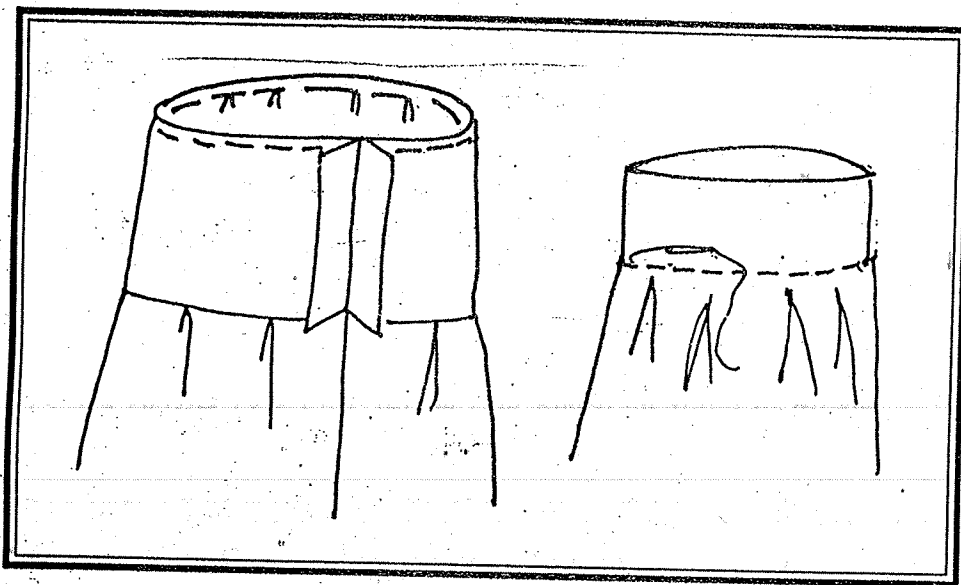
कफ में इन्टरफेस लाइन के लिए बनाने तथा जोड़ने की विधि के साथ इसे नीचे दिये गये तरीके से करें।

बिना ओपनिंग के बैन्ड को सीधा करें। किनारे की सिलाई को टैक करे तथा मशीन चलायें। ट्रिम करें और खोलकर प्रेस करें। सीधी तरफ से टैक करके कफ को आस्तीन में किनारे की सिलाई को मिलाते हुए जोड़ दें, जैसा दिखाया गया है। सिलाई को ट्रिम व लेयर करें। कफ को स्लीव की उल्टी ओर फोल्ड लाइन पर पलट लें। सीम एलाउन्स को सिलाई लाइन पर मोड़ लें। हेमिंग वर्टिकल का प्रयोग करते हुए मशीन स्टिचेस में टैक व हेम करें।

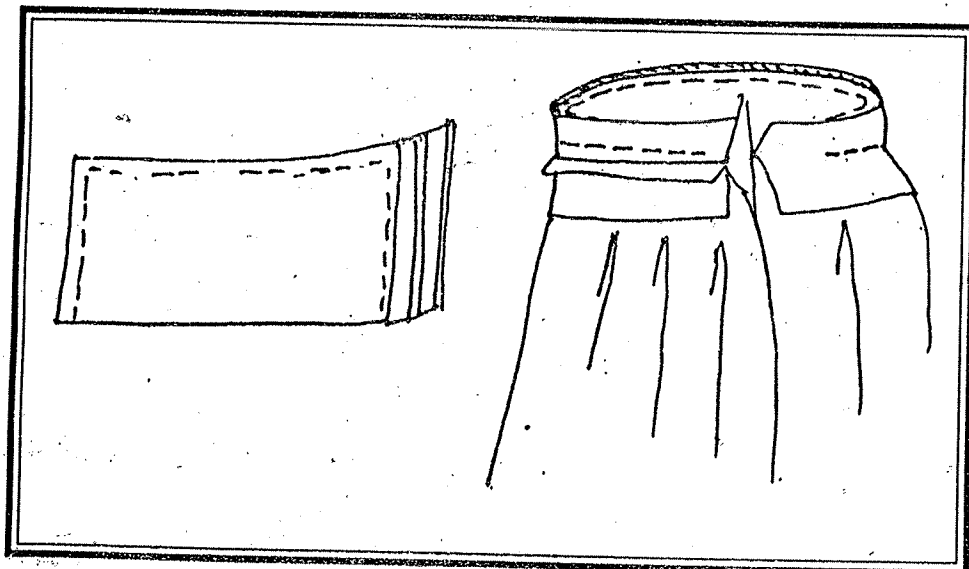


ओपनिंग के साथ बैन्ड को सीधा करें। इनमें स्वयं का निचला किनारा फोल्ड को प्लेस करने के लिए या सीम में जोड़ के लिए हो सकता है। ये स्लीव में ओपनिंग से सदैव मेल खाती हैं। कफ के किनारे के एज ओपनिंग के एज से एकदम मेल खाते हो सकते हैं, या ये दोना छोरों पर एक एक्सटेन्शन का काम कर सकते हैं। एक्सटेन्शन का प्रयोग ओवरलैप के लिए किया जा सकता है, या स्लीव से थोड़ा बढ़ा रह सकता है तथा बटन लिंक या कफ लिंक से बंधा हो सकता है।

१- बिना एक्सटेन्शन का बैन्ड- फोल्ड लाइन पर सीधी तरफ एक साथ फोल्ड करें। आरस्तीन से जोड़ने के लिए केवल सिलाई लाइन के कोनों को टैक तथा मशीन करें जैसा दिखाया गया है। सीधे बैन्ड के छोर पर जैसा कि दिखाया गया है ट्रिम व लेयर करें, मशीन किए छोर को रोल करें, टैक व प्रेस करें। सीधी ओर एक साथ कफ को आरस्तीन से बदलें। सिलाई लाइन पर कफ के दूसरे किनारे पर मोड़े। आरस्तीन के उल्टी ओर हेमिंग वर्टिकल का प्रयोग करते हुए मशीन की सिलाई में टैक व हेम करें।



२- एक्सटेन्शन:- इस प्रकार के बैन्ड में एक या दोनो छोरों पर एक एक्सटेन्शन हो सकता है, तथा उनका निचला किनारा फोल्ड के लिए या सीम में जोड़ के लिए कटा हो सकता है। दिया गया उदाहरण निचले किनारे के साथ एक कफ का है, तथा इसमें दो एक्सटेन्शन हैं।

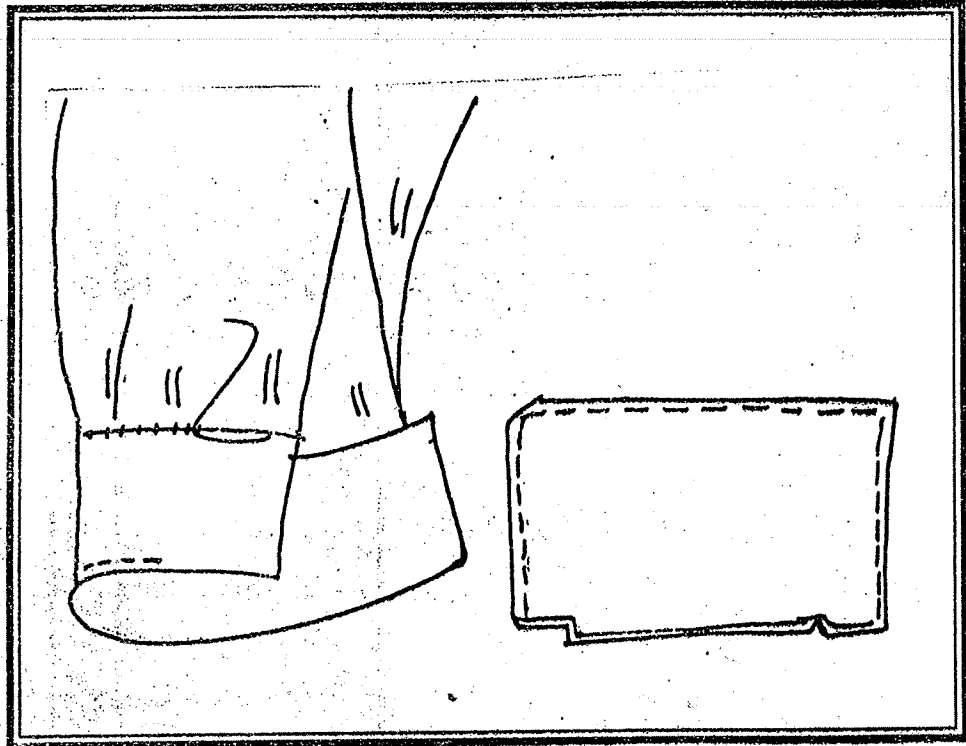


एक्सटेन्शन की आवश्यक लम्बाई आस्तीन कफ के स्लीव एज के साथ स्पष्ट रूप से चिह्नित होने चाहिए। इस बिन्दु से सिलाई लाइन पर कफ के चारों ओर इक्वेलेन्ट प्वाइन्ट तक दूसरी ओर टैक कर लें तथा मशीन चलायें। इन बिन्दुओं को स्लैश करें तथा कफ के एक एज को ट्रिम कर लें तथा मोड़ने के लिए लेयर तैयार रखें। कफ को सीधी ओर एक साथ स्लीव से बदलें। कफ के एक किनारे को आस्तीन तक टैक व मशीन करें। सिलाई लाइन के दूसरे कोने में मोड़े। आस्तीन के उल्टी ओर टैक करें तथा मशीन की सिलाई में हेमिंग वर्टिकल का प्रयोग करते हुए टैक करें।

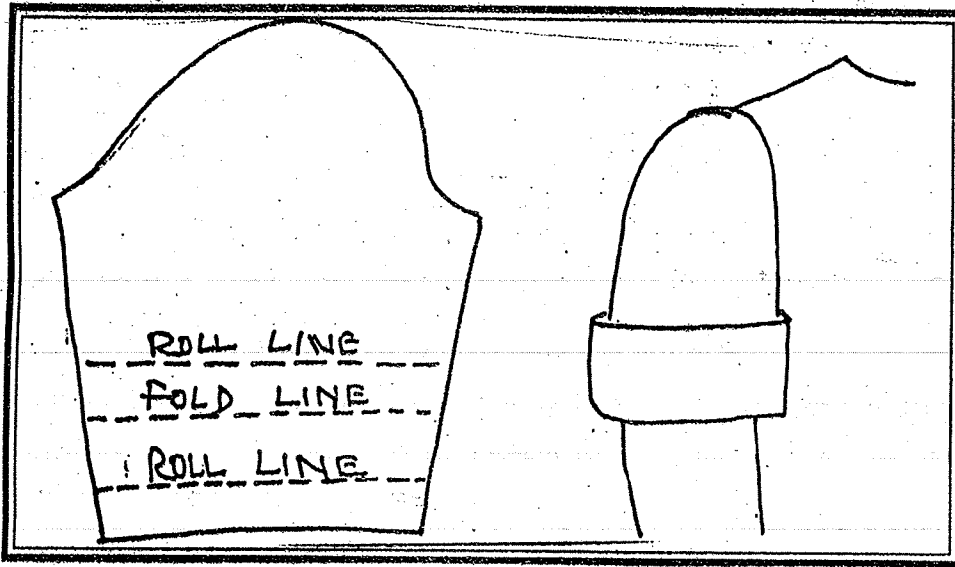
पीछे मुड़े कफ को आस्तीन के भाग की तरह काटें। ये आस्तीन के अनुसार निर्भर करते हुए सीधे या शेड दोनों हो सकते हैं।

स्ट्रेट कफ के लिए, पर्याप्त कपड़ा आस्तीन की फिनिस्ड लम्बाई से कफ को दोहरा बनाने के लिए आनी चाहिए तथा तब वापस इस पर रोल करें। इस कफ की इन्टरफेसिंग विकल्पिय होती है।

आस्तीन के किनारे की सिलाई को टैक तथा मशीन करें। खोलकर प्रेस करें। कुछ उचित विधि द्वारा कच्चे किनारों की सफाई करें; क्योंकि यह स्लीव प्रायः हल्के वजन के कपड़े से बनती है, और इसमें एज स्टिचिंग का प्रयोग होता है। फोल्ड लाइन पर उल्टी ओर एक साथ मोड़े। साफ किनारों को आस्तीन तक स्लिप स्टिच कर दें। दोहरे परत को रोल लाइन के सीधी ओर वापस फोल्ड कर दें।



शेड कफ के लिए, स्लीव को कफ के लिए बढ़ाकर रखा जायेगा। कफ की चौड़ाई व सीम एलाउन्स अधिक रखनी होगी। स्लीव की सीम को टैक करें तथा मशीन करें, खोलकर प्रेस करें। शेड फेसिंग की साइड सीम को टैक करके मशीन करें। खोल कर प्रेस करें। फेसिंग के किनारे की सफाई करें। फेसिंग से आस्तीन तक सीधी ओर एक साथ टैक तथा मशीन करें तथा दिखाये गये उदाहरण के लिए प्वाइन्ट तक स्लैश-अप करें। लेयर करके ट्रिम करें तथा उल्टी तरफ फेसिंग को मोड़े। सिलाई को कफ के अन्दर की तरफ रोल करें, टैक करें तथा प्रेस करें। फेसिंग के छोटे किनारों को आस्तीन के उल्टी ओर स्लिप स्टिच करें। तैयार कफ चित्र मे दिखाया गया है।



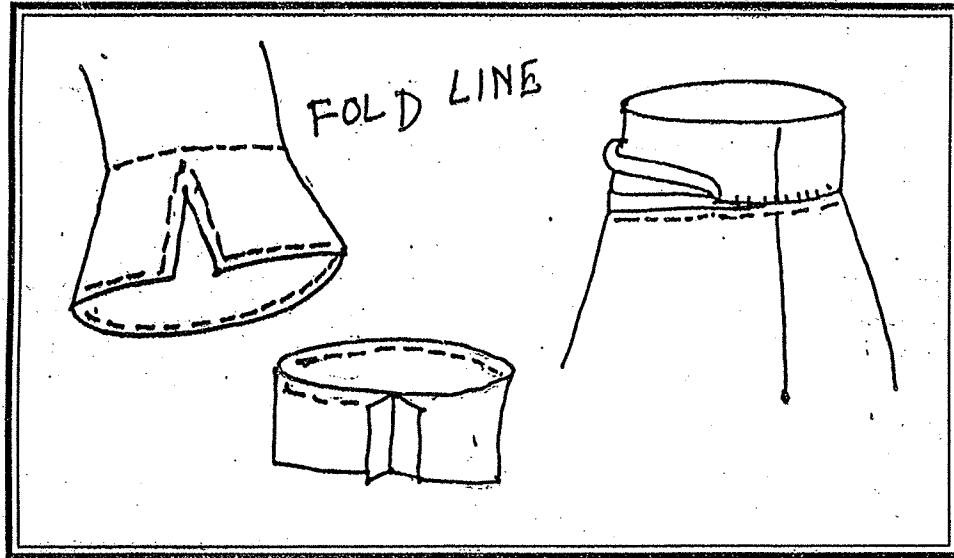
शेड कफ अलग से काटें। ये विभिन्न तरीकों से अपने प्रकार तथा फैब्रिक के अनुसार बनाये व जोड़े जाते हैं।

१- लम्बे कफ स्लीव की लम्बाई का हिस्सा होते हैं। यह ठीक ओपेन बैंड की तरह बनते है और उसी तरह लगाये जाते हैं।

२- शेड कफ को वापस मोड़े। कफ के ऊपरी व निचले भाग के साइड सीम को टैक तथा मशीन करें। ट्रिम करें तथा खोलकर प्रेस करें। सीधे साइड को साथ में रखें, तथा बाहरी किनारों को साथ रखते हुए टैक तथा मशीन करें। ट्रिम करें, लेयर बनायें, स्निप करें तथा सीधी ओर मोड़े। स्टिचिंग लाइन कफ के नीचे की ओर सरकाते हुए रोल करें, टैक करके प्रेस करें।

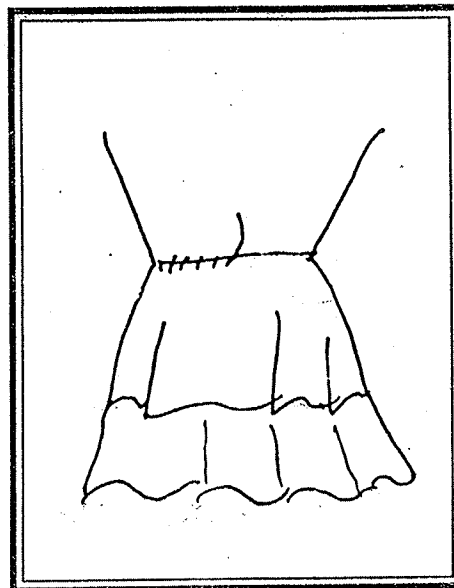
यह कफ कई तरीके से लगाया जा सकता है। यह अपने आप सफाई कर सकता है; जिसमें बने कफ को आस्तीन तक, टॉप कफ के सीधी ओर के साथ आस्तीन

के उल्टी ओर तक साइड सीम को मिलाते हुए रखें। आस्तीन तक टैक करें व मशीन चलायें। नीचे के कफ में सीम एलाउन्स मोड़े, तथा मशीन की सिलाई को टैक तथा हेम करें।



दूसरा तरीका है कि कफ को तिरछी पट्टी या शेड फेसिंग से फिनिश करें। किसी भी तरीके से बनाया गया कफ सीधी तरफ से स्लीव पर रखें। कफ के सीधी ओर को स्लीव के सीधी तरफ रखना है। टैक करें, तिरछी बॉयस पट्टी काटें, फेसिंग बनायें। सीधी तरफ से स्लीव और कफ को स्टिचिंग लाइन पर सभी लेयर्स मिलाकर मशीन करें। ट्रिम करें। फेसिंग या तिरछी पट्टी को उल्टी तरफ पलट लें। फेसिंग को आस्तीन के उल्टी ओर तक स्लिप स्टिच करें या बॉयस के कच्चे किनारों में मोड़ लें तथा आस्तीन के उल्टी तरफ स्लिप हेम करें।

३. फ्रिल्ड या फ्लेयर्ड कफ:— ये दोहरे या एक परत में बनाये जा सकते हैं। अगर एक परत में बनायें तब इसकी सफाई बहुत बारीक हेमिंग से करनी चाहिए और कफ को पतली पट्टी के साथ स्लीव में ऊपर की तरह लगायें। यदि दोहरा लगाते हैं (जैसे फेसिंग के साथ) तो कफ स्वयं ही सफाई वाला हो सकता है। कफ को स्लीव में लगा कर मशीन करें। उसे पलट कर उल्टी तरफ से नीचे की परत को स्लीव पर मोड़कर हेमिंग करें।



## शीयरिंग:-

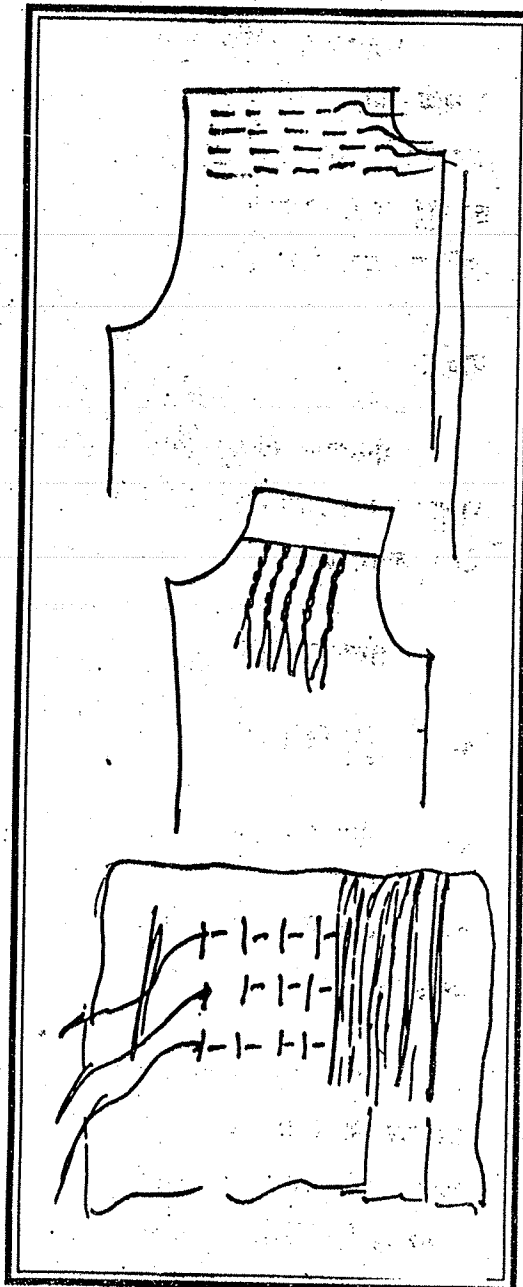
शीयरिंग में दो या अधिक मशीन की लाइन से गैदरिंग करते हैं। यह सजावट के लिए गारमेन्ट को घेर देता है। यह छोटे हिस्से में किया जा सकता है; उदाहरण के लिए, डार्ट के स्थान पर; या कई पंक्तियों को हर तरीके से गोल किया जा सकता है, फुल स्कर्ट के टॉप की तरह। शीयरिंग हाथ और मशीन दोनों द्वारा की जा सकती है, और हाथ की बनी शीयरिंग में कुछ मुलायम प्रभाव होता है।

कपड़े जो शीयर और मुलायम होते हैं उन्हें स्वयं ही शीयरिंग के लिए छोड़ दें, लेकिन इसे जर्सी या ऊनी जैसे कपड़े पर भी प्रयोग किया जा सकता है जब इसे फैशन के हिसाब से ऐसा करना हो।

**हाथ से शीयरिंग:-** गैदरिंग की पंक्तियों के लिए सीधी ठीक लाइनें टैकिंग या क्रीज्ड लाइन के साथ मार्क करें। हर लाइन के अन्त में बहुत अच्छे रनिंग स्टिच धागे से काम करें। जो बस्ट डार्ट के बजाय योकड बोडिस पर प्रयोग किये गये शीयरिंग को दिखायें। जब शीयरिंग की जरूरत की लाइनें पूरी हो जायें तो सभी लाइनों के धागे एक साथ पकड़ कर खींच लें। चुन को ठीक तरह बैठाकर आखिरी किनारे को पक्का करके बाँध दें। बोडिस के जोड़ को योक से मिलाकर दिखाते हैं। ध्यान दें कि योक की सीम गैदरिंग की पहली लाइन के ऊपर जाती है।

## मशीन से शीयरिंग:-

मशीन से शीयरिंग करने के दो तरीके हैं; पहला हाथ की गैदरिंग के बजाय लम्बी मशीन की सिलाई का प्रयोग करते हैं, दूसरे में मशीन के अटैचमेन्ट का प्रयोग करते हैं।



१- सबसे पहले जितनी भी लाइने बनानी हैं उनको निशान लगायें, स्टिच बड़ा करके ऊपर ट्राइफल का धागा ढीला करें। मार्कड की गई लाइनों से सीधी तरफ मशीन चलायें। जब सब लाइने पूरी हो जायें तब आवश्यक लम्बाई के पूरा होने तक उल्टी तरफ बाबिन के सभी धागे एक साथ खींचें। गैदर्स के बाहर भी उल्टी ओर से ऊपर के धागे को खींचें, तथा धागो को अन्ततः पक्का करके बाँध दें।

### इलास्टिक शीयरिंग:-

जहाँ खिचने वाले घेर की जरूरत होती है वहाँ यह उपयोगी होता है; जैसे नाइट ड्रेस के वेस्टलाइन पर, ड्रिन्डल स्वर्ट इत्यादि पर।

इलास्टिक बोबिन में बिना खींचें भर लें, मशीन की सूई में साधारण धागा काम में लायें। बोबिन की टेन्शन ठीक कर लें जिससे इलास्टिक टाइट रख खिचती जाये और इतनी ढीली हो जाये कि धागा टूटे नहीं। जब सिलाई पूरी हो जाये तक बोबिन का सूई वाला धागा कसकर बाँध दे जिससे सिलाई खुले नहीं तथा यदि शीयरिंग का आखिरी स्टिच सिलाई में नहीं किया गया है तब बैक स्टिच करके धागे को बाँध दें।

### पॉकेट्स:-

पॉकेट्स मजबूत और साफ होनी चाहिये। यह केवल सजावट के लिए या सजावट तथा लाभ दोनों के लिए हो सकती है। यह गारमेन्ट के कपड़े की भी हो सकती या सुन्दरता के लिए दूसरे रंगों के कपड़े की भी हो सकती है।

पॉकेट्स तीन भागों में भी हो सकती है:

- १- पूरी दिखाई देने वाली पॉकेट अर्थात् पैच पॉकेट्स
- २- सीम पॉकेट्स जैसे ट्राउजर पॉकेट्स।
- ३- कट पॉकेट्स- जैसे यह कपड़े को काटकर बाउन्ड या पाइपड पॉकेट की तरह बनाई जाती है।

वेल्ट और फ्लैप पॉकेट अक्सर कट लगाकर बनाई जाती है। मगर सीम में दबाकर भी बनाई जा सकती है। यह गारमेन्ट के स्टाइल पर निर्भर करती है। कभी-कभी वेल्ट और फ्लैप पॉकेट सिर्फ सजावट के लिए लगाया जाता है। नये ड्रेस मेकर के लिए अच्छा होगा कि वह पूरी पॉकेट को बनाने के तरीके को सीख ले।



पॉकेट का लगाना गारमेन्ट की पोजिशन, मैटेरियल की मोटाई तथा गारमेन्ट की स्टाइल पर निर्भर करता है। पैच पॉकेट का प्रयोग आमतौर पर पतले कपड़े पर किया जाता है। पॉकेट या तो केवल सजावट के लिए या ब्रेस्ट पॉकेट की तरह ऊँचाई पर लगाया जाता है, अन्य सभी पॉकेट सहूलियत के हिसाब से लगानी चाहिए जो काम में आये और कम से कम १२.५ से०मी० चौड़ी हो जिससे असानी से हाथ डाल और निकाल सकें।

जहाँ पॉकेट गारमेन्ट को कट लगा कर बनाई जाती है वहाँ पॉकेट की रिल्ट को बैकिंग द्वारा बुने हुए, बॉन्डेड या इन्टरफेसिंग पर ऑयरन किए हुए (कपड़े के चुनाव पर निर्भर करते हुए) मजबूत करना बहुत जरूरी होता है।

हालाँकि फैशन के हिसाब से, पॉकेट वस्त्र के प्रत्येक किनारे पर असंतुलित होते हैं, अन्यथा यह जरूरी है कि दोनों ओर अर्थात् बाँयें और दायें एक सी लगे। इसके ठीक माप के लिए सीधी तरफ पॉकेट को टेलर चाक से मार्क कर लें, तब दूसरी तरफ टेलर टैक से निशान बनायें।

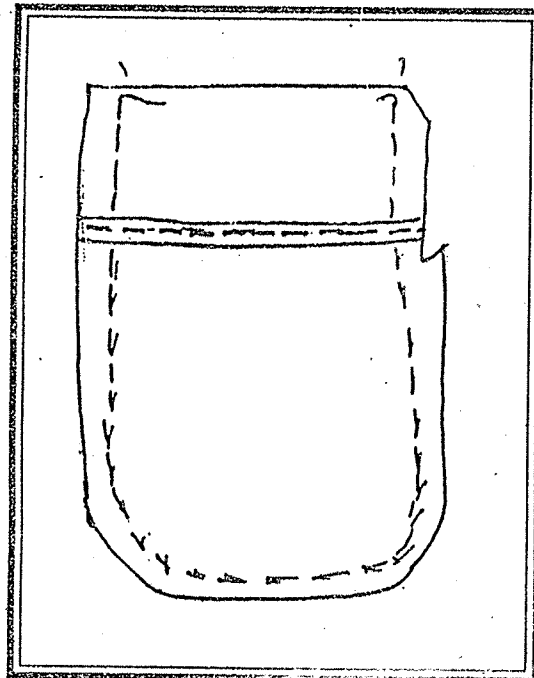
#### पॉकेट बैग:-

पैच किए हुए पॉकेट को छोड़कर हर प्रकार के पॉकेट में बैग की जरूरत होती है। यदि पॉकेट केवल सजावट के लिए नहीं तो बैग के लिए लिया गया कपड़ा मजबूत होना चाहिए। इसके लिए सिलेसिया, पॉपलीन, कैलिको, औद्योगिक नॉयलान, या सख्त कॉउन या लिनेन ठीक होते हैं। रेयॉन की लाइनिंग बहुत मजबूत नहीं होती है।

#### पैच पॉकेट:-

पैच पॉकेट आमतौर पर मीडियम और हल्के वजन के फ़ैब्रिक पर लगाई जाती है। ऐप्रन में यह एक परत की लग सकती है लेकिन दूसरे कपड़ों पर पैच पॉकेट डबल फ़ैब्रिक की या अस्तर लगाकर बनाई जाती है। इन्टर फेसिंग से इनकी सुन्दरता व पहनने की छमता बढ़ जाती है।

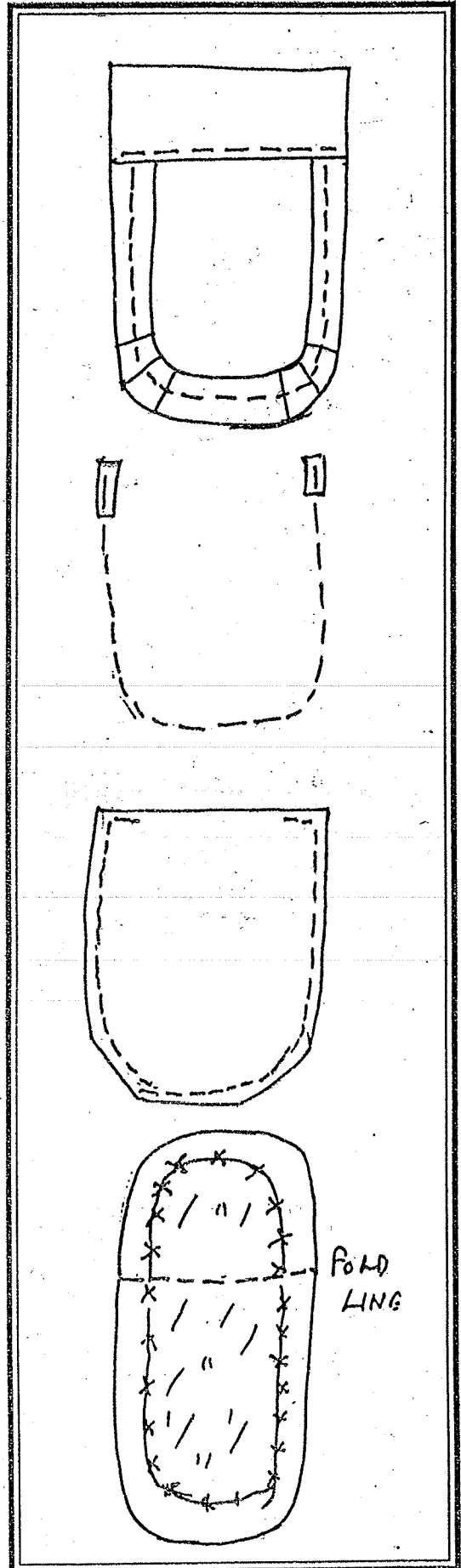
यह बताना आवश्यक है कि



पॉकेट के कोने और ऊपर के किनारे पर मजबूती से सिलाई करना चाहिये। यहाँ पर बहुत अधिक जोर पड़ता है। गारमेन्ट के पीछे की ओर इन प्वाइन्ट पर टेप लगायें। यह टेप पूरी पॉकेट के गारमेन्ट की स्टिचिंग में लगाया जा सकता है। बच्चों के कपड़ों में मजबूती बहुत आवश्यक है 'लड़को का ड्रेसिंग गाउन इसका अच्छा उदाहरण है।

पैच पॉकेट गारमेन्ट में स्लिप स्टिच से भी लगाया जा सकता है लेकिन आमतौर पर मजबूत तरीका पॉकेट को गारमेन्ट पर मशीन से एक सिलाई या दो सिलाई द्वारा ६ मि०मी० की दूरी पर सिलाई करके लगाना होता है। पॉकेट के ऊपरी किनारे पर तिकोना, चौकोर या आयताकार सिलाई के साथ अतिरिक्त मजबूती के लिए सिलाई करके फिनिश करना चाहिए।

फैशन और गारमेन्ट की स्टाइल के अनुसार पैच पॉकेट की शेप अलग-अलग हो सकती है। ऊपर की लाइन सीधी और नीचे के चौकोर घुमावदार या नोकीली हो सकती है या पॉकेट पूरी गोल हो सकती है। ऊपर की गोलाई ही हाथ डालने के लिए खुली रहती है। इस मैनुवल में प्वाइन्ट तथा कर्व पर दिये सेक्शन का अध्ययन करने के बाद आप इन आकारों को हैन्डिल करने



के तरीको को जान जायेंगे। पॉकेट सादी, कपड या इसके ऊपर फ्लैप अटैच वाली हो सकती हैं, इन पर फ्लैप लगाये के तरीके इस यूनिट मे आगे दिये जायेंगे।

आमतौर पर पॉकेट गारमेन्ट के ग्रैन पर काटी जाती है, परन्तु चेक और प्लेड सजावटी प्रभाव के लिए तिरछी काटी जाती है।

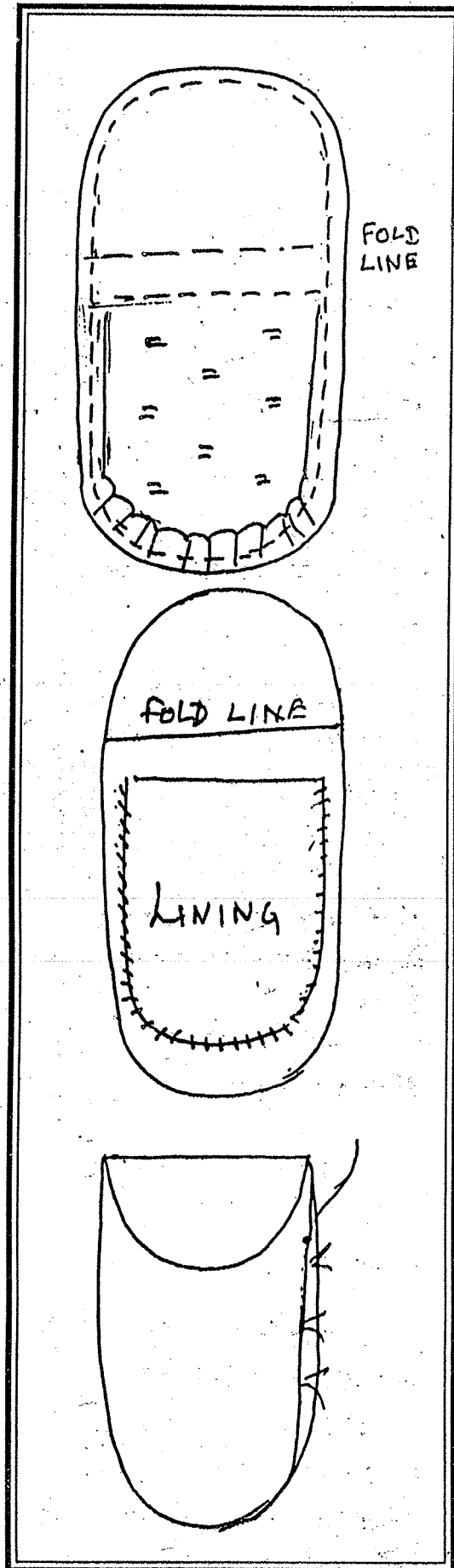
सिंगल लाइन्ड और डबल पॉकेट के उदाहरण बनाने के तरीके के साथ दिये गये हैं। यह भी बताया गया है कि उनको किस प्रकार लगाया जायेगा।

**एकहरे फ़ैब्रिक से पैच पॉकेट को टॉप स्टिच करना:-**

गारमेन्ट पर पॉकेट की पोजीशन का निशान लगाकर नीचे दिये गये तरीके से आगे बढ़े।

१- पॉकेट के ऊपरी किनारे को फिनिश करें। यह आप किसी भी तरीके से कर सकते हैं, आमतौर पर किनारे पर सिलाई लगाकर कर सकते हैं।

२- फेसिंग को उल्टी तरफ फोल्ड लाइन पर मोड़ लें (जैसे फिनिश पॉकेट का ऊपरी किनारा)। स्टिचिंग लाइन पर फेसिंग के एक्रॉस इन्ड को मशीन करें। ट्रिम करे और



लेयर करें।

३- फेसिंग को उल्टी तरफ मोड़ लें। बाकी बचे हिस्से सीम एलाउन्स को मोड़ लें, पॉकेट को गोल करें तथा टैक करें, मोड़पर भारीपन से बचने के लिए मोड़ पर यदि जरूरी हो तो भी एस काट दे जिससे मोड़ पर भारी पन नहीं आये। प्रेस कर लें।

४- पॉकेट के उल्टी तरफ फेसिंग के एज को धीरे से स्लिप स्टिच करें।

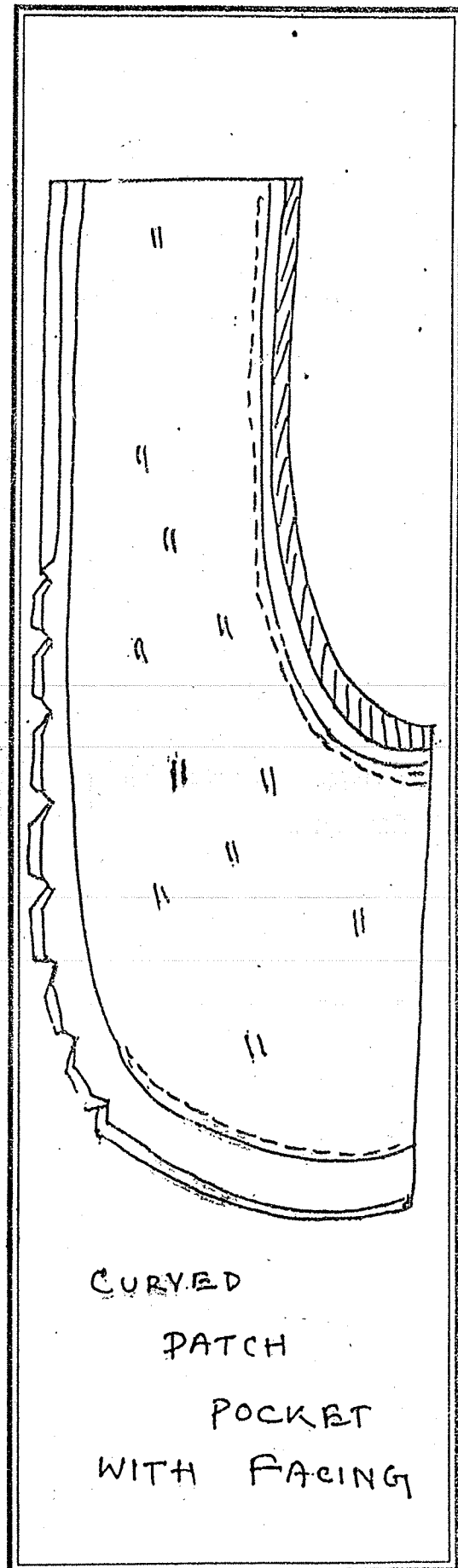
५- पॉकेट को गारमेंट पर सँ - लें, टेप ऊपर के दोनों कोनों पर लगाना न भूलें।

६- पॉकेट को गारमेंट पर ऊपर की सिलाई करें, शुरु और अन्त में एक छोटा त्रिकोण बनाना न भूलें।

**कफड पैच पॉकेट, इन्टर फेसिंग और लाइन्ड:-**

गारमेंट में पॉकेट की पोजीशन मार्क कर नीचे दिये तरीके से आगे बढ़ें।

१- पॉकेट और बड़े हुए कफ पर उल्टी तरफ इन्टरफेसिंग करके टैक करें। हल्के वजन की फैब्रिक और इन्टरफेसिंग पर हेरिंगबोन स्टिच करें। इसको सीम में न मिलायें। यह पॉकेट के किनारे उभार देगी।



२- कफ फेसिंग को पॉकेट पर सीधी तरफ टैक करें। मशीन करें, लेयर करें तथा लेयर करें और उल्टी ओर मोड़ दें। कफ के किनारे को अन्दर की तरफ मोड़ते हुए मशीन करें। प्रेस करें।

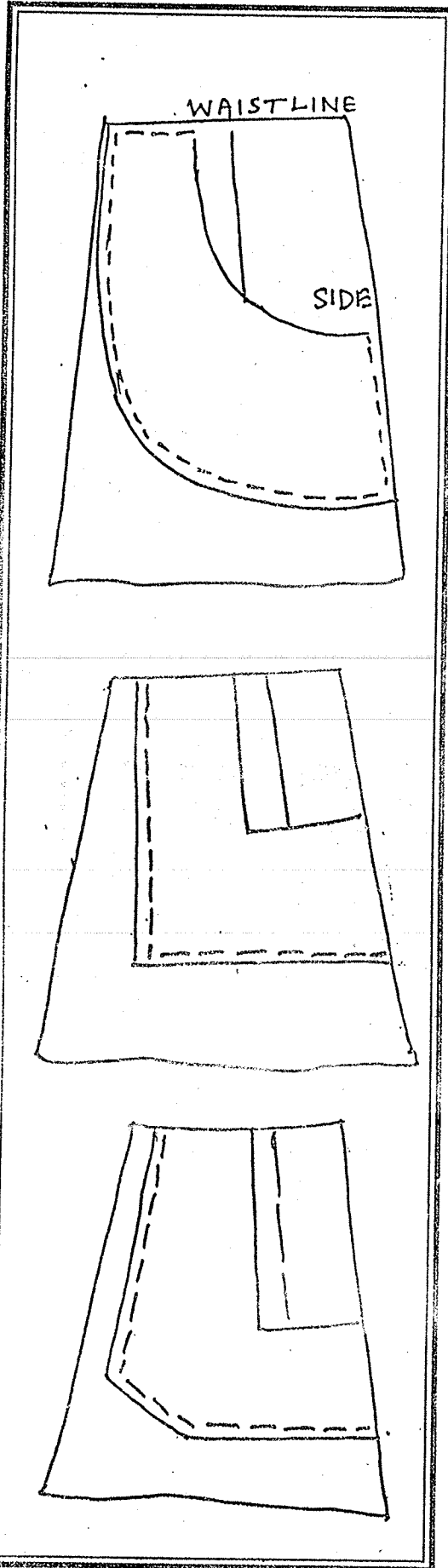
३- बचे हुए सीम एलाउन्स मोड़े, पॉकेट पर भी मोड़ पर काट दें, यदि आप जरूरी समझें तो टैक करके प्रेस करें।

४- सीम एलाउन्स लाइनिंग पर ३ मि०मी० अन्दर की तरफ स्टिचिंग लाइन पर मोड़े। लाइनिंग को पॉकेट के उल्टी तरफ स्ट्रेच स्टिच करें। पॉकेट और कफ के सीम एलाउन्स की लाइनिंग के किनारे पर करें, प्रेस करें।

५- पॉकेट को गारमैन्ट में टॉप और स्लिप स्टिच करें।

दोहरे कपड़े से टॉप स्टिच पैच पॉकेट लगाना:-

यह तरीका टेप फैब्रिक की डबल परत के लिए सबसे अच्छा है। यदि लाइनिंग काम में लाई जाती है तब यह सदा सीधी तरफ दिखाई देती है। इस तरीके से पॉकेट की कोई भी शेप बनाई जा सकती है। यहाँ ट्राउजर टाइप पॉकेट दी गई हैं जो आमतौर पर पर सीम में दबा दी जाती हैं। यह शॉर्ट्स और स्पोर्ट्स



के कपड़ो पर लगाई जाती है। यह गारमेन्ट मे साइड सीम और कमर फिनिश करने से पहले लगा लेना चाहिए। यह बहुत मजबूत इन्टर फेरड होगी।

१- पॉकेट के अन्दर उल्टी तरफ इन्टरफेसिंग करके टैक करें।

२- पॉकेट के टुकड़े को सीधी ओर एक साथ रखें। ऊपर और नीचे के किनारे को टैक करके मशीन चलायें।

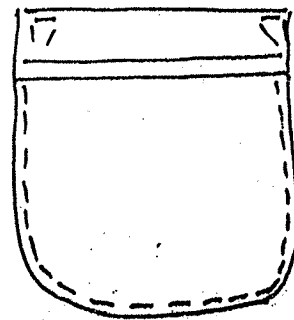
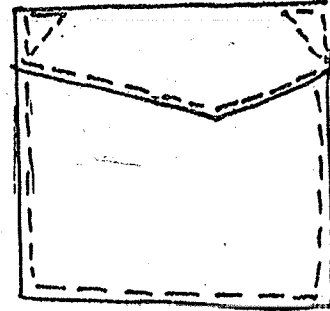
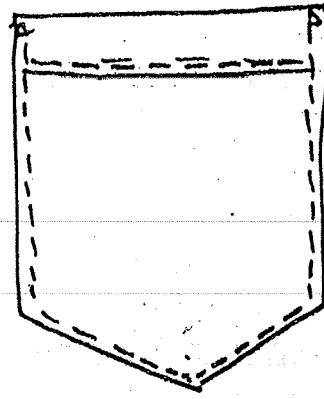
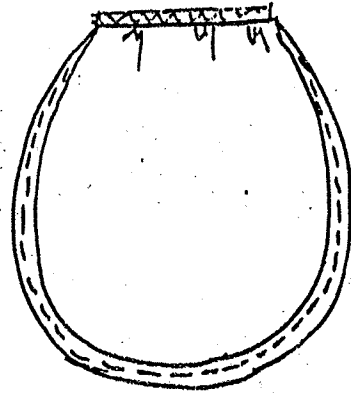
३- सीम एलाउन्स को लेयर करें तथा एलाउन्स को घुमाव पर क्लिप करें जैसा कि ऊपर बताया गया है।

४- पॉकेट के अन्दर का हिस्सा बाहर करें। टैक किनारे सीम करके प्रेस करें।

५- गारमेन्ट को टैक करें, पॉकेट का किनारा ऊपर वेस्ट लाइन के साइड सीम में अन्दर लायें। पॉकेट के नीचे हिस्से पर स्टिचिंग करके प्रेस करें।

६- गारमेन्ट आम तरीके से बनाते हैं, पॉकेट के किनारे साइड सीम और कमर की फिनिश में देबाकर बनाना शुरू करें।

पॉकेट के किनारे जरूरी नहीं हैं कि सीम लाइन के अन्दर जायें, यदि इसे मोड़ दिया जाये तब यह



बच्चे की ड्रेस पर बहुत सुन्दर सजावट का रूप लेगा। इतना पढ़कर आपको पॉकेट के बारे में कुछ अन्दाजा लग गया होगा।

**अभ्यास-**

१-- पाठ्य मे दिए गये सभी प्रयोगों का नमूना बनायें।

**४.४ सारांश:-**

कफ सीधे एवं शोष, कसे व ढीले, ओपनिंग और बिना ओपनिंग के, कम चौड़े और गहरे अर्थात् लम्बे हो सकते हैं। कफ स्लीव की किसी भी लम्बाई मे जोड़े जा सकते हैं। कफ स्लीव की कुल लम्बाई का हिस्सा हो सकते हैं और स्लीव के ऊपर फोल्ड किये हुये या सजावट के लिये अलग से जोड़े जा सकते हैं। कफ आमतौर पर डबल इन्टर फेसिंग मैटेरियल से बनाये जाते हैं। फ्रिल और फ्लेयर कफ एक परत और डबल परत के भी बनाये जा सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के कफ जो इस पाठ्य में दिखाये गये हैं वे हैं— स्ट्रेट बैन्ड, बिना ओपनिंग के, स्लीव के हिस्से की तरह काटे गये टर्नड बैक कफ, शोष कफ, इन्टर फेसिंग कफ, स्ट्रेट बैन्ड ओपनिंग के साथ, बैन्ड बिना एक्सटेन्शन के साथ और बैन्ड एक्सटेन्शन के साथ, आस्तीन के हिस्से की तरह कटा टर्नड बैक कफ, अलग से कटा शोष कफ, तथा फ्रिल्ड या फ्लेयर्ड कफ।

शीयरिंग दो या दो से अधिक लाइनो के गैदरिंग से बनती है। घेरे बनाने का मतलब सजावटी तरीका है। इसका प्रयोग एक छोटे जगह किया जा सकता है इसे हाथ और मशीन दोनो द्वारा किया जा सकता है।

पॉकेट केवल सजावटी और उपयोगी दोनों हो सकती हैं। पॉकेट तीन प्रकार की बनती है। पूरी दिखाई देने वाली यानी पैच पॉकेट, दूसरी सीम पॉकेट यानी ट्राउजर पॉकेट, तीसरी कट पॉकेट यानी जो गारमेन्ट को कट लगाकर बनाई जाती है। यह बाउन्ड या पाइण्ड पॉकेट होती हैं।

**४.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास**

प्रश्न-१ विभिन्न प्रकार के कफ के बारे मे लेख लिखें?

प्रश्न-२ स्ट्रेट बैन्ड और ओपनिंग स्टिच के साथ कफ कैसे बनाया जाता है।

प्रश्न-३ शीयरिंग क्या है और कैसे की जाती है?

प्रश्न-४ विभिन्न प्रकार की पॉकेट कौन सी हैं?

प्रश्न-५ पैच पॉकेट स्टिच कैसे की जाती है?

४.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इन साइक्लोपीडिया ऑफ निडिल क्राफ्ट  
बाई जूडी ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।





उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

डी०एफ०डी०-05

फैशन डिजाइनिंग

कस्ट्यूम डिजाइन एवं फैब्रीकेशन

ब्लॉक

६

फिनिशिंग

यूनिट-५

फिटिंग समस्या एवं समाधान

यूनिट-६

नेकलाइन एवं कॉलर

यूनिट-७

आस्तीनें तथा बॉहे

यूनिट-८

वेस्ट बैन्ड इत्यादि

## ब्लॉक-२

### पाठ्यक्रम प्रतिकरूप:-

इस ब्लॉक में कपड़ों के संग जुड़ी फिटिंग की समस्याओं तथा उनके समाधान के बारे में बताया गया है। इसमें क्रम से निर्देश भी दिये गये हैं जो यह बताते हैं कि विभिन्न नेकलाइन कालर, आस्तीन, मुडढ़ा तथा कमर की पेट्टी को किस प्रकार सिलना चाहिए। इस ब्लॉक में रेखचित्र भी दिये गये हैं जिससे समझने में आसानी हो।

### ब्लॉक-२

### फिनिशिंग

### यूनिट-५

#### फिटिंग की समस्या तथा समाधान:-

इस इकाई में अच्छी फिटिंग के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया है कि अच्छी फिटिंग किस प्रकार की जा सकती है। कुछ आम फिटिंग समस्याओं तथा उनके समाधान के तरीकों का भी विवरण किया गया है।

### यूनिट-६

#### नेकलाइन तथा कालर

इस इकाई में नेकलाइन व कॉलर को किस प्रकार सिलकर फिनिश करना चाहिए, बताया गया है।

### यूनिट-७

#### आस्तीन तथा मुडढ़ा:-

इस इकाई में आस्तीनों व मुडढ़े को सिलने के तरीकों को बताया गया है।

### यूनिट-८

#### वेस्टबैन्ड:-

इस इकाई में वेस्टबैन्ड को किस तरह बनाया जाता है, उसका विवरण किया गया है।



संरचना

- ५.१ यूनिट प्रस्तावना
- ५.२ उद्देश्य
- ५.३ फिटिंग समस्या व समाधान
- ५.४ सारांश
- ५.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- ५.६ स्वाध्ययन हेतु
- ५.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस इकाई में अच्छी फिटिंग के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया है कि अच्छी फिटिंग किस प्रकार की जा सकती है। कुछ आम फिटिंग समस्याओं तथा उनके समाधान के तरीकों का भी विवरण किया गया है।

५.२ उद्देश्य:-

अच्छे किस्म के डिजाइनर वियर कपड़ों के लिए अच्छी फिटिंग महत्वपूर्ण है। एक अच्छी फिटिंग का वस्त्र खराब आउट फिट की अपेक्षा ज्यादा प्रभावशाली होते हैं। यह यूनिट वस्त्र के सामान्य फिटिंग समस्याओं के समाधान में आपकी सहायता करेगा।

५.३ फिटिंग समस्याएँ:-

मूल रूप से अच्छी फिटिंग का मतलब उन कपड़ों से है जिन्हें पहनकर आपको अच्छा लगता है और आप अच्छे दिखते हैं। इन कपड़ों में आपको अपने सभी काम आसानी और सुविधापूर्वक कर पाने को छूट होनी चाहिए जैसे- बैठना, उठना, चलना या झुकना। इन कपड़ों को खड़ा होने पर ठीक प्रकार से शरीर पर गिरना चाहिए।

फिटिंग को जैकेट, शर्ट व जैकेट में जाँचने के लिए, ऊपर कंधे व गले से शुरू करें। स्कर्ट व पैन्ट के लिए कमर से शुरू करें, क्योंकि यहाँ कि फिटिंग पूरे वस्त्र को प्रभावित करेगी।

फिटिंग के आधार:- कन्धे की सिलाई कन्धे पर, सीधी सिलाई मुड़दे के बिल्कुल ऊपरी हिस्से तक होती है जब तक कोई विशेष डिजाइन न हो। नेक लाइन शरीर से बिना गैप के चिपटी होनी चाहिए।

मुड़दे की सिलाई गोल आकार में की जाती है जहाँ कन्धा खत्म होता है। आस्तीन की कैप में किसी प्रकार का खिचाव नहीं होना चाहिए।

छाती पर बिना सिकुड़न या खिचाव के कपड़े को बैठना चाहिए। लेपल बोडिस पर बैठे हुए होने चाहिए।

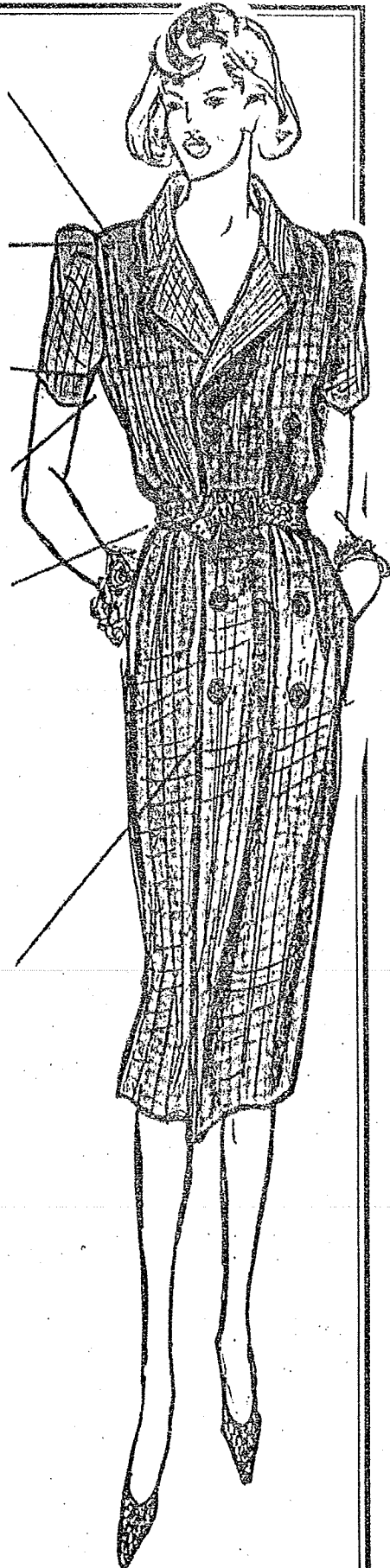
मुड़दे के नीचे का हिस्सा आधा इंच नीचे होना चाहिए बिना आस्तीन के वस्त्रों के लिए, और एक इंच सेट इन आस्तीन के लिए।

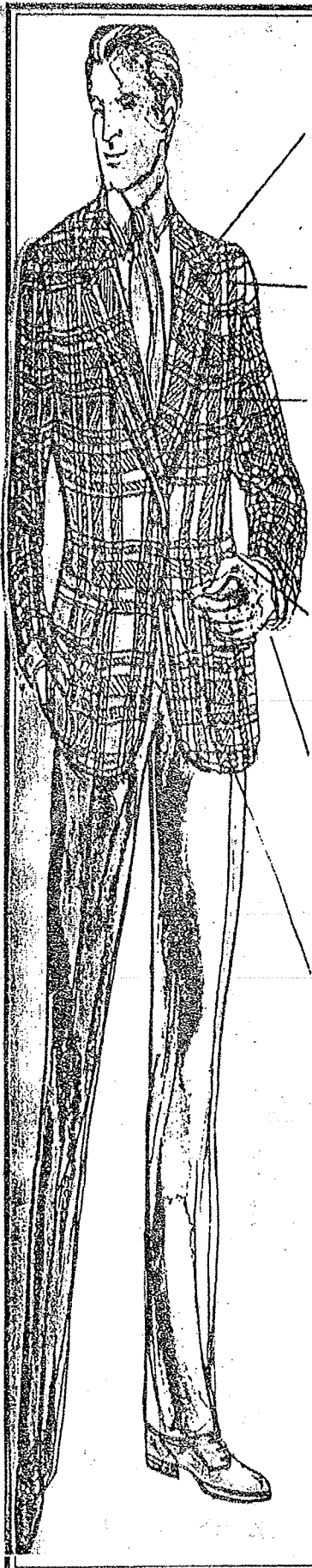
कमर पर सिलाई प्राकृतिक वेस्टलाइन पर होनी चाहिए, जब तक अलग से डिजाइन न किया गया हो। कमर पटी कसी पर आरामदायक होनी चाहिए। जैकेट कमर पर कुछ अन्दर की तरफ आती हुई होनी चाहिए।

लम्बी आस्तीनों को कन्धे से लेकर कलाई तक पतला होते हुए आना चाहिए। कोहनी तक सीधा लटकेगा और फिर थोड़ा सा आगे की तरफ को आयेगा। लम्बी आस्तीनों से कलाई की हड्डी को कवर कर लेना चाहिए जब हाथ को मोड़ा जाये। पुरुषों की जैकेट में आधे इंच शर्ट का कफ अन्दर से दिखता है।

बटन लगाने पर दो बटन के बीच में खिचाव नहीं होना चाहिए।

पेट पर आरामदायक फिटिंग होनी चाहिए। हिब के ऊपर कपड़े में न तो सुकड़न या खिचाव और न ही ढीलापन होना चाहिए।





**फिटिंग के आधार:-** कन्धे की सिलाई कन्धे पर, सीधी सिलाई मुड़के के बिल्कुल ऊपरी हिस्से तक होती है जब तक कोई विशेष डिजाइन न हो। नेक लाइन शरीर से बिना गैप के चिपटी होनी चाहिए। मुड़के की सिलाई गोल आकार में की जाती है जहाँ कन्धा खत्म होता है। आस्तीन की कैप में किसी प्रकार का खिचाव नहीं होना चाहिए।

छाती पर बिना सिकुड़न या खिंचाव के कपड़े को बैठना चाहिए। लेपल बोडिस पर बैठे हुए होने चाहिए। मुड़के के नीचे का हिस्सा आधा इंच नीचे होना चाहिए बिना आस्तीन के वस्त्रों के लिए, और एक इंच सेट इन आस्तीन के लिए।

कमर पर सिलाई प्राकृतिक वेस्टलाइन पर होनी चाहिए, जब तक अलग से डिजाइन न किया गया हो। कमर पेटी कसी पर आरामदायक होनी चाहिए। जैकेट कमर पर कुछ अन्दर की तरफ आती हुई होनी चाहिए।

लम्बी आस्तीनों को कन्धे से लेकर कलाई तक पतला होते हुए आना चाहिए। कोहनी तक सीधा लटकेगा और फिर थोड़ा सा आगे की तरफ को आयेगा। लम्बी आस्तीनों से कलाई की हड्डी को कवर कर लेना चाहिए जब हाथ को मोड़ा जाये। पुरुषों की जैकेट में आधे इंच शर्ट का कफ अन्दर से दिखता है। बटन लगाने पर दो बटन के बीच में खिचाव नहीं होना चाहिए।

पेट पर आरामदायक फिटिंग होनी चाहिए। हिब के ऊपर कपड़े में न तो सुकड़न या खिचाव और न ही ढीलापन होना चाहिए।

हेमलाइन जमीन से समतल बराबर होनी चाहिए। ऊँचाई भी वस्त्र अनुसार होनी चाहिए। पैन्ट की हेम जूते की नोक को छूती है और पीछे, हील के ऊपरी हिस्से तक होती है। पुरुषों की जैकेट हिप को ढकती है व सामने का खुला हिस्सा सीधा गिरता है।

अन्य बिन्दु जहाँ पर आपको जाँच करना चाहिए वे हैं— डार्ट की जगह, मुडदा तथा सिलाइयाँ। जितनी समतल सिलाइयाँ है वह जमीन से समानान्तर होनी चाहिए। सीधी लम्बी सिलाइयाँ खड़ी होनी चाहिए, इनमें आगे या पीछे की तरफ घुमाव नहीं होना चाहिए।

### फिटिंग कब देखनी चाहिए?

जैसे ही वस्त्रों में डार्ट डाल दी जाती है और कन्धे तथा बगल से कच्ची सिलाई कर दी जाती है तब फिटिंग देखनी चाहिए।

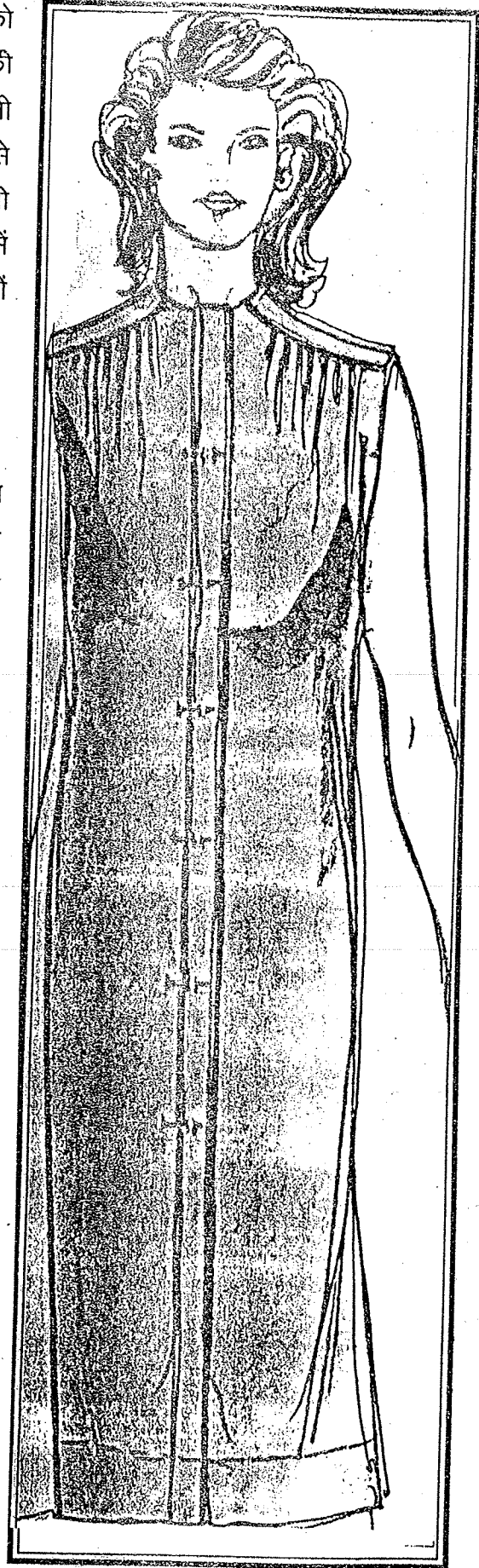
स्कर्ट व पैन्ट में किनारे सिलने के बाद आसन बनाये और कमर पेटी को कच्चा करें फिर पहन कर देखें।

इस समय कोई भी बदलाव वस्त्र में करना आसान होगा, जिप आस्तीन तथा सिलाई की अन्य बरीकियाँ करने से पहले।

अगर आपके वस्त्र में लाइनिंग लगी है तो लाइनिंग को लगाकर फिटिंग देखें।

### क्या चीज देखी जाये?

वस्त्र को पूरी तथा अच्छे लुक व आराम के लिए जाँचे। क्या वह संतुलित है? क्या कपड़े की ग्रेन व सिलाइयाँ सीधी हैं? क्या कहीं पर भी अतिरिक्त सिकुड़न है। निर्धारित नाप



हर जगह की जाँचें।

जरूरी बदलाव पर निशान लगाने के बाद कच्ची पक्की सिलाई लगायें और सिलाई पर प्रेस करें फिर आगे की सिलाई करें।

जब वस्त्र तैयार हो जाये तो हेम करने से पहले एक बार और पहनाकर देख लें। बटन व बटन होल के निशान लगे होने चाहिए।

पक्का करने से पहले पॉकेट को पिन करें, बेल्ट, प्लैप या ट्रिम्स को लगाकर देखें कि वह कहीं ज्यादा अच्छे लग रहे हैं। सुसुके बाद उसकी जगह निशान लगायें और टॉक लें।

जब आप अपने वस्त्र से संतुष्ट हैं तो बाकी की बारीकियों पर काम करें।

**फिट कैसे करें?**

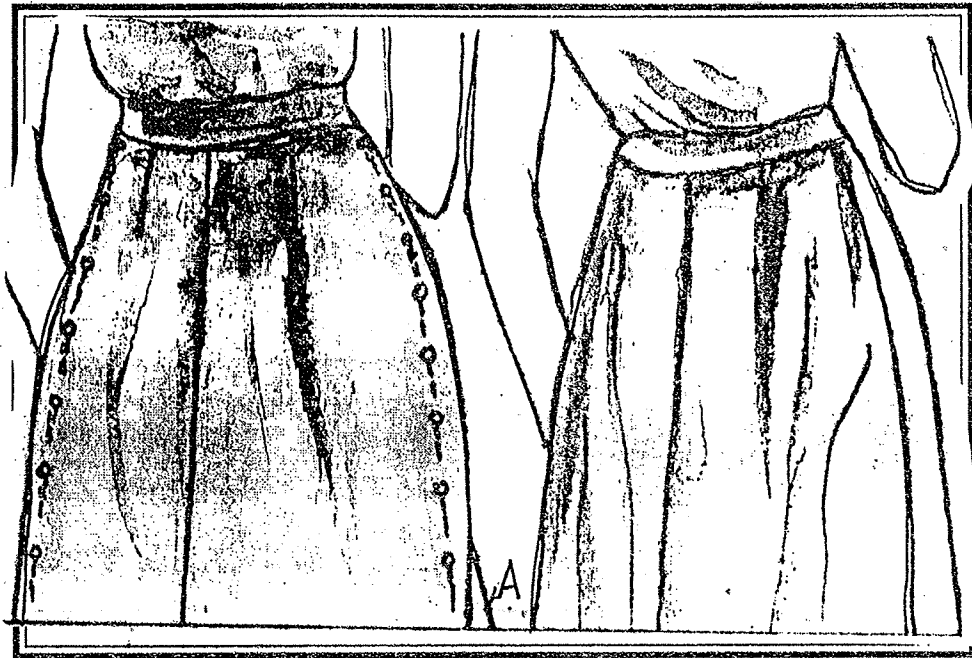
और अधिक स्पष्ट फिनिशिंग के लिए कपड़े को सीधी तरफ से पहनने की कोशिश करें। उल्टी तरफ बदलाव किसी भी सिलाई पर करना आसान होगा।

फिटिंग की जाँच करते समय उन्हीं जूतों और अन्दर के

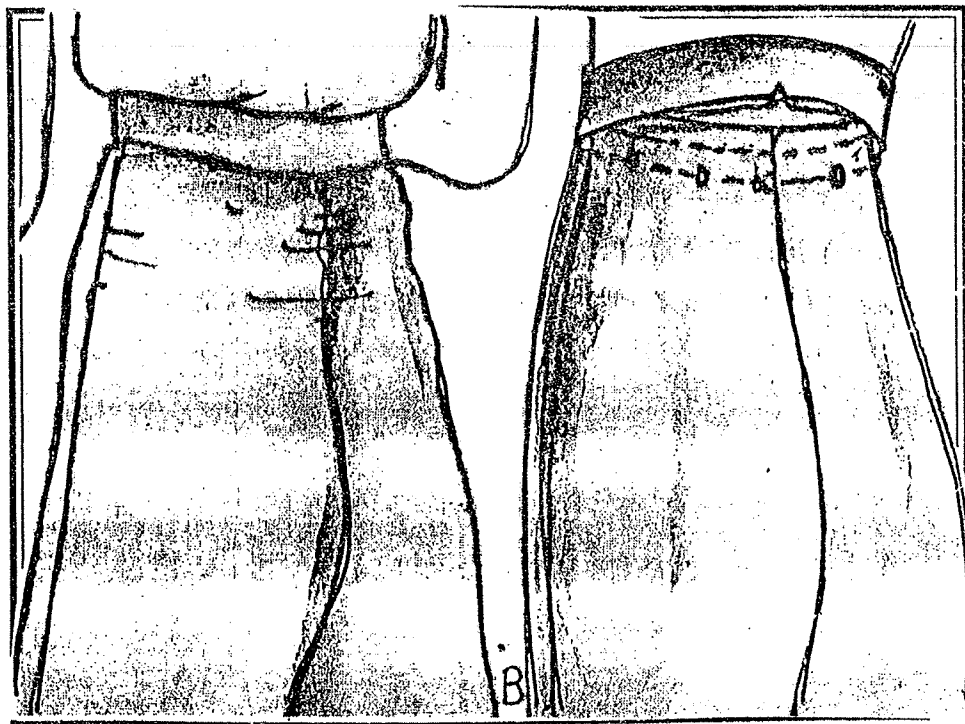




वस्त्रों को पहनें जिन्हें आपने उस वस्त्र के साथ पहनना हो। ऊपर से शुरू करके नीचे तक आर्यें। कई बार एक छोटा सा गले या कन्धे पर बदलाव पूरे वस्त्र की फिटिंग को बेहतर कर सकता है।



वस्त्रों को बहुत कसा हुआ नहीं बनाये।। आमतौर पर दुबले लोगों पर फिटिंग कपड़े अच्छे लगते हैं। परन्तु भारी लोगों पर थोड़े ढीले कपड़े अच्छे लगते हैं।



## सिलाई को बदलना:-

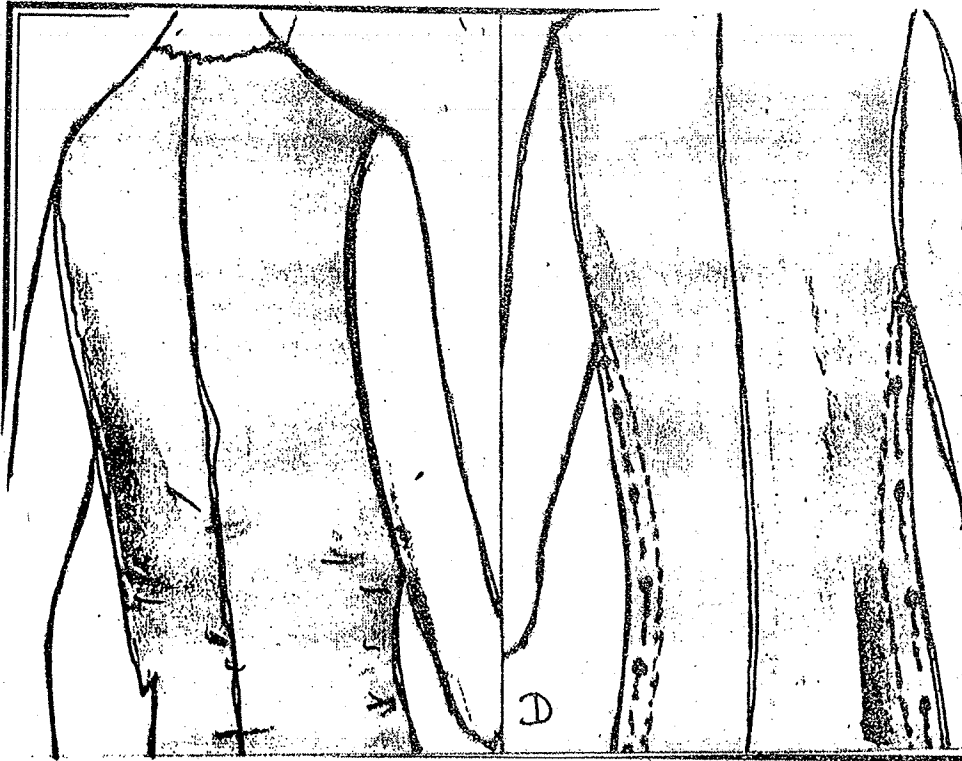
कपड़ों को सिकुड़न व मोड़ के लिए जाँचें। जहाँ आप इनको पायें वहाँ आपको अपनी सिलाई बदलनी होगी। नई सिलाई की लाइनों को पिन से निशान लगायें।

अगर कपड़ा ज्यादा ढीला है तो उस सिलाई के पास से कपड़ा उठे या मुड़ेगा।

अगर कपड़ा लम्बाई में मुड़ रहा है तो अतिरिक्त कपड़े को, बगल की सिलाई को और गहरा करके लगायें।

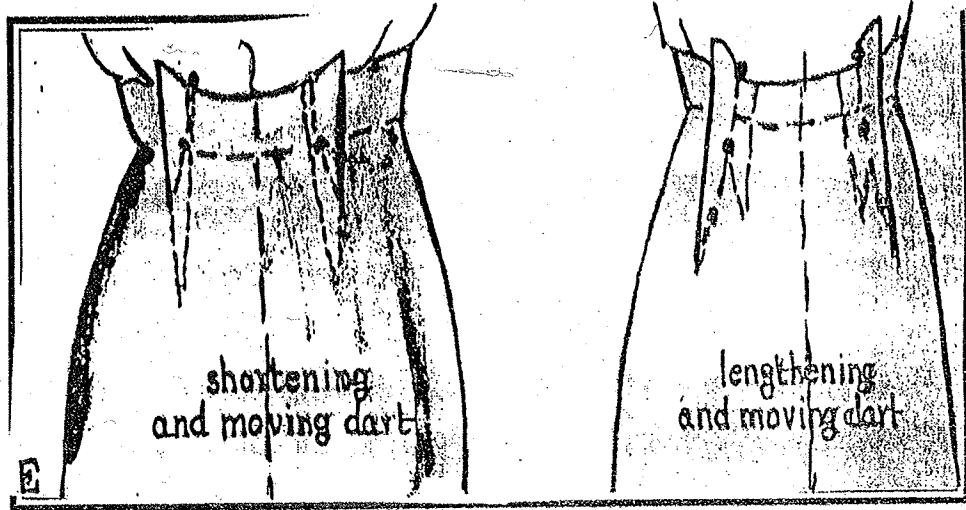


जब बेड़ी मोड़ या सिकुड़न कमर योक या किसी बेड़ी सिलाई पर पड़ती है तो



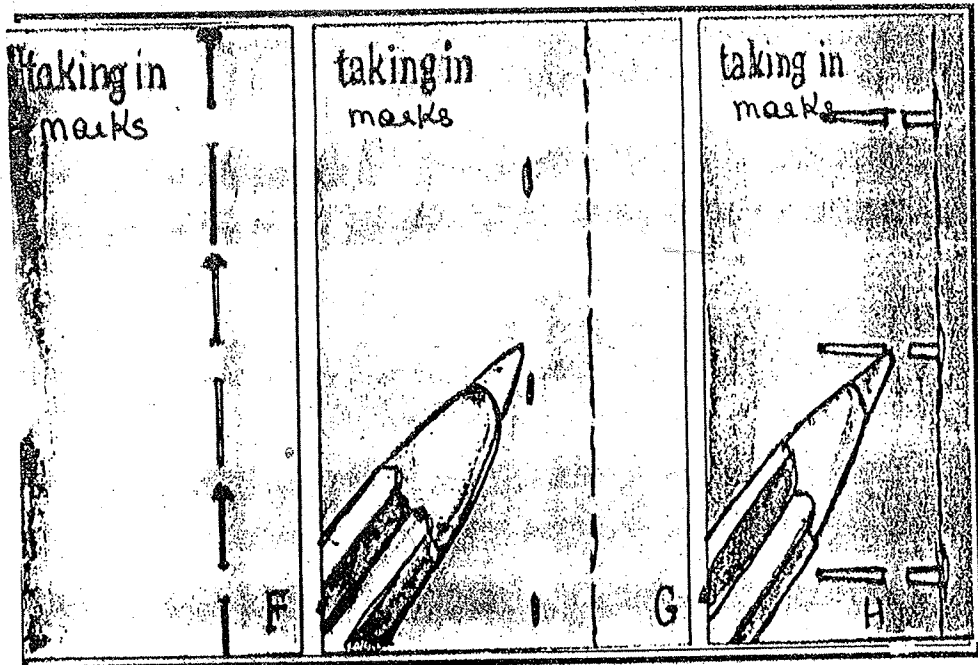
सिलाई को खोलें और अतिरिक्त कपड़े को दबायें।

लम्बी सिलाई को बराबर से करें। दोनों किनारों पर एक टुक बना दें। बजाये पूरी सिलाई पर निशान लगाने के अन्दर की तरफ से पुरानी सिलाई से बराबर की दूरी पर निशान लगायें।



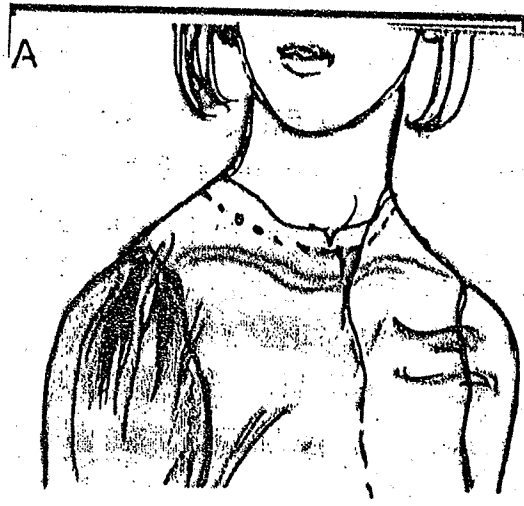
अगर वस्त्र ज्यादा कसा होता है तो खिंचाव या सिकुड़न का रूख तनाव की जगह पर होगा। सिलाई खोले और एक सेन्टी मीटर तक हर सिलाई को ढीला करके देखें।

अगर आप एक टुकड़े में बदलाव करेंगे तो उसे दूसरे पर भी करना पड़ेगा, जो उससे जुड़ा हुआ है।



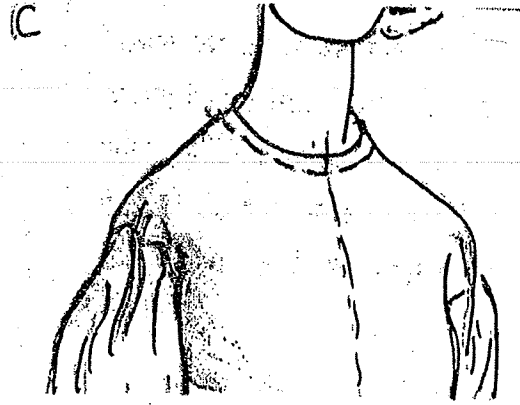
## डार्ट को बदलना:-

बेहतर आकार के लिए डार्ट को बदला जा सकता है। एक एकहरी नोकिली डार्ट के लिए पहले उस सिलाई को खोलें जहाँ से डार्ट डली है। किसी भी डार्ट को चौड़ा या पतला करने के लिए उसे खोलें और सही जगह पर दोबारा से पिन करें। यह सिलाई की लम्बाई बदल देगा इसलिए जरूरत पड़ने पर दोनों पल्लों की लम्बाई को भी जरूरत अनुसार ठीक करें।



अन्दर के हिस्से में बदलाव ले जाना:-

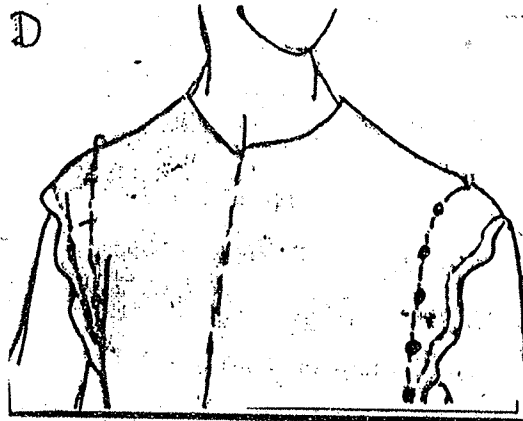
सीधी तरफ फिटिंग को पिन करने के बाद कपड़े को उल्टा करें और पिन के ऊपर चाक या पेन्सिल चलायें जिससे नई सिलाई की लाइन बन जाये।



पिन को हटायें और सिलाई की लाइन को जरूरत अनुसार सीधा करें। इसको दोबारा से पिन करके फिटिंग देखें या कच्ची सिलाई करके देखें।

कन्धे की फिटिंग:-

अगर आपके कन्धे चौड़े हैं तो कन्धा कस जायेगा और खिचाव दिखेगा।



निवारण:-

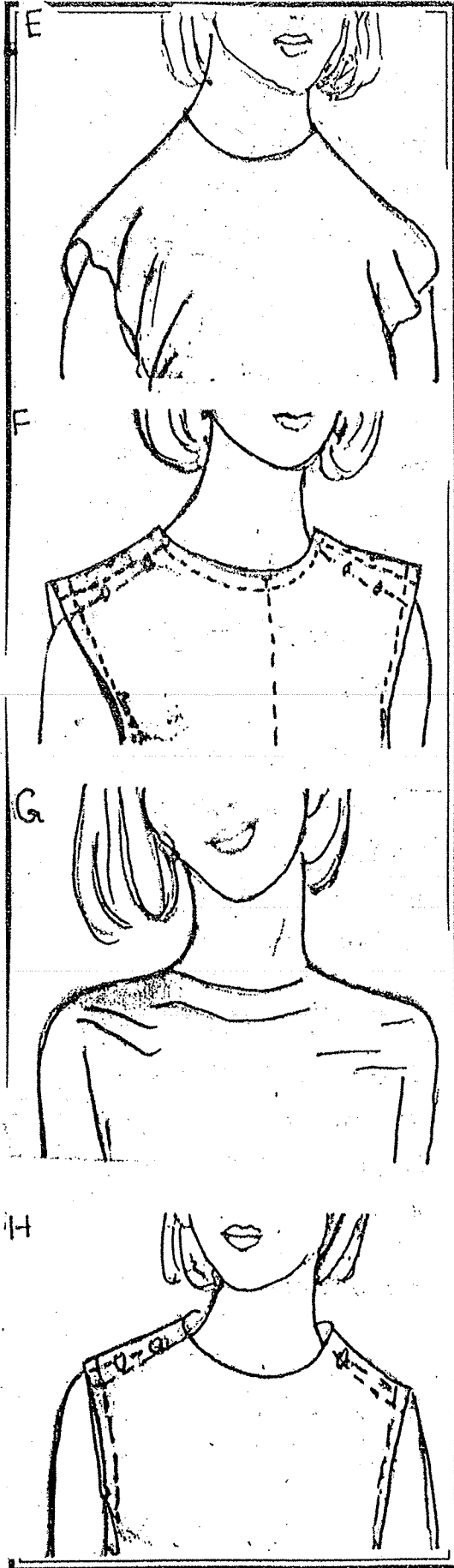
एक नई सिलाई की लाइन पर निशान लगायें जो एक सेन्टीमीटर ज्यादा हो और मुडड़े की तरफ को जाकर मिल जाये।

अगर आपके कन्धे पतले हैं और कन्धे की सिलाई आपके कन्धे पर आकर गिरती है।

निवारण:-

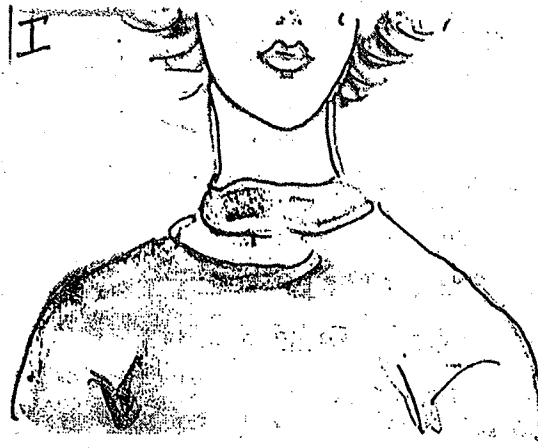
एक नये मुडड़े पर सिलाई की लाइन पर निशान लगायें जिससे जो अतिरिक्त कपड़ा कन्धे की चौड़ाई में है वह खत्म हो जाये और धीरे से पुराने मुडड़े पर जाकर मिल जाये।

अगर आपके कन्धे ढलकते हुए हैं, तो वस्त्र में तिरछी सिकुड़न पड़ेगी। यह सिकुड़न गले से लेकर पीछे और आगे के मुडड़े तक होगी।

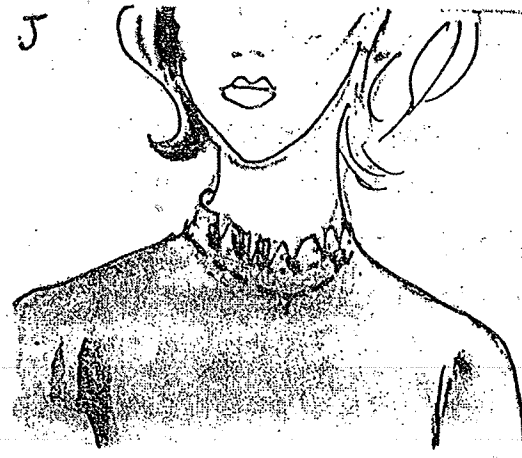


### निवारण:-

कन्धे पर अतिरिक्त कपड़े को लेकर पिन करें और इसको ले जाकर गले की सिलाई की लाइन पर मिलायें। जितना कन्धे को दबाया है उतना ही मुडढ़े की सिलाई को नीचे करें।

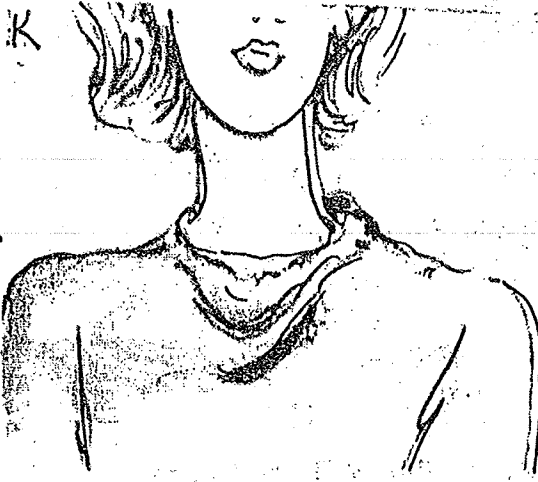


अगर आपके चकोर कन्धे हैं और वस्त्र कन्धा ऊपर की तरफ से किनारे तक खिंचता है।



### निवारण:-

कन्धे की सिलाई को खोलें और एक सेन्टी मीटर के करीब सिलाई बढ़ा दें। मुडढ़े को भी उतने से ही बढ़ा दें।



### गले की फिटिंग:-

अगर गला बहुत कसा हुआ है, बहुत ऊँचा लगता है और गले पर सिकुड़ता भी है।



निवारण:-

ध्यान से गले को आवश्यकता अनुसार सिलाई की लाइन या उससे ज्यादा काट दें जिससे नेकलाइन की फिटिंग सही हो जाये और फिर सिलाई की लाइन पर निशान लगायें।

अगर नेकलाइन बहुत बड़ी है और यह गले पर ठीक से बैठती नहीं है और आपकी गले की हड्डी ज्यादा दिखती है।

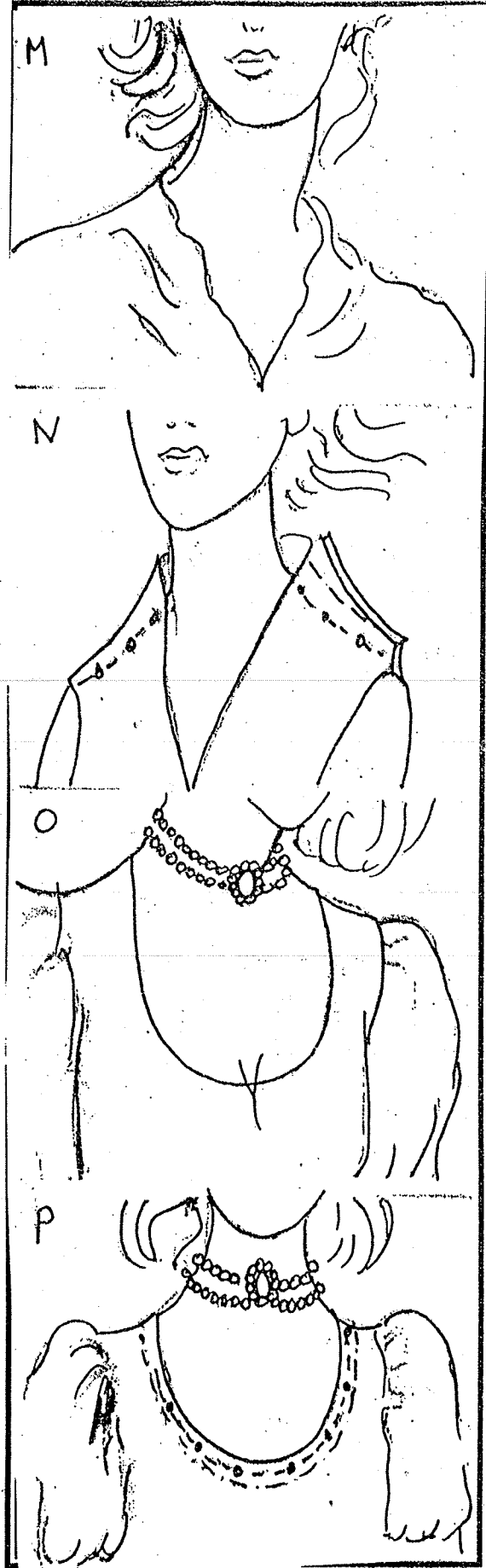
निवारण:-

एक नई नेकलाइन पर निशान लगाये जो पुरानी से एक सेन्टिमीटर ऊँची हों।

अगर नेकलाई में झोल हो और वह ठीक प्रकार से गले पर बैठती नहीं है।

निवारण:-

अतिरिक्त कपड़े को सामने के कन्धे पर से हटायें उतना ही कि झोल निकल जाये। फिर इस प्वाइन्ट से लाइन दोबारा बनायें जिससे वह पहले के मुडड़े से मिल जाये।



अगर आपकी नेकलाइन बहुत नीची हो और आप इसे ऊँचा करना चाहे तो—

निवारण:-

पहली नेकलाइन से एक सेन्टीमीटर ऊपर एक नया नेक सेन्टर पर निशान लगायें और गले के आकार के अनुसार गले का शेष बनायें।

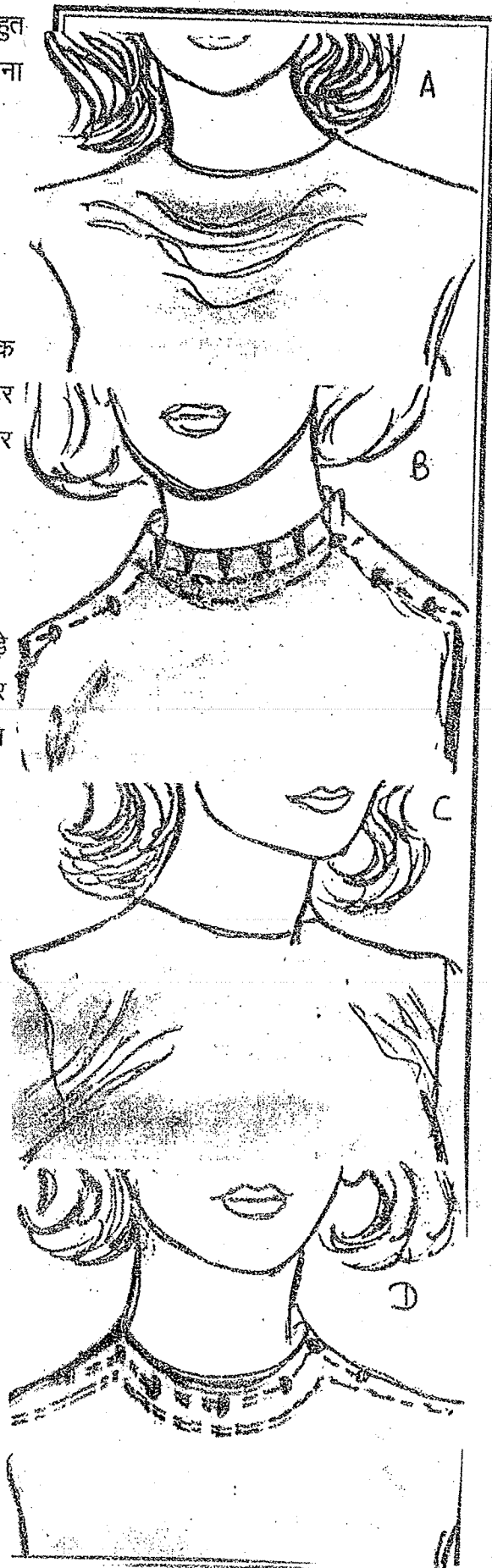
छाती की फिटिंग:-

अगर छाती कम है तो कपड़े के बड़े फोल्ड पड़ते हैं, गले और छाती की बीच ज्यादा लम्बाई कोने के कारण।

निवारण:-

गले के किनारे पर से शुरू करते हुए कपड़े के आगे के पल्ले को ही लें और कन्धा तथा बगल की सिलाई को दोबारा से हल्का सा दबाते हुए करें।

अगर आपकी छाती बाहर को निकलती हुई है तो कपड़ा छाती के ऊपर के हिस्से पर से मुड़के तक खिचेगा।





निवारण:-

गले के किनारे पर से शुरू करके गले के सिलाई के दबाव को थोड़ा कम करते हुए कन्धे से मिलाएँ एक नई ऊँची नेकलाइन और कन्धा बनायें।

छाती की फिटिंग:-

अगर आपकी बस्टलाइन नीची है तो बस्ट डार्ट तथा प्रिन्सेस लाइन का कर्व बस्ट प्वाइन्ट के ऊपर आता है।

निवारण:-

डार्ट को दोबारा से पिन लगायें जिससे वह नये बस्ट प्वाइन्ट से मेल खाये। नई डार्ट को सिलें। प्रिन्सेस स्टाईल में सिलाई के दबाव को सबसे उभरे हुए हिस्से पर से एक सेन्टीमीटर बढ़ा दें और थोड़ा ऊपर से कम कर दें।

अगर आपकी बस्ट लाइन ऊँची है तो बस्ट डार्ट क्या प्रिन्सेस लाइन बस्ट के कर्व के नीचे आयेगी।

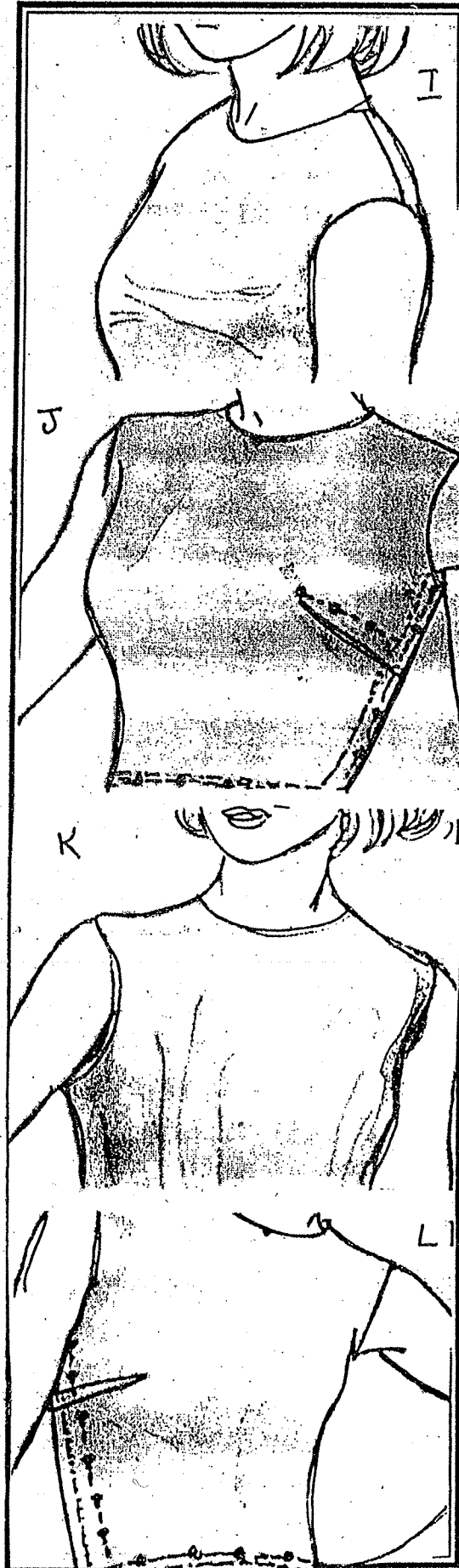


## निवारण:-

डार्ट को दोबारा से बनायें जिससे वह बस्ट प्वाइन्ट की तरफ है। नई डार्ट बनायें प्रिन्सेस स्टाइल पर एक सेन्टीमीटर के करीब सबसे फूले हुए हिस्से पर बढ़ा दे और इसे बस्ट के नीचे कम कर दें।

अगर आपके बस्ट का कप आकार बड़ा है, सी या डी, तो कपड़े पीछे की तरफ खिचेंगे। इसके लिए सामने की कमर को थोड़ा बढ़ा दें और कन्धे पर से एक सेन्टीमीटर ज्यादा करें।

अगर आपका बस्ट का कप आकार छोटा है, ए या एए, तो कपड़ों में लम्बे फोल्ड दिखेंगे, कमर गिरेगी और लम्बाई व चौड़ाई दोनों ज्यादा दिखेंगे।



### निवारण:-

कमर तथा बगल की सिलाई में से अतिरिक्त कपड़े को हटा दें, और कमर पर एक पतली डार्ट बनायें। अगर कमर पर कोई सिलाई नहीं है तो कन्धे पर से कपड़े को कम रखें और आगे के पल्ले की बगल की सिलाई को।

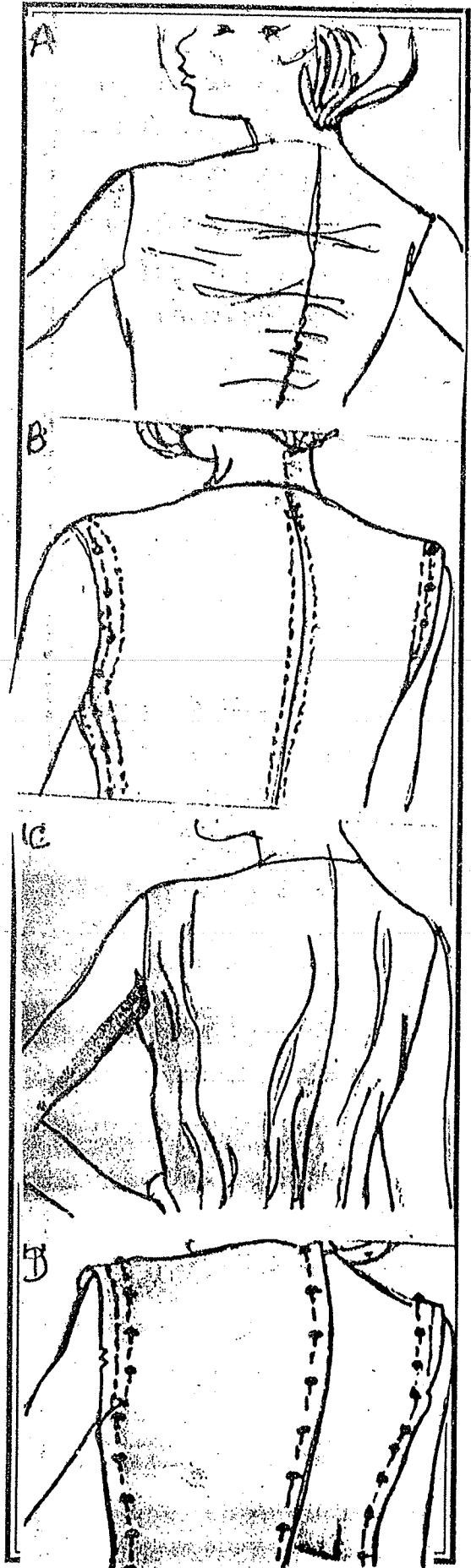
### पीछे की फिटिंग:-

अगर आपकी पीठ चौड़ी है तो पीछे के पल्ले में सिकुड़न तथा तनाव होगा क्योंकि कपड़ा कम पड़ेगा। (ए)

### निवारण:-

पीछे के पल्ले के बीच की सिलाई तथा पीछे की सिलाई के दवाब को एक सेन्टीमीटर बढ़ा दें। अगर बीच में जिप लगी है तो सिर्फ बगल की सिलाई में बदलाव करें।

अगर आपकी पीठ पतली है तो लम्बे फोल्ड पीछे की तरह आयेगे जो यह बतायेगा की वस्त्र की चौड़ाई ज्यादा है।



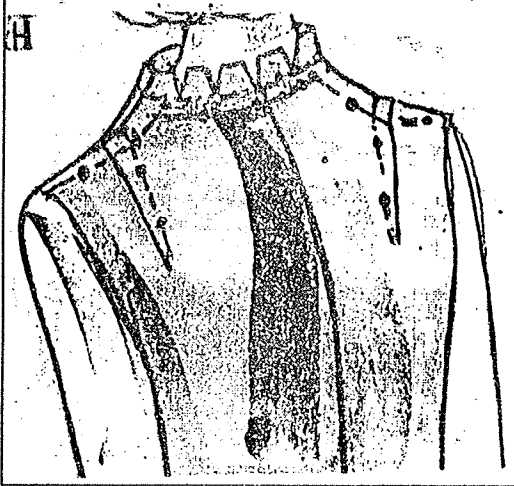
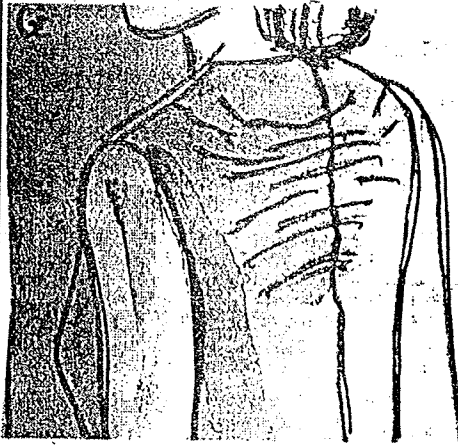
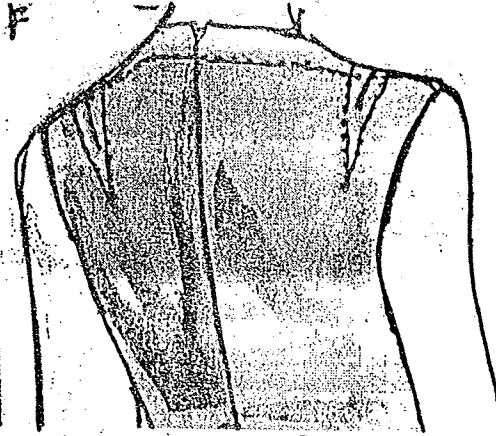
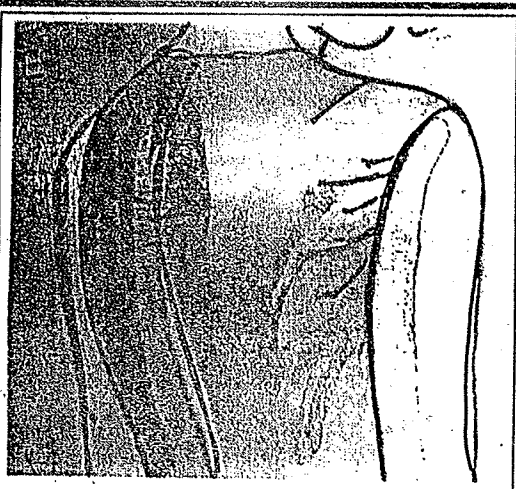
निवारण:- पीछे के पल्ले के सिलाई के दबाव तथा मुडड़े पर से अतिरिक्त कपड़े को हटायें।

अगर आपकी पीठ गोल है तो आपके कपड़े पीछे की तरफ खिंचेंगे और कमर भी उठ जायेगी।

निवारण:- पीछे की कन्धे की सिलाई को एक सेन्टीमीटर तक नीचा करें और मुडड़े की लाइन से बढ़ा दें। इसके अलावा पीछे की नेकलाइन को एक सेन्टीमीटर के करीब नीचा करें। अगर कमर पर सिलाई है तो पीछे के बोडिस में थोड़ा सा छोटा करें। नेकलाइन या कन्धे की डार्ट को दोबारा शैप करें और कर्व ठीक से बनायें।

अगर आप की पीठ एक दम सीधी है तो बेड़ी सिकुड़न गले के पास पीछे की तरफ पड़ेगी।

निवारण:- पीछे के कन्धे पर से सिलाई के दबाव को दबाए। फिर मुडड़े को दोबारा से बनाए। पीछे के गले को थोड़ा बड़ा करे और इसका दबाव भी ज्यादा रखें। अगर कमर पर सिलाई है तो उसे ऊँचा कर दे पीछे के बोडिस में। गले, कन्धे की डार्ट को दोबारा से बनाये।



### मुडढ़े की फिटिंग:-

अगर मुडढ़ा ज्यादा कसा या ऊँचा होगा तो हाथ हिलाने में दिक्कत होगी।

### निवारण:-

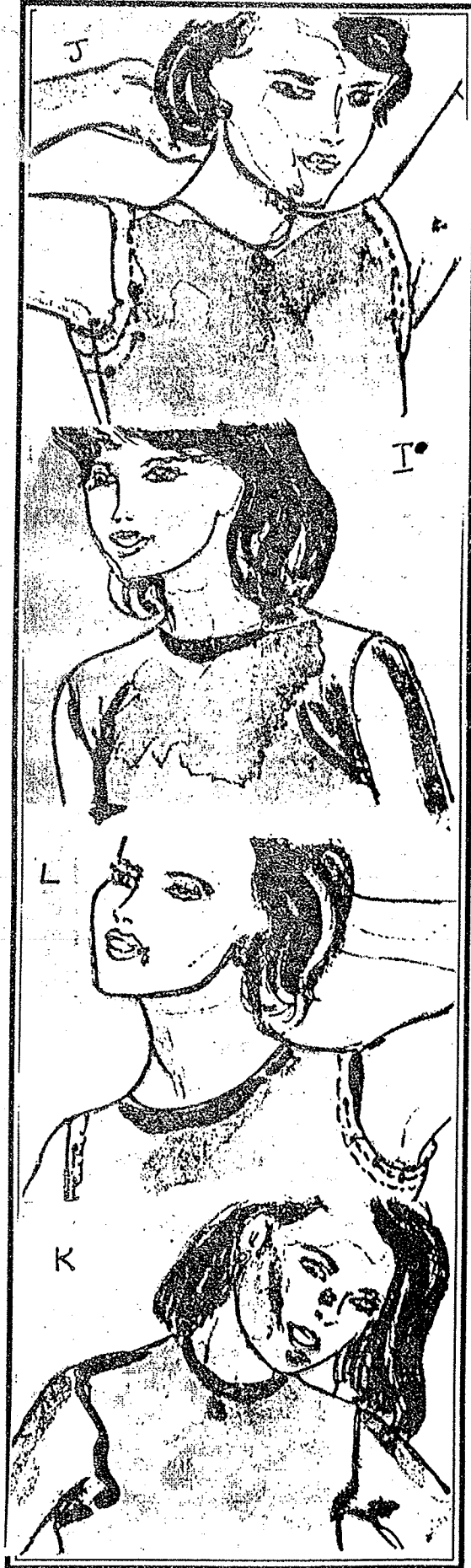
मुडढ़े को थोड़ा सा बड़ा बनायें और नीचे की तरफ से ज्यादा कटाव दें। कर्व को दोबारा बनाते हुए ऊपर तक शेप करें। जरूरत पड़ने पर कन्धे को ऊँचा करें।

अगर मुडढ़े में झोल आता है तो यह समस्या कन्धे, छाती या कपड़े के पीछे के पल्ले में होगी।

### निवारण:-

मुडढ़े को ऊँचा करें और सिलाई के दबाव को एक सेन्टीमीटर नीचे की तरफ से कम कर दें। नई सीम लाइन को तिरछा करके पुरानी सीम लाइन से मिलाएँ

### स्लीव फिटिंग:-



अगर आपकी ऊपर की बाँह भारी है तो जब आप हाथ नीचे करके खड़े होते हैं तो आस्तीन कसी हुई नजर आयेगी।

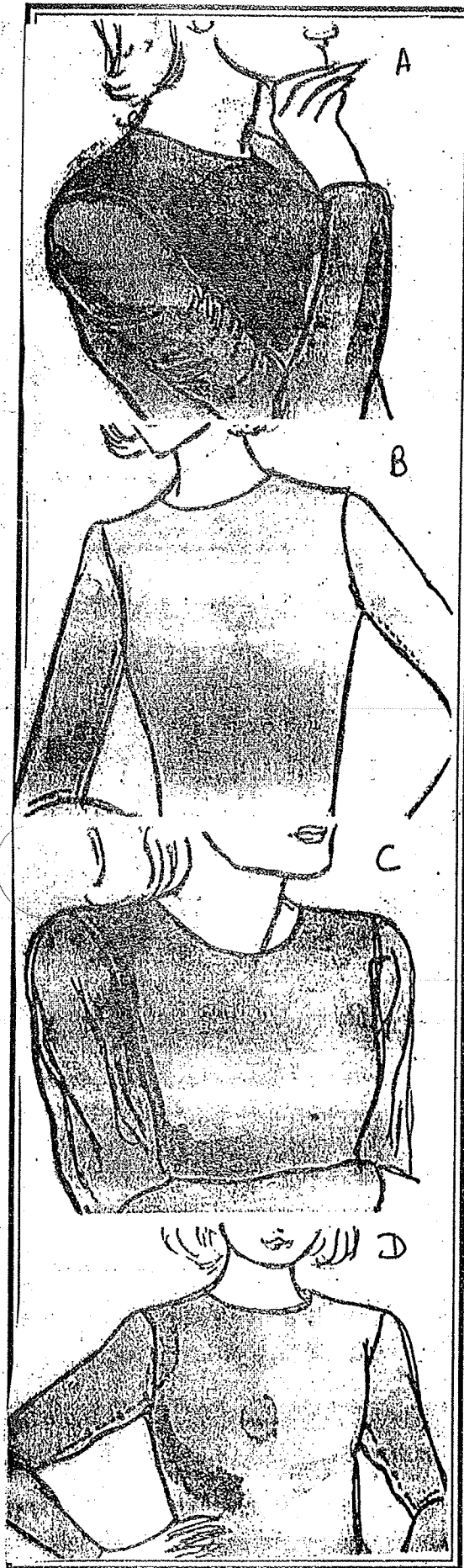
#### नियारण:-

आस्तीन की सिलाई का ऊपर के हिस्से को खोलें और मुड़के पर से बगल की सिलाई को भी। आस्तीन में सिलाई के दबाव को एक सेन्टीमीटर कम कर दें और आगे की सिलाई से कोहनी पर मिलायें, या फिर कलाई तक इसी तरह बगल की सिलाई मुड़के पर से बढ़ा कर कमर तक मिलाएँ।

अगर आप की ऊपर की बाँह बहुत पतली है तो आस्तीन में लम्बे फोल्ड आ जायेगे जब आप हाथ नीचे करके खड़े होंगे।

#### नियारण:-

आस्तीन की ऊपर की सिलाई को खोलें और मुड़के के नीचे बगल की सिलाई को भी। आस्तीन के दबाव को एक सेन्टीमीटर बढ़ा दें और नीचे आस्तीन की हेमलाइन से मिला दें। इसी तरह बगल की सिलाई पर दबाव बढ़ा दें और मुड़के को छोटा करते हुए कमर तक की सिलाई से मिला दें।



अगर आस्तीन के कैंप का हिस्सा बराबर से बटा नहीं है तो किसी भी सेट इन आस्तीन में तिरछे फोल्ड होंगे जो स्लीव केप के आगे और पीछे पड़ेंगे।

**निवारण:-**

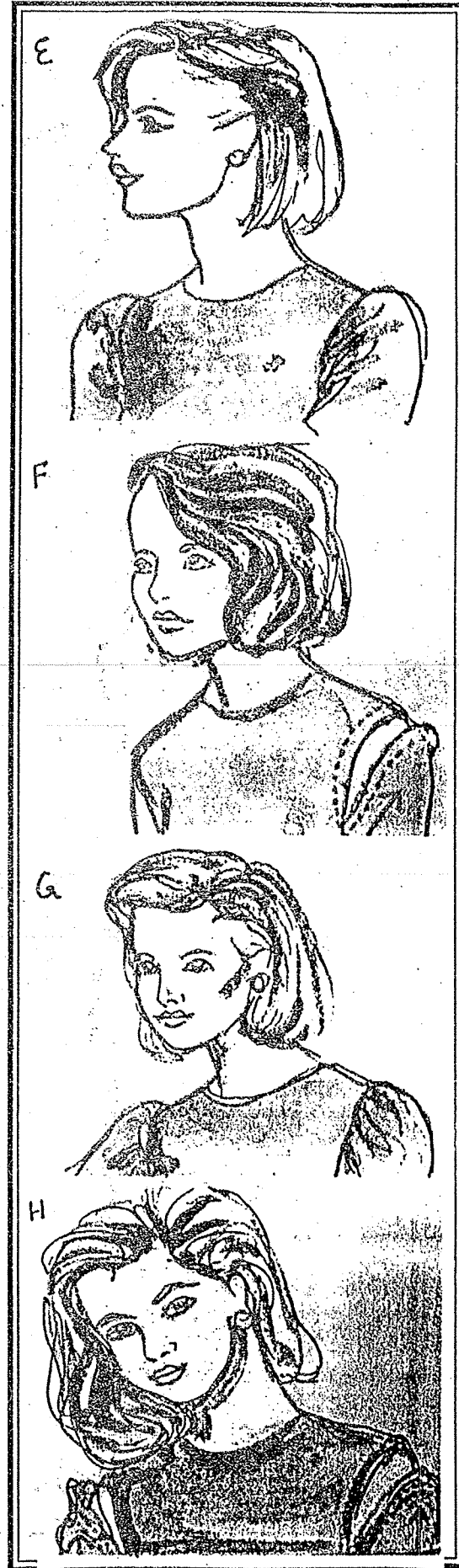
इसके लिए आपको स्लीव केप को कम करते हुए आस्तीन को दोबारा से विभाजित करते हुए आस्तीन के कर्व को बनाना पड़ेगा।

अगर आपने दवाब ज्यादा रखा है क्योंकि आपका कपड़ा स्टीम श्रिक का विशेष करता है तो स्लीव केप सिकुड़ती है।

**निवारण:-**

इसके लिए स्लीव की केप 9/८ इंच कम कर दें और आस्तीन के ऊपरी हिस्से को थोड़ा कम करें। वस्त्र की गहराई और दवाब को कम न करें।

**अभ्यास-**



१- अपने फिटिंग कपड़ों को पहनें और उसमें अपने फिटिंग की समस्याओं को पहचानें।

#### ५.४ सारांश:-

एक अच्छी फिट आपको बेहतरीन बनाती है। अच्छी फिट का तात्पर्य कपड़ों से नहीं है। वस्त्रों में खिचाव व चुन्नट नहीं पड़नी चाहिए और उन्हें पहनकर काम करने की सुविधा होनी चाहिए।

कपड़ों में जिस जगह फिटिंग की समस्या आती है वह है कन्धे पर, नेकलाइन पर खासतौर पर टॉप, ड्रेस, शर्ट तथा जैकेट पर स्कर्ट तथा पैन्ट में कमर पर। अन्य जगहें हैं- डार्ट की जगह, मुड़दा तथा सिलाइयाँ, बेड़ी सिलाइयों को जमीन के समतल होना चाहिए और लम्बी सिलाइयों को सीधा होना चाहिए। आगे या पीछे के तरफ भागना नहीं चाहिए।

जैसे ही डार्ट को सिला जाता है और कन्धे और बगल की कच्ची सिलाई कर दी जाती है फिटिंग के लिए वस्त्र को पहनकर देख लेना चाहिए।

वस्त्र को पूर्ण आराम तथा लुक व फिटिंग के लिए जाँचना चाहिए।

#### ५.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ फिटिंग की समस्या का समाधान कब करना चाहिए?

प्रश्न-२ कौन से हिस्सों में फिटिंग की समस्या आती है?

प्रश्न-३ कन्धे पर कौन सी फिटिंग की समस्या आती है?

प्रश्न-४ मुड़दे पर कौन सी फिटिंग की समस्या आती है?

प्रश्न-५ पीठ पर कौन सी फिटिंग की समस्या आती है?

#### ५.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इन साइक्लोपीडिया ऑफ़ नीडिलक्राफ्ट बाई जूडिया ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।



संरचना

- ६.१ यूनिट प्रस्तावना
- ६.२ उद्देश्य
- ६.३ नेकलाइन तथा कॉलर
- ६.४ सारांश
- ६.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

६.६ स्वाध्ययन हेतु

६.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस इकाई में नेकलाइन व कॉलर को किस प्रकार सिलकर फिनिश करना चाहिए, बताया गया है।

६.२ उद्देश्य:-

एक अच्छी तरह बनी नेकलाइन व कॉलर कपड़े को और बेहतर बनाती है इसलिए नेकलाइन व कॉलर का फिनिश बेहतरीन होना आवश्यक है।

६.३ नेकलाइन तथा कॉलर:-

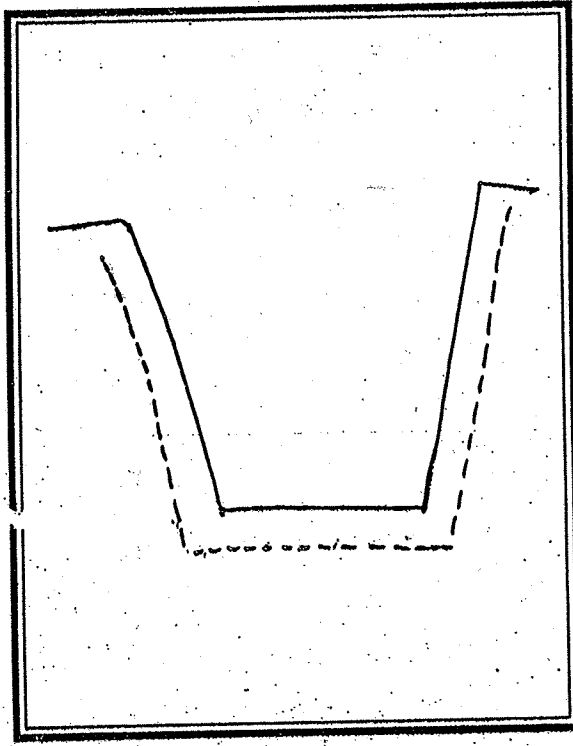
नेकलाइन:-

सीधी सिलाई करके किनारों को फिनिश करना आसान है परन्तु समस्या कोनों तथा गोलाई में आती है।

कोने जिनको अन्दर की तरफ से काटा जाता है उन्हें बहुत सावधानी से फिनिश करना चाहिए और अतिरिक्त मजबूती भी देनी चाहिए। जो कोने बाहर निकले होते हैं उन्हें इतनी मजबूती की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु उन्हें विशेष प्रकार से बनाना होता है क्योंकि वहाँ अतिरिक्त कपड़ा नहीं होना चाहिए। जो कोने अन्दर की तरफ कटते हैं वह चौड़े वी या बहुत नोकीले वी आकार के होते हैं। कुछ मूल बातें आप गले और कोनों

की सिलाई को जानते हैं। इस इकाई में कुछ विशेष समस्याओं का जिक्र है।

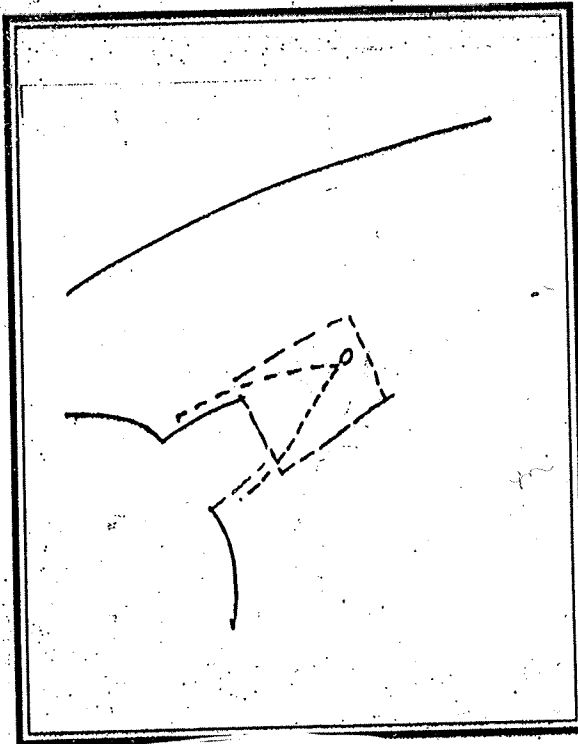
**कोनों को मजबूत करना**  
**व स्लैशेज:-** कोने तब बनते हैं जब कपड़े का किनारा तेजी से मोड़ा जाता है जैसे चकोर गले में। स्लेश कपड़े को काटकर बनाये जाते हैं जिससे एक ओपनिंग बनाई जा सके उदाहरण आस्तीन या नेकलाइन चौबगला गसेट लगाने के लिए जैसे किमोनो आस्तीन में लगता है। कोने न केवल कमजोर होते हैं परन्तु उन पर पहनने पर जोर भी ज्यादा पड़ता है। इसकी वजह से उन्हें हमेशा मजबूती की आवश्यकता पड़ती है खासतौर पर बुने हुए कपड़ों में जिनके धागे निकलते हैं।



मजबूती प्रदान करने के कई तरीके हैं। तरीका कोने की जगह पर तथा वस्त्र की किस्म पर निर्भर करता है। कभी-कभी मजबूती प्रदान करने के लिए एक से अधिक तरीका अपनाया जाता है।

**स्टेइंग:-**

कोनों और स्लेश को टैक करके मजबूत बनाया जा सकता है। इसके लिए एक छोटा चकोर कपड़े का टुकड़ा लगा दें, या कड़ी लाइनिंग कपड़े की उल्टी तरफ लगा दें। कपड़े को ऐसे रखें की कोने पर जब सिलाई करें तो वह सिलाई में आ जाये। यह तरीका उन कपड़ों के लिए ठीक है जिन्हें धोना नहीं पड़ेगा। क्योंकि अगर कपड़ा ढीला बुना



होगा तो धागे जल्दी निकलेगें, इससे बचने के लिए पेपर फ्यूज बकरम का प्रयोग किया जा सकता है, जो चिपक जाती है।

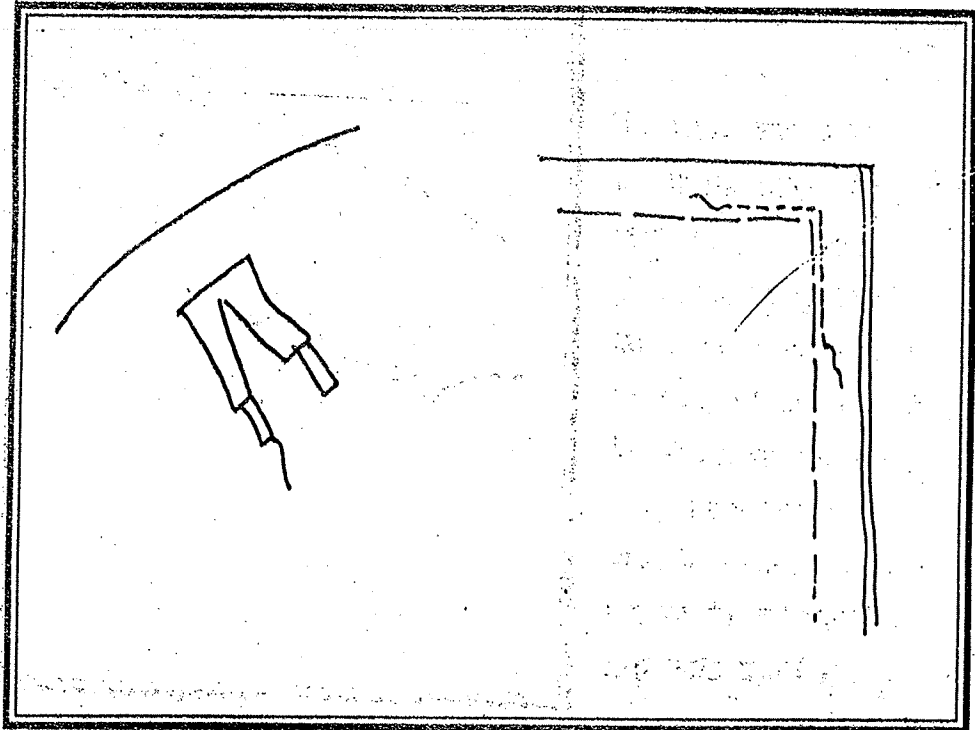
**स्टे स्टिचिंग:-** यह एक मशीन की सिलाई की लाइन है जो सिलाई की लाइन के अन्दर की जाती है। रेखाचित्र में एक चकोर गला इसी तरह बनाना दिखाया गया है। इस तरीके को स्टे सिलाई के संग मिलाकर करें तो ज्यादा मजबूती आती है।

स्लेश में यह मजबूती हमेशा स्लेश करने से पहले की जाती है। इसका उदाहरण पहले की इकाई में दिया गया है।

**फेसिंग:-** इस तरह की फिनिशिंग स्लेश में गसेट या किमोनों आस्तीन में की जाती है। यह हल्के और मध्यम वजन के कपड़ों पर प्रयोग की जाती है और पहले दी गई फेस स्लिट ओपनिंग की तरह होती है।

लाइनिंग का एक पीस काटें (यह उसी कपड़े का अगर हल्के वजन का कपड़ा है) जो ५.५ सेन्टीमीटर का हो। कपड़े पर रखे दोनों सीधी तरफ एक साथ रखें। स्लेश की २.५ सेन्टीमीटर की फेसिंग में बनाये जैसे दिखाया गया है वैसे स्लेश करें, फेसिंग को उल्टी तरफ उलट कर प्रेस करें।

**टॉप स्टिचिंग:-** यह कोने को मजबूती प्रदान करने का पूर्ण तरीका है। स्लेश या फेसिंग करने के बाद जब गसेट जोड़ा जाता है, एक लाइन मशीन की किनारे के बहुत करीब



की जाती है। पूरे वस्त्र की फिनिशिंग करने के बाद उसे उलटी तरफ मोड़कर ऊपर से स्टिच किया जाता है।

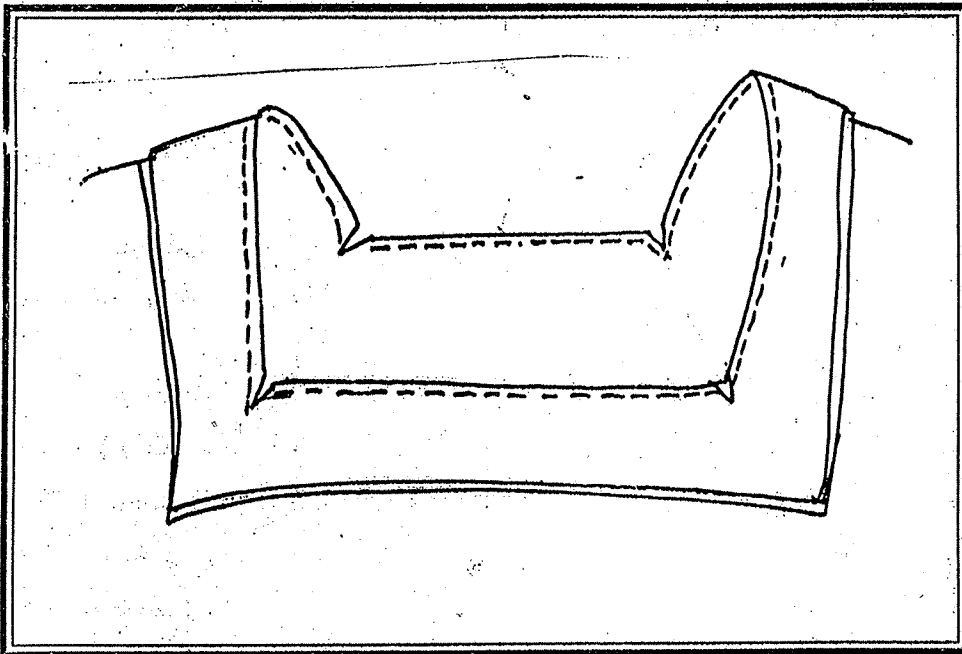
**बाहर को निकले कोने व प्वाइन्ट:-**

हालाँकि इन पर उतना दबाव और खिचाव बाहर को निकले कोने व प्वाइन्ट पर नहीं पड़ता है जितना अन्दर के कोनों पर पड़ता है, परन्तु इन्हें उतनी ही मजबूती की आवश्यकता होती है। उन कपड़ों में जिनमें धागे ज्यादा निकलते हैं उन पर ऊपर से दो बार मशीन करने से धागे नहीं निकलते।

जैकेट के कोट के लेपल में कोने पर एक टेप लगाया जाता है जिससे इनमें खिचाव नहीं रहता।

कोनों और नोकीले हिस्सों पर सजावट तथा मजबूती के लिए टॉप स्टिचिंग की जा सकती है।

कोनों तथा प्वाइन्ट की फिनिशिंग उसी आकार का कपड़ा लगाकर की जा सकती है। सीधे कपड़े की फेसिंग, उरेबी कपड़े की फेसिंग या उरेबी कपड़े से बाँधकर फिनिश करना, कपड़े तथा उसके आकार पर निर्भर करता है। अच्छे परिणाम लाने के लिए इस इकाई में दिये गये निर्देशों का ठीक से पालन करें, खासतौर पर क्लिप तथा ट्रिम करना तथा उरेबी कपड़े को किस प्रकार प्रयोग किया जाता है, नहीं तो फिनिश अच्छी नहीं आयेगी।



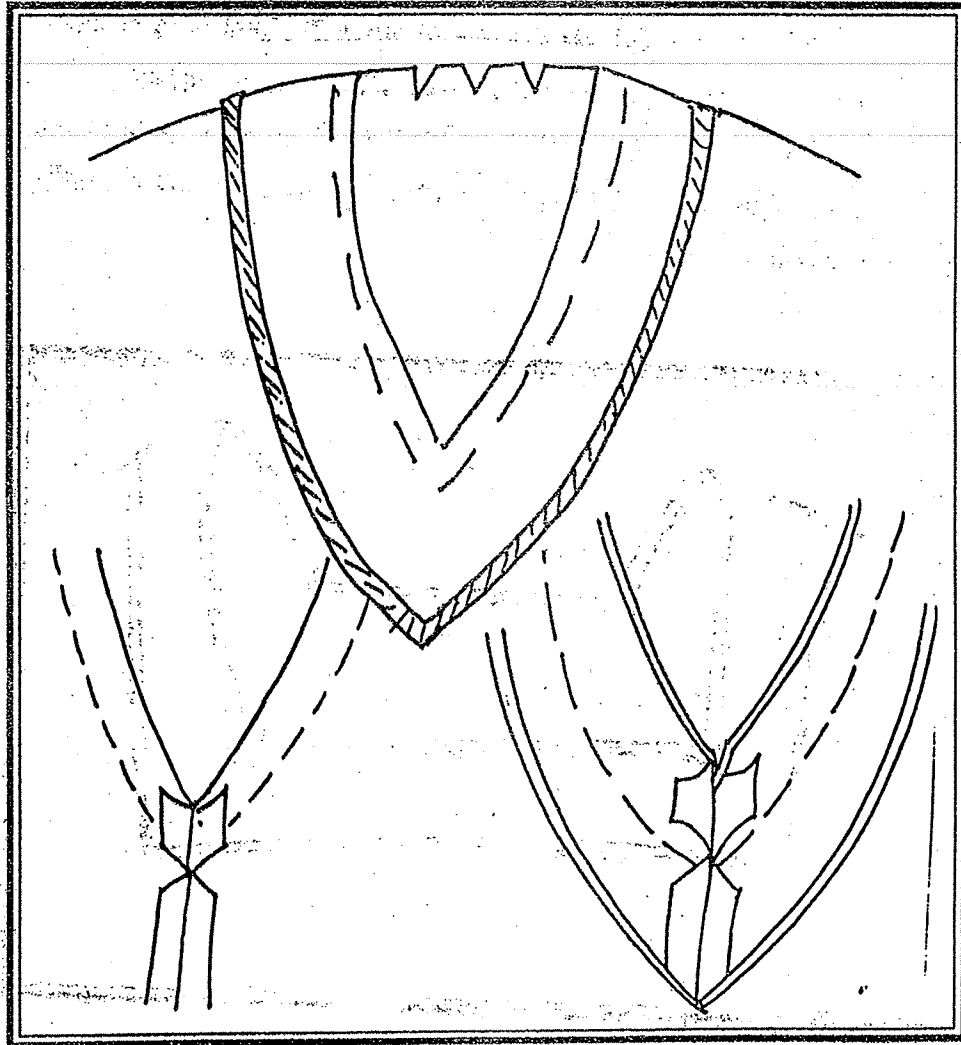
शेप आकार के कोनों की फिनिशिंग करना:-

सबसे पहले शेप आकार की ही फेसिंग काटें फिर फेसिंग के खुली तरफ के कपड़े के अनुसार फिनिश कर लें। अन्य बाहरी या अन्दर के कोनों को बताये गये तरीके से मजबूत करें। फेसिंग को वस्त्र पर रखकर सिलें। मजबूती लाने के लिए सिलाई का टाँका कोनों पर थोड़ा छोटा कर दें।

अन्दर के कोनों को क्लिप करना:-

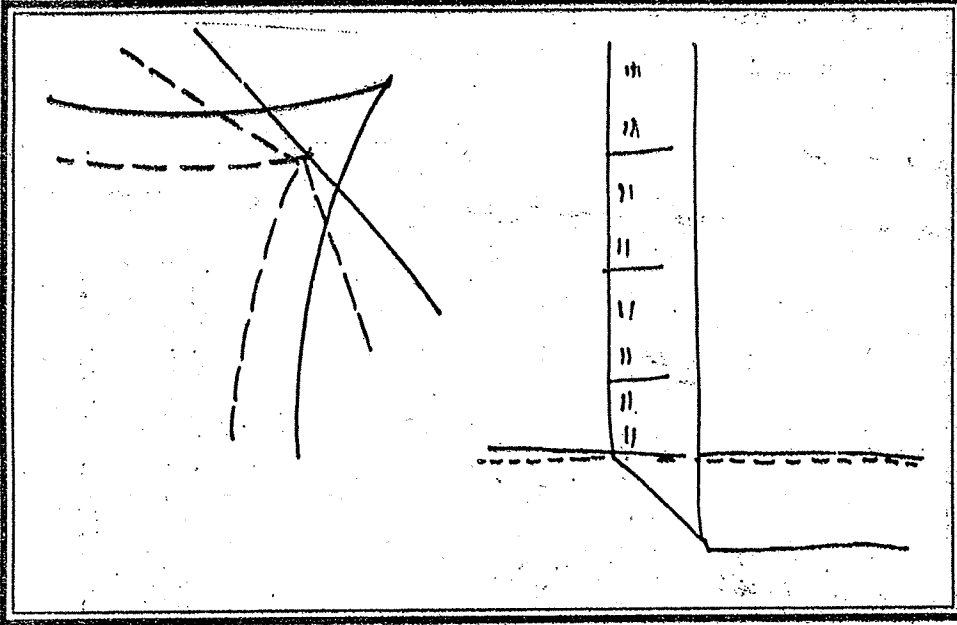
अन्दर के कोनों को क्लिप करना आवश्यक होता है अगर फेसिंग को हम ठीक प्रकार से मोड़ना चाहें। यह क्लिपिंग मशीन की सिलाई तक की जाती है, इसीलिए कोनों को मजबूत करना आवश्यक होता है।

ट्रिम तथा लेयर फेसिंग जैसा पहले शेप फेब्रिक में बताया गया है वैसे इन्टरफेसिंग लगायें। वी गले में जब क्लिप तथा ट्रिम करके कपड़े को मोड़ा गया है तो ध्यान दें कि पीछे के गले की गोलाई को फिर क्लिप करके मोड़ा और फिनिश किया



गया है।

**सीम शेष फेसिंग:-** अन्दर के कोने में जहाँ वस्त्र तथा शेष फेसिंग को सिला गया है (उदाहरण- वी गले में जिसमें सामने बीच की सिलाई हो) वहाँ अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता होती है कि अतिरिक्त कपड़ा न हो।



१- वस्त्र की सिलाई, सीम लाइन पर ही करें। सीम के किनारों को फिनिश करें जिससे मोड़ने में आसानी हो। सीम के दबाव को पूरी सिलाई पर विलप करें। सीम के दबाव को फैलाकर प्रेस करें।

२- बीच के सामने की सिलाई की लाइन को ऊपर दिये गये (१ में) तरीके से सिलाई करें। फेसिंग के खुले किनारे को फिनिश करें।

३- वस्त्र पर फेसिंग को सिलें।

४- अतिरिक्त कपड़े को सिलाई के दबाव में से काट दें और बताये गये तरीके से मोड़ें।

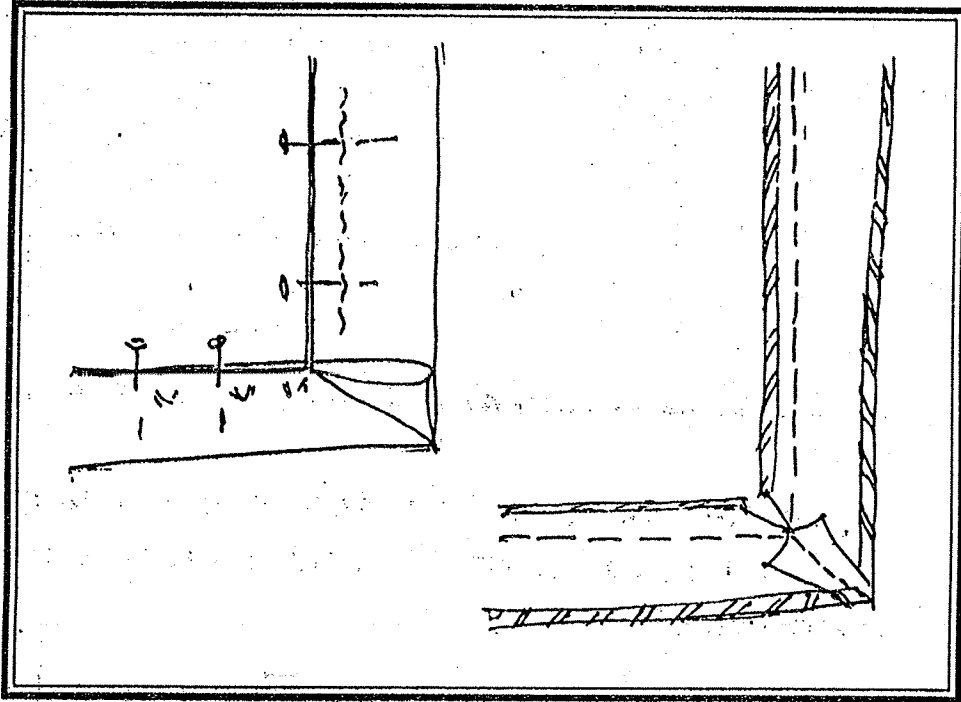
५- बताये गये तरीके से मोड़ें और फिनिश करें।

**बाहरी कोने व प्वाइन्ट को ट्रिम करना:-** नोक को उतना तनाव नहीं सहना पड़ता जितना अन्दर के कोनों को सहना पड़ता है, परन्तु इनको फिनिश करते समय ध्यान रखना पड़ता है कि अन्दर की तरफ कपड़ा न इकट्ठा हो। इसीलिए यहाँ पर सिलाई

का दबाव कम रखा जाता है। नोक पर से दबाव को तिरछा काट दिया जाता है और फिर दोनों तरफ दो कट और लगाये जाते हैं। रेखाचित्र में पहले को स्पष्ट लाइन से दिखाया गया है और दूसरा हल्की लाइन से, इसके बाद वैसे ही मोड़े जैसे पहले बताया गया है।

**सीधी कटिंग की फेसिंग से कोने की फिनिशिंग करना:-** सीधी फेसिंग का प्रयोग केवल समकोण वाले कोनों पर किया जा सकता है।

**अन्दर के कोने:-**



- १- पहले वस्त्र के ऊपर फेसिंग को रखें और किनारे कोने तक पिन करें।
- २- अब बची फेसिंग को  $45^\circ$  के कोण पर उरेबी मोड़े। अब दूसरी तरफ की फेसिंग को भी इसी प्रकार सिलकर  $45^\circ$  के कोण पर मोड़े। अब दोनों फेसिंग को मोड़ पर से सिल दें, सिलाई का दबाव छोड़ते हुए बाकी की फेसिंग को काट दें। इस प्रकार एक तिरछा जोड़ आयेगा। रेखाचित्र में यह पहले और दूसरे चरण पर कैसा दिखेगा दर्शाया गया है।
- ३- जिस तरह तिरछा जोड़ तैयार होता है उसे मिट्रिंग कहते हैं।
- ४- और अन्य कोनों को भी इसी तरह मीटर करें। अन्त में सारी पिन हटायें और

फेसिंग को भी।

५- जहाँ-जहाँ मीटर का जोड़ है उस पर पक्की सिलाई करें।

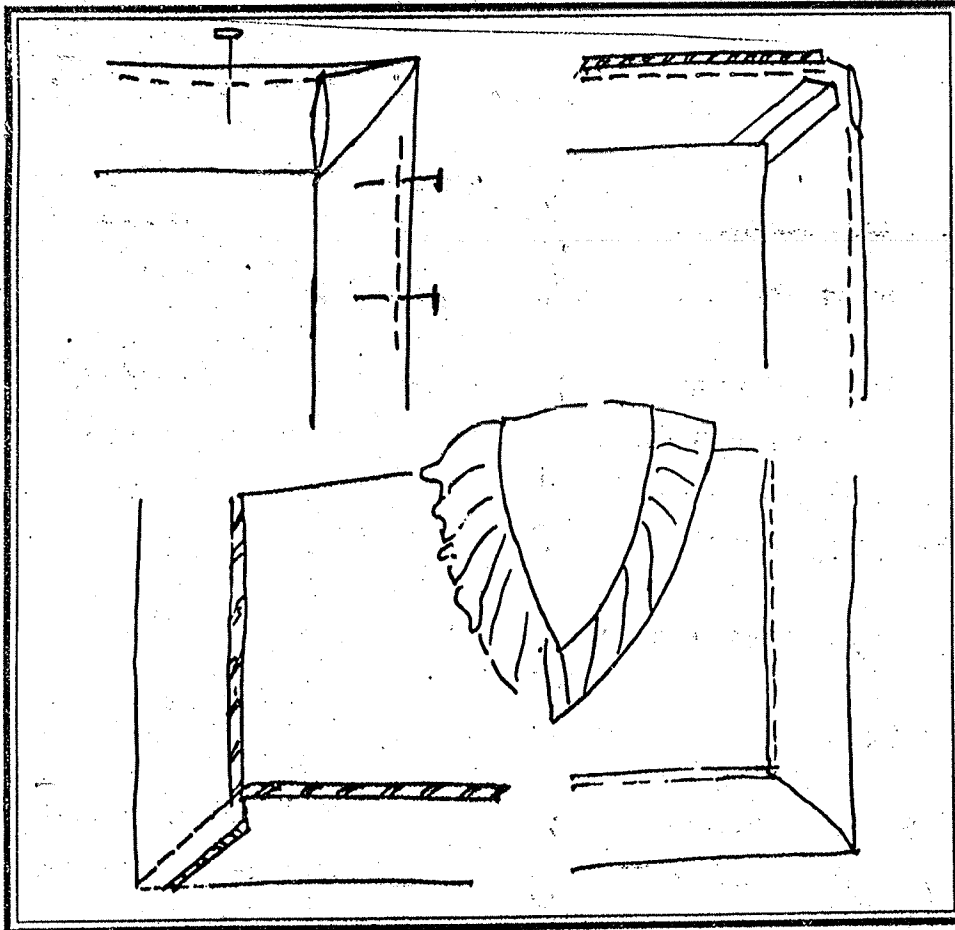
६- फिर जिस तरह शेष फेसिंग को सिला गया है उसी तरह वस्त्र पर रखकर सिलें, जैसा पहले बताया गया है। सिलाई के दबाव को जैसा बताया गया है, काट दिया जाता है।

७- इसके बाद फेसिंग को अन्दर मोड़कर फिनिश करें।

बाहर के कोने:- जैसे अन्दर के कोनों की फिनिशिंग की है, वैसे ही बाहर के कोनों की करनी होती है। अन्दर के कोनों में क्लिप करते हैं, बाहर के कोनों में अतिरिक्त कपड़े को छाँट देते हैं।

एक कोने पर मिट्टिंग करना:- यह वहाँ की जा सकती है जहाँ बराबर की चौड़ाई की हेम और फेसिंग को मिलाना हो।

९- हेम और फेसिंग के किनारों को साफ करें।

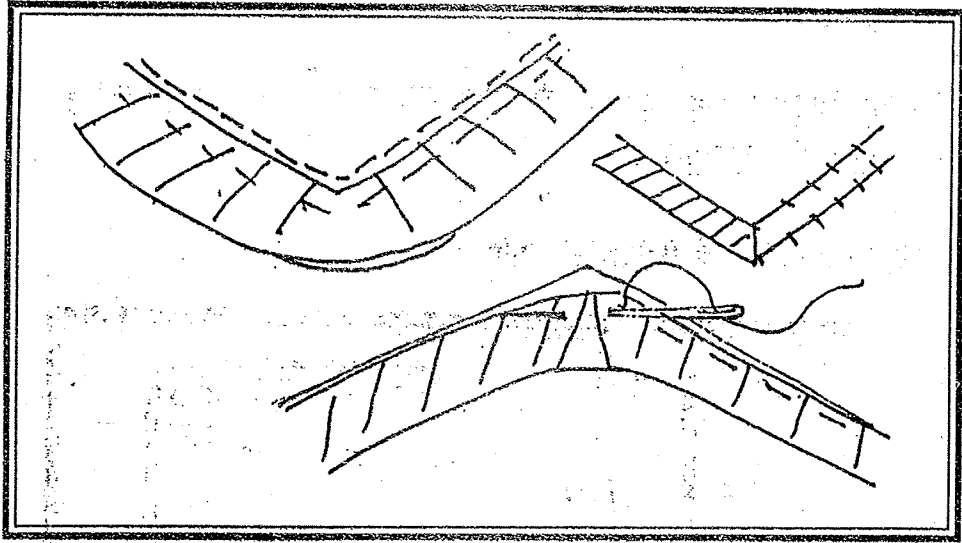




२- चॉक या कच्चा करके तिरछी लाइन पर निशान लगायें, जहाँ हेम लाइन व फेसिंग की लाइन आकर मिलते हैं। इस तिरछी लाइन से ६ मि०मी० की दूरी पर फेसिंग व हेम को काटें।

३- दोनों के सीधी तरफ, एक दूसरे की तरफ फेस करते हुए दोनों तिरछी लाइनो को मिलायें, जितना भी अतिरिक्त सिलाई का कपड़ा हो उसे काट दें और किनारों को साफ करें।

४- फिर सिलाई को पलट दे और उल्टी तरफ से हेम करे। आपका कोना साफ मुड़ेगा। जैसा रेखाचित्र में दिखाया गया है।



**उरेबी फेसिंग से कोनों की फिनिशिंग करना:-**

उरेबी फिनिशिंग काटकर वस्त्र की लाइन पर रखें, दोनों सीधी तरफ एक साइड रखकर, कोनों या प्वाइन्ट की फिनिशिंग करें। अतिरिक्त कपड़े को सिलाई के दबाव में से काट दें। उरेबी कपड़े को उल्टी तरफ मोड़ें और पट्टी की दूसरे किनारे को मोड़ें और टैक करें और फिर हेमिंग करके फिनिश करें।

**उरेबी बाइन्डिंग लगाकर कोनों को फिनिश करना:-**

जैसे बताया गया है वैसे वस्त्र की सिलाई की लाइनों को सिलें।

**अन्दर के कोने:-** बाइन्डिंग को कोने पर रखकर सिलें। इससे बाइन्डिंग का बाहरी कोना उठ जायेगा। बाइन्डिंग को उल्टी तरफ मोड़ें और दूसरे किनारे को मोड़कर मशीन की सिलाई पर हेम करें। कोने पर एक छोटा सा फोल्ड आयेगा परन्तु फिनिश

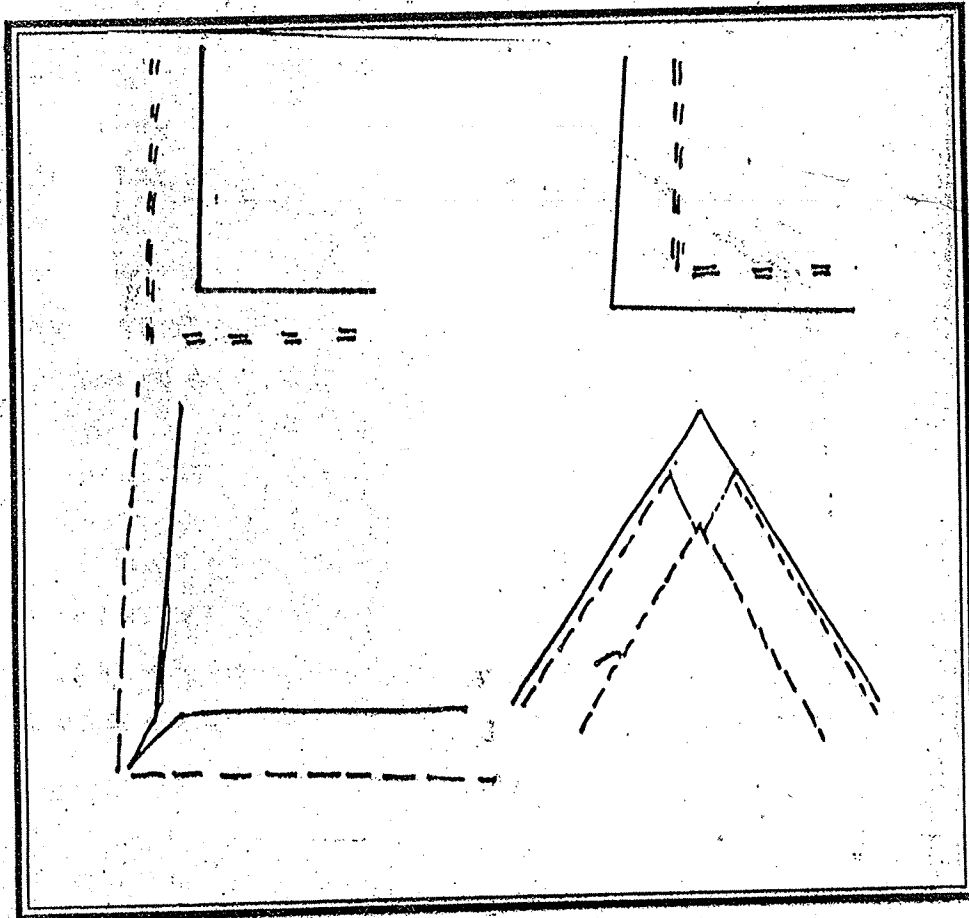
साफ होगी।

बाहरी किनारा:- बाइन्डिंग को वस्त्र के किनारे पर सिलें, परन्तु जब कोने पर आयें तो एक छोटा सा फोल्ड बाइन्डिंग में दें। जब मशीन की सिलाई कर रहे हैं तो कोने पर पहुँचकर सूई को कोने की नोक पर कपड़े के अन्दर डालें और प्रेशर फुट को उठाकर कपड़े को मोड़ दें, जो भी झोल फेसिंग की पट्टी पर आये और वस्त्र के कपड़े पर आये उसे निकालते हुए। प्रेशर फुट को नीचे करें और बाकी की सिलाई करें।

फिर बाइन्डिंग को उल्टी तरफ मोड़ें, एक तिरछा फोल्ड सीधी तरफ नजर आयेगा। ऐसे ही सभी फोल्ड उल्टी तरफ बनायें और फिर बाइन्डिंग की दूसरी तरफ को मोड़ते हुए हेमिंग करें।

साधारण सिलाई से अन्दर व बाहर के कोनों को सिलें:-

विस्तृत ड्रेस मेकिंग में यह तरीका अपनाया जाता है। उदाहरण के लिए योक या जहाँ पर प्रिन्सेस पैनल तेजी से मुड़ता है, बगल की सिलाई के तरफ बजाय हेम लाइन पर जाने के। हालाँकि जब कभी भी साधारण सिलाई से कोनों को जोड़ा जाता है, तरीका कुछ इस प्रकार होता है:-



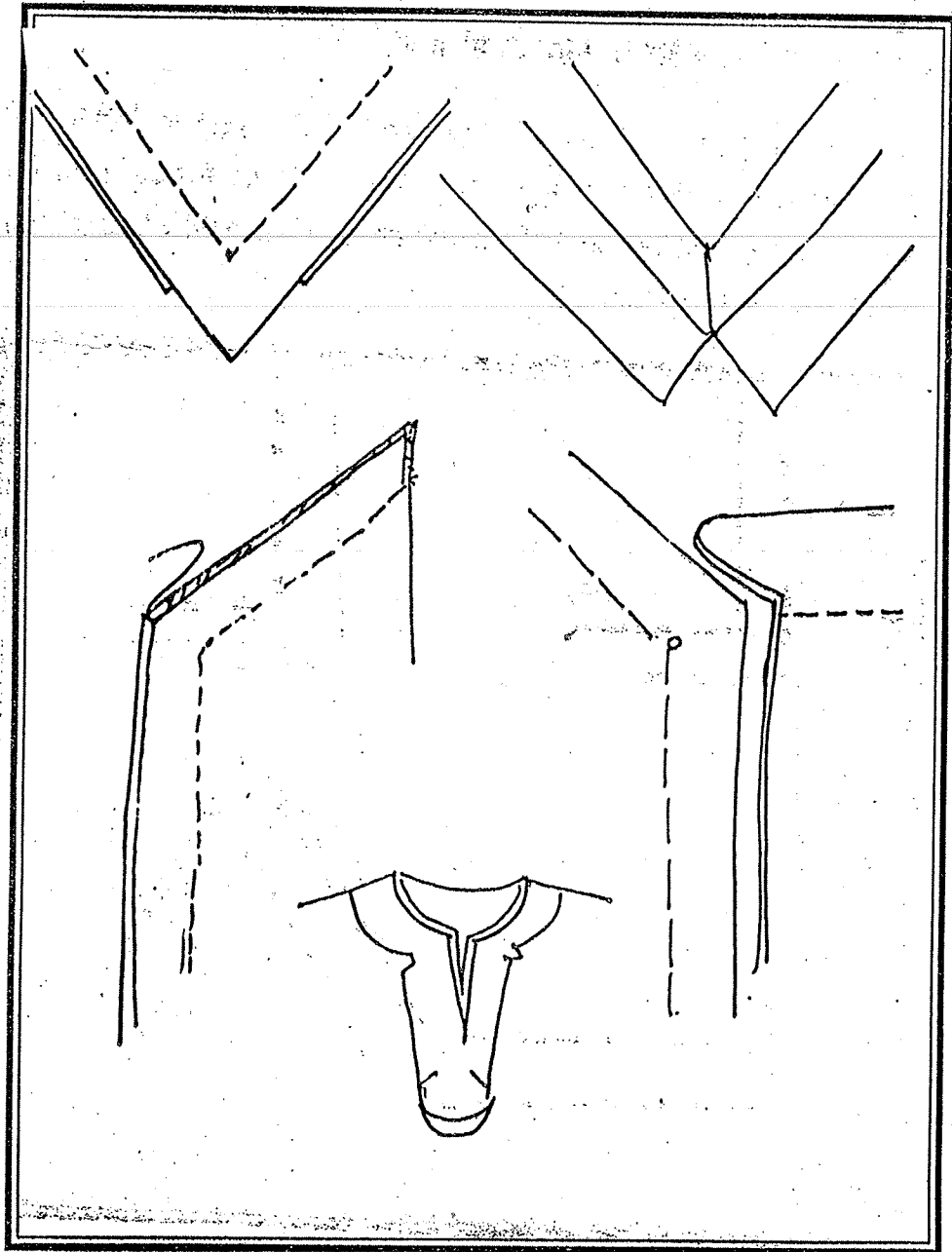
१- उपयुक्त तरीके से अन्दर के कोनों को मजबूत करें।

२- बाहरी कोने के लिए मैचिंग प्वाइन्ट तक क्लिप करें, जो इस मैचिंग प्वाइन्ट की स्थिति को काले डॉट से दिखाता है।

३- दोनों में डॉट को एक के ऊपर एक रखकर टैक करें। दोनों कपड़ों को सीधी तरफ एक के ऊपर एक रखें। दोनों कपड़ों को टैक करें।

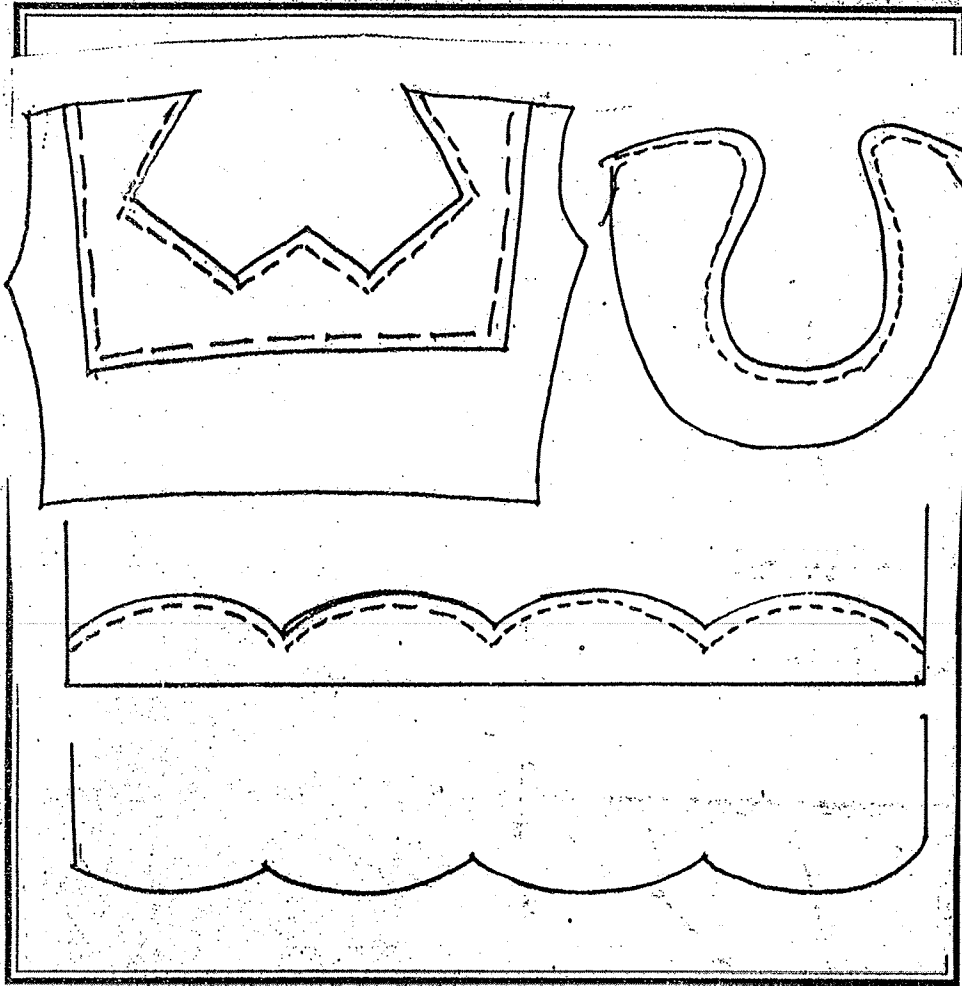
४- पिवोट प्वाइन्ट पर मशीन करें।

अगर सिलाई के दबाव को नीचे की तरफ प्रेस करना है तो फिर इस प्वाइन्ट



पर और कुछ नहीं करना होगा परन्तु अगर सिलाई को खोलकर प्रेस करना है तो एक छोटा सा 'वी' कट सिलाई के दवाब में बनाकर कपड़े को कम करें।

कभी-कभी कोने, प्वाइन्ट या दोनों में सिलाई होती है। स्थिति में नियम एक है कि सिलाई के दवाब में सिलाई न हो। इसके लिए निम्न करें:-

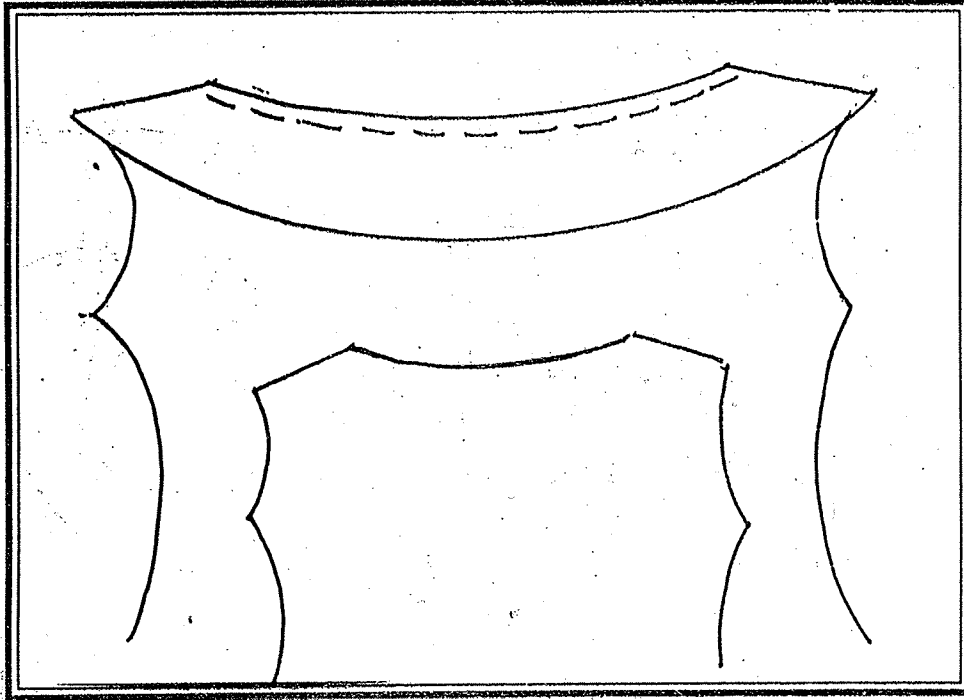


१- सिलाई को सिर्फ मैचिंग प्वाइन्ट तक सिलें। इसको अच्छी तरह फिनिश करें। सिलाई को प्रेस करें।

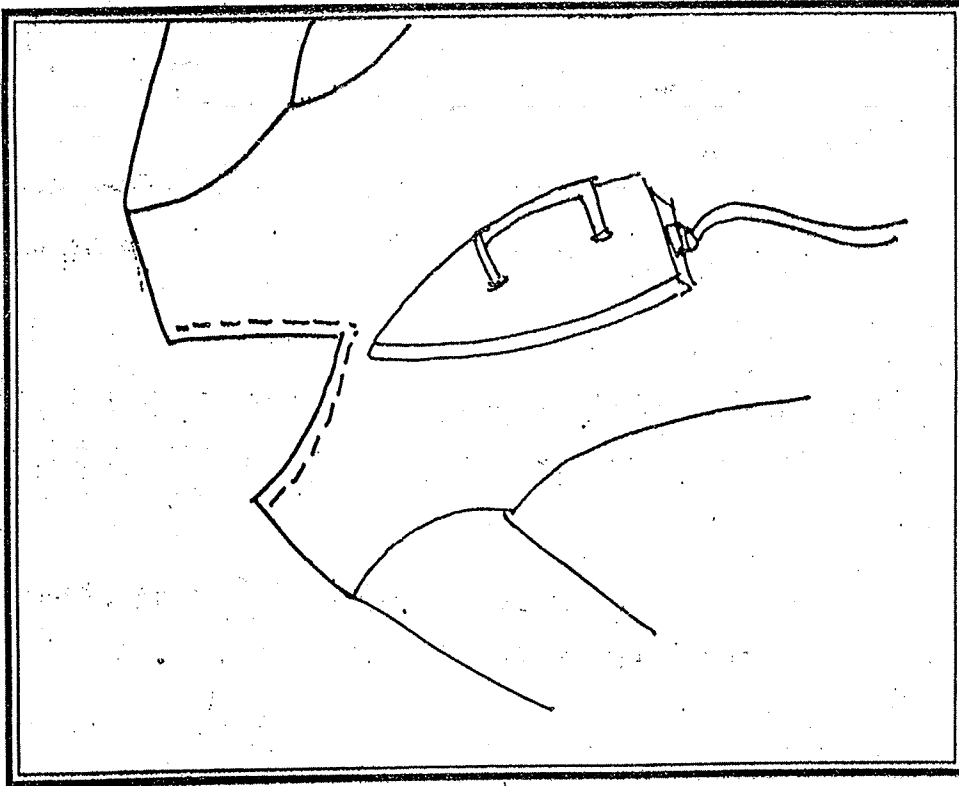
२- दोनों कपड़ों का सीधा हिस्सा एक तरफ रखकर काली डॉट को एक के ऊपर एक रखें। बीच से कच्चा करना शुरू करें। सूई से बीच की सिलाई दूर रखें, कच्चा करके तागा तोड़ें।

३- बीच के दवाब को अब खोलें और अब दोबारा से कच्चा करना शुरू करें जिससे बीच के जोड़ का दूसरा हिस्सा सेट हो जाये।

४- जैसे कच्चा किया है वैसे मशीन करें। धागा लम्बा छोड़े जिससे जरूरत पड़ने पर रफू किया जा सकें।

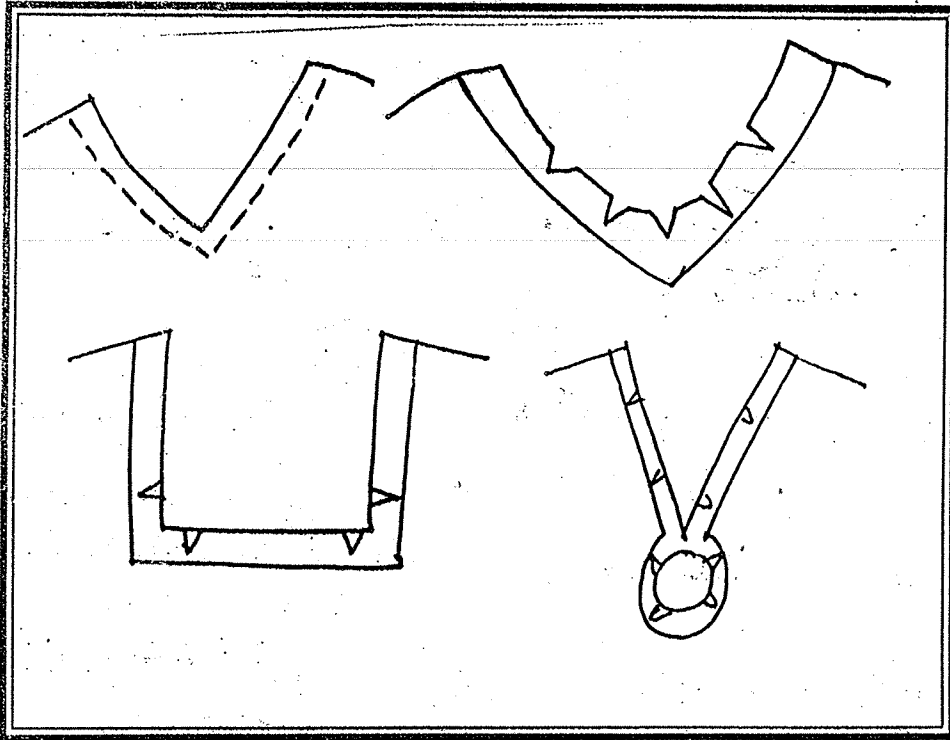


५- सिलाई के दबाव को जरूरत अनुसार प्रेस करें और अतिरिक्त कपड़े को काट दें।



### स्लैश की फिनिशिंग करना:-

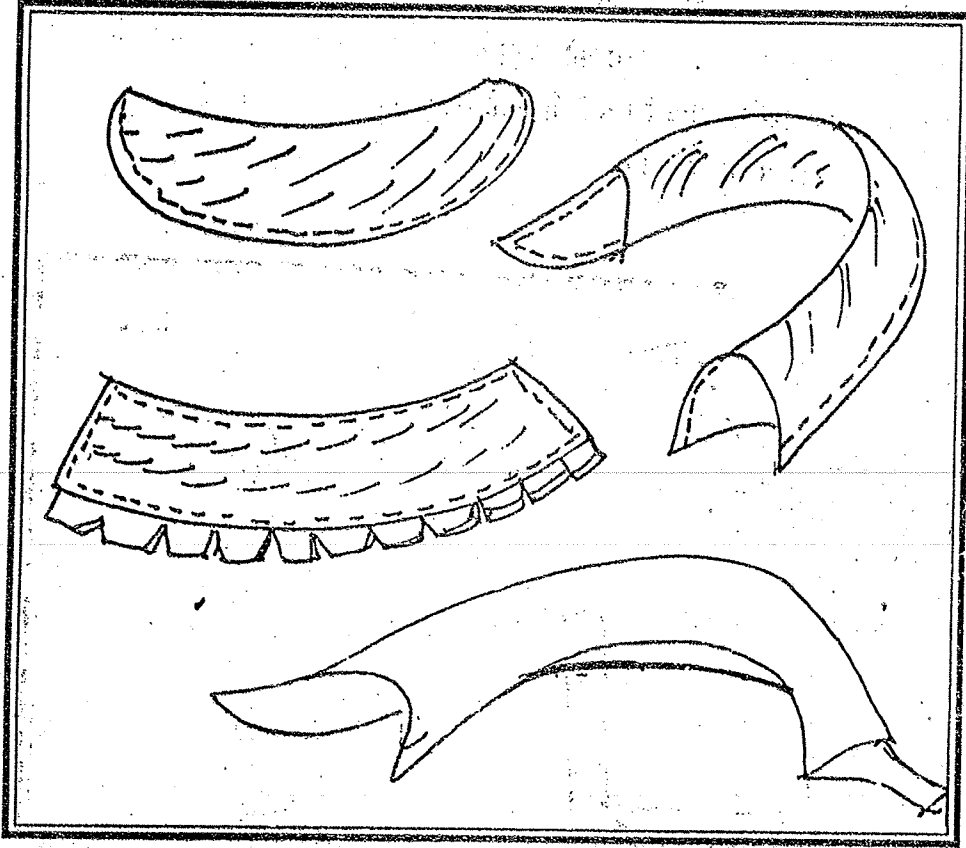
पहले दिये गये निर्देशों में बताया गया है कि स्लैश को किस तरह फिनिश करना है। जहाँ ओपनिंग का वर्णन है वहाँ निरन्तर स्ट्रिप ओपनिंग के अन्दर बताया गया है की स्लैश को किस प्रकार सीधे कपड़े तथा बाउन्ड ओपनिंग को ऊरेबी कपड़े से कैसे फिनिश किया जाये। बाइन्डिंग कपड़े के किनारे पर एक ही टुकड़े के साथ लगाई जा सकती है, उदाहरण कफ या नेकलाइन। इस तरह फिनिश की गई नेकलाइन बताई गयी है। सिलाई के दिये गये निर्देशों को करें। बाहरी कर्व को बाउन्ड ओपनिंग की तरह फिनिश करें। फेस स्लिट ओपनिंग को भी उसी तरह फिनिश करें। उदाहरण— गले की फिनिशिंग रेखांकन में दी गई है।



### कालर:-

विभिन्न प्रकार के कॉलर को विभिन्न प्रकार से सिलना होता है। परन्तु हर कॉलर को सावधानी पूर्वक ट्रिम तथा लेयर, मोड़ना तथा प्रेस करना होता है। कुछ कॉलर के बाहरी हिस्से पर सिलाई की जाती है। कुछ के बाहरी हिस्से कटे हुए होते हैं। कुछ में दोनों लेयर को गले पर जोड़ा जाता है। कुछ में लेयर को गले पर अलग-अलग जोड़ा जाता है। तरीका आगे दिया जा रहा है।

पलैट, शेल तथा स्टैन्ड कॉलर के अन्दर की तरफ फेसिंग को सिलने के पश्चात् कॉलर के दोनों पल्लो के कपड़ो के सीधी तरफ को एक दूसरे पर रखें। इसको कच्चा करने के बाद सिल दें। जैसे गोल व नोकीले कालर का रेखांकन दिखाया गया है वैसे ट्रिम व लेयर करें। कॉलर को पलट लें। सिलाई को थोड़ा सा अन्दर की तरफ करते हुए कॉलर के किनारे को कच्चा करें। कच्चा बारीक करें जिससे कालर अच्छी तरह सेट

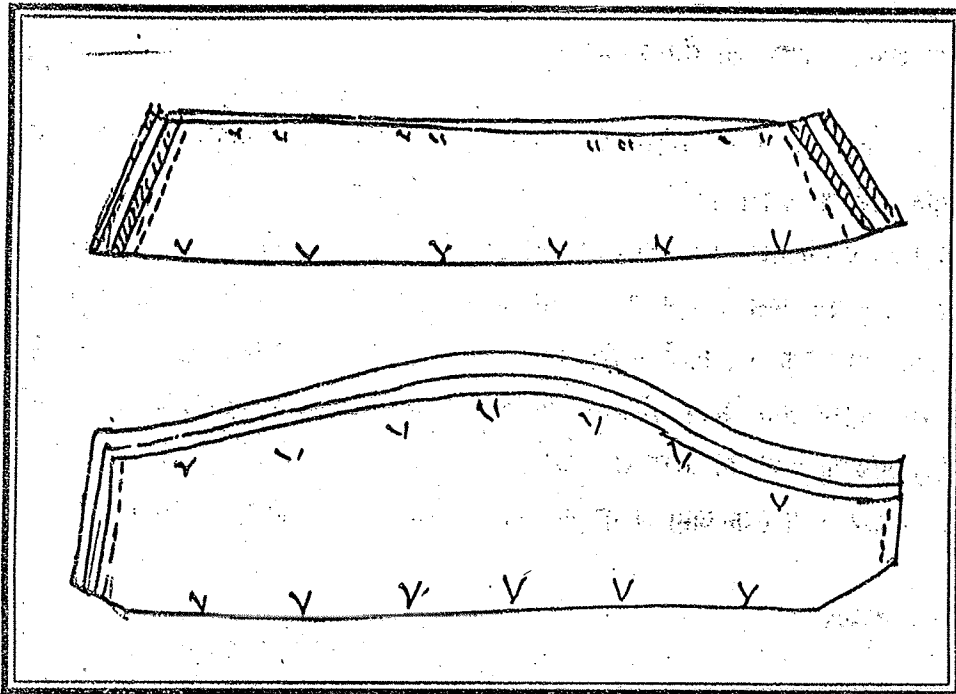


हो जाये। फिर प्रेस करें। फिर पूरे कॉलर को लेकर तिरछा कच्चा करें जिससे कॉलर में झोल न आये। अब कॉलर तैयार है। उन कालर में जिनमें कॉलर का स्टैन्ड अधिक होता है उनमें ऊपर की लेयर गले की तरफ आयेगी क्योंकि ऊपर के हिस्से को मोड़ने पर थोड़ा सा अधिक कपड़े की आवश्यकता होती है। ऐसा होने दें, पर ऐसे में आप ऊपर के कॉलर का दबाव कम कर सकते हैं। इसके लिए कच्चा करके एक नई सिलाई की लाइन पर निशान लगायें।

**शर्ट या बैन्ड कालर, फोल्ड पर काटना:-**

कालर के अन्दर की लाइनिंग बनाने के बाद (जैसे पहले बताया गया है) कॉलर को मोड़कर सीधा कर लें। कच्चा करें और फिर किनारों को सिलें। कालर को उलट

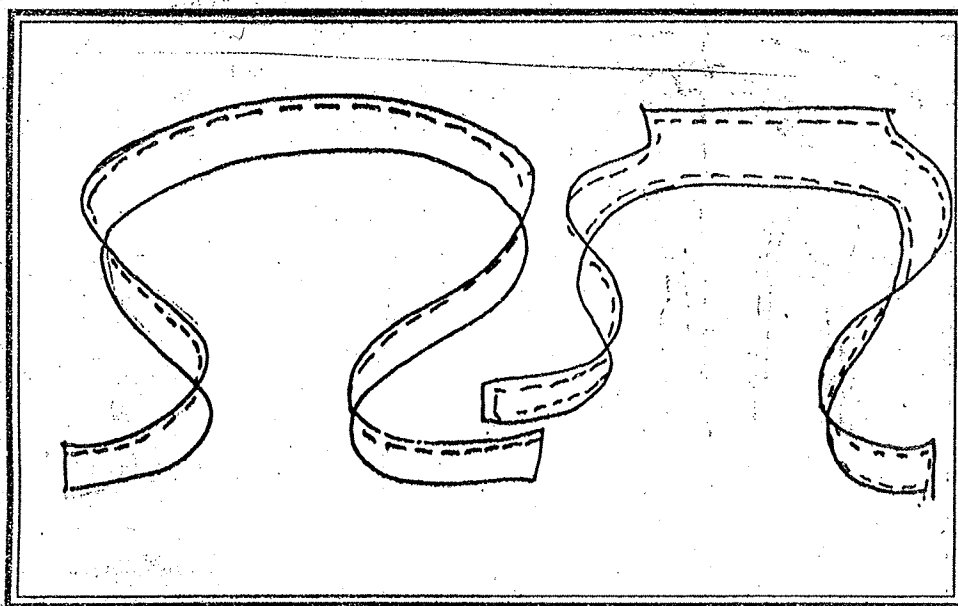
लें और ट्रिम करें। पलट कर किनारे को टैफ करें जिससे कालर के बाहरी किनारे की सिलाई ऊपर की तरफ न दिखे। कच्चा करके प्रेस करें। कालर के सारी लेयर की



लेकर तिरछा टैफ करें। शर्ट कालर बनाते समय आकार का विशेष रूप से ध्यान दें।

वह कालर जिसमें गले का किनारा अलग से जुड़ा हो:-

कुछ कॉलर में शेवर नहीं होते (खुले हुए गले या पल्ले) जैसे बेन्ड या पोली कालर इनकी गले के किनारों को एक नहीं माना जाता है। इनका विवरण दिया गया





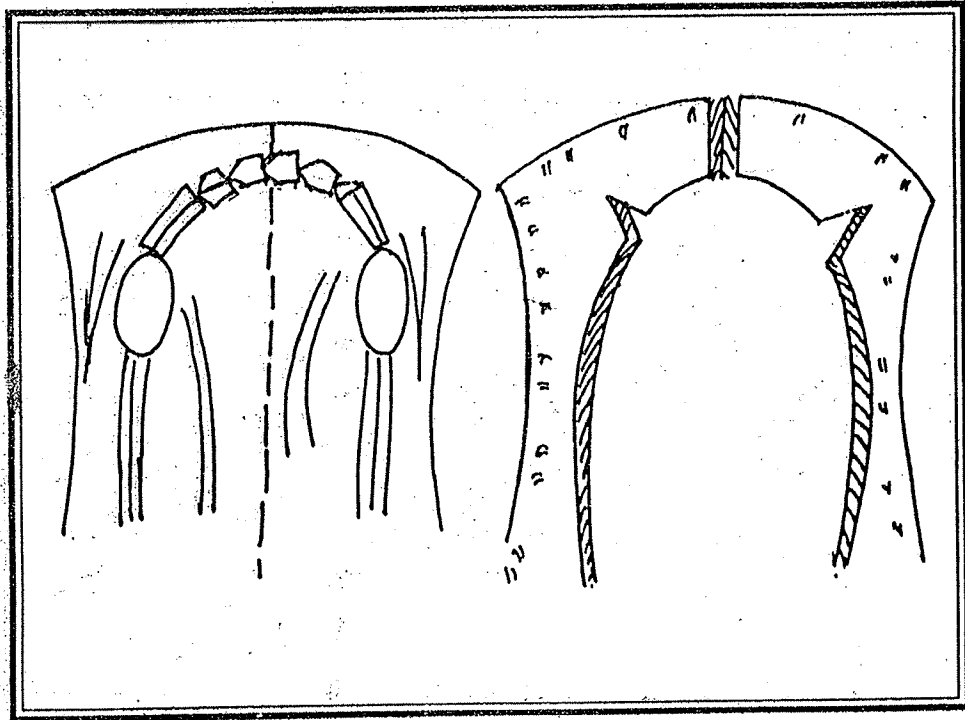
है। इनका बाहरी किनारा होता है या फिर इन्हें गले की सिलाई की लाइन तक ही सिला जाता है।

### बैन्ड कालर बाहर को निकलें हुए:-

इन कॉलर को कभी-कभी बाहरी किनारे के फोल्ड तक काटा जाता है या फिर इनके चारों तरफ सिलाई होती है। अन्दर की लाइनिंग कॉलर में पहले की तरह लगायें। सीधी तरफ को एक साथ रखते हुए कॉलर के कटे हुए किनारों को सिल लें, पर जहाँ पर कालर को वस्त्र के गले से जोड़ना है वहाँ जायें, सिलाई के अन्त में वापस जाकर सिलाई को लॉक करें या फिर सिलाई के तागों को लम्बा छोड़कर सूई से लॉक करें। मैचिंग प्वाइन्ट तक क्लिप करें। ट्रिम और लेयर करें। कॉलर को उलट दें। सीधी तरफ से सिलाई के पीछे की तरफ रोल करते हुए कच्चा करें। सभी लेयर को लेकर तिरछा कच्चा करें, वहाँ तक जहाँ से कालर को वस्त्र के गले से जोड़ा जायेगा।

### शाल कालर:-

बॉडिस तथा नीचे के कालर में लाइनिंग लगायें। आगे के बॉडिस को पीछे के बॉडिस से कन्धे पर कच्चा करके मशीन करें। छटाई करके सिलाई को प्रेस करें, नीचे के कॉलर को पीछे के कॉलर के बीच से कच्चा व मशीन करें। छटाई करें और सिलाई को प्रेस करें। गले के किनारे और कॉलर के किनारों को मशीन करें, ट्रिम करके प्रेस करें।



अब उसी तरह ऊपर के कालर को पीछे के गले पर मोड़कर कच्चा करें। ट्रिम करके प्रेस करें। बिना लाइनिंग के वस्त्र में फेसिंग की खुली किनारे को फिनिश करें।

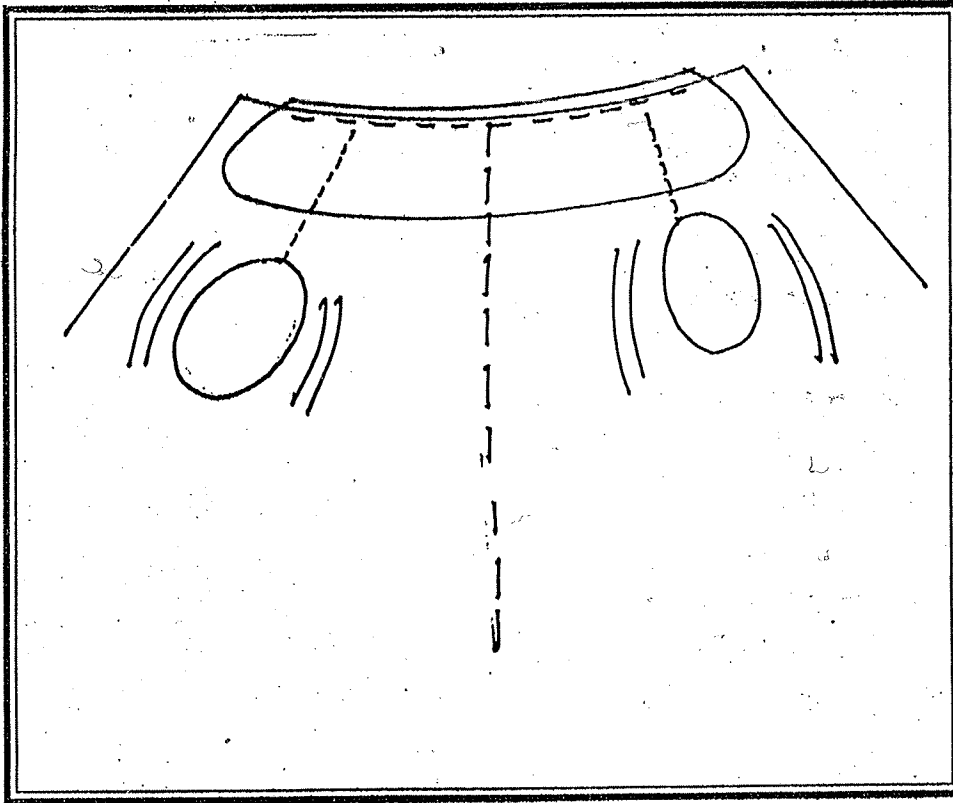
**फ्लैट, रोल तथा स्टैन्ड कॉलर लगाना:-**

यहाँ पर दिया गया तरीका हर कॉलर के लिए प्रयोग किया जाता है, सिवाय खुले नेक डिजाइन तथा बैन्ड या पोलो कालर के यानी उन कालर में जिनमें गले का किनारा अलग से जोड़ा जाता है।

कॉलर को बनाने, पलटने तथा तैयार करने के पश्चात् कॉलर को नेकलाइन पर रखें। कॉलर का नीचे का हिस्सा कपड़े की सीधी तरफ होना चाहिए। कॉलर का बीच और वस्त्र के पीछे के गले का बीच, एक होना चाहिए। कॉलर के कन्धे का प्वाइन्ट वस्त्र के कन्धे की सिलाई से मिलनी चाहिए और कॉलर का किनारा वस्त्र के मैचिंग प्वाइन्ट पर मिलना चाहिए।

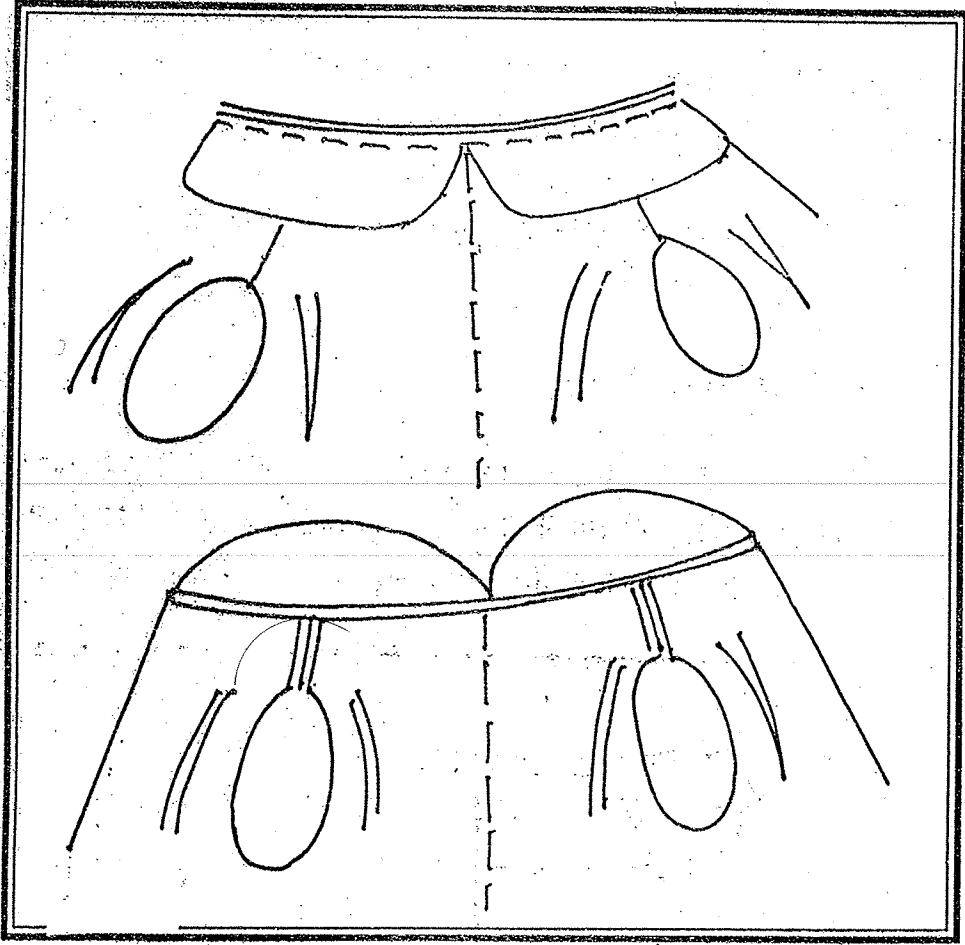
**बिना रेवर या बटन स्टैन्ड के कालर:-**

इनमें से कुछ कॉलर को ऐसे ही सफाई से जोड़ा जा सकता है। कुछ में अलग से शैप फेसिंग या उरबी पट्टी लगानी होती है। रेखाचित्र में उदाहरण के लिए पीटर पैन कॉलर दिखाया गया है जिसे दो हिस्से में बनाकर वस्त्र के गले पर जिप के साथ



जोड़ा गया है। इसकी फिनिशिंग या तो शेष फेसिंग या फिर उरेबी पट्टी से की जा सकती हैं। उरेबी पट्टी में ज्यादा सफाई और कम भारीपन आता है। यह वस्त्र के कपड़े से या फिर किसी हल्के मैचिंग कपड़े में से काटा जा सकता है या फिर बाजार में उपलब्ध उरेबी पाइपिंग का प्रयोग किया जा सकता है।

शेष नेक की फेसिंग तथा उरेबी पट्टी लगाने का विवरण आगे दिया गया है।



दोनों ही स्थिति में फिनिशिंग को गले की सिलाई की लाइन पर कच्चा कर दिया जाता है और फिर सारी लेयर के साथ मशीन कर दिया जाता है। रेखाचित्र में फेसिंग को जगह पर मशीन करना बताया गया है। फेसिंग कॉलर के सीधी तरफ है।

इसके बाद ट्रिम लेयर तथा स्निप करें। उल्टी तरफ पलट दें। शेष फेसिंग को अन्दर की तरफ मोड़कर हेम करना होगा जो जिप तथा कन्धे की सिलाई से जुड़ा होगा। उरेबी पट्टी के अन्दर मोड़कर वस्त्र की उल्टी तरफ से हेम किया जायेगा जिससे उरेबी पट्टी चपटी आये और कालर खड़ा हुआ।

**रेवर या बटन स्टैन्ड के साथ कालर:-**

वस्त्र के गले का किनारा कॉलर से बाहर निकला रहता है और इसे रेवर या बटन स्टैन्ड कहते हैं। इस स्थिति में बॉडिस की फेसिंग को पीछे की तरफ मोड़ा जाता है जिससे गले के उस हिस्से की फिनिशिंग हो पाये। यह आकार में गोल होता है और उल्टी तरफ से कन्धे तक होता है।

फेसिंग बॉडिस का ही बढ़ा हुआ हिस्सा हो सकती है या फिर इसे उलट के वस्त्र के आगे या पीछे के पल्ले पर जोड़ा जा सकता है, यह वस्त्र की ओपनिंग पर निर्भर करेगा। आमतौर पर इसे उसी समय सिला जाता है जिस समय कॉलर को सिला जाता है। आगे या पीछे की फेसिंग को बाद में कपड़े की उल्टी तरफ मोड़ा जाता है।

जो हिस्सा कॉलर के साथ फिनिश नहीं किया जाता है, उसे तीन प्रकार से फिनिश किया जा सकता है—

**अटैचिंग एण्ड फिनिशिंग ओपेन-नेक कॉलर:-** जब कॉलर का डिजाइन इस प्रकार का हो कि कॉलर को खोलकर पहना जायें (जैसे खुली शर्ट या ब्लाउज) तो बेहतर फिनिश के लिए ऊपर व नीचे के कालर को अलग-अलग जोड़ा करें। इन कॉलर को जैसे पहले बताया गया है वैसे तैयार करें और वहीं तक जोड़े जहाँ तक सिलाई की लाइन गले पर हो।

अब कॉलर को गले पर रखें। अन्दर के कॉलर का सीधी तरफ, वस्त्र के सीधी तरफ रखा जायेगा। कॉलर के अन्दर की लेयर को ही वस्त्र की नेकलाइन से जोड़े। कॉलर के ऊपर की लेयर खुली रहेगी। इसको मशीन करें। फेसिंग के किनारे को फिनिश करने के पश्चात् फिर बॉडिस की सीधी तरफ मोड़े, सिलाई की लाइन पर कच्चा करके सिलें। कॉलर के एक तरफ से शुरू करें और सिलाई को कॉलर के ओवरलैप पर न आने दें। बाकी की फेसिंग को ऊपर के कॉलर से जोड़े, फिर मशीन करें।

अब अतिरिक्त सिलाई के दबाव को छाँट दें, कट लगायें और एक बार फिर सिलाई के दबाव को कॉलर की तरफ ले जाते हुए प्रेस करें। कन्धे पर की सिलाई का ध्यान रखें कि आगे की सिलाई का दबाव आगे और पीछे का पीछे रहे। यह ध्यान कच्चा और सिलाई करते समय भी रखें। अब कालर को उलट लें और ऊपर की तह को मोड़कर कच्चा करें और हेम करें। कन्धे के दबाव पर भी हेम करें, रेखाचित्र में ऐसा ही दिखाया गया है।

**शाल कॉलर को जोड़ना व फिनिश करना:-**

कॉलर को बताये गये तरीके से तैयार करें। कॉलर को वस्त्र के गले पर सीधा रखते हुए कच्चा करें और मशीन करें। अतिरिक्त कपड़े को छाँट दें। ऊपर के कॉलर व फेसिंग को मिलाएँ। दोनों का उल्टी तरफ एक साथ होना चाहिए। सिलाई की लाइन को रोल करके कच्चा करें। प्रेस करें। कॉलर पर तिरछा कच्छा करके सैट करें। कॉलर के ऊपरी हिस्से को सिलाई की लाइन पर कच्चा करें और हेम या मशीन करें। फेसिंग को कन्धे के दबाव पर हेम करें।

### अभ्यास-

१- आपके पास जो वस्त्र हैं उन्हें देखें और समझें की कॉलर व नेकलाइन की सिलाइयाँ कैसे की गई हैं।

### ६.४ सारांश:-

सीधे किनारों की सिलाई व फिनिशिंग करना एक साधारण काम है। गले पर कोने और नोक की फिनिशिंग करते वक्त विशेष ध्यान रखना पड़ता है। नेकलाइन की फिनिशिंग प्राइपिंग या फेसिंग लगाकर की जा सकती है। कोनों को स्टे-स्टिचिंग करके मजबूत बनाया जा सकता है। ऊपर की सिलाई मजबूती व सजावट के लिए की जा सकती है।

कॉलर को जोड़ते समय सावधानी से ट्रिमिंग व लेयरिंग तथा पलटना और प्रेस करना चाहिए। कुछ कॉलर में बाहरी किनारों पर सिलाई की जाती है। कुछ को बाहरी किनारों पर सिलाई की जाती है। कुछ का बाहरी किनारा मोड़ दिया जाता है। कुछ में दोनों लेयर को गले से जोड़ा जा सकता है। कुछ में ऊपर और नीचे के लेयर को अलग-अलग जोड़ा जाता है।

### ६.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ नेक लाइन को किस तरह फिनिश किया जा सकता है?

प्रश्न-२ चकोर नेकलाइन की फिनिशिंग किस प्रकार की जा सकती है?

प्रश्न-३ 'वी' गले की फिनिशिंग किस प्रकार करते हैं?

प्रश्न-४ पलैट कॉलर को नेकलाइन पर कैसे जोड़ते हैं?

प्रश्न-५ शॉल कॉलर किस प्रकार सिला जाता है?

६.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इनसाइक्लोपीडिया ऑफ नीडिल क्राफ्ट बाई  
जूडी ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।

**संरचना**

- ७.१ यूनिट प्रस्तावना
- ७.२ उद्देश्य
- ७.३ आस्तीन तथा मुडढ़े
- ७.४ सारांश
- ७.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- ७.६ स्वाध्ययन हेतु
- ७.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस इकाई में अस्तीन व मुडढ़े की सिलाई व फिनिशिंग किस प्रकार की जाती है, ब्रूताया गया है।

**७.२ उद्देश्य:-**

अस्तीन व मुडढ़े की किसी वस्त्र में अच्छी फिटिंग हो तो वह वस्त्र की कीमत बढ़ा देता है, इसीलिए अस्तीन व मुडढ़े की फिनिश अच्छी होनी चाहिए।

**७.३ अस्तीन व मुडढ़ा:-**

**आस्तीनें:-**

अस्तीनों को कई प्रकार से बनाया जाता है। इनका आकार व लम्बाई फैशन के अनुसार व वस्त्र के स्टाइल के अनुसार बदलता रहता है। इस इकाई में तीन प्रमुख अस्तीनों को किस प्रकार सिलना व फिनिश करना चाहिए बताया गया है। सेट-इन किमोनों तथा रेगलान का वर्णन इस सेक्शन में किया गया है।

**सेट-इन अस्तीन:-**

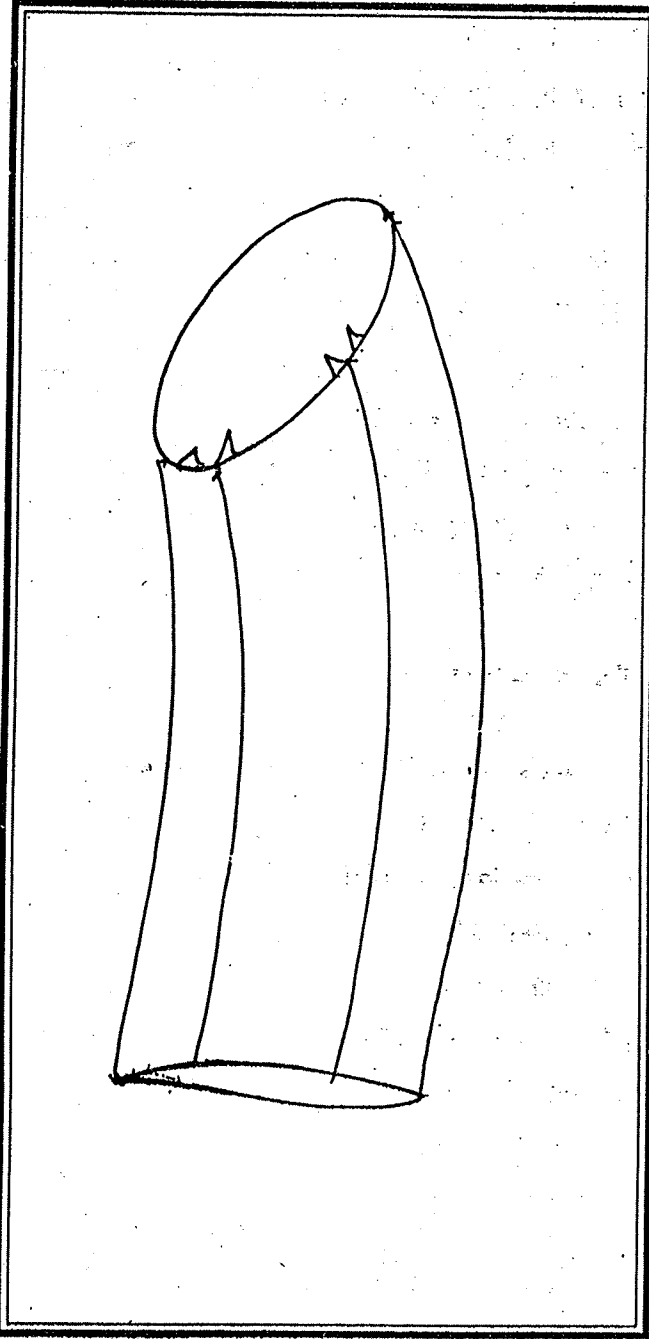
इस अस्तीन का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। सारी आस्तीनों की तुलना में यहीं

आस्तीन है जो शरीर के आकार के बिल्कुल करीब है इसीलिए यह पहनने में सबसे ज्यादा आरामदायक होती है। खासतौर पर अगर इसे अच्छी तरह से सिला गया हो।

अस्तीन को एक या दो टुकड़ों में बनाया जा सकता है। अस्तीन सीधी या फिटिंग हो सकती है। अस्तीन का सर सादा, चुन्नटदार, प्लीटेड या ड्रैप हो सकता है।

बिल्कुल फिटिंग आस्तीन

में भी आस्तीन का सर बड़ा काटा जाता है, बॉक्स की अस्तीन की तुलना में। नहीं तो आस्तीन हाथ पर फिट नहीं बैठेगी। इसीलिए आस्तीन के सर को बराबर से विभाजित करके मुड़के से जोड़ना पड़ता है जिससे आस्तीन में फूलापन तो आये परन्तु चुन्नट व प्लेट हो, तब भी चुन्नट व प्लेट को बहुत ज्यादा कसके नहीं लेना चाहिए। थोड़ा ढीला छोड़ते हुए आस्तीन को जोड़ना चाहिए जैसे प्लेन आस्तीन में करते हैं।



शर्ट की आस्तीन को छोड़कर जिसके लिए अलग से निर्देश दिये हुए हैं। सेट-इन अस्तीन को मुड़के पर धड़ाने से पहले तैयार कर लेना चाहिए। फिटेड अस्तीन में डार्ट या हल्की सी चुन्नट होनी चाहिए जिससे कोहनी को

आसानी से मोड़ा जा सके। कपड़े तथा वस्त्र के आकार को देखते हुए आस्तीन की

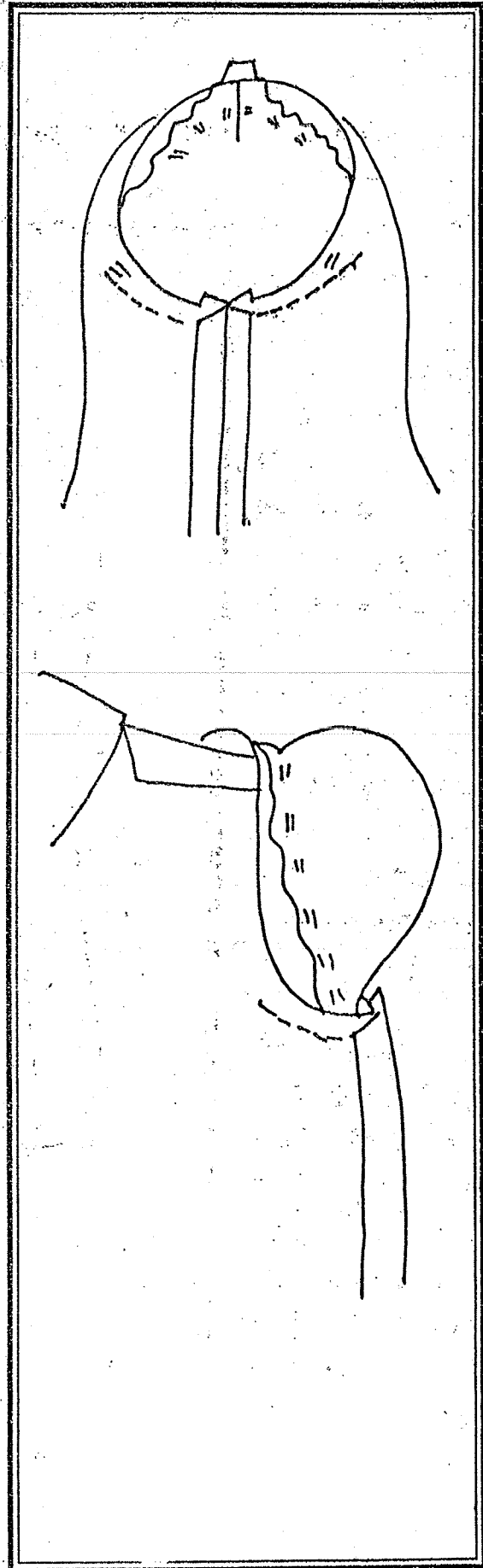


सिलाई के दवाब को सिलना व प्रेस करना चाहिए। कफ को आस्तीन के मुडड़े पर चढ़ाने से पहले जोड़ना चाहिए, पर इसके लिए आस्तीन की लम्बाई (कफ के साथ) की जानकारी पहले से होनी चाहिए। दो दुकड़ों की आस्तीन अधिकतर कोट या सूट में पाई जाती है। दो हिस्सों में बनती है। जिन्हें शेष कर फिटिंग आस्तीन का आकार दिया जाता है। कोहनी पर थोड़ी सी अतिरिक्त चुन रहती हैं। इनकी भी सिलाई पहले से करके, प्रेस करके मुडड़े में सेट होनी चाहिए। प्लेट या चुन जो आस्तीन के सर पर डालना हो पहले से कर लेना चाहिए।

#### आस्तीन को जोड़ना:-

१- कपड़े की उल्टी तरफ को ऊपर कर लें। आस्तीन को वस्त्र पर पिन करें। आस्तीन व कपड़े की सीधी तरफ एक दूसरे पर रखें। आस्तीन की बगल की सिलाई तथा मुडड़े की बगल की सिलाई को एक के ऊपर एक रखें। अगर सिलाई न हो तो उस प्वाइन्ट को मेल करें।

२- बगल की सिलाई से आस्तीन व वस्त्र के मुडड़े को पिन करें, ७.५ सेन्टीमीटर की दूरी तक जहाँ कट लगाया है वहाँ तक। अगर कट नहीं लगा है तो

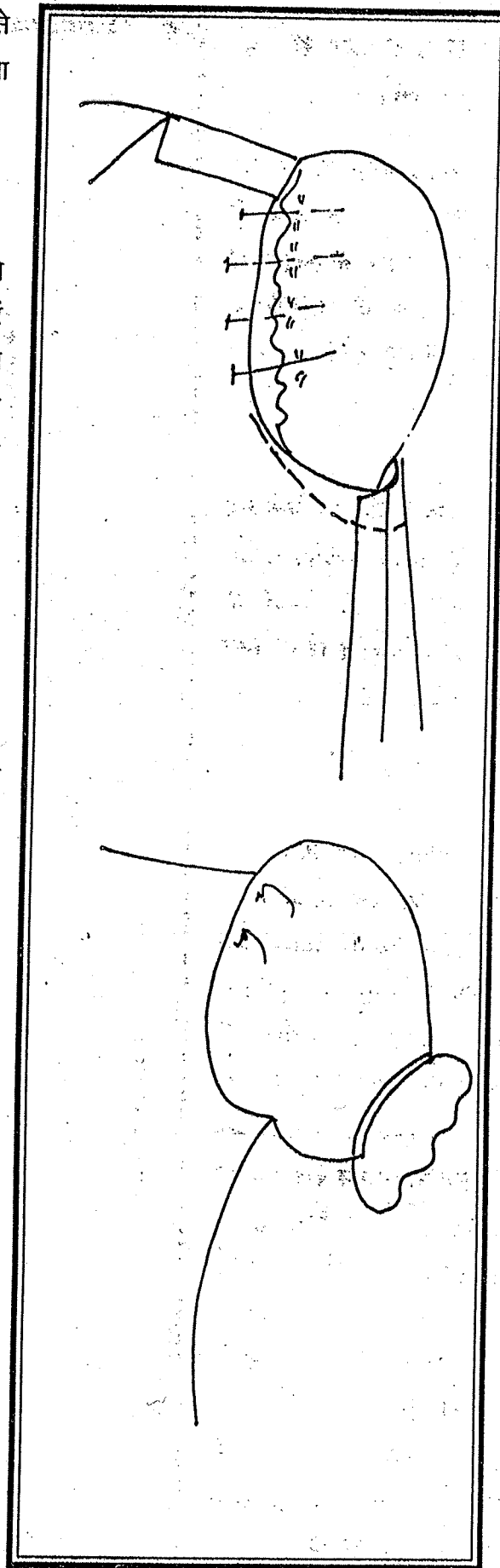


कपड़े को खींचे नहीं। आराम से ७.५ सेन्टीमीटर की दूरी तक कच्चा करें।

३- अब आस्तीन के सर को कन्धे की सिलाई पर पिन करें रेखाचित्र में आस्तीन का सर पिन करें हुए और आस्तीन व बॉडिस की बगल की सिलाई को मैच करते हुए दिखाया गया है।

४- अब मुडड़े को उल्टी तरफ फोल्ड करें और आस्तीन के सर को उठाकर पीछे के मुडड़े से मैच करें। दोनों कपड़ों के किनारों को बराबर से रखते हुए कच्चा करें।

५- मुडड़े तथा आस्तीन को इसी तरह रखते हुए अब मोड़ को पिन करें। इसके लिए सिलाई के दबाव को बराबर से लें और पिन को सिलाई के समकोण में लें। पहली पिन को सर और कट के बीच में रखें। फिर बीच की दूरी में दो पिन और लगायें (जैसा रेखाचित्र में दिखाया गया है।) कपड़े के फूलेपन को हटाते हुए, जो पिन के बीच में आयेगा और पिन इसी तरह लगायें जब तक पिन

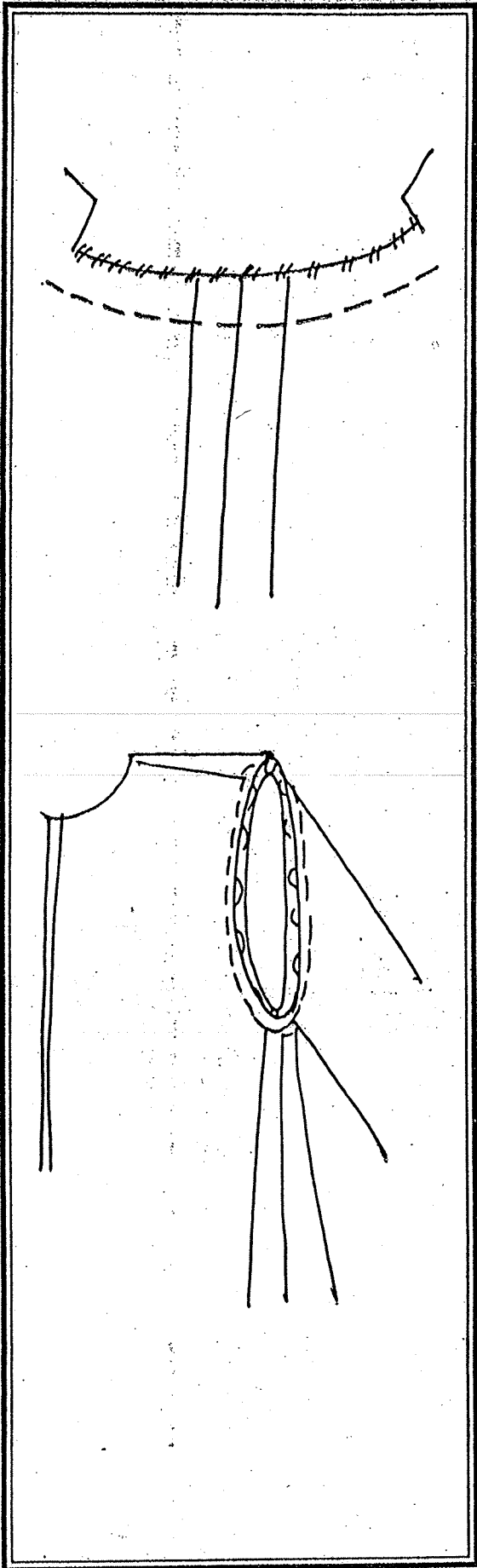


पास-पास न हो और बीच का चुन्नट बहुत कम।

६- अब आस्तीन के सर को मुड़के पर छोटे कच्चे टॉके से जोड़ें। यह सिलाई की लाइन पर होना चाहिए। कपड़े को उगलियों पर लेकर कच्चा करें।

७- अब अस्तीन पर किये गये कच्चे पर मशीन चलायें। मशीन धीरे चलायें और ठीक कच्चे के ऊपर, अगर दिक्कत हो तो हाथ से बैक स्टिच करें।

इसके बाद कच्चे को निकाल दें और अस्तीन को मुड़के पर से स्लीव पैड पर चढ़ाकर प्रेस की नोक का प्रयोग करते हुए प्रेस करें। सारा दवाब आस्तीन की तरफ होना चाहिए। आस्तीन के सर पर से दवाब को कम से कम १.५ सेन्टीमीटर का रखें जिससे आस्तीन को मजबूती मिले। ड्रेस तथा ब्लाउज, जो कोट व जैकेट से ज्यादा कसी होती है अन्दर का दवाब, हाथ के नीचे एक सेन्टीमीटर तक का रखा जा सकता है। ज्यादातर कपड़ों में यह सलाह दी जाती है कि पहली सिलाई से ३ मि०मी० की दूरी पर एक अतिरिक्त



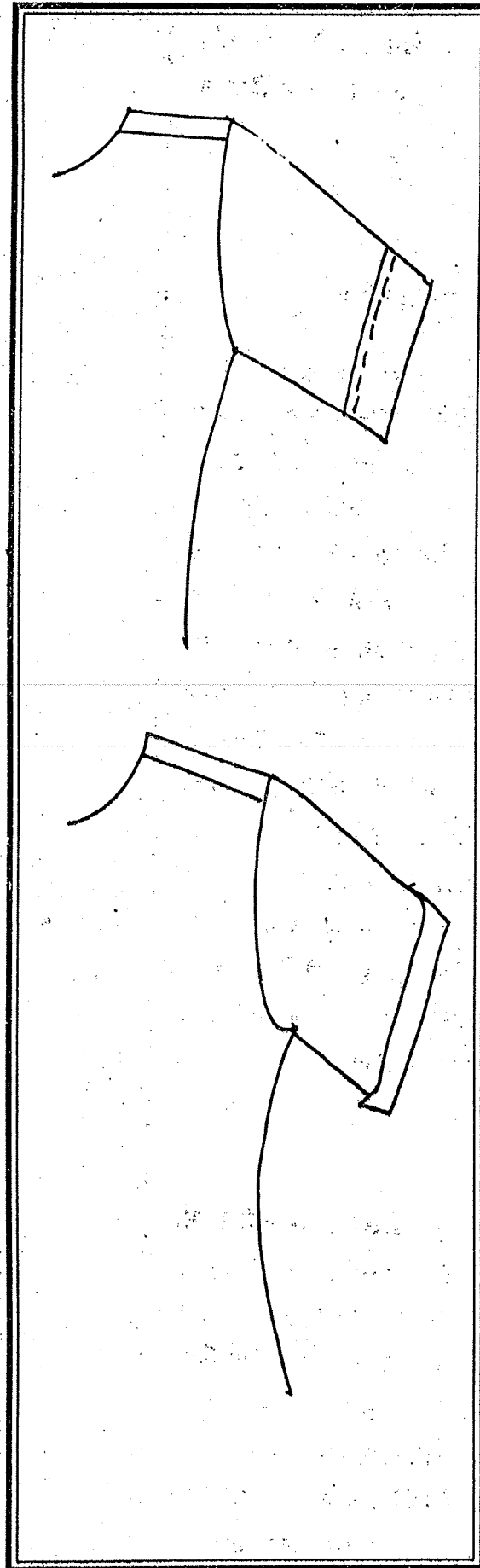
सिलाई लगा लें जिससे कपड़े के तारों न निकलें।

### शर्ट की आस्तीन:-

इस आस्तीन का प्रयोग शर्ट की तरह ब्लाउज तथा लड़को के ड्रेसिंग गाऊन इत्यादी में होता है। आमतौर पर आस्तीन को मुडड़े पर एक साधारण मशीन फेल सीम से जोड़ा जाता है। इसमें सीधी तरफ दो लाइनें सिलाई की दिखती हैं। गिरते हुए कन्धे पर भी इसी तरह आस्तीन जोड़ी जाती है, परन्तु सीधी सिलाई के साथ। इन दोनों में ही आस्तीन का सर सेट-इन आस्तीन से कम होता है।

वस्त्र के कन्धे और योक को जोड़कर बगल की सिलाई न लगायें। आस्तीन को भी बगल से न सिलें।

अब आस्तीन को उल्टी तरफ से मुडड़े पर चढ़ायें। बगल की सिलाई, आस्तीन व शर्ट दोनों की, को मैच करें। आस्तीन के सर पर से कपड़े के झोल को हटाते हुए, जैसा सेट-इन आस्तीन के लिए बताया गया है, सिलें। अब आस्तीन की सिलाई को प्रेस करें जिससे दबाव कन्धे की तरफ जाये। अब इसके ऊपर बताये गये तरीके से 'मशीन फेल सीम' करें। ऐसी सेट-इन आस्तीन का

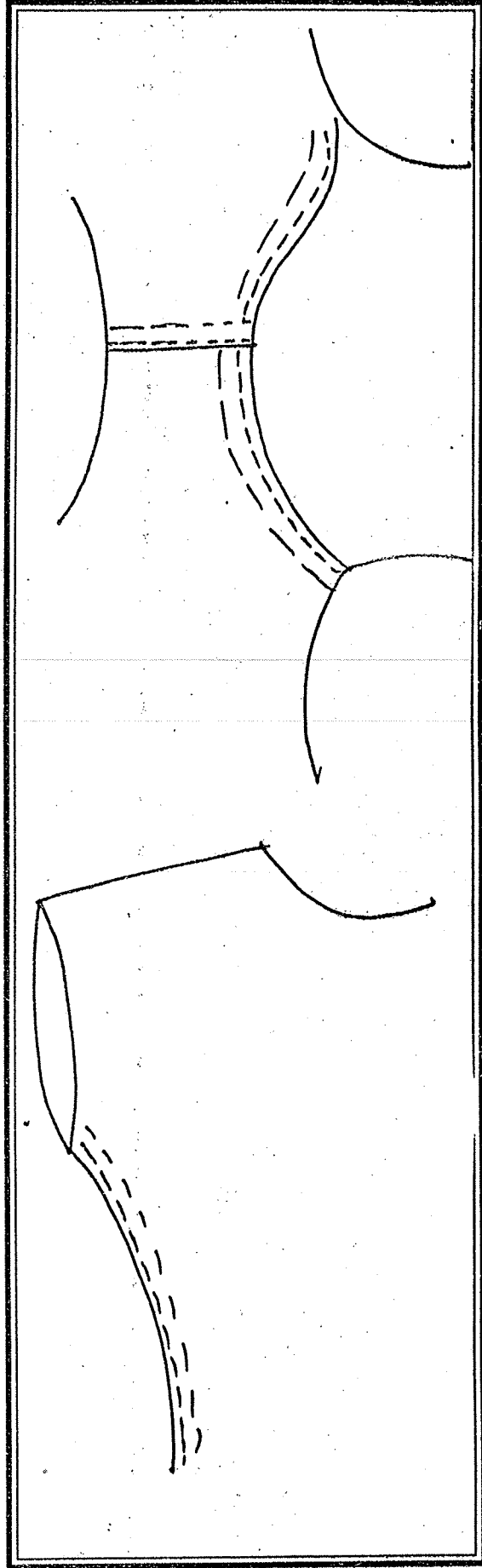


उदाहरण दिया हुआ है। अब वस्त्र को अन्य वस्त्रों की तरह फिनिश करें।

### किमोनों आस्तीन:-

सबसे आसान तरीका किमोनों आस्तीन बना कर बाँडिस को बढ़ा कर बनाने का है। इसके लिए आगे व पीछे के कन्धे को बढ़ा दिया जाता है, जो आस्तीन का भाग बनता है। कितना बढ़ाना है यह डिजाइन पर निर्भर करता है। कैप आस्तीन की तरह कन्धे की टिप पर से कलाई तक लम्बाई हो सकती है। आस्तीन जितनी लम्बी होगी उतना ही आस्तीन को हाथ के नीचे से ढीला करना होगा जिससे हाथ को घुमाने में आसानी हो। इसलिए अगर फिटिंग किमोनों आस्तीन हो तो गसेट लगाना आवश्यक होगा।

डॉलमन आस्तीन भी किमोनों आस्तीन की तरह होती है, जिसको हाथ के नीचे से ढीला रखते हैं और इसकी गोलाई कमर पर से ही शुरू हो जाती है। बैटविंग आस्तीन सीधी कमर से शुरू होती है, जिससे जब हाथ उठता है तो कपड़ा चम्कदार पंख की तरह



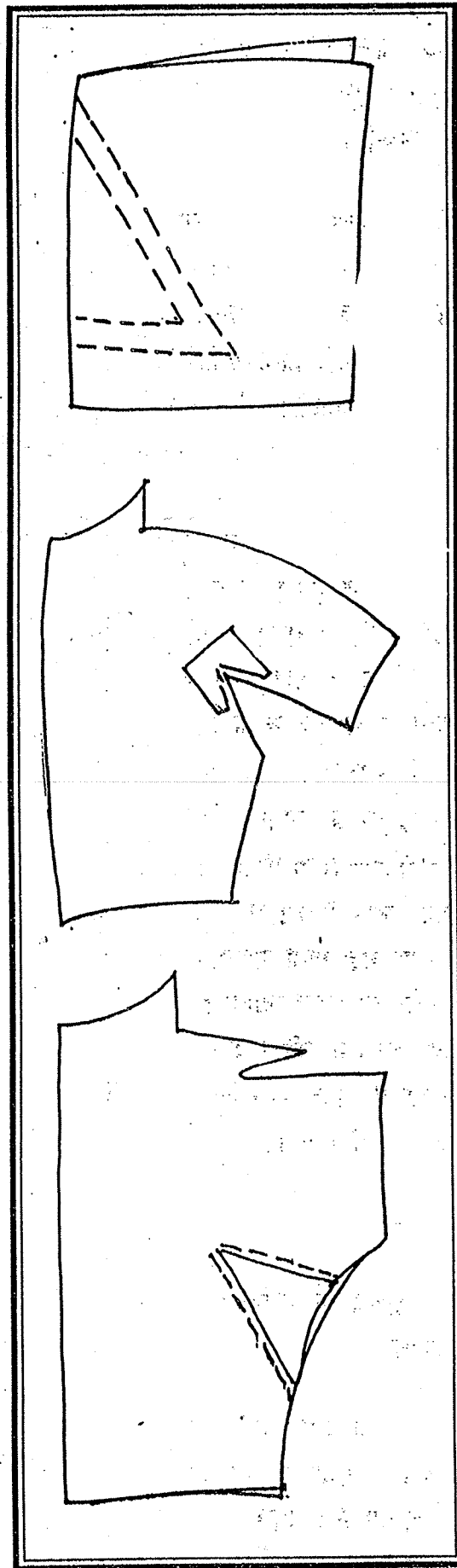
फैलता है।

बिना गसेट के किमोनॉ तथा  
डॉलमन आस्तीन:-

अगर बड़ी हुई आस्तीन काफी लम्बी है तो फिर इसमें स्टे स्टिच की आवश्यकता होती है, क्योंकि कपड़े पर खिचाव पड़ता है। इसके लिए अतिरिक्त मजबूती देनी होती है। पहले से श्रिंक की हुई पट्टी को लेकर सिलाई करें। सिलाई के दबाव में कट लगाये जिससे सीधा करने पर गोलाई ठीक से बैठे।

गसेट के साथ किमोनॉ आस्तीन:-

जब थोड़ी फिटिंग किमोनॉ आस्तीन की आवश्यकता होती है तो हाथ के नीचे थोड़ा अतिरिक्त कपड़े की आवश्यकता होती है जिससे हाथ को पूरी तरह हिलाया जा सके। अगर गसेट नहीं लगायेंगे और आस्तीन को कम ढीला काटेंगे तो हाथ कसेंगे। इस दिक्कत को आसानी से गसेट की सहायता से दूर किया जा सकता है। गसेट एक टुकड़े या दो (एक पीछे एक आगे) टुकड़े का हो सकता है। एक टुकड़ा डायमन्ड के आकार का होता है। गसेट लगने से आस्तीन की अन्दर की सिलाई की लम्बाई

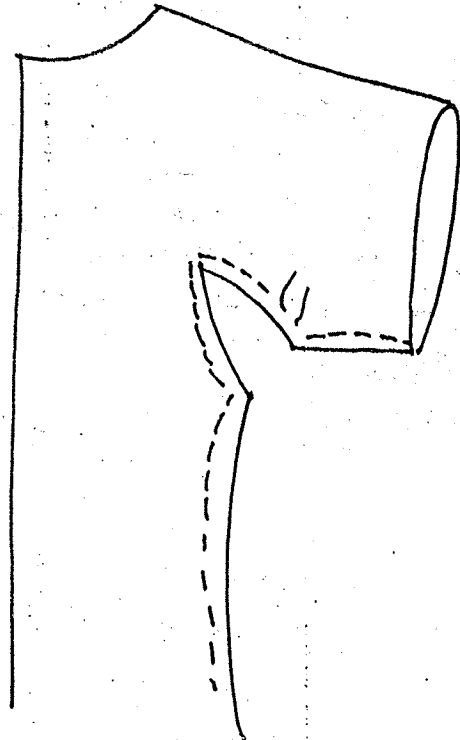
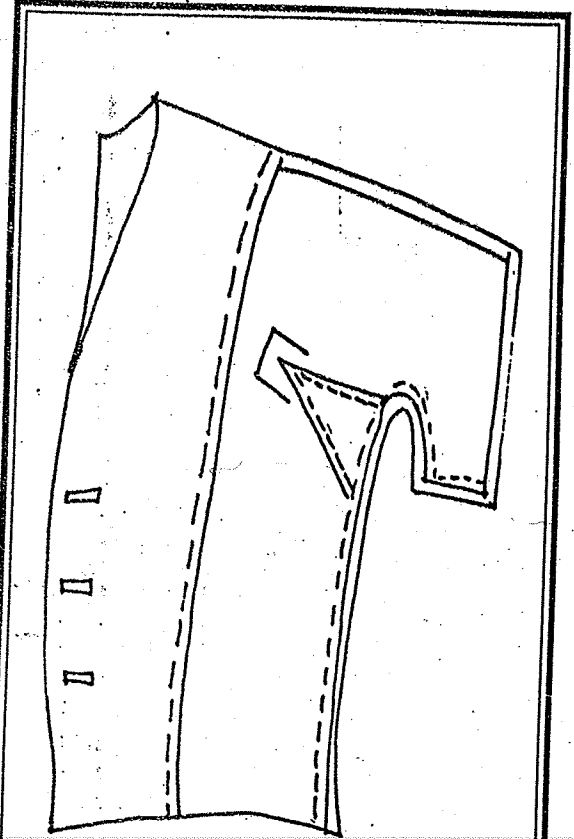


बढ़ जाती है, जिसके वजह से हाथ का पूरी तरह घुमाने की सुविधा मिलती है।

हाथ का घुमाव आस्तीन व बॉडिस पर कभी तनाव डालता है। यह तनाव सेट-इन-अस्तीन में इतना नहीं होता क्योंकि वह शरीर के आकार को ध्यान में रखते हुए काटी जाती है। किमोनों आस्तीन में जहाँ गसेट को लगाया जाता है, वहाँ पर ऊपर के दो बिन्दुओं पर सबसे ज्यादा तनाव होता है। इसलिए यहाँ पर अतिरिक्त मजबूती देनी चाहिए जिसे गसेट पर से कपड़ा फटे नहीं। पहनने पर जिस स्लेश में गसेट लगाया जाता है, वह ७.५ सेन्टीमीटर लम्बा होता है। गसेट की चौड़ाई भी ७.५ सेन्टीमीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अगर गसेट की चौड़ाई ज्यादा होगी तो आस्तीन अन्दर की तरफ से ज्यादा लम्बी हो जायेगी और फिटिंग का प्रभाव नहीं आयेगा।

**दो टुकड़ों के गसेट का पैटर्न बनाना:-**

अगर आपके व्यवसायिक पैटर्न में गसेट का आकार नहीं दिया गया है तो दिये गये निर्देशों का पालन करें।



१- एक कागज के टुकड़े को मोड़ें और मोड़ पर ४.५ सेन्टीमीटर की लाइन खींचें।  
'ए.' 'बी.' यह गसेट की चौड़ाई होगी।

२- मोड़ पर इस लाइन से ६.५ सेन्टीमीटर की दूरी पर एक निशान 'सी' लगायें।  
अब इस प्वाइन्ट को नीचे की लाइन पर बी. प्वाइन्ट से जोड़ें। यह आपके गसेट की  
सिलाई की लाइनें होंगी।

३- सिलाई के दवाब के लिए दो अतिरिक्त लाइनें १३ मिलीमीटर की दूरी पर  
बनायें। अगर मोटा कपड़ा है तो दो सेन्टीमीटर का दवाब रखें।

४- इसको मोड़ पर से खोलेंगे तो आपको गसेट मिलेगा या फिर इसको कपड़े को  
मोड़कर रखकर काटें। ऐसे चार टुकड़े काटें, दो आगे और दो पीछे के लिए।

#### दो टुकड़े की म्यानी लगाना:-

१- धागे या टेलर्स चौक द्वारा म्यानी के स्लैश का स्थान चिह्नंकित करें जो बॉडीस  
के बगल पर ७.५ सेमी० लम्बी होनी चाहिए।

२- पीछे निर्दिष्ट विधियों में से किसी उपयुक्त विधि द्वारा स्लैश को स.क्त करें।  
दिखाए गए उदाहरण में फेसिंग का प्रयोग किया गया है।

३- फेसिंग को उल्टी ओर मोड़ने के पश्चात् अन्दर मोड़े तथा स्लैश की बाकी बची  
किनारीयों को टैक करे तथा ओवरलैप्ड सीम का प्रयोग करते हुए म्यानी जोड़ दें, जिस  
तरह पीछे के बॉडीस के लिए दिखाया गया है। दबाएँ

४- आगे की बॉडीस पर दोहराएँ। आगे व पीछे के बॉडीस को सामान्य रूप से जोड़  
दें। इसमें आगे के बॉडीस के म्यानी व सिलाई की उल्टी दिशा दर्शाई गई है।

#### एक टुकड़े के गसेट को बनाना और सिलना:-

अगर पैटर्न नहीं दिया गया है तो दो टुकड़े के गसेट की तरह ही गसेट बनायें।  
पर इसमें ६.५ सेन्टीमीटर के दो निशान लगायें, एक ऊपर और एक नीचे। इसके बाद  
इसमें सिलाई का दवाब रखते हुए काटें।

जैसे दो टुकड़े के गसेट के लिए निशान लगाया था वैसे ही गसेट का निशान  
लगाकर उसे मजबूती प्रदान करें। फिर स्लैश कर दें। अब आस्तीन व बगल की सिलाई  
कर दें और गसेट के स्लैश को छोड़ दें। अब गसेट को निम्न तरीके से जोड़ें।



१- एफ से सिलाई के दबाव को लेकर एच तक कच्चा करें और एच. पर सिलाई को पलटें और जी. तक जायें। लम्बे तागे छोड़ दें।

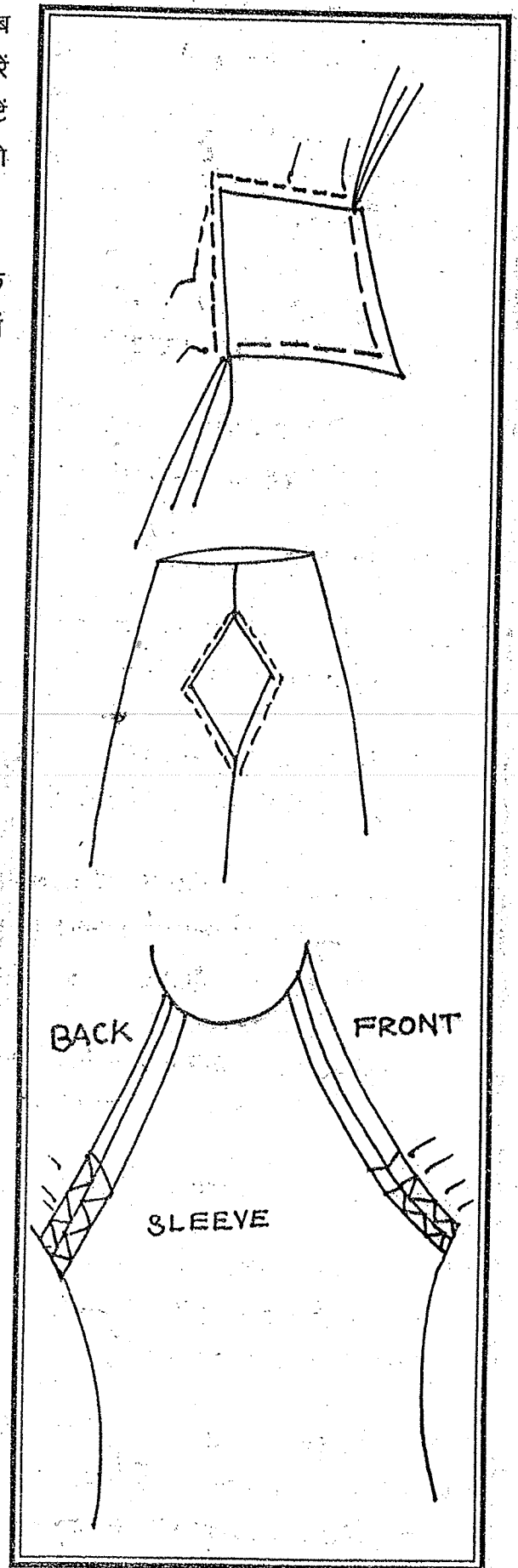
२- गसेट की दूसरी तरफ को भी उसी तरह सिलें। किनारों को ठीक से फिनिश करें।

३- अतिरिक्त मजबूती के लिए सीधी तरफ से टॉप स्टिच करें। रेखाचित्र में यह दिखाया गया है।

गसेट फैशन पर निर्भर करता है। बॉडिस के किनारे में गसेट को लम्बे पैनल की तरह बनाया जा सकता है। इसको अस्तीन में भी बढ़ाया जा सकता है। पैनल को सिलने के बाद उसके अन्त को गसेट का प्वाइन्ट मान कर गसेट को सिलना शुरू करें जैसे ऊपर बताया गया है।

**रेगलान अस्तीन:-**

रेगलान अस्तीन का प्रयोग ज़ेसेस, जैकेट व कोट में किया जाता है। यह बच्चों के वस्त्रों में विशेष रूप से प्रयोग किये जाते हैं क्योंकि यह ढीली व आरामदायक होती है। रेगलान आस्तीन कंधे से लेकर गले तक जाती है। इसमें दो सिलाइयाँ होती हैं जो मुड़के के



नीचे से शुरू होती है और गले के थोड़ा आगे और पीछे खत्म होती है। यह आम कन्धे की लाइन से थोड़ा आगे व पीछे होती है। क्योंकि यह सिलाई की लाइनें उरेबी होती हैं। इनको मशीन से सिल कर स्टे करना चाहिए या फिर एक पतला टेप लगाना चाहिए, जैसा किमोनों अस्तीन में करते हैं।

जब वस्त्र में रेगलान अस्तीन बनाते हैं तो बॉडिस और आस्तीन को पहले न सिलें।

१- पहले सामने के पल्ले में आस्तीन के सामने के हिस्से को पिन करें फिर पीछे के हिस्से को पिन करें। पिन समकोण पर लगी होनी चाहिए। कच्चा करके सिलाई करें।

२- सिलाई के दबाव में मुड़के के निचले हिस्से में कट लगायें तथा दबाव को प्रेस करें।

३- आस्तीन को पूरा करने के लिए अस्तीन की हेम लाईन से कच्चा करते हुए नीचे कमर तक कच्चा करें। अब इसी कच्चे पर पतली लम्बी सिलाई करें। किनारे और

### ऐप्युलेट आस्तीन:-

ऐप्युलेट आस्तीन सेट—इन तथा रेगलान आस्तीन का मिश्रण है। ऐप्युलेट आस्तीन सेट—इन आस्तीन की लाइन के कन्धे के ऊपर तक आती है, जहाँ से वह एक पतली पट्टी के आकार में गले तक रेगलान आस्तीन की तरह बनाई जाती है। इसी पट्टी से इस आस्तीन का नाम पड़ता है।

इस आस्तीन को बनाने के लिए दो तरह की सिलाई का प्रयोग होता है—प्लेन व ओवरलेड। हाँलाकि कभी—२ साधारण आस्तीन का भी प्रयोग पूरे में किया जाता है।

१- सिलाई के दबाव को पट्टी वाले हिस्से पर मोड़कर अन्दर करें और कच्चा करें। जहाँ पर पट्टी खत्म होती है, वहाँ पर क्लिप करें। अब यहीं से सेट—इन अस्तीन शुरू होती है। अब प्रेस करें।

२- अब पहले पिन, कच्चा व मशीन करे जैसा आप आम सेट—इन अस्तीन के लिए करेगे। सिलाई को लोक करते हुए फिनिश करें।

३- अब पट्टी के आगे और पीछे के कन्धे के जोड़ पर ओवरलेड सिलाई करें, वहाँ तक जहाँ से सेट—इन आस्तीन शुरू हो रही हो। अब इसके किनारों को ठीक से लॉक

करें, रेखाचित्र में पट्टी का एक हिस्सा दिखाया गया है और सेट-इन आस्तीन को पूरी तरह।

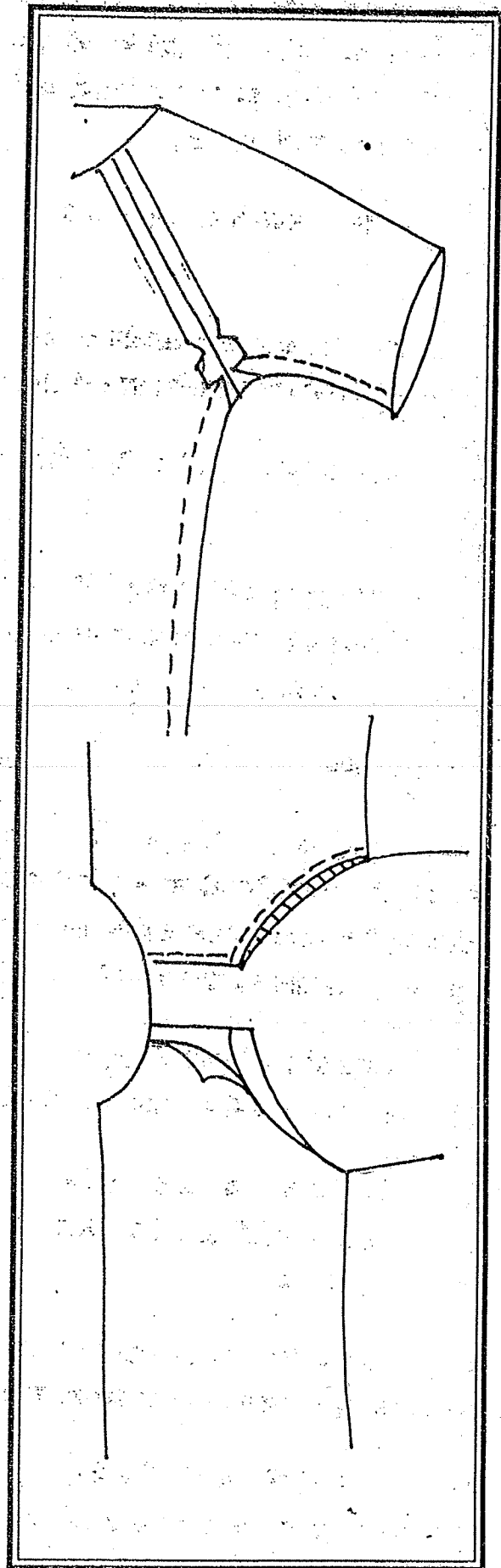
अगर आप पूरे में सादी सिलाई का प्रयोग कर रहे हैं तो सिलाई के दवाब को क्लिप करें, पूरी आस्तीन को कच्चा करें। सिलाई के दवाब को स्टे आस्तीन से मजबूत करें, कच्चा करने से पहले।

#### मुडढ़ा:-

बॉडिस में मुडढ़े को साधारण स्तर पर काटा जा सकता है। इनको थोड़ा अन्दर की तरफ काट के या बाहर की तरफ ढलकते हुए बनाया जा सकता है। मुडढ़े का जो भी आकार हो अगर वह बिना आस्तीन के है तो उसे पाइपिंग या फेसिंग लगाकर फिनिश करना होगा।

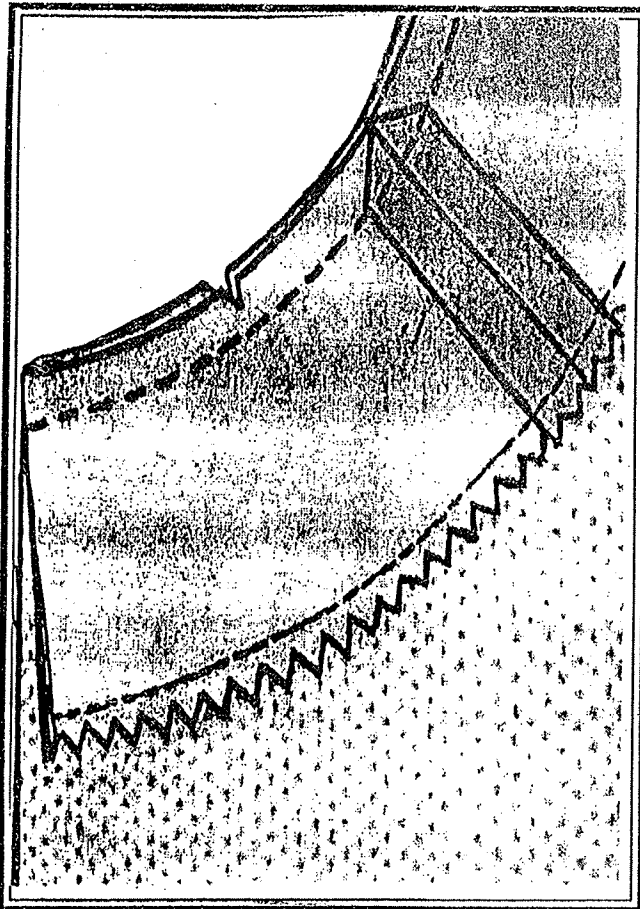
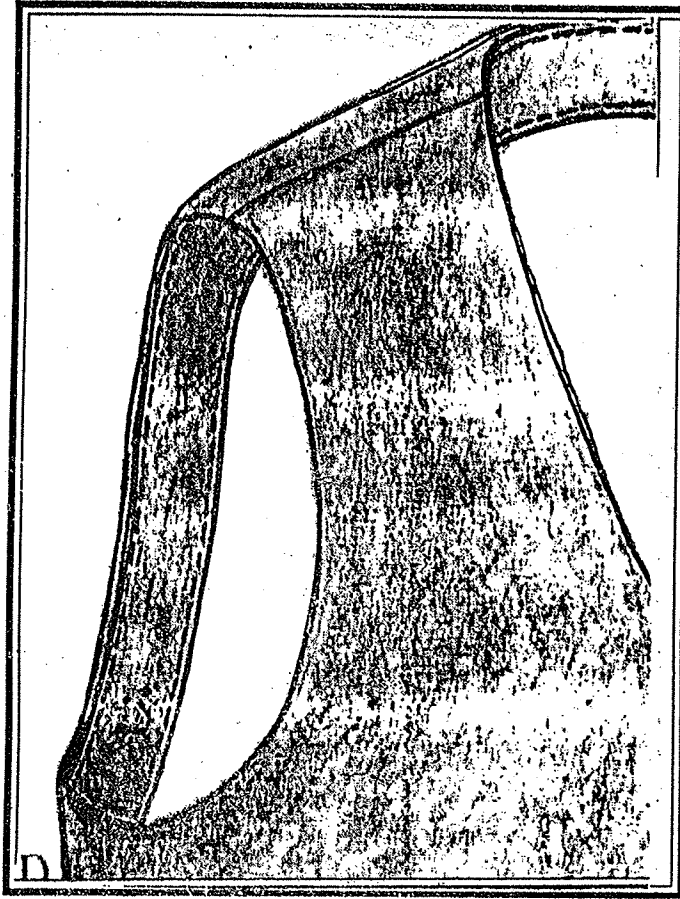
#### मुडढ़े में फेसिंग:-

शुरू करने के लिए आप सबसे पहले बगल की सिलाई को सिल लें। हालांकि बिना आस्तीन के मुडढ़े को बगल की सिलाई लगाने के पहले या बाद में फिनिशिंग किये जा सकते हैं।



## बगल की सिलाई लगाने से पहले:-

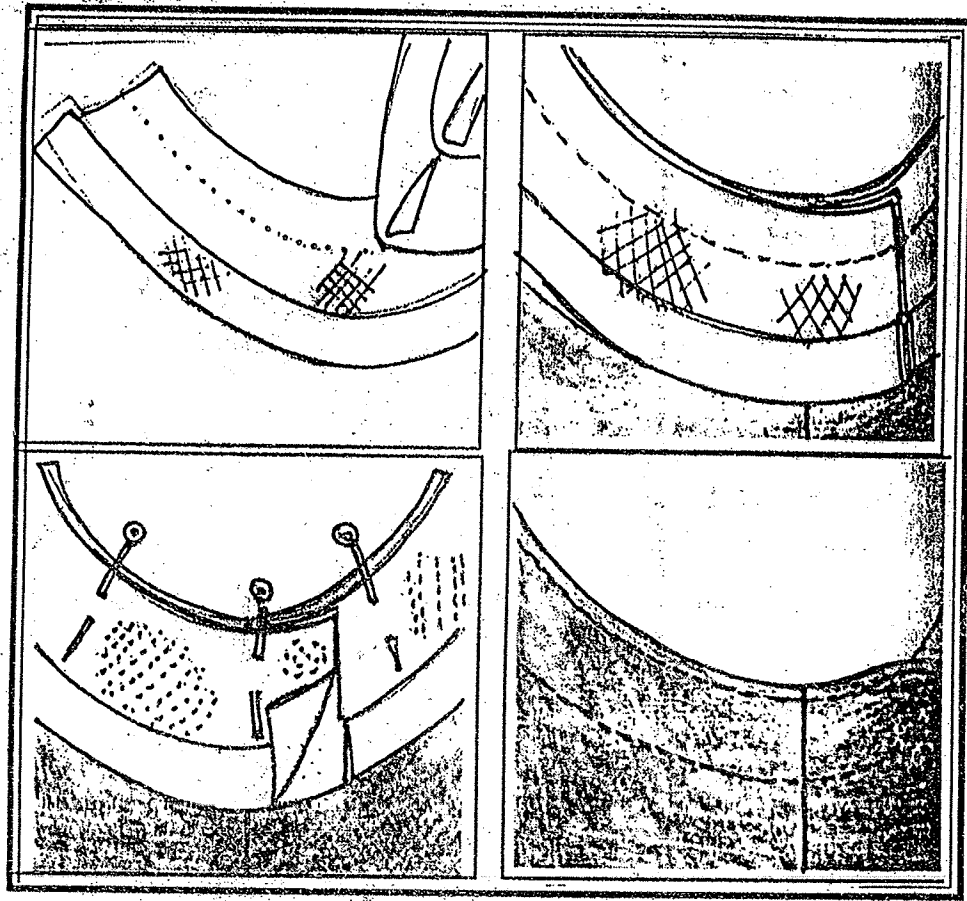
फेसिंग के बाहरी किनारे को फिनिश करें। फिर वस्त्र पर फेसिंग को लगायें। नॉचेस को मिलाते हुए निशान लगायें और सादी सिलाई से सिलें। ट्रिम करें, क्लिप करें, प्रेस करके अन्दर की सिलाई करें। फिर वस्त्र की बगल की सिलाई करें और फेसिंग को भी मिलाते हुए सिलें



जिससे वह गोल हो जाये, अब सिलाई को प्रेस करें। अब फेसिंग को अन्दर की तरफ मोड़कर कच्चा करें और हेम करें।

बगल की सिलाई लगाने के बाद:-

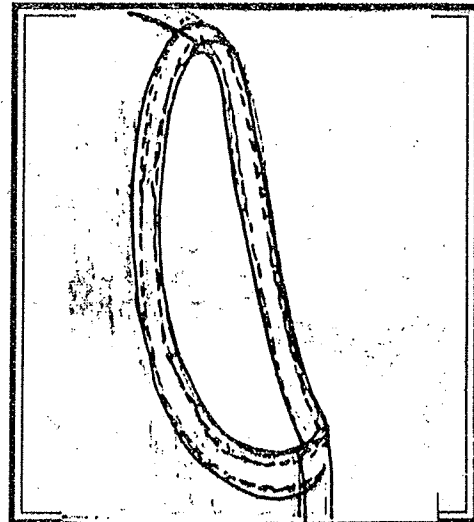
फेसिंग के बाहरी किनारे को फिनिश करें। फिर फेसिंग को गोल करके जोड़ को सिलें। इस गोल फेसिंग को मुडढे पर चढ़ाये, पिन करें, नॉचेस को मैच करके निशान लगायें और सिलाई करें। सिलने के



बाद, ट्रिम करें, क्लिप करें, प्रेस करें और अन्दर से सिलें। फिर, वस्त्र की बगल की सिलाई करें और फेसिंग को भी मुडड़े के नीचे की तरफ से सिलें।

#### उरेबी पट्टी की फेसिंग:-

साधारण फेसिंग की जगह आप उरेबी कपड़े की पट्टी का भी प्रयोग करके पाइपिंग बना सकते हैं। एक उरेबी पट्टी  $3/8$  या एक इंच चौड़ी काटें। इससे काम तेजी से हो सकता है क्योंकि आपको अलग-अलग पट्टियाँ नहीं काटनी पड़ेगीं। बाजार में तैयार पाइपिंग भी मिलती हैं जिनके किनारे पहले से मोड़कर प्रेस किये होते हैं। एक और फायदा यह है कि उरेबी कपड़े की पाइपिंग असानी से गोल आकार ले लेती हैं और गोलाई पर फिट हो जाती हैं इसका प्रयोग अकसर गले और मुडड़े की फिनिशिंग के लिए किया जाता है।



पाइपिंग लगाने के लिए सिलाई का दबाव एक चौथाई इंच से अधिक न रखें। इस उरेबी पट्टी को सिलते समय कसके खींच कर लगायें। परन्तु ध्यान दें कि मुडढ़ा न खिचे। पाइपिंग को वस्त्र के ऊपर सीधी तरफ से रखें। दोनों के सीधी तरफ एक रूख होनी चाहिए।

पहली सिलाई लगाने के बाद सिलाई को प्रेस करें। अब दूसरी तरफ को दो बार मोड़ते हुए इसे कच्चा करें फिर या तो मशीन करे या हेम करें। अगर उठी हुई फिनिश चाहिए तो पाइपिंग को रोल करें।

#### अभ्यास-

१- अपने वस्त्रों को देखें और समझें की आस्तीन व मुडढ़े को कैसे सिला गया है?

#### ७.४ सारांश:-

आस्तीनें जिन्हे एक या दो टुकड़ों में बनाया जा सकता है वे सीधी या पलेर्ड या फिटिंग हो सकती हैं। आस्तीन का सिर सादा, गैदर्ड, प्लीटेड या ड्रेप्ड हो सकता है। अक्सर टाइट फिटिंग स्टाइल में आस्तीन का सर सदैव बॉडिस के मुडढ़े की अपेक्षा बड़ा होता है, नहीं तो आस्तीन बॉह पर फिट नहीं होगी। इसीलिए आस्तीन का सर आर्महोल पर ढीला होता है तथा पुकर्स या गैदर्स से बचने के लिए अतिरिक्त फुलनेस बराबर से दी जाती है। जब कभी आस्तीन का सिर गैदर्ड या प्लीटेड हो तो गैदर या प्लीट को अधिक टाइट नहीं होना चाहिए, लेकिन सिर को आर्महोल के ऊपर ढीला आने के लिए सादे आस्तीन वाले सिर की तरह पर्याप्त ढीला होना चाहिए।

आर्महोल बॉडिस के सामान्य लेवल पर कटा हो सकता है। ये ड्रॉपिंग के या कट में बने हो सकते हैं। आर्महोल का जो भी आकार हो यदि या बिना आस्तीन का है तो किनारा फेसिंग या पाइपिंग से फिनिश होना चाहिए।

#### ७.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ शर्ट की आस्तीन कैसे सिलते हैं?

प्रश्न-२ किमोनों आस्तीन कैसे सिलते हैं?

प्रश्न-३ रेगलान आस्तीन कैसे सिलते हैं?

प्रश्न-४ मुडढ़े में फेसिंग कैसे सिलते हैं?

प्रश्न-५ मुडदे में पाइपिंग कैसे सिलते हैं?

७.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इन साईक्लोपीडिया ऑफ नीडिल क्रॉफ्ट  
बाई जूडी ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।

संरचना

- ८.१ यूनिट प्रस्तावना
- ८.२ उद्देश्य
- ८.३ वेस्ट बैंड
- ८.४ सारांश
- ८.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- ८.६ स्वाध्ययन हेतु
- ८.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस इकाई में कमर पेटी सिलने तथा फिनिश करने की विधि का वर्णन किया गया है।

८.२ उद्देश्य:-

शरीर के सारे नीचे के वस्त्रों के लिए कमर पेटी आवश्यक होती है। उन सब वस्त्रों के लिए भी जिनमें कमर पर बेल्ट होती है या सिलाई होती है। इस इकाई में अच्छी फिनिश की कमर पेटी बनाने का वर्णन किया गया है।

८.३ कमर पेटी:-

कमर पेटी की फिनिश मजबूती से होनी चाहिए क्योंकि उसे शरीर पर कसके बाँधा जाता है, (सिर्फ २.५ सेन्टीमीटर ढीली होती है) इसमें फास्टनर लगते हैं और इसी पर स्कर्ट या पैन्ट का वजन टिका होता है। इनको इसीलिए जहाँ तक हो सके कपड़े की लम्बाई में काटा जाता है और इसमें एक इन्टरफैसिंग जरूर लगती है।

कमर पेटी शरीर पर कसके टिकाई जाती है इसलिए उसमें सफाई भी होनी चाहिए। इस जगह कपड़े के कई हिस्से आकर मिलते हैं, इसलिए सावधानी से लेयरिंग तथा छटाई की आवश्यकता होती है जिससे अतिरिक्त कपड़े का बोझ न हो और पट्टी



कहीं से कमजोर भी न पड़े। खासतौर पर इस जगह क्योंकि यहाँ पर तनाव व खिचाव पहनते वक्त काफी पड़ता है।

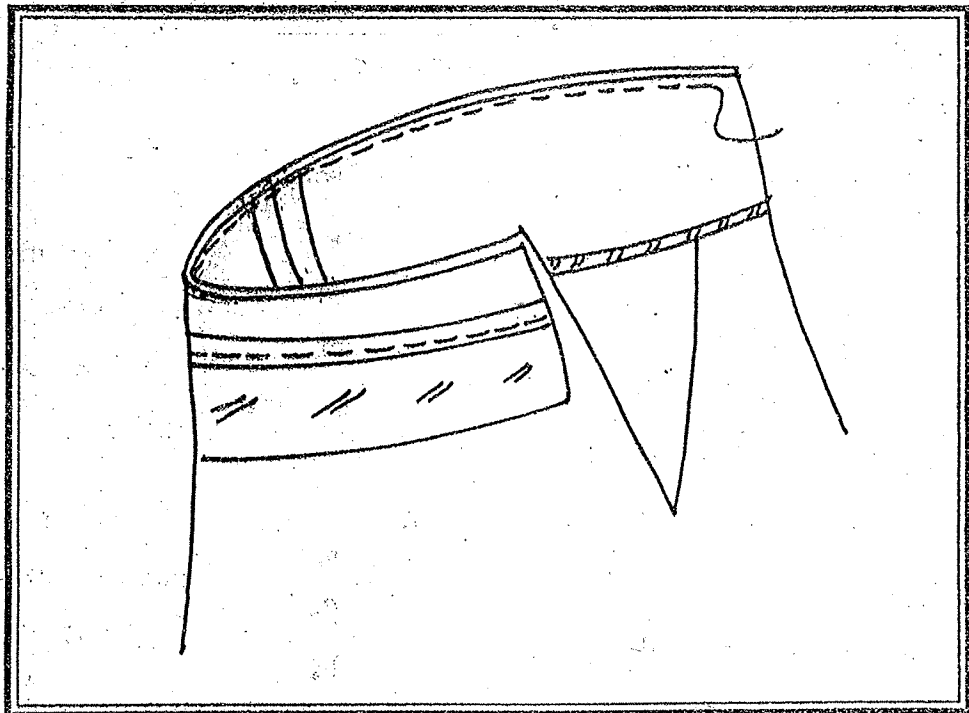
कमर पर तीन प्रकार से फिनिशिंग की जा सकती है। इसका चयन कपड़े की किस्म, फैशन तथा वस्त्र के प्रयोग पर निर्भर करता है।

### फेसिंग:-

यह सबसे कमजोर तरीका है फेसिंग करने का, परन्तु इसकी आवश्यकता स्टाइल व फैशन के अनुसार पड़ती है। खासतौर पर उन कपड़ों के लिए जो हिप पर (हिपस्टर) पहने जाते हैं या फिर स्कर्ट पर जो ऊँची कमर पर पहनी जाती है। इस कमजोरी के वजह के कारण एक टेप सिलाई के संग लगाया जाता है जिससे मजबूती मिलती है। एक शेष आकार की बेल्ट का प्रयोग किया जाता है। यह पैन्ट के लिए आवश्यक है।

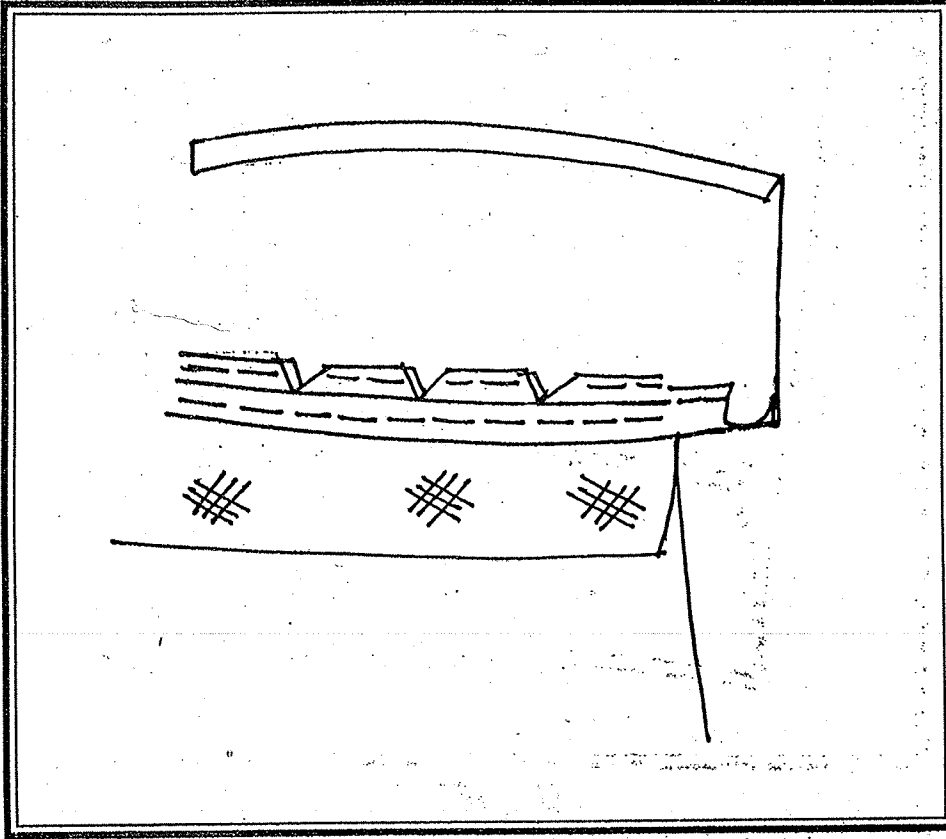
स्कर्ट व पैन्ट के ऊपर के नाप के अनुसार एक शेष फेसिंग काटी जाती है। इन्टरफेसिंग को वस्त्र के उल्टी तरफ कच्चा करें। अगर हल्के कपड़े की इन्टरफेसिंग है तो उसमें सिलाई का दबाव लिया जा सकता है परन्तु अगर भारी है तो उसे सिलाई की लाइन तक रख के कच्चा करें, शेष फेसिंग को जोड़ें और सिलें।

फेसिंग को फिर वस्त्र पर रखें। दोनों की सीधी तरफ एक दूसरे की तरफ होनी



चाहिए। जगह पर पिन करें। टेप को वस्त्र की उल्टी तरफ सिलाई की लाइन के बीच में रखें। सभी लेयर को लेकर कच्चा करें।

ट्रिम तथा लेयर:-



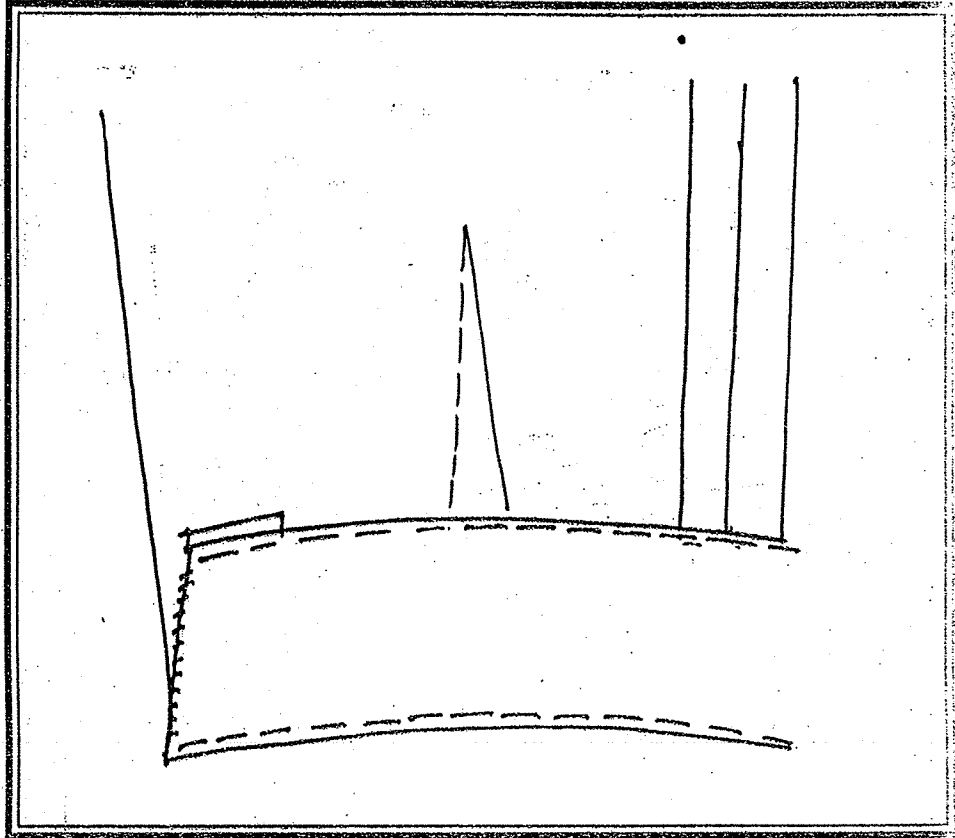
फेसिंग को ऊपर की तरफ रखकर फेस करें। फेसिंग को सिलाई के दवाब पर कच्चा करके सिलें। सिलाई की लाइन से  $9/3$  सेन्टीमीटर ( $9/8$  इंच) फेसिंग को वस्त्र की उल्टी तरफ रखें। ओपनिंग के किनारे की सिलाई के दवाब डार्ट इत्यादि की तरफ से हेम करें।

पीटरशैम:-

यह फिनिशिंग करने का एक मजबूत तरीका है और इसका प्रयोग तब किया जाता है जब सीधी तरफ से कमर पेटी दिखाई नहीं देती है। इसको स्कर्ट पर निम्न तरीके से जोड़ा जाता है।

१- पीटरशैम को कमर के नाप +  $2 \frac{9}{2}$  सेन्टीमीटर (एक इंच) अधिक मोड़ने के लिए +  $5$  सेन्टीमीटर ओवरलैप के लिए लेकर काटें।

२- पीटरशैम के किनारे पर  $9\frac{1}{8}$  सेन्टीमीटर ( $9/8$  इंच) लेकर मोड़ लें और इस पर हेरिंगबोन करें।



३- स्कर्ट की उल्टी तरफ से ऊपर की तरफ इसे जोड़ा जायेगा, यहाँ पर इसे कच्चा करें। दूसरे किनारे को उपयुक्त तरीके से फिनिश करें। प्रेस करें और किनारे पर टॉप स्टिच करें।

४- पीटरशैम को अब मोड़ के साथ वस्त्र की उल्टी तरफ रखें। पीटरशैम की एक तरफ को स्कर्ट की ओपनिंग से मिलना चाहिए और दूसरी तरफ को ओपनिंग के और आगे निकलनी चाहिए। पीटरशैम की ऊपरी तरफ को टैक करके मशीन स्टिच करें।

**वेस्टबैन्ड:-**

यह कमर पर फिनिशिंग करने का सबसे मजबूत और आम तरीका है। बैन्ड वस्त्र के किनारे को अन्दर करके कमर को अच्छी तरह पकड़ लेता है। सारे वेस्ट बैन्ड में इन्टरफेसिंग लगानी चाहिए। बुनि हुई या बोन्डेड इन्टरफेसिंग, बेल्टिंग फिनिश की तुलना में ज्यादा आरामदायक होती है। बेल्टिंग फिनिश एक सख्त तथा बिना खिचाव की फिनिश देता है।

वेस्ट बैन्ड की चौड़ाई फिनिश होने पर ३ सेन्टीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए, नहीं तो पहनने पर यह मुड़ेगी। इसका नाप कमर + मोड़ने + औवरलेप को लेकर होना चाहिए। जरूरत अनुसार इसे सादा या टॉप स्टिच भी किया जा सकता है। इसको हुक तथा आईज, स्नैप बटन, बटन व बटन होल, पैन्ट क्लिप या वेलक्रो (दो तरफ धिपकने वाला टेप) बटन तथा बटन होल बनाना अन्य इकाई में दिये गये हैं। फास्टनिंग के अन्य तरीके आगे दिये गये हैं।

**सादी वेस्ट बैन्ड:-** बैन्ड को नीचे दिये गये तरीके से सीधी ग्रेन पर काटें।

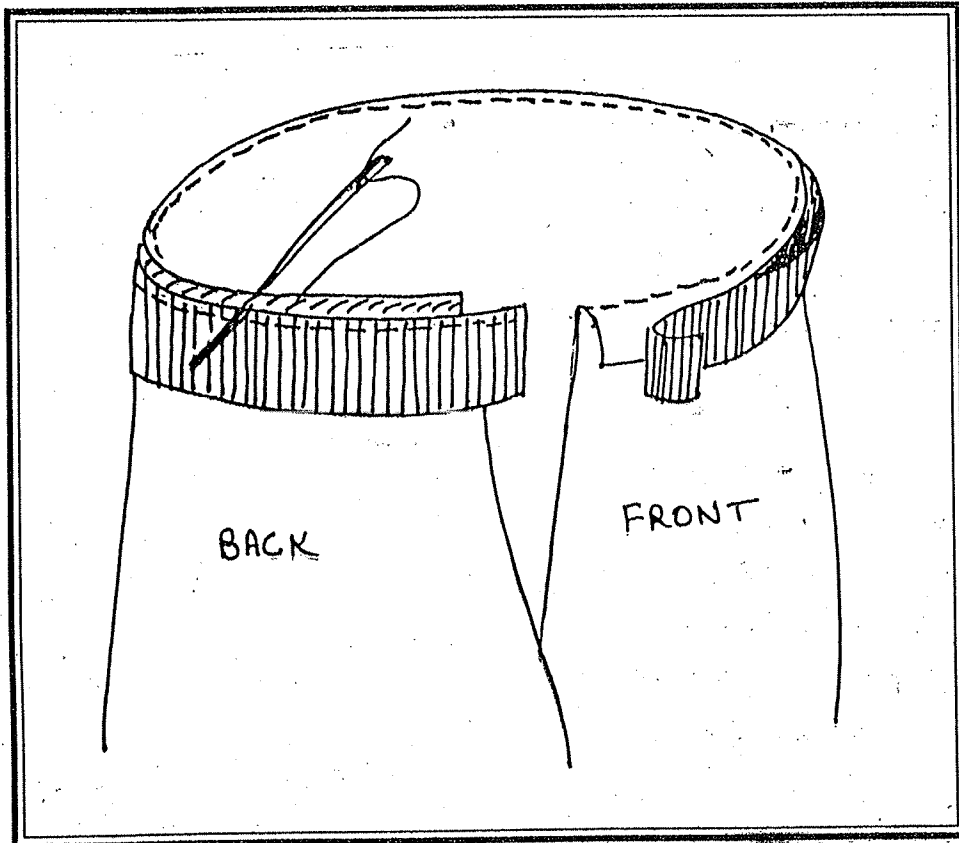
लम्बाई— कमर + दो मोड़ + औवरलेप (२ १/२ से ५ सेन्टीमीटर या १ से २ इंच)

चौड़ाई— बैन्ड की चौड़ाई का दुगना + दो मोड़

**इन्टरफेशिंग को निम्न प्रकार से काटें:-**

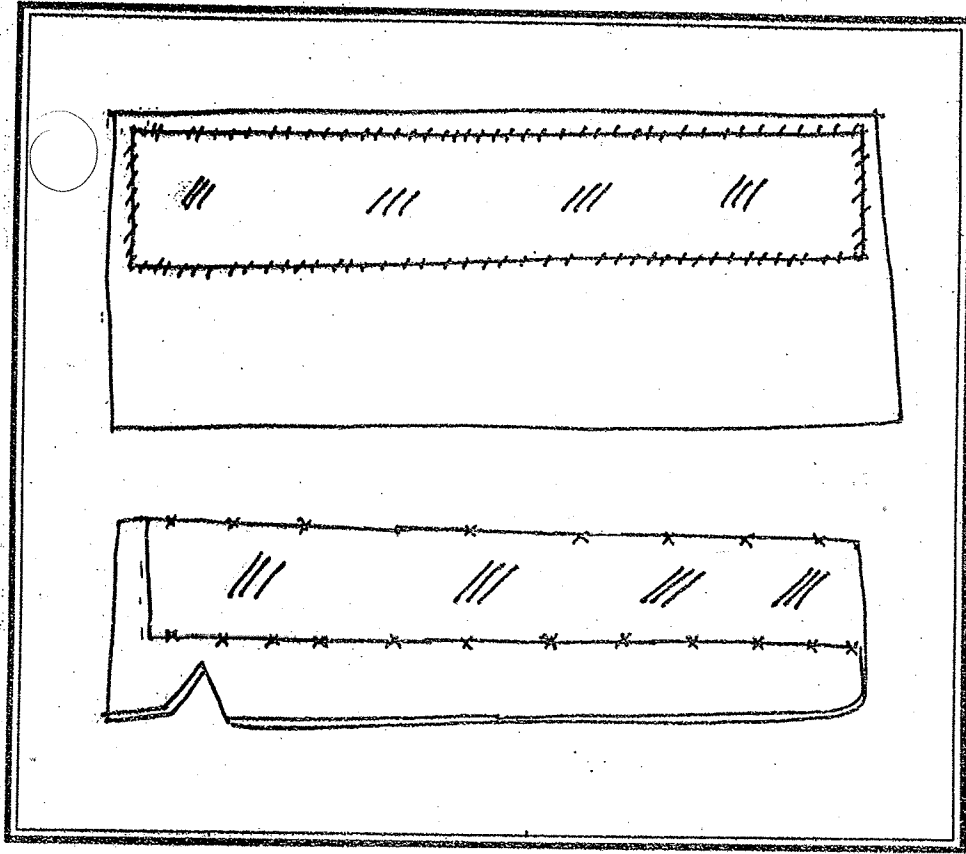
लम्बाई— कमर + ओवरलेप

चौड़ाई— फिनिस्ड चौड़ाई



वेस्टबैन्ड को निम्न प्रकार से बनाये और जोड़ें:-

१- इन्टरफेसिंग को वेस्टबैन्ड की उल्टी तरफ कच्चा करें या फिर पूरे पर कैच स्टिच करें जैसे दिखाया गया है।



२- वेस्ट बैन्ड को लम्बाई में मोड़ दें जिससे सीधी तरफ अन्दर हो। बैन्ड के किनारों को इन्टरफेसिंग की गहराई तक सिलें। ओवरलैप के अन्त तक स्लेश करें। किनारों को ट्रिम करें और किनारों पर सिलाई के दवाब को लेयर करें।

३- वेस्ट बैन्ड को उल्ट लें और किनारे की सिलाई को रोल करते हुए प्रेस करें। सारी लेयर को लेते हुए टैक करें। सिलाई के दवाब को छोड़ दें।

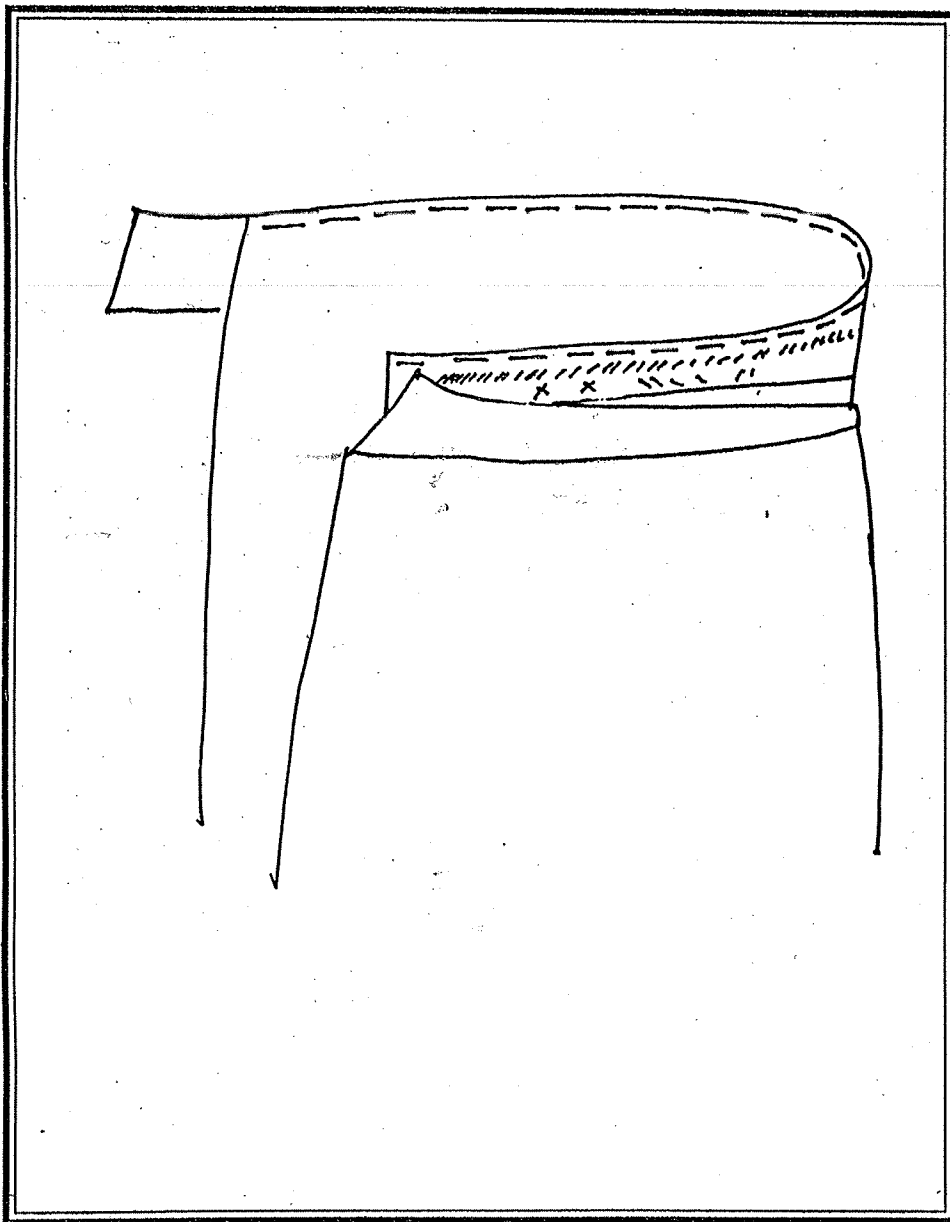
४- अब वेस्ट बैन्ड को वस्त्र के किनारे पर रखें। बैन्ड का वह हिस्सा जिसमें इन्टरफेसिंग लगी है वह वस्त्र के सीधी तरफ होनी चाहिए जिससे ओवरलैप वस्त्र के पीछे की तरफ बाहर को निकल जाये। एक तरफ के सिलाई के दवाब को वस्त्र पर कच्चा करें। मशीन करें। ट्रिम तथा सिलाई के दवाब को लेयर करें।

५- वेस्ट बैन्ड को ऊपर की तरफ प्रेस करें सिलाई के दवाब को खुली तरफ करके

कच्चा करके मशीन की सिलाई पर हेम करें। इसके लिए खड़ी हेमिंग का प्रयोग करें।

टॉप स्टिच किया हुआ वेस्ट बैंड जिसमें बटन व बटन होल हो:- यह एक मजबूत प्रकार की फिनिश है जो खेलकूद व बच्चों के कपड़ों के लिए उपयुक्त होती है। ओवरलैप वस्त्र के आगे की तरफ से आता है। इसे नोकीला बनाया जाता है और इसमें एक साधारण या बाउन्ड बटन होल बनाया जाता है। सादे वेस्ट बैंड की तरह बैंड को काटें परन्तु इसमें ओवरलैप वाले किनारे को नोकीला कर दें। वेस्ट बैंड को निम्न प्रकार से बनायें व सिलें।

१- इन्टरफेसिंग को वेस्टबैंड की उल्टी तरफ कच्चा करें और चारों तरफ हेरिंगबोन की एक सिलाई कर दें। जरूरत अनुसार नोकीली तरफ एक बाउन्ड बटन होल बनायें।



२- वेस्ट बैन्ड को लम्बाई में मोड़े, सीधी तरफ को अन्दर रखते हुए। इन्टरफेसिंग की गहराई तक किनारों को कच्चा करके मशीन करें। दोनों किनारों को ट्रिम करके लेयर करें। ओवरलैप के किनारों तक स्लेश करें।

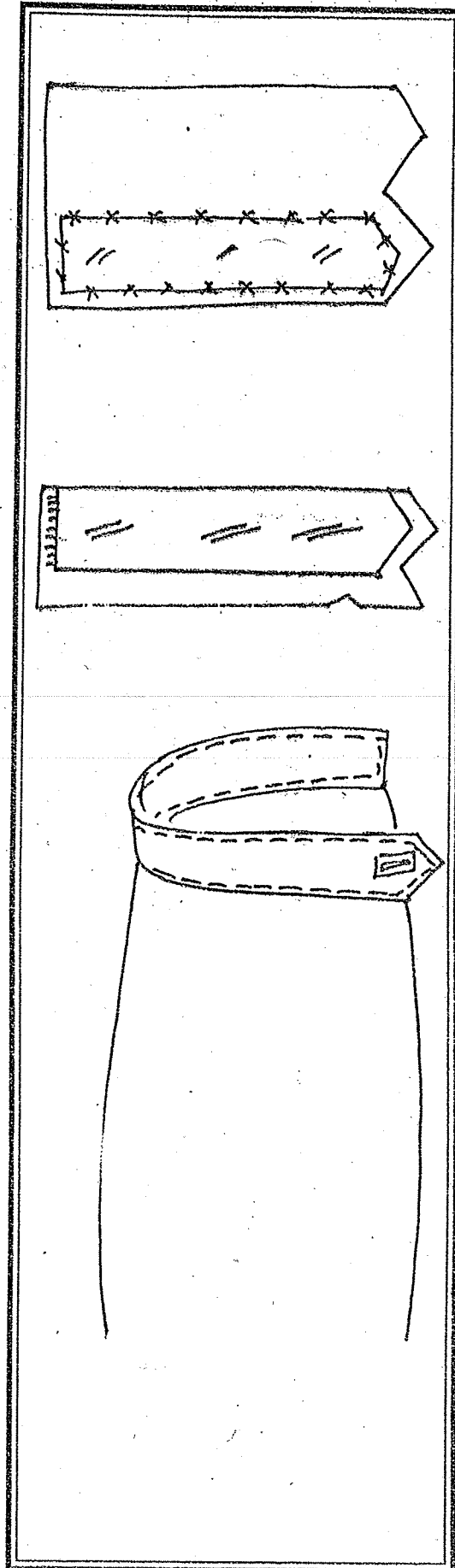
३- वेस्ट बैन्ड को उलट लें, सिलाई को रोल करते हुए प्रेस करें और सारी लेयर को लेते हुए कच्चा करें। सिलाई के दबाव को खुला छोड़ दें।

४- वेस्ट बैन्ड को वस्त्र के किनारे उल्टी तरफ से रखें। बैन्ड की एक तरफ की सिलाई का दबाव वस्त्र पर सिल दें। सिलाई के दबाव को ट्रिम और लेयर करें।

५- वेस्ट बैन्ड को ऊपर की तरफ प्रेस करें। सिलाई के दबाव को खुली तरफ से अन्दर करें। वस्त्र को सीधी तरफ से कच्चा करें, सिलाई के ऊपर से प्रेस करें, वेस्ट बैन्ड को चारों तरफ से मशीन करें।

६- बाउन्ड बटन होल को अगर बनाया है तो इस समय उसे पूरा करें या फिर साधारण बटन होल बनायें। वेस्ट बैन्ड के दूसरे किनारे पर एक बटन लगायें।

बेल्ट, बकल तथा आइलेट:-

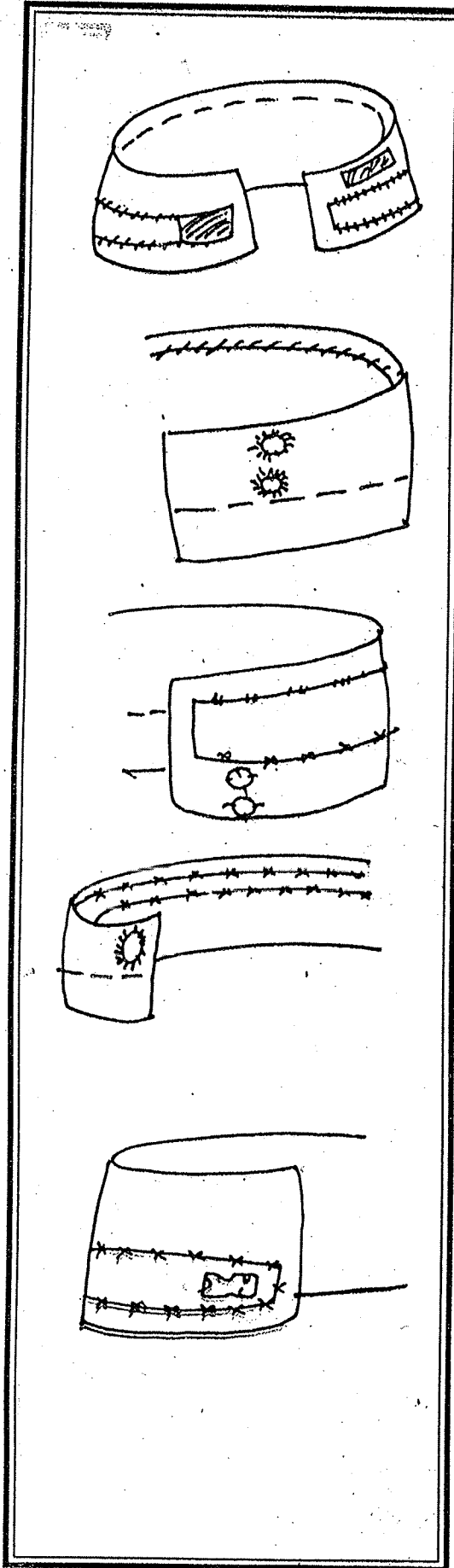


कपड़ों पर बेल्ट का प्रयोग कई कारणों से होता है। फैशन, सजावटी तथा प्रयोगत्मक बेल्ट का सही चयन महत्वपूर्ण है। वस्त्र की जरूरत व स्टाइल व पहनने वाले की फिगर पर यह अच्छी दिखनी चाहिए। उदाहरण के लिए एक लम्बी महिला को थोड़ी, विपरीत रंग की बेल्ट नहीं पहननी चाहिए। बड़ी या नाटी महिलाओं के लिए पतली व मैचिंग बेल्ट ज्यादा अच्छी लगेगी।

चमड़े या धातु की बनी बेल्ट अधिकतर दुकानों में मिलती है जिनमें से चयन किया जा सकता है। परन्तु एक ड्रेसमेकर कपड़े की अच्छी व सुन्दर बेल्ट तैयार कर सकता है। इन बेल्टों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। कड़ी (आमतौर पर बकल के साथ) बेल्ट तथा मुलायम बाँधने वाली बेल्ट।

**कड़ी बेल्ट:-** इनको अधिकांशतः कपड़ों में लम्बाई तथा सीधे ग्रेन पर काटा जाता है। अगर बेल्ट में एक विशेष आकार देना हो तो व्यवसायिक पैटर्न के साथ उसके नाप, आकार तथा बनाने की विधि के निर्देश दिये हुए होते हैं।

बेल्ट को सीधा इसलिये काटना चाहिए जिससे बेल्ट की लम्बाई में ताने का धागा रहे। बेल्ट को इतना

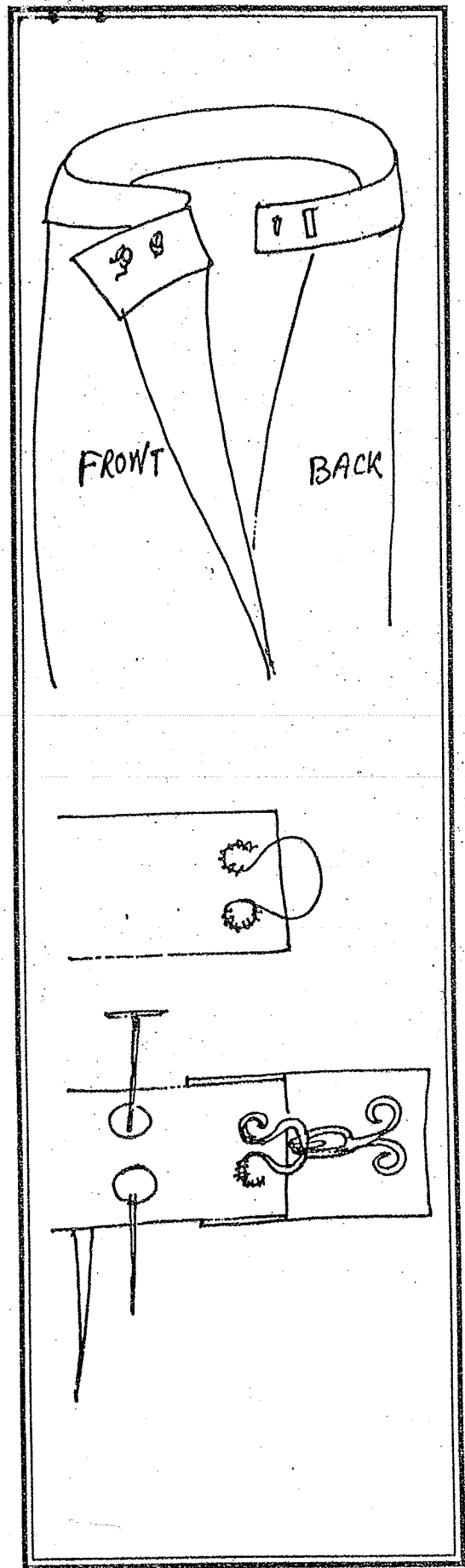




लम्बा होना चाहिए कि वह असानी से कमर पर फिट बैठे और बाँधने के लिए ओवरलेप हो। अगर विशेष संजावट या प्रिन्ट की वजह से बेल्ट को आड़े कपड़े पर काटना पड़ जाये, या फिर अगर आड़े और सीधे कपड़े की बनावट में कोई फर्क नहीं है तो बेल्ट को आड़े कपड़े पर काटा जा सकता है।

अगर बेल्ट में जोड़ लगाने की आवश्यकता हो तो उन्हें इस प्रकार रखें कि वह दिखे नहीं। उदाहरण अन्दर की तरफ पीछे की तरफ बिल्कुल बीच में नहीं होना चाहिए, जब तक बिल्कुल अनिवार्य न हो। सभी जोड़ों को कपड़े की ग्रेन से मैच करना चाहिए और सावधानी से प्रेस करना चाहिए।

बेल्ट को कई तरह से बनाया और कड़ा किया जा सकता है। इसका चयन कपड़े, वस्त्र, बेल्ट की चौड़ाई तथा पहनने वाले की पसन्द पर निर्भर करेगा। बेल्ट के लिए विशेष स्टिफनिंग बाजार में मीटर (गज) के आधार पर विभिन्न चौड़ाई में बिकती है। परन्तु इनका प्रयोग केवल सीधी बेल्ट के लिए किया जा सकता है। मोटे कपड़े का प्रयोग बेल्ट के बीच में किया जा सकता है जिससे बेल्ट मुलायम रहे। विशेष आकार की बेल्ट के लिए बकरम के कपड़े का प्रयोग किया जाना



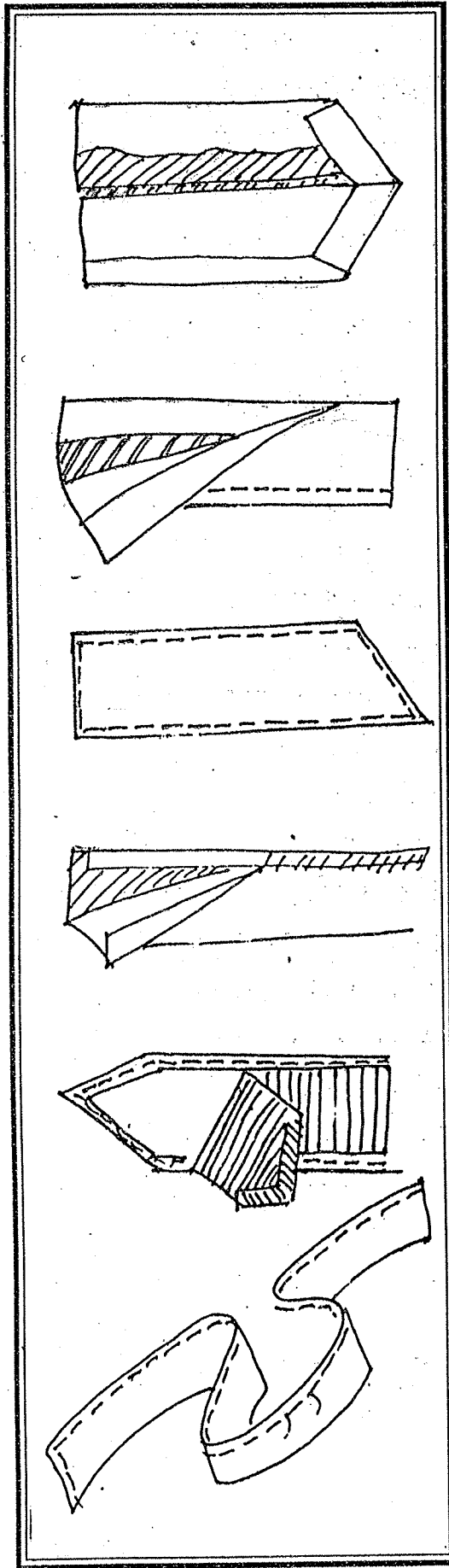
चाहिए।

नीचे दिये गये पहले और दूसरे बेल्ट बनाने के तरीके में आप बनी हुई बेल्ट की बकरम या बकरम के कपड़े का प्रयोग कर सकते हैं। बेल्ट की इन्टरफेसिंग के लिए बकरम का प्रयोग बेहतर होता है।

विधि १:- इन्टरफेसिंग की दुगुनी चौड़ाई + सिलाई के लिए दोनों तरफ दवाब लेकर कपड़े को काटें। लम्बाई में मोड़ कर प्रेस करें। बकरम की इन्टरफेसिंग को मोड़ की तरफ रखते हुए प्रेस करें फिर कच्चा हाथ या मशीन के बड़े टॉके करके करें। इसमें बकरम तथा कपड़े के एक लेयर को ही लें। चारों तरफ के दवाब को लेते हुए मोड़ें। अब डी. किनारे को बी. किनारे पर मोड़ें, जैसे दिखाया गया है। कच्चा करके प्रेस करें। बेल्ट की सीधी तरफ से सारी लेयर को लेते हुए मशीन करें। प्रेस करें।

अगर टॉप स्टिच की आवश्यकता न हो तो डी. के मोड़ को थोड़ा सा बढ़ाते हुए बी. पर हेम करें।

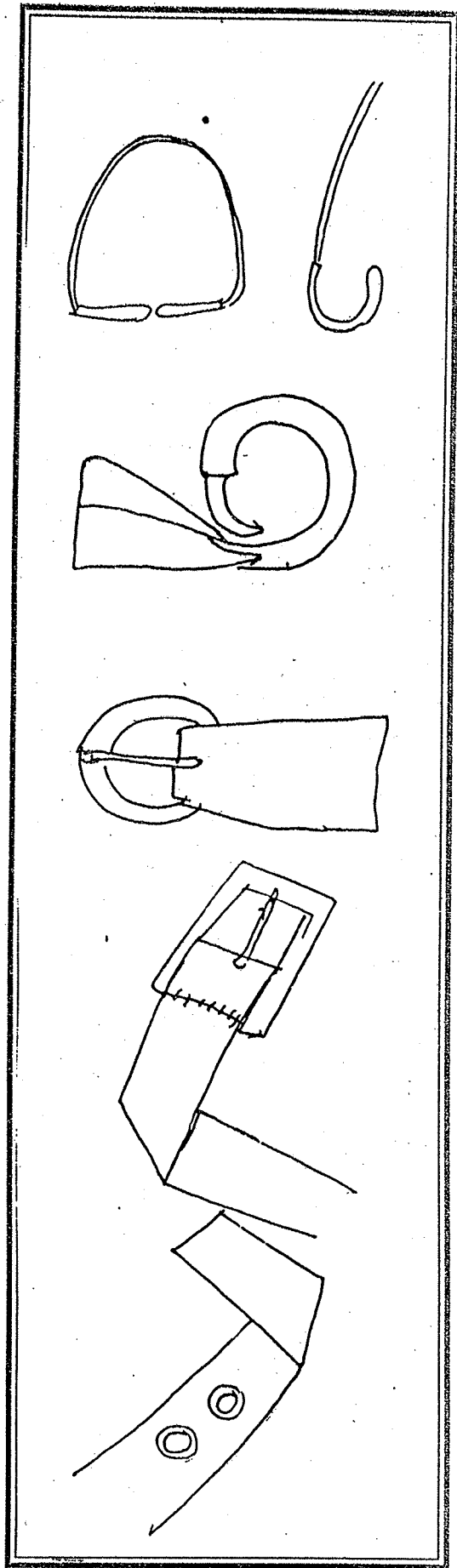
विधि २:- यह मोटे कपड़ों के लिए अच्छा तरीका है। इसमें रिबन या लाइनिंग का प्रयोग किया जा सकता है, बेल्ट की अन्दर की लेयर के लिए।



कपड़े को इन्टरफेसिंग की चौड़ाई + सिलाई के लिए दवाब को लेकर काटें। रिबन को काटें। यह +ए. इन्टरफेसिंग से थोड़ा पतला होना चाहिए। इसकी लम्बाई बेल्ट की लम्बाई + दोनों किनारों पर मोड़ को लेकर होगी। अगर लाइनिंग का प्रयोग किया जा रहा है तो इसे इन्टरफेसिंग से थोड़ा पतला + सिलाई का दवाब लेकर काटें।

इन्टरफेसिंग को कपड़े की उल्टी तरफ कच्चा करें। कपड़े में लिये हुए दवाब को चारों तरफ से इन्टरफेसिंग पर मोड़ें और कच्चा करें। मशीन से टॉप स्टिच करें। लाइनिंग के किनारों को मोड़ें अगर इसका प्रयोग किया गया हो तो लाइनिंग बेल्ट से थोड़ी पतली होगी, अगर रिबन या लाइनिंग का प्रयोग किया जा रहा है तो अन्दर की तरफ मोड़ कर फिनिश करें। रिबन या लाइनिंग को मोड़ पर सिलाई की लाइन के अन्दर हेम करें। रेखाचित्र में दिखाया गया है कि कपड़े को इन्टरफेसिंग पर टॉप स्टिच किया है और रिबन को कुछ दूर तक हेम।

**विधि ३:-** इस तरीके में बकरम या अन्य इन्टरफेसिंग को बेल्ट की सिलाई से हेरिंगबोन स्टिच से जोड़ा जाता है। बेल्ट के कपड़े को जैसे विधि १ में बताया गया है दोहरा करके काटें या



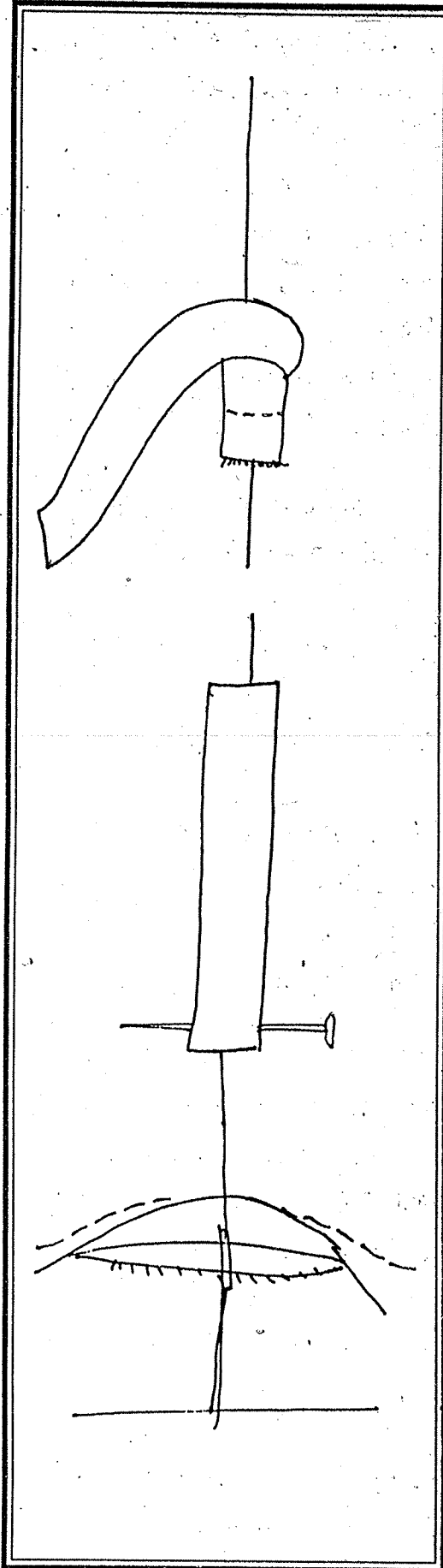
एकहरा जैसे विधि-२ में। विधि-२ का तरीका ज्यादा अच्छा रहता है जब टॉप स्टिच नहीं करना होता है क्योंकि हेरिंगबोन स्टिच बेल्ट और इन्टरफेसिंग के किनारे को एक साथ जोड़ती है।

एक और तरीके में व्यवसायिक बेल्टिंग किट का प्रयोग किया जा सकता है जो बाजार में उपलब्ध रहती है। इसमें बेल्ट की इन्टरफेसिंग, बकल, धातु की आइलिट तथा लाइनिंग उपलब्ध होती है। साथ ही बेल्ट के निर्माण करने के निर्देश होते हैं।

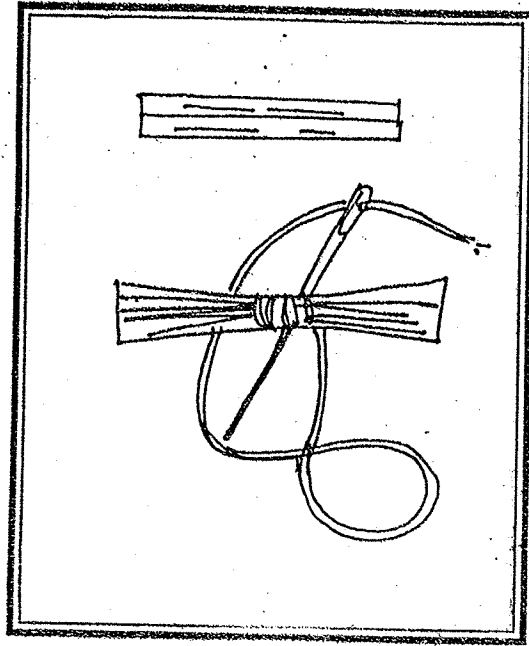
**टाई बेल्ट:-** यह पतली या चौड़ी हो सकती है। इन्हें सीधे या उरेबी कपड़े पर काटा जा सकता है। अगर इसमें इन्टरफेसिंग लगानी है तो वह मुलायम होगी, और ऊपर के कपड़े से मिलती जुलती। इसमें भी सिलाई का दवाब रखा जायेगा। अतिरिक्त दवाब बाद में काट दिया जाता है।

कपड़े को बेल्ट की चौड़ाई का दुगना + सिलाई का दवाब लेकर काटें। लम्बाई कमर तथा बाँधने के लिए पर्याप्त लम्बाई लेकर काटें। एक टेप लेकर कमर पर नाप लें कि बी. या गाँठ बाँधने के लिए कितनी लम्बाई की आवश्यकता होगी।

कपड़े को लम्बाई में मोड़े,



दोनों सीधी तरफ को अन्दर रखते हुए कच्चा करके मशीन करें, पलटने के लिए पीछे की तरफ बीच में जगह छोड़े। ट्रिम करके लेयर करें तथा पलटें। अगर बेल्ट पतली है तो एक बुनाई की सिलाई का प्रयोग करके कपड़े को उलटे किनारों को जगह पर लाने के लिए रोल तथा कच्चा करके प्रेस करें।



राऊलो को भी टाई बेल्ट की तरह प्रयोग कर सकते हैं। इसको असानी से सफलतापूर्वक बिना बुने जर्सी कपड़े पर बनाया जा सकता है जैसे क्रिम्पलीन। एक राऊलो ट्यूब बनाये जैसे पहले बताया गया है। किनारो पर विशेष फिनिश दें। एक साधारण गाँठ दोनों किनारो पर बाँधकर सजावटी फिनिश दी जा सकती है।

बाजार से रेडीमेड बकल खरीदे जा सकते हैं। बकल के धातु के बने साचे भी मिलते हैं जिनपर कपड़ा चढ़ाया जा सकता है। यह दो भागों में बनाये जा सकते हैं (जो एक दूसरे पर चिपक जाते हैं और कपड़े को जगह पर रखते हैं) या फिर एक ही धातु के टुकड़े से जिसे पूरी तरह कपड़े से ढकना होगा। जैसे दिखाया गया है।

ऐसे बकल को ढकने के लिए एक ऊरेबी पट्टी २२ मिलिमीटर (२/६ इंच) चौड़ी काटें। इसके किनारों को अन्दर की तरफ (जैसे दिखाया है) मोड़े और लम्बाई में फिर फोल्ड करें। फोल्डेड किनारे को प्रेस करें और सारी तह को लेते हुए मशीन करें। अब ऊरेबी पट्टी को बकल के अन्दर डालें, पूरा बना बकल जिसका काटा बेल्ट के किनारे लगा है रेखांकन में दिखाया है। बकल को जोड़ने के लिए बेल्ट के एक किनारे को बेल्ट के बीच के खंडे से निकालें। इस किनारे की फिनिशिंग करने के लिए आमतौर पर अन्दर की लेयर को ट्रिम करके ऊपर की लेयर को मोड़कर वापस बेल्ट पर हेम कर दिया जाता है।

**आईलेट:-** अगर बकल में एक प्रॉग है तो जरूरी है कि बेल्ट में आईलेट हो। बेल्ट को कमर पर फिट करके बाँधने की लम्बाई पर निशान लगायें। इस निशान के दोनों तरफ तीन या चार आईलेट के लिए निशान लगायें। यह कुछ सजावट के लिए और कुछ बेल्ट

को कसा या ढीला करने के लिए बनाया जाता है। इससे बेल्ट को असानी से निकाला भी जा सकता है।

आईलेट को कढ़ाई के तरीके से भी बनाया जा सकता है, जिसका कढ़ाई की इकाई में वर्णन किया गया है या फिर धातु से भी। यह धातु की आईलेट बाजार से खरीदकर, एक उपकरण की सहायता से कपड़े में ठोकी जा सकती है।

अगर बकल बिना प्रॉग के है और स्लिप-इन प्रकार का है तो आईलेट की आवश्यकता नहीं होगी और बेल्ट के किनारों को असानी से स्नेप फास्टर के जरिये बाँधा जा सकता है।

#### अभ्यास-

१- अपने वस्त्रों को देखें और समझें की कमर पर बेल्ट की फिनिशिंग किस प्रकार की गई है?

#### ८.४ सारांश:-

कमर पेटी की फिनिश मजबूती से होनी चाहिए क्योंकि उसे शरीर पर कसके बाँधा जाता है, और इसी पर स्कर्ट या पैन्ट का वजन टिका होता है। इनको इसीलिए जहाँ तक हो सके कपड़े की लम्बाई में काटा जाता है और इसमें एक इन्टरफेसिंग जरूर लगती है। कमर पेटी शरीर पर कसके टिकाई जाती है इसलिए उसमें सफाई भी होनी चाहिए। इस जगह कपड़े के कई हिस्से आकर मिलते हैं, इसलिए सावधानी से लेयरिंग तथा छटाई की आवश्यकता होती है जिससे अतिरिक्त कपड़े का बोझ न हो और पट्टी कहीं से कमजोर भी न पड़े। खासतौर पर इस जगह क्योंकि यहाँ पर तनाव व खिचाव पहनते वक्त काफी पड़ता है।

कमर पर तीन प्रकार से फिनिशिंग की जा सकती है। इसका चयन कपड़े की किस्म, फैशन तथा वस्त्र के प्रयोग पर निर्भर करता है।

वेस्टबैन्ड कमर पर फिनिशिंग करने का सबसे मजबूत और आम तरीका है। बैन्ड वस्त्र के किनारों को अन्दर करके कमर को अच्छी तरह पकड़ लेता है। सारे वेस्ट बैन्ड में इन्टरफेसिंग लगानी चाहिए। बुनि हुई या बोन्डेड इन्टरफेसिंग, बेल्टिंग फिनिश की तुलना में ज्यादा आरामदायक होती है। बेल्टिंग फिनिश एक सख्त तथा बिना खिचाव की फिनिश देता है।

बेल्ट को कई तरह से बनाया और कड़ा किया जा सकता है। इसका चयन कपड़े, वस्त्र, बेल्ट की चौड़ाई तथा पहनने वाले की पसन्द पर निर्भर करेगा। बेल्ट के लिए विशेष स्टिफनिंग बाजार में मीटर (गज) के आधार पर विभिन्न चौड़ाई में बिकती है। परन्तु इनका प्रयोग केवल सीधी बेल्ट के लिए किया जा सकता है। मोटे कपड़े का प्रयोग बेल्ट के बीच में किया जा सकता है जिससे बेल्ट मुलायम रहे। विशेष आकार की बेल्ट के लिए बकरम के कपड़े का प्रयोग किया जाना चाहिए।

टाई बेल्ट पतली या चौड़ी हो सकती है। इन्हें सीधे या उर्रेबी कपड़े पर काटा जा सकता है। अगर इसमें इन्टरफेसिंग लगानी है तो वह मुलायम होगी, और ऊपर के कपड़े से मिलती जुलती। इसमें भी सिलाई का दवाब रखा जायेगा। अतिरिक्त दवाब बाद में काट दिया जाता है।

#### ८.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ कमर पर फिनिश कितने प्रकार से की जाती है?

प्रश्न-२ पीटरशैम क्या है?

प्रश्न-३ वेस्ट बैंड क्या है?

प्रश्न-४ बेल्ट पर टिपणी लिखें?

प्रश्न-५ बकल व आईलेट पर टिपणी लिखें?

#### ८.६ स्वाध्ययन हेतु

१- गुड हाउस कीपिंग, स्टेप बाई स्टेप इनसाइक्लोपीडिया ऑफ नीडिल क्राफ्ट बाई जूडी ब्रिटेन, प्रकाशन ईबुरी प्रेस।



उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

डी०एफ०डी०-05

फैशन डिजाइनिंग

कर्ट्यूम डिजाइन एवं फैब्रीकेशन

ब्लॉक

७

महिलाओं के लिए डिजाइन

यूनिट-६

फ्रॉक तथा जम्पसूट

यूनिट-१०

स्कर्ट टॉप तथा नाइट सूट

यूनिट-११

लोवर तथा शर्ट

यूनिट-१२

पेटीकोट, ब्लूमर तथा पॉयजामा



## ब्लॉक-३

### पाठ्यक्रम प्रतिरूप:-

यह ब्लॉक विद्यार्थियों को बेसिक गारमेन्ट कैसे बनाये जाते हैं के बारे में बताता है। यह एक निर्धारित डिजाइन के अनुसार ड्राफ्ट बनाने, कपड़े को काटने तथा सिलने का क्रमवार निर्देश भी देता है।

### महिलाओं के लिए डिजाइन

#### यूनिट-६

#### फ्रॉक तथा जम्पसूट:-

इस यूनिट में हम गारमेन्ट के ड्राफ्ट बनाना, कपड़े को काटना तथा उसकी सिलाई कैसे की जाती यह सब सीखेंगे। हमें यह भी बताया जायेगा कि जम्पसूट और फ्रॉक किस प्रकार फिनिश किया जाता है।

#### यूनिट-१०

#### स्कर्ट टॉप और नाइटसूट:-

इस यूनिट में गारमेन्ट के बनाने तथा उसकी ड्राफ्टिंग, कटिंग तथा स्टिचिंग के बारे में बताया गया है। स्कर्ट टॉप तथा नाइट सूट के बारे में भी बताया गया है।

#### यूनिट-११

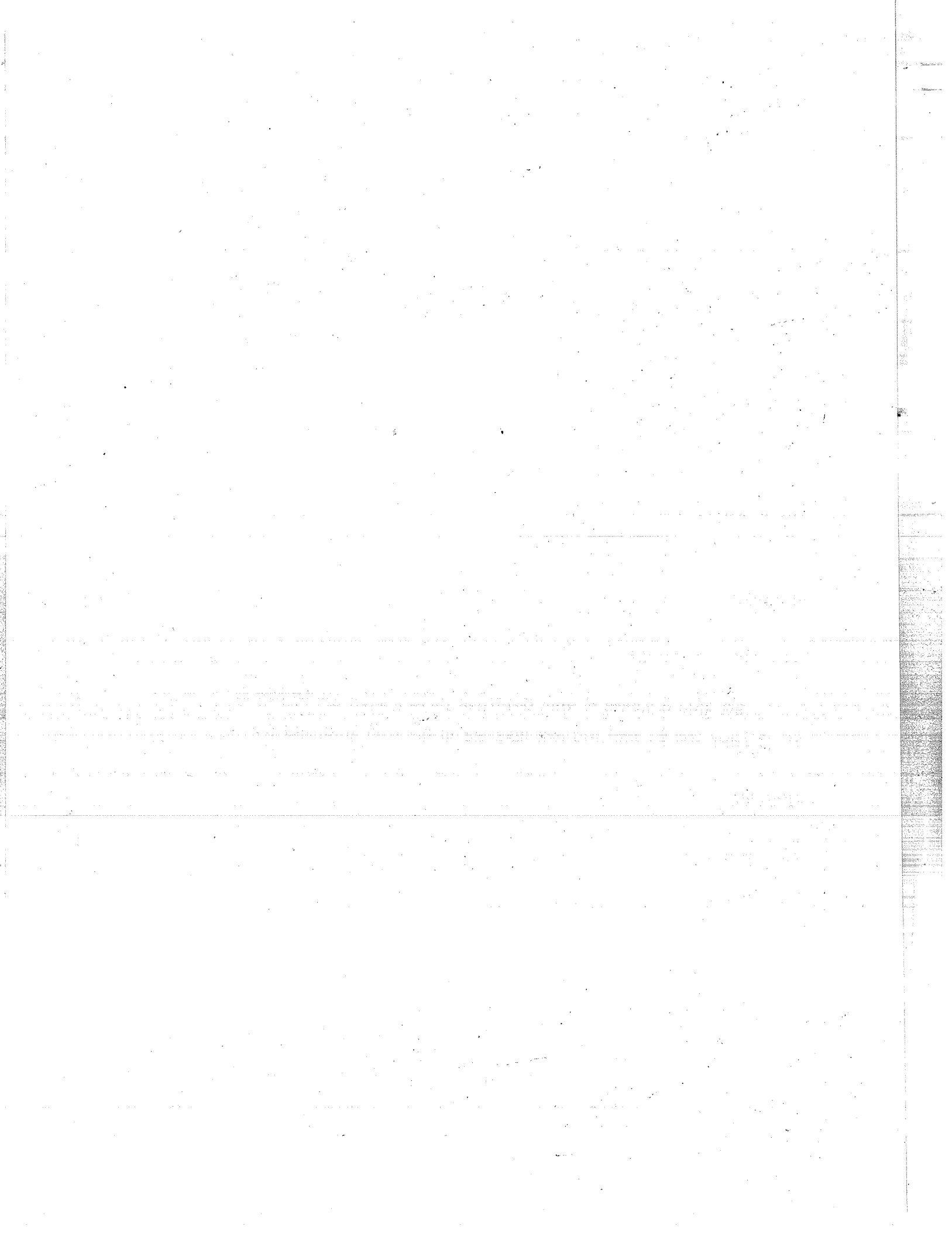
#### लोवर तथा स्कर्ट:-

इस यूनिट में गारमेन्ट्स के बनाने तथा उनकी कैसे ड्राफ्टिंग, कटिंग, स्टिचिंग और फिनिशिंग किया जाये के बारे में बताया गया है।

#### यूनिट-१२

#### पेटीकोट, ब्लूजर और पॉयजामा:-

इस यूनिट में गारमेन्ट को बनाने, ड्राफ्ट करने, कटिंग करने तथा फिनिशिंग करने के बारे में बताया गया है।



संरचना

- ६.१ यूनिट प्रस्तावना
- ६.२ उद्देश्य
- ६.३ फ्रॉक और जम्पसूट
- ६.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- ६.५ स्वाध्ययन हेतु
- ६.१ यूनिट प्रस्तावना:-

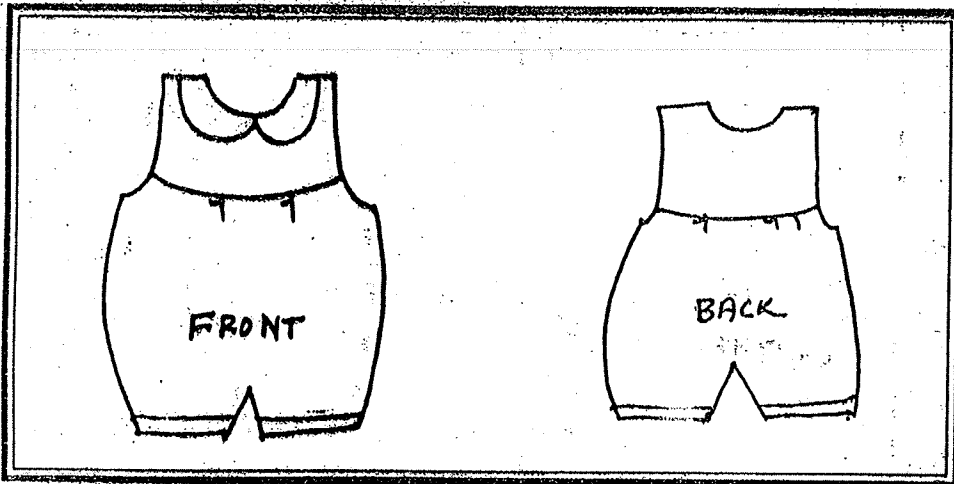
इस यूनिट में फ्रॉक और जम्पसूट की ड्रापिंग, कटिंग स्टिचिंग एवं फिनिशिंग के बारे में बताया गया है।

६.२ उद्देश्य:-

डिजाइनर के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि उसका डिजाइन बनाने के बाद कैसा लगेगा। इस यूनिट में बच्चों के बेसिक गारमेन्ट के बारे में पढ़ेंगे।

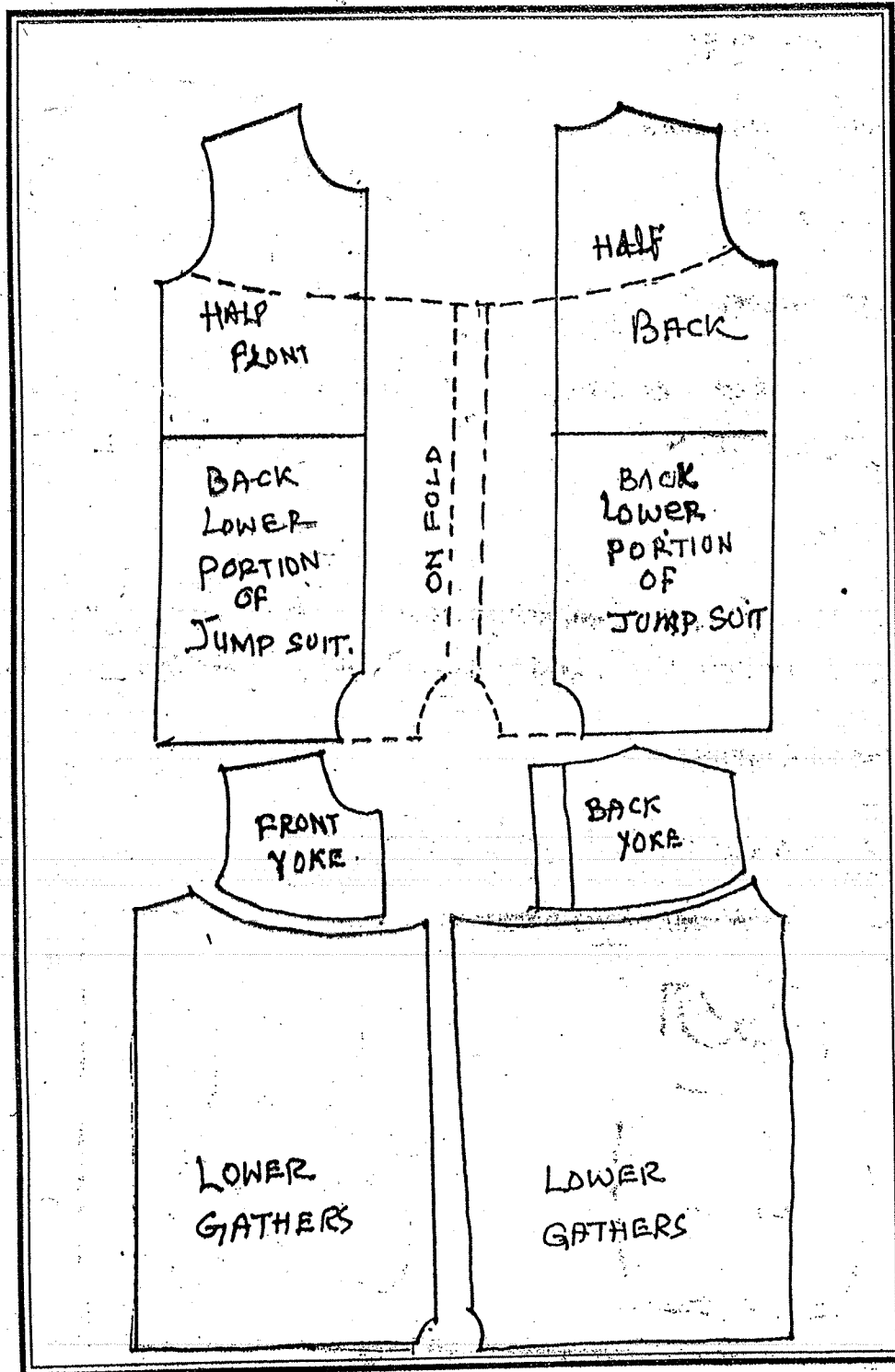
६.३ फ्रॉक एवं जम्पसूट:-

अब हम ३ साल के बच्चे का जम्पसूट डिजाइन करेंगे।

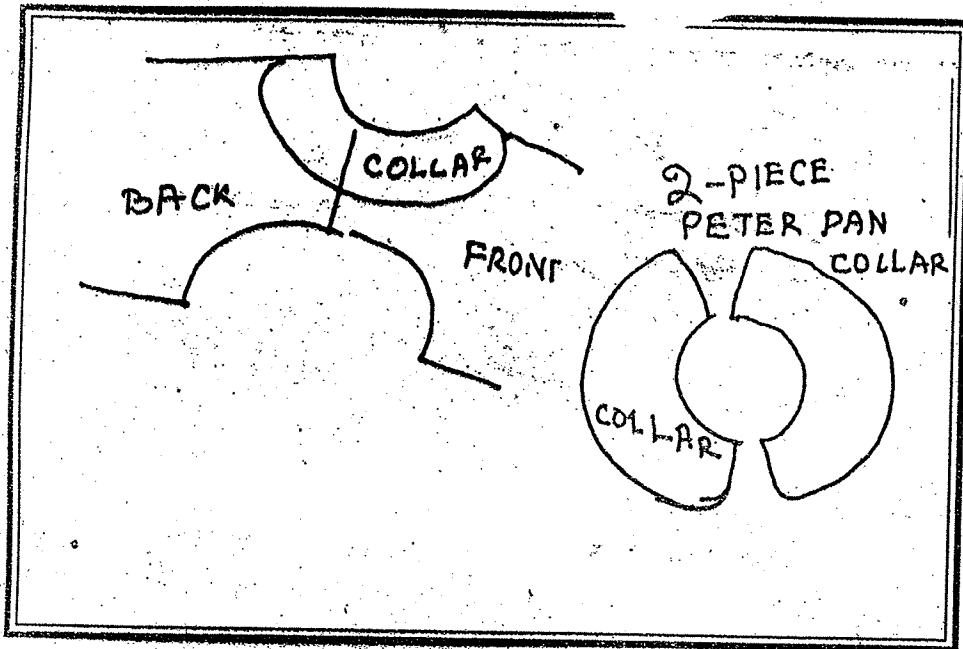


एक ३ साल के बच्चे का बेसिक बाडी ब्लॉक लें और इसको बेसिक जम्पसूट ड्राफ्ट में बदल दें। अब सामने और पीछे दोनों ओर के लिए टॉप योक काट लें।

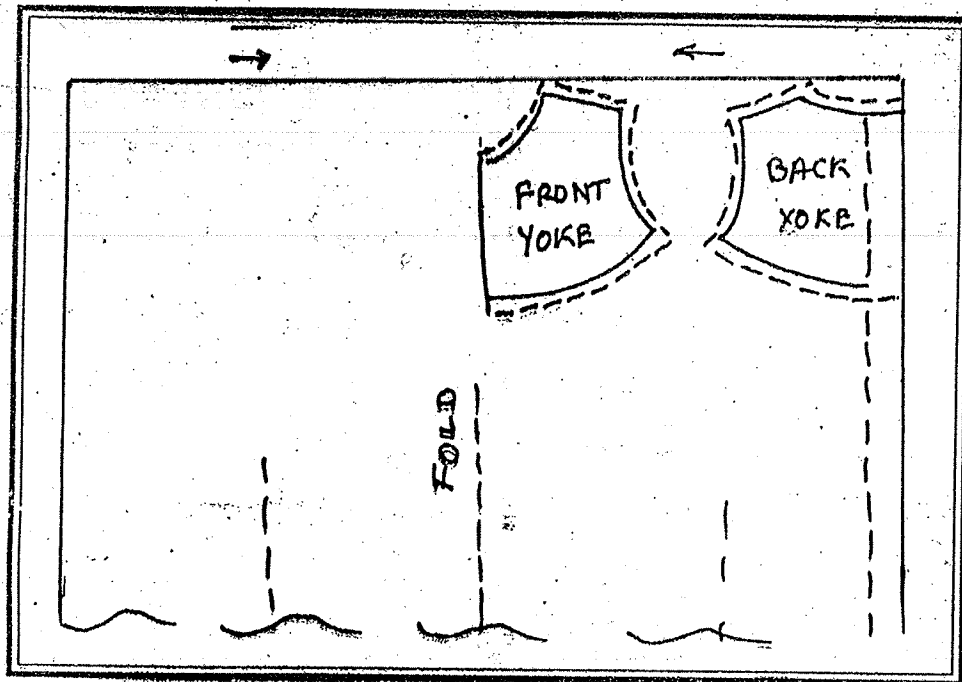
अब जम्पसूट के नीचे के हिस्से में गैदर की मारजिन आगे और पीछे दोनों रखें। बैक ओपनिंग के लिये एक इंच अतिरिक्त मारजिन रखें।



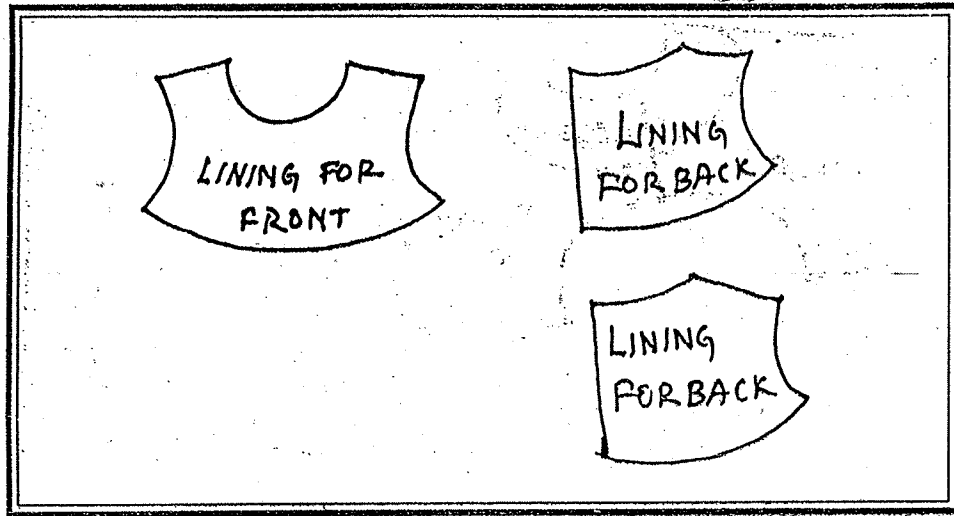
अब बेसिक बॉडिस ब्लाक लेकर पीटरपैन कॉलर का ड्राफ्ट बनायें।



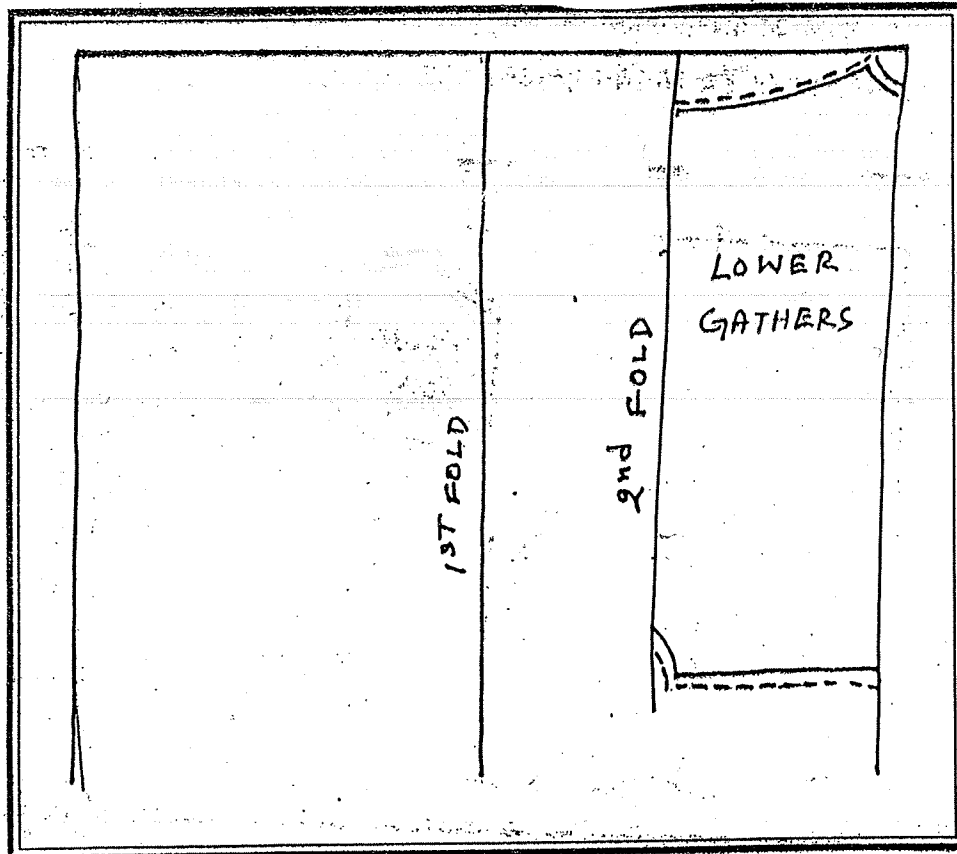
ब्राउन पेपर पर आपकी ड्राफ्टिंग पूरी हो गई। अब ३६ इंच चौड़े अर्ज का कपड़ा लें। दिये गये चित्र की तरह फोल्ड करके सामने और पीछे का योक का कपड़ा फैलायें। सामने का हिस्सा फोल्ड पर रखें, पीछे का सालवेज पर तथा सामने का योक फोल्ड पर। १ १/४ इंच स्टिचिंग एलाउन्स चारो ओर लें।



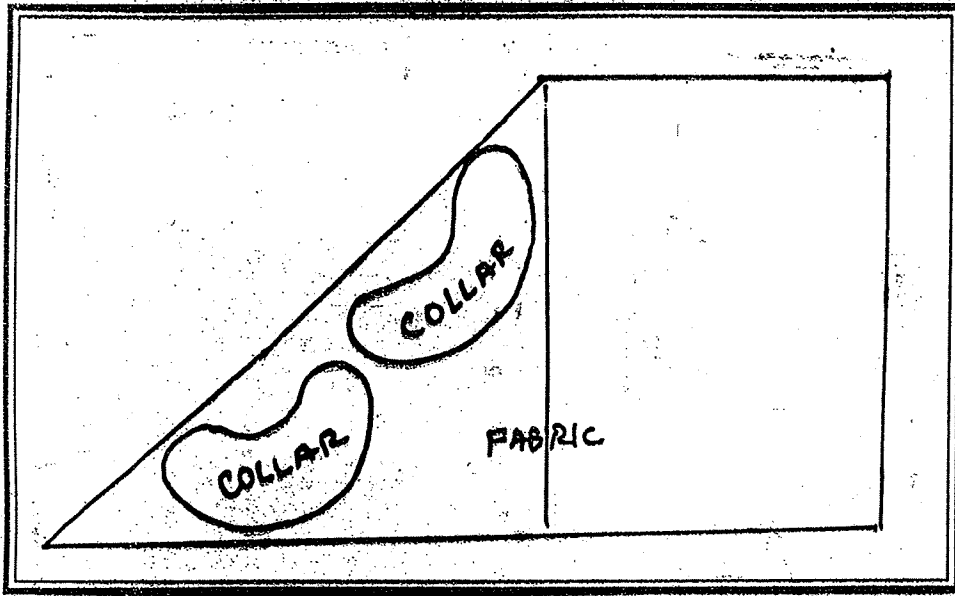
अब योक की लाइनिंग ठीक योक के बराबर काटे। यह लाइनिंग के कपड़े की या फिर उसी कपड़े की हो सकती है।



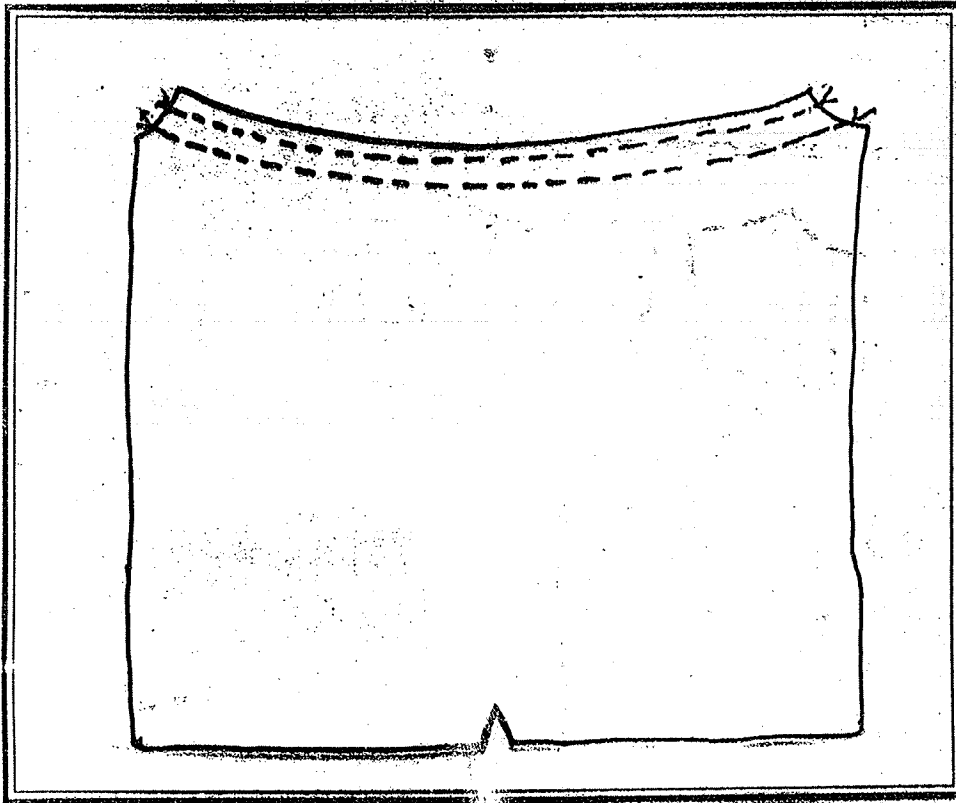
जैसा कि दिखाया गया है फैब्रिक को फोल्ड करें। ड्रेस ट्रेस करें तथा 9/8 इंच स्टिचिंग एलाउन्स लेकर कपड़ा काटें।



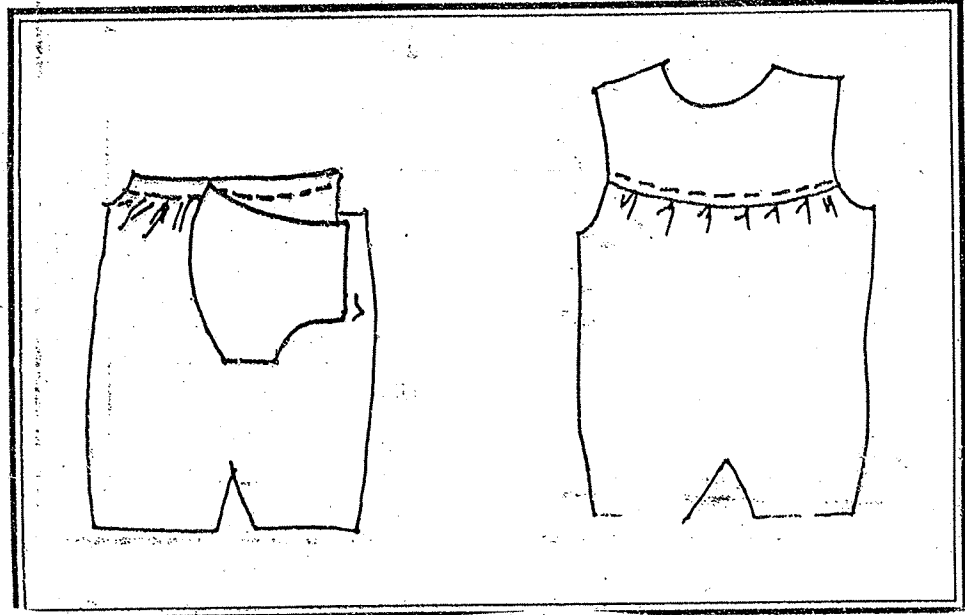
अब कालर का ड्राफ्ट रखें। कालर के चार पीस काटें।  $9/8$  इंच स्टिचिंग एलाउन्स चारों ओर लें।



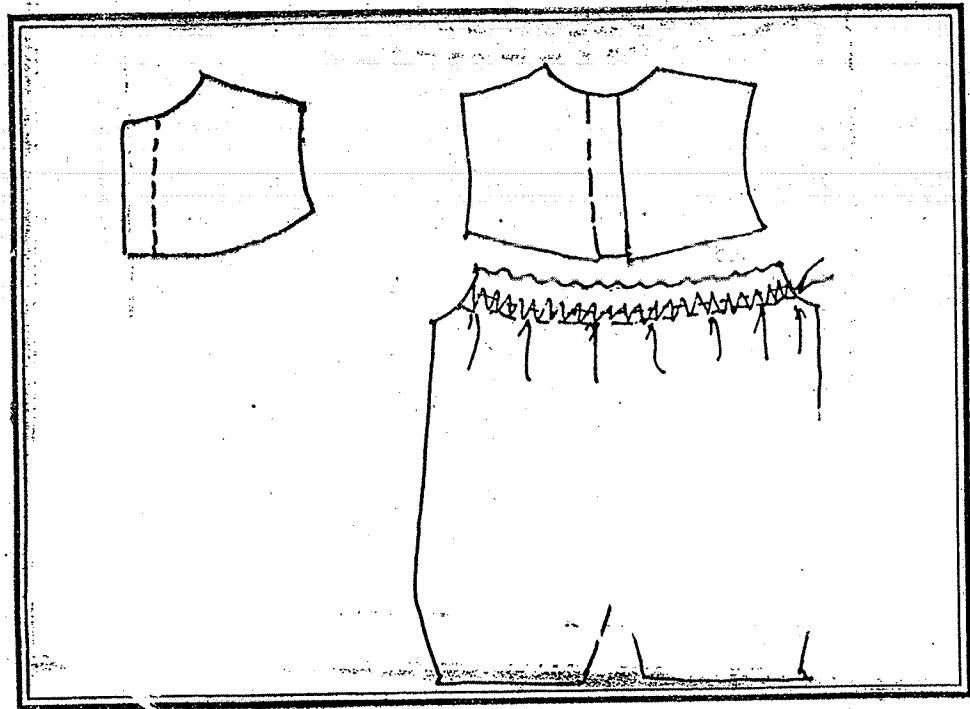
अब हम गारमेन्ट की स्टिचिंग शुरू करें। पहले जम्ससूट का नीचे का हिस्सा लें और इनमें गैदर डालें। भागे खींचें और योक के बराबर कर लें।



अब योक का हिस्सा लें, दोनो की सीधी साइड एक दूसरे के सामने रखें। नीचे के गैदर किया कपड़ा योक के बीच में रखें, जैसा कि दिखाया गया है। प्लेन सीम से समाप्त करें।

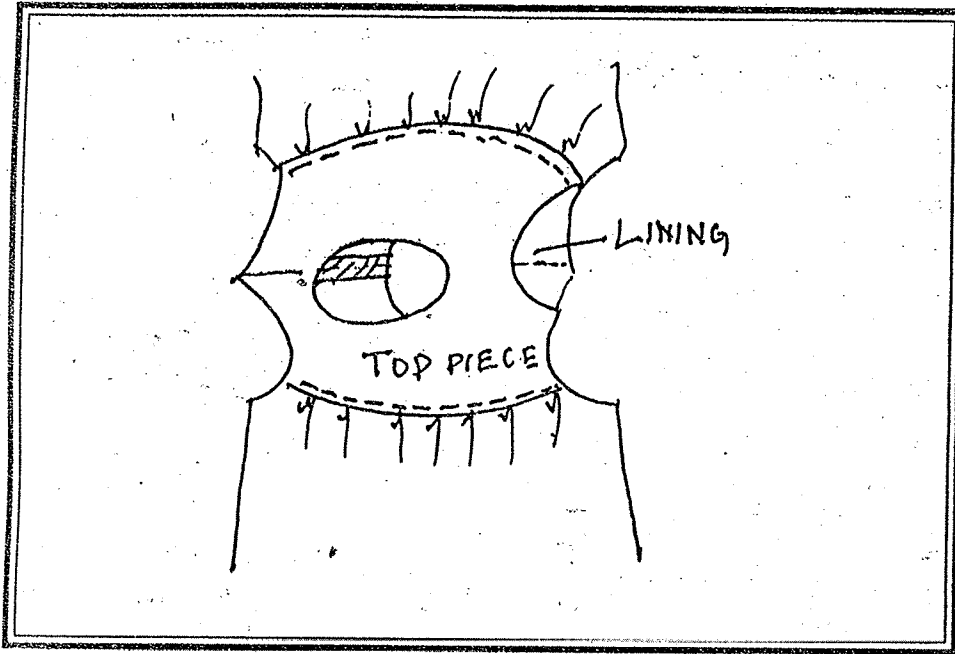


अब पीछे की योक लें और ओपनिंग को एक दूसरे के ऊपर रखें और ओपनिंग को टैक करें। लाइनिंग योक को भी इसी तरह करें। अब नीचे वा पीछे वाला हिस्सा दोनों योक के बीच में रखें। प्लेन सीम मशीन से करें जैसे कि सामने के हिस्से में किया गया है।

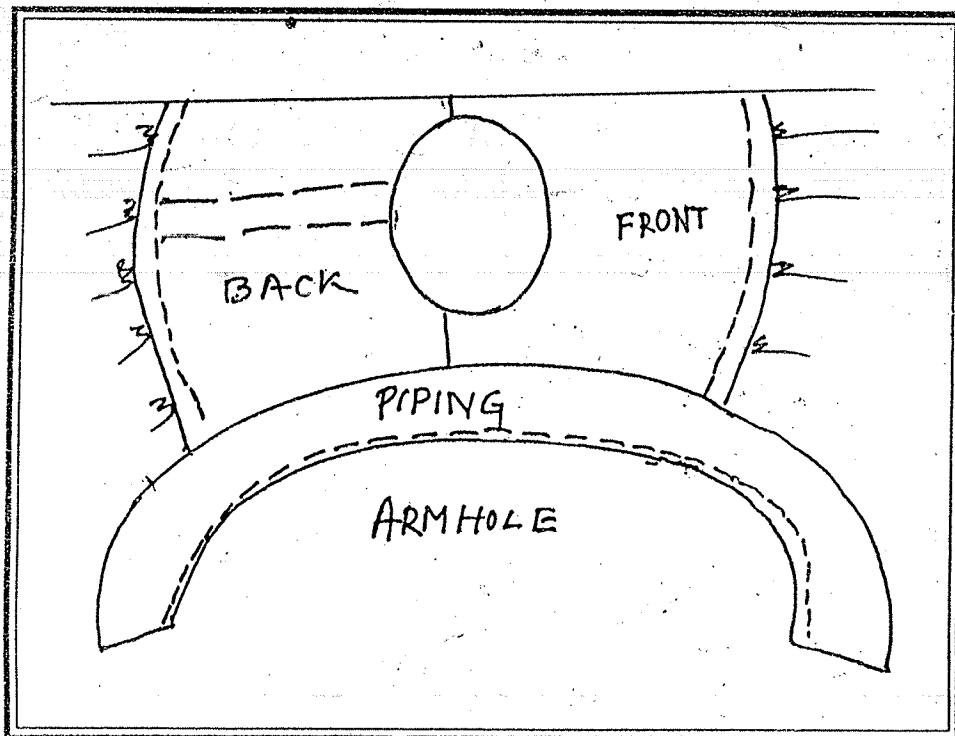




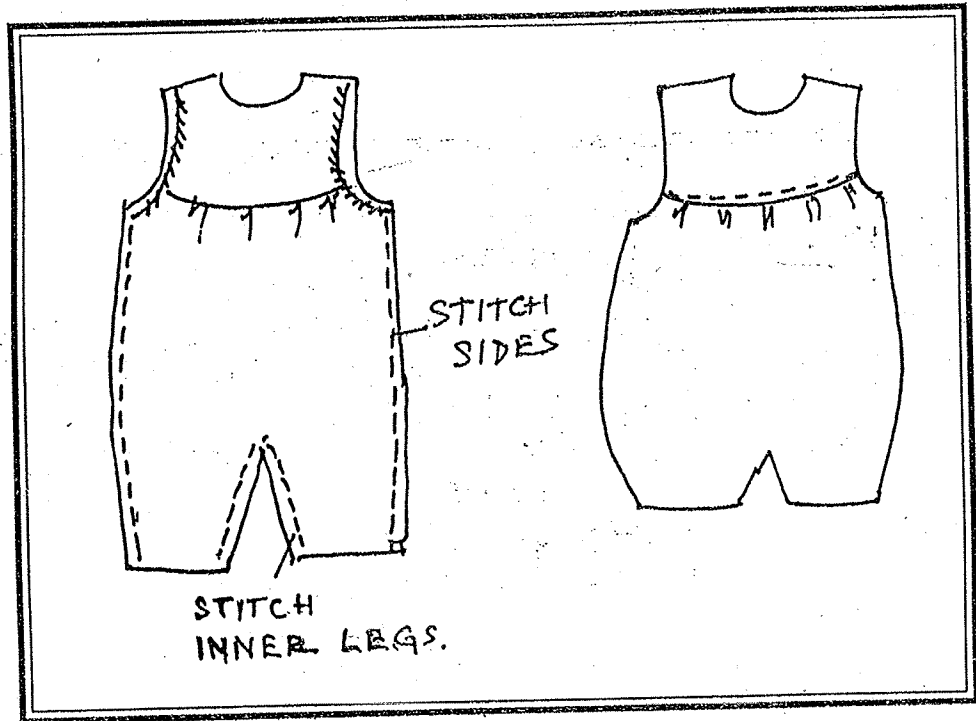
अब कन्धा जोड़ना है इसमें हमें याद रखना है कि लाइनिंग को लाइनिंग से जोड़ा जायेगा। ऊपर की फैब्रिक को ऊपर की फैब्रिक से जोड़ा जायेगा इससे कन्धे की स्टिचिंग लाइन दिखाई नहीं देगी।



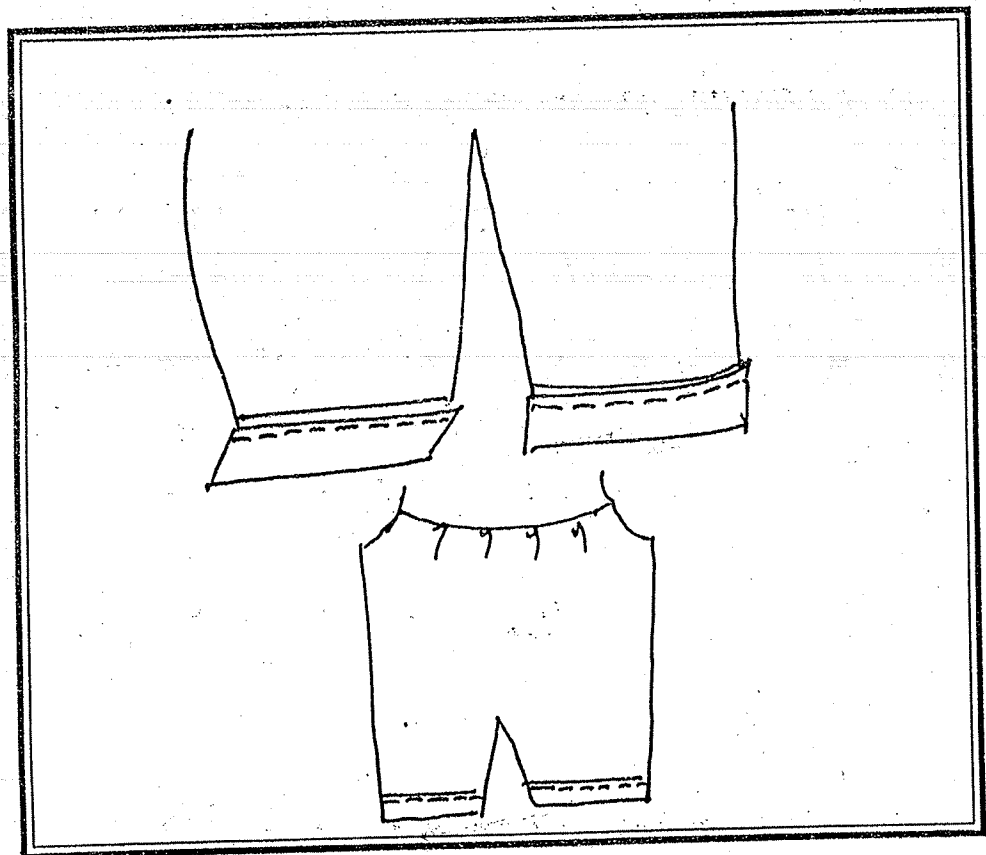
अब हमें आर्महोल फिनिश करना है, यह या तो फेसिंग से या पाइपिंग से होगा। फेसिंग और पाइपिंग लगाना के बारे में इसी ब्लॉक के यूनिट ६ में दिया गया है।



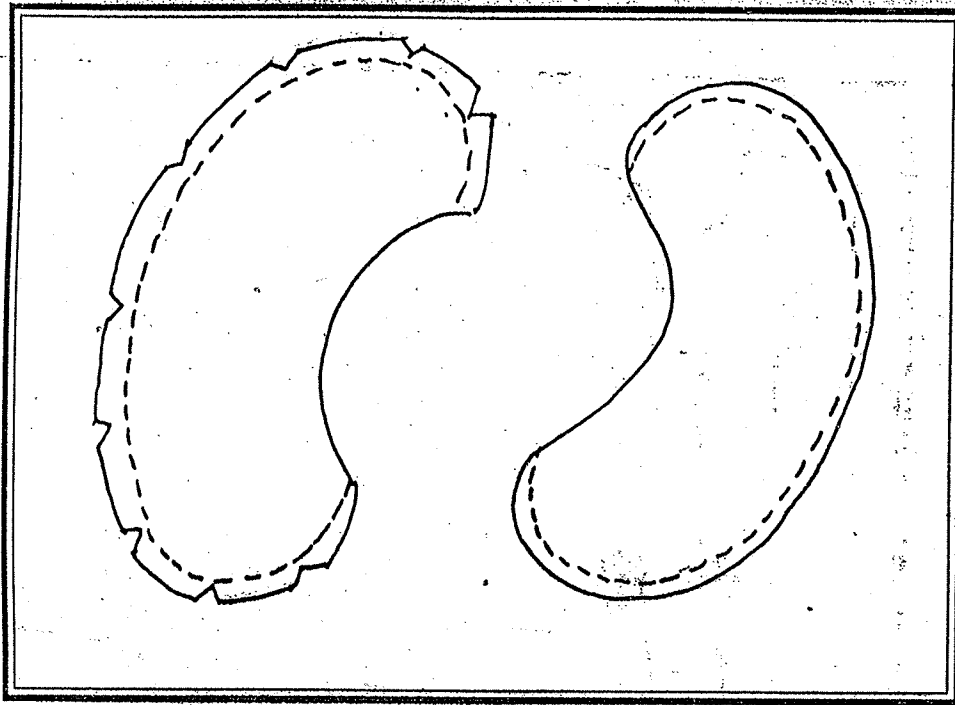
जम्ससूट की साइड जोड़कर मशीन करें। बीच के लेग की भी सिलाई करें।



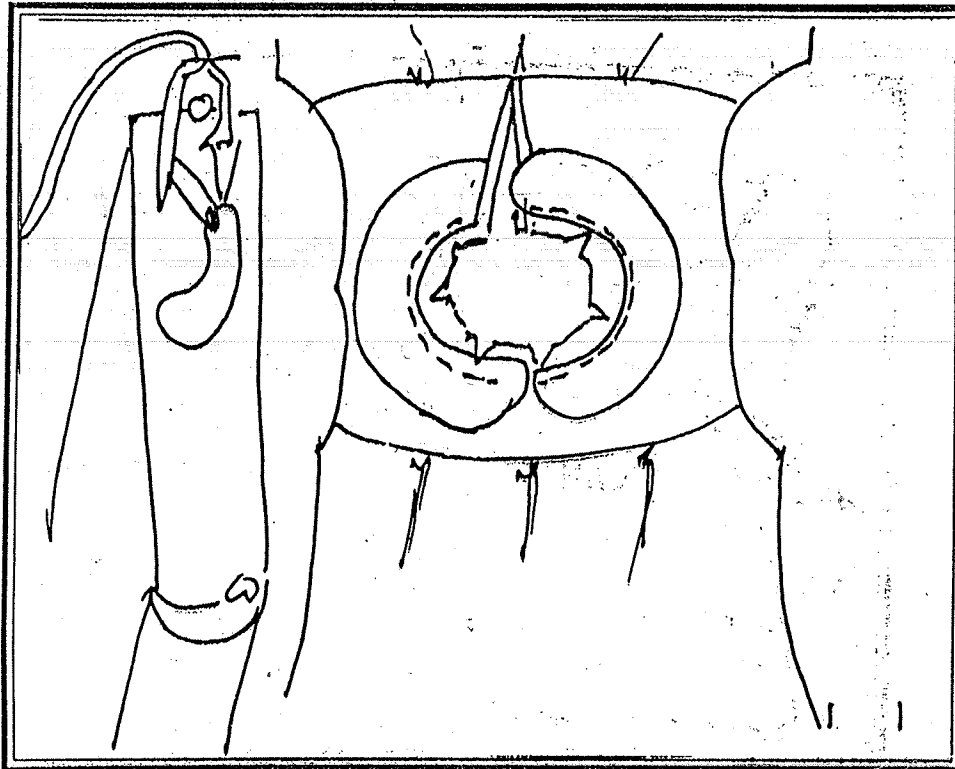
नीचे के हिस्से को फेसिंग लगाकर ऊपर की तरफ मोड़े और इसे फिनिश करें।



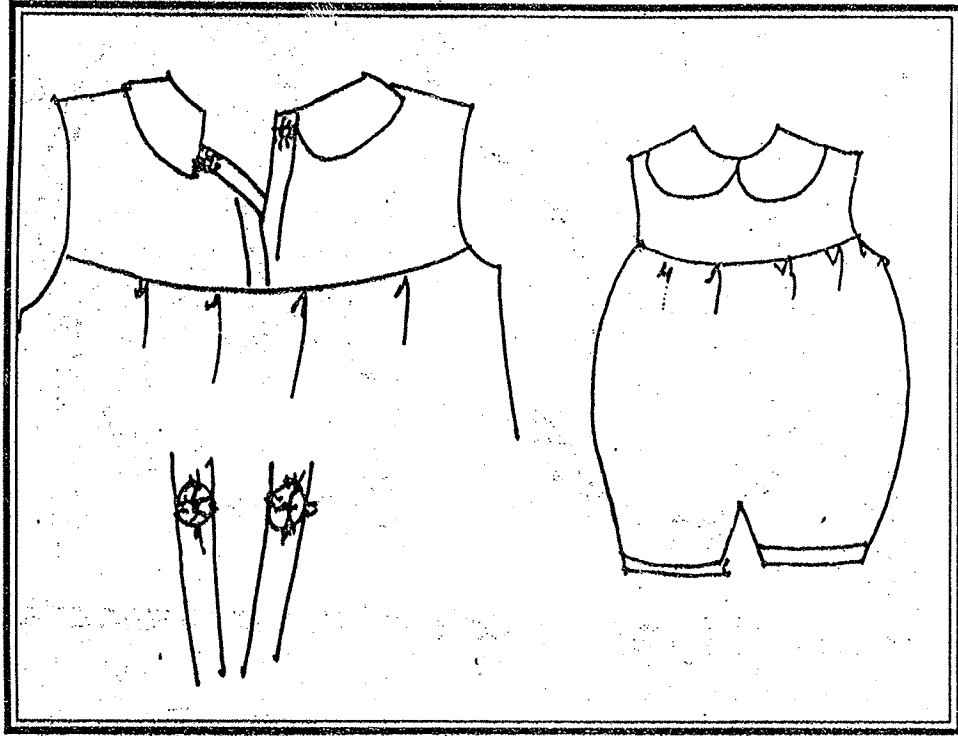
कालर के पीस लें और दिखाये गये तरीके से उन्हें सिलाई करें।



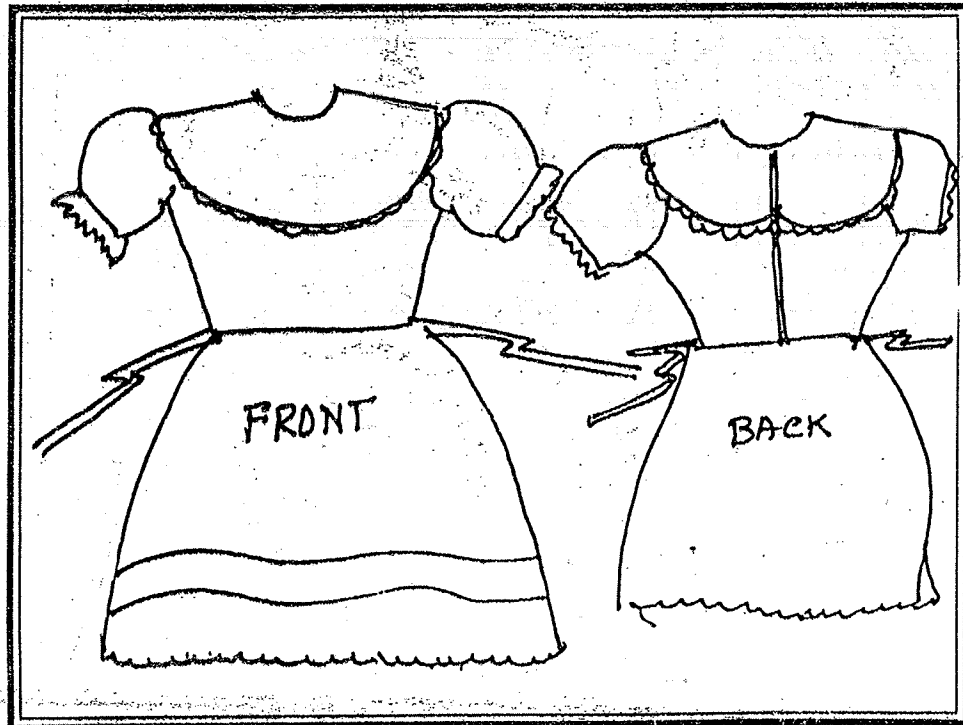
नोंचेस लगा कर पलट लें अर्थात अन्दर का हिस्सा बाहर निकालें। प्रेस करें और नेकलाइन पर दिखाये तरीके से रखें। फिनिश करें।



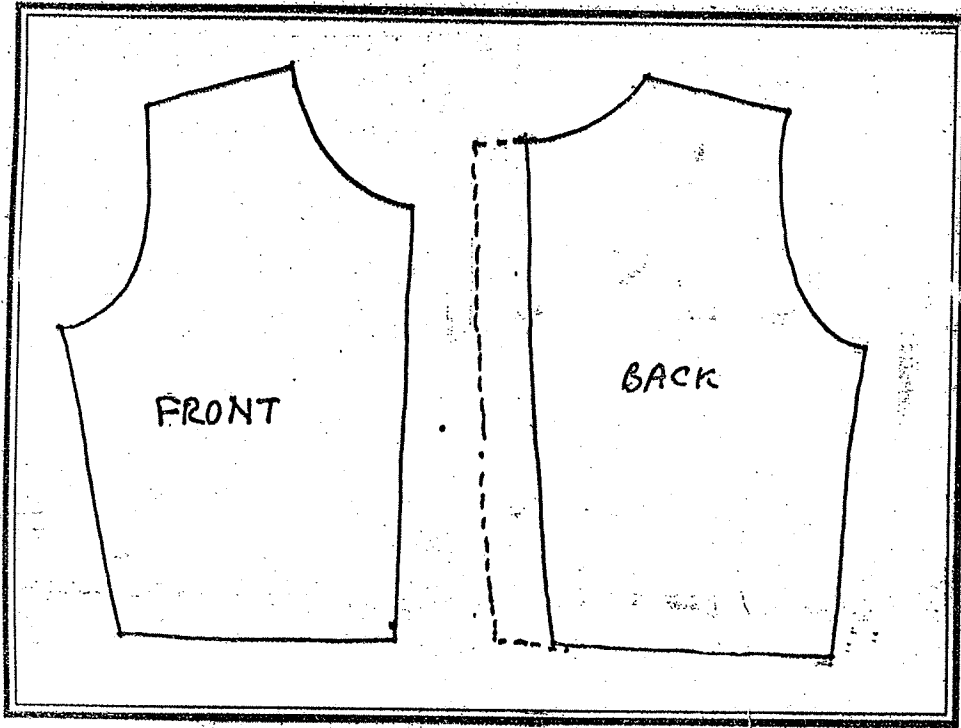
बटन टेप पर बटन स्टिच करें और जम्ससूट से धागे काटें, सीम लाइन प्रेस करें।



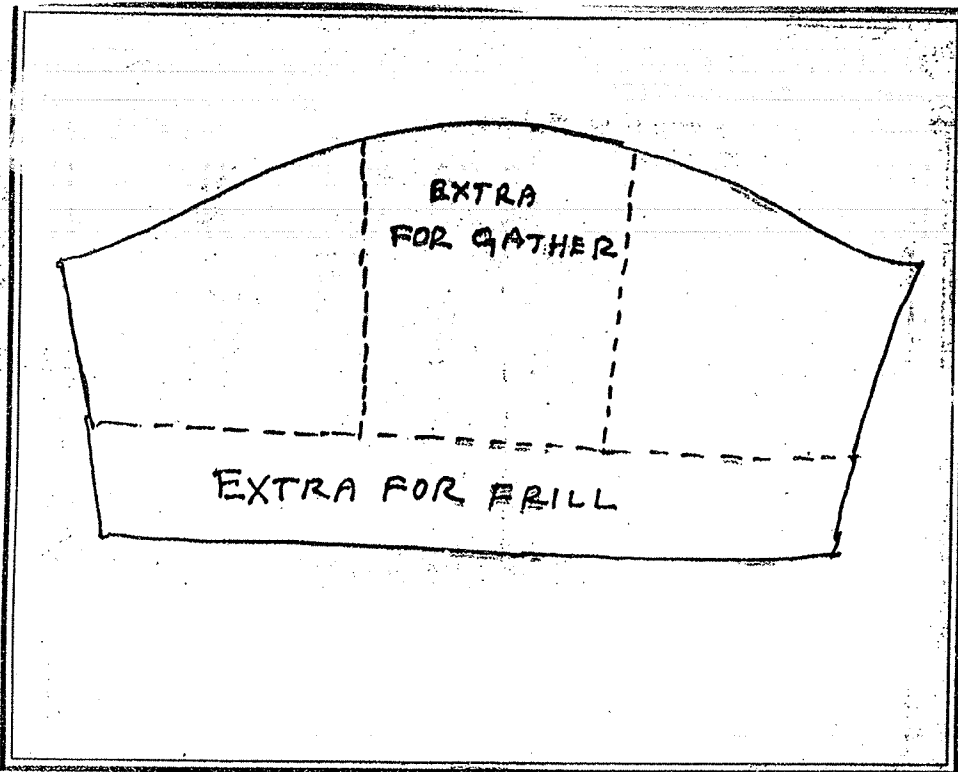
नीचे दिये गये डिजाइन की तरह अब हम 3 साल की बच्ची के लिये फ्रॉक सिलते हैं।



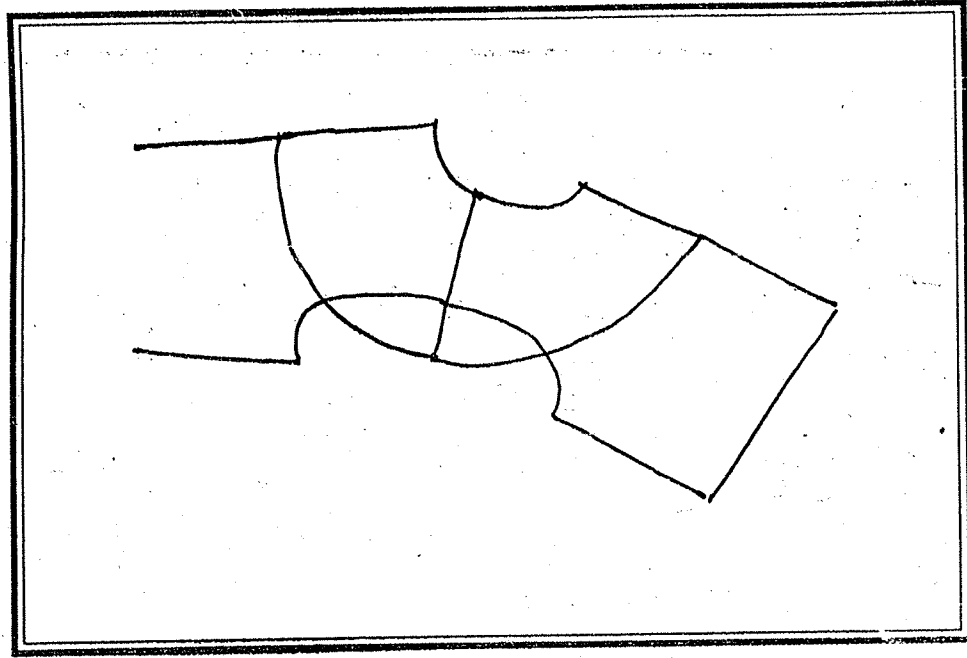
सबसे पहले बेसिक बॉडिस ड्राफ्ट बनायें। पीछे के हिस्से में ब्रैक ओपनिंग के लिए १ इंच अधिक लें।



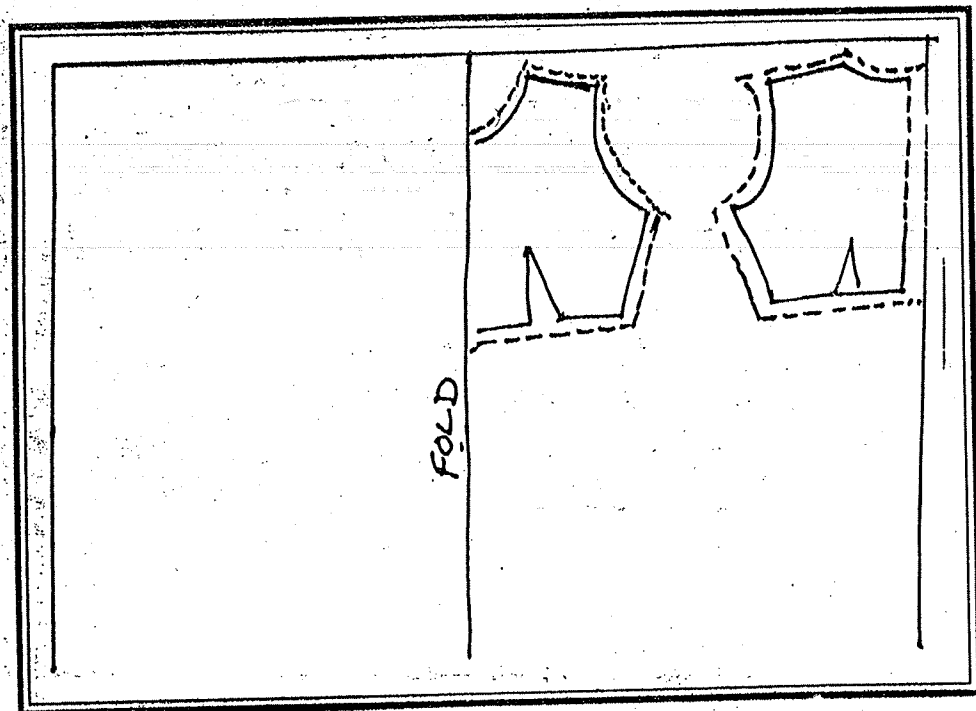
अब कफ स्लीव का ड्राफ्ट बनायें। स्लीव की फ्रिल के लिए २ इंच अधिक लें।



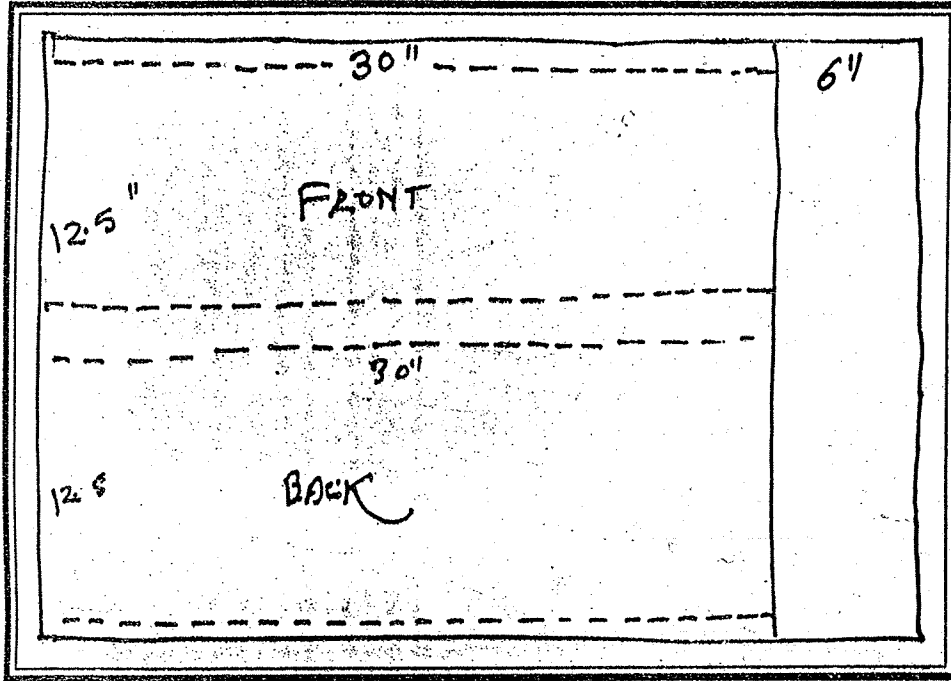
अब बेसिक ड्राफ्ट लें और केप कालर बनायें।



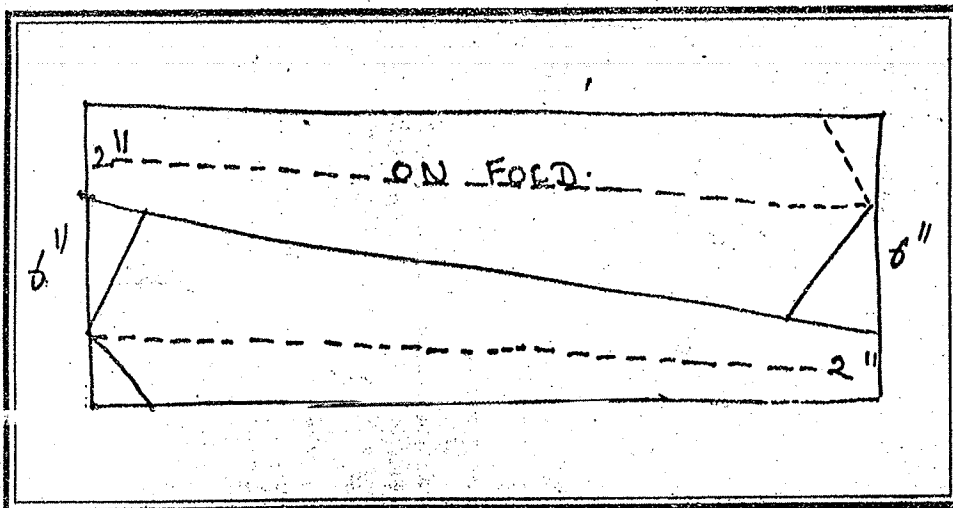
अब हम फैब्रिक काटना शुरू करें, दिखाये तरीके से फैब्रिक को फोल्ड करें। बैक ड्राफ्ट को सेल्वेज के किनारे पर रखें और सामने का ड्राफ्ट फोल्ड पर रखें। 9/8 इंच स्टिचिंग एलाउन्स गले और आर्म होल के किनारे पर लें। 9 इंच सीम एलाउन्स सीम लाइन पर लें। 9/2 इंच एलाउन्स कमर पर। कमर की डार्ट का निशान लगायें। बॉडिस काट लें।



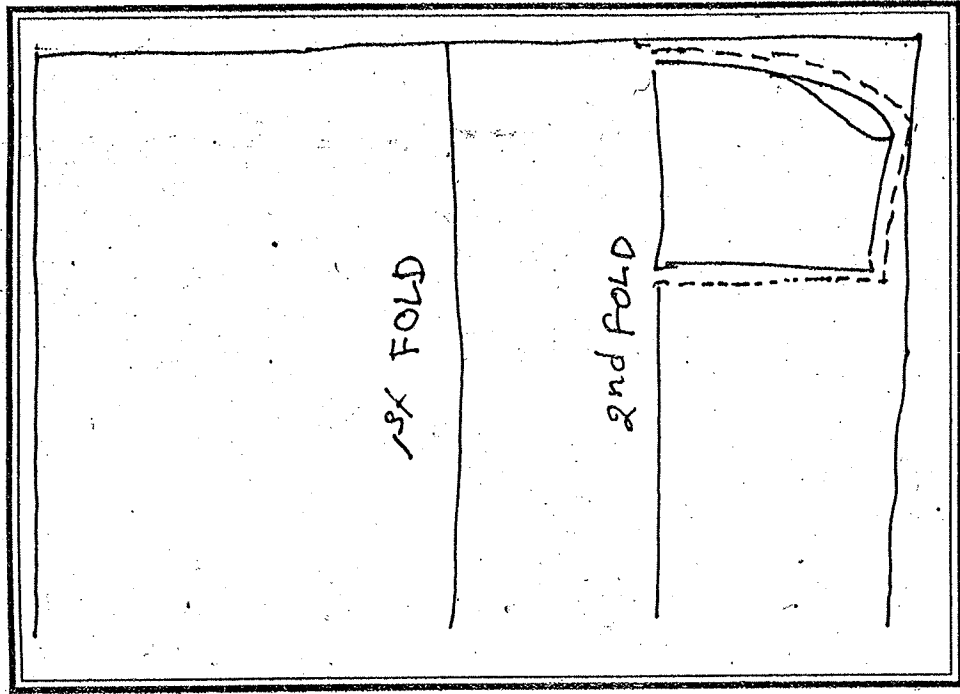
स्टैन्डर्ड माप चार्ट के अनुसार फ्राक ड्रेस की लम्बाई २० इंच होती है। नीचे के गैदर्स ३० इंच और  $20-6= 14 + 9/2$  इंच वेस्ट लाइन,  $9/2$  इंच के दो टक्स और  $9/2$  इंच नीचे हेम लाइन के अर्थात् १५ इंच अधिक। अतः ३० इंच चौड़े और १२.५ इंच लम्बे दो पीस काट लें।



अब आपके पास ६ इंच बाई २५ इंच का कपड़ा साइड से बचा है। इसमें से बेल्ट का कपड़ा काटें। चित्र में दिखाई गई है। याद रखें कि बेल्ट को त्रिकोणीय फिनिश देनी है। शुरू में कम चौड़ी अन्त में अधिक चौड़ी रहती है।



अब फैब्रिक फोल्ड करके रखें, स्लीव के ड्राफ्ट को कपड़े में फोल्ड पर रखें।  
 १/२ इंच सीम एलाउन्स सभी ओर लेकर स्लीव काटें।

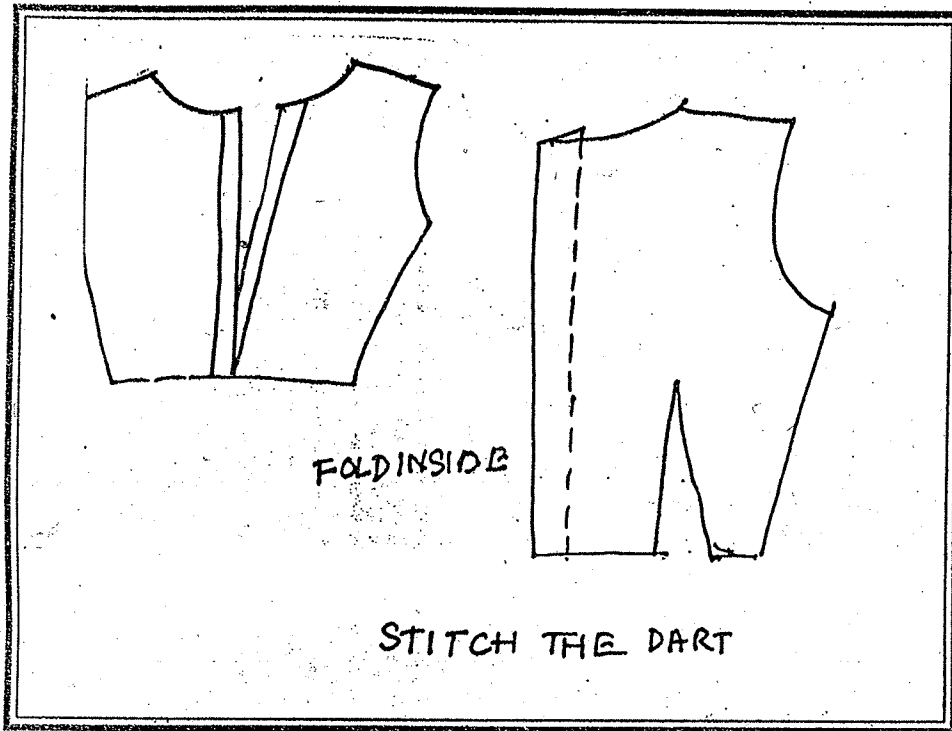


अब कालर रखें और दो पीस कॉलर काटें। १/४ इंच स्टिचिंग एलाउन्स कॉलर के बाहरी तरफ और १/२ इंच नेकलाइन पर सीम एलाउन्स लें।

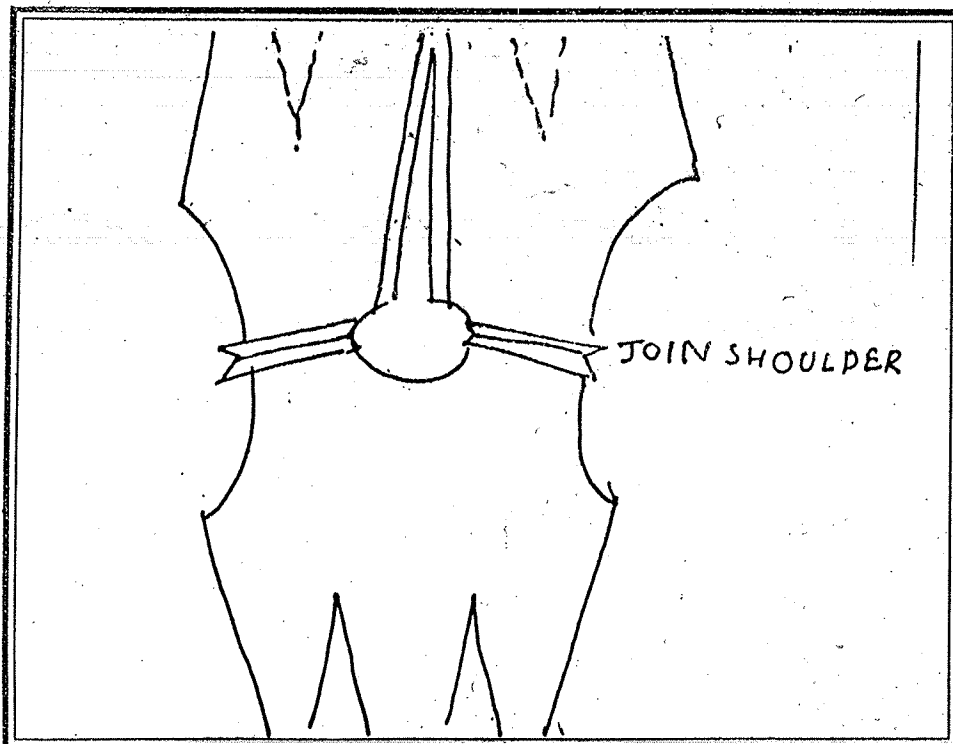




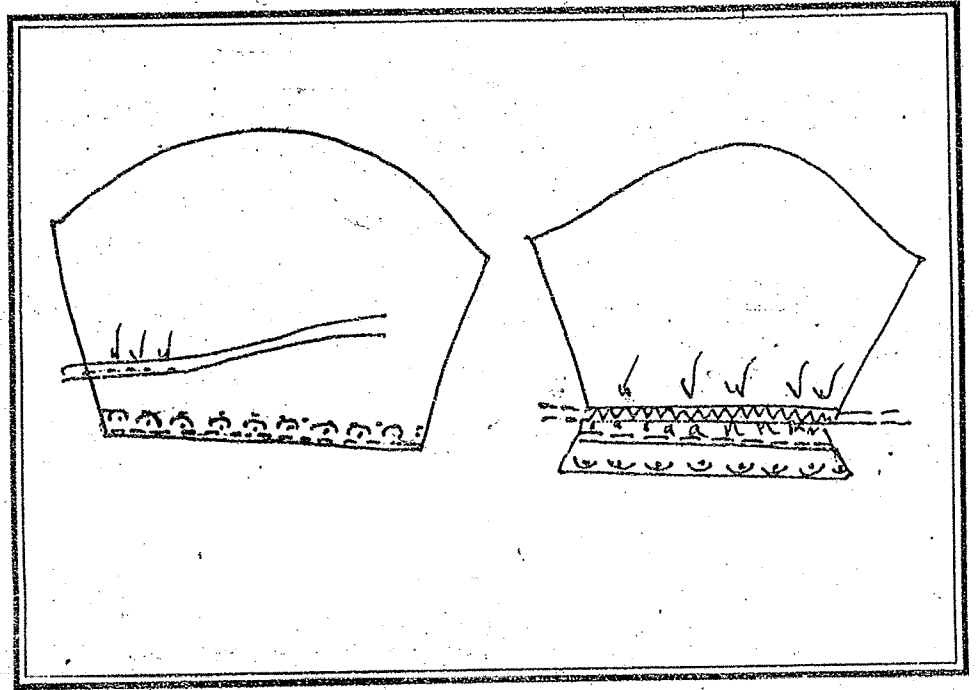
अब फ्राक की स्टिचिंग शुरू करें। बैक बॉडिस में ओपनिंग को फोल्ड करें। बैक ओपनिंग को एक दूसरे के ऊपर रख कर टैक करें।



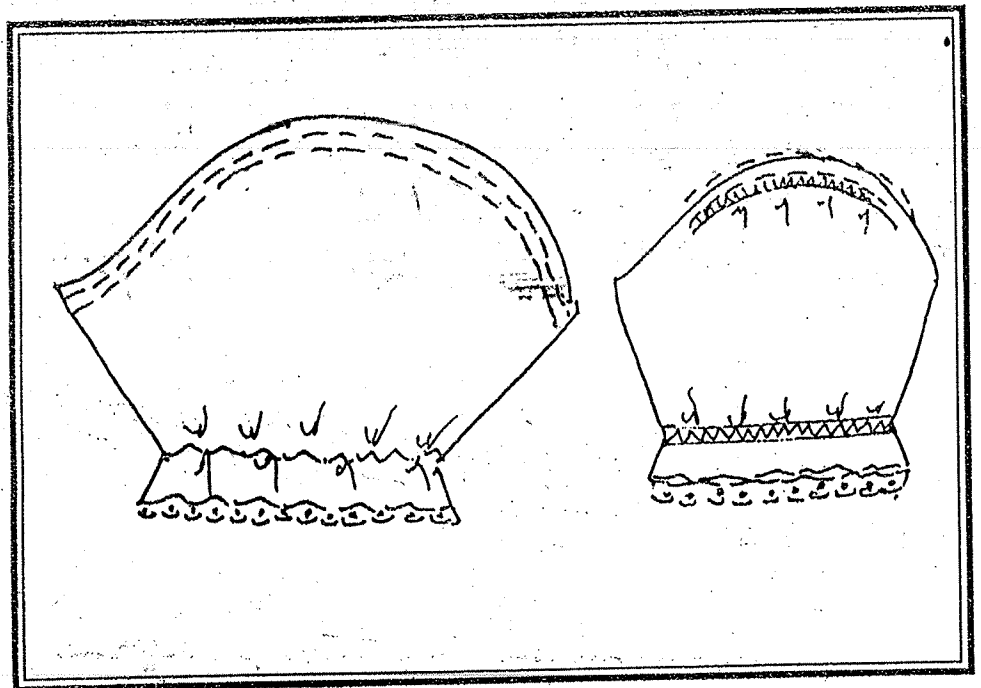
अब कंधे जोड़ लें। सामने और पीछे के डार्ट डाल लें।



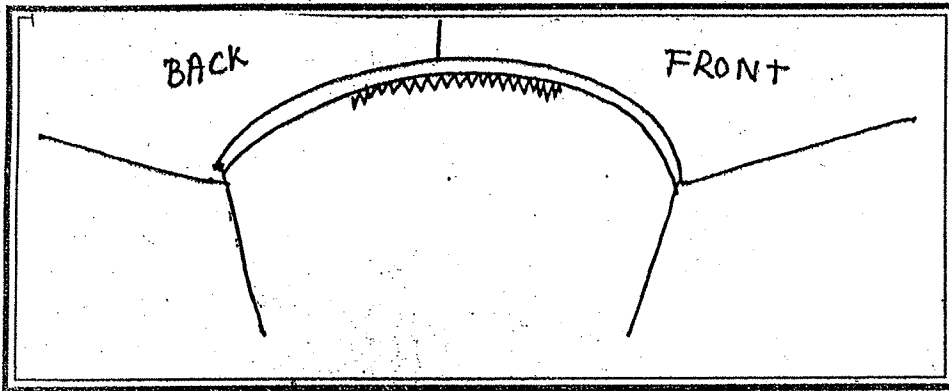
आस्तीनें लें तथा आस्तीन के किनारे पर लेस लगा लें। सिलाई से १.५ इंच की दूरी लेकर एक चौड़ी इलास्टिक उसमें लगायें। इलास्टिक लगाने से उसमें फ्रिल जैसा प्रभाव लाया जा सकता है।



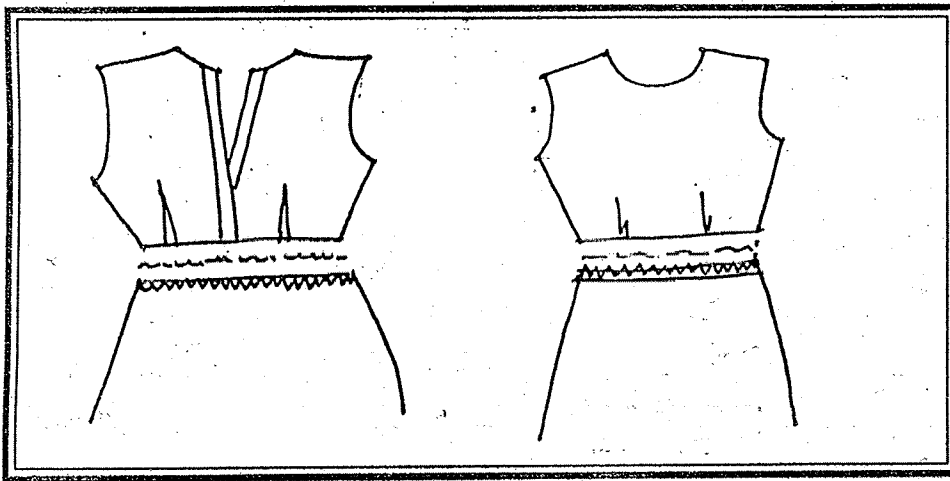
आस्तीन के आर्महोल पर गैदर तथा लोवर गैदर डालें। गैदर्स खींचकर कपड़े के नाप को आर्महोल तथा कमर के बराबर कर लें।



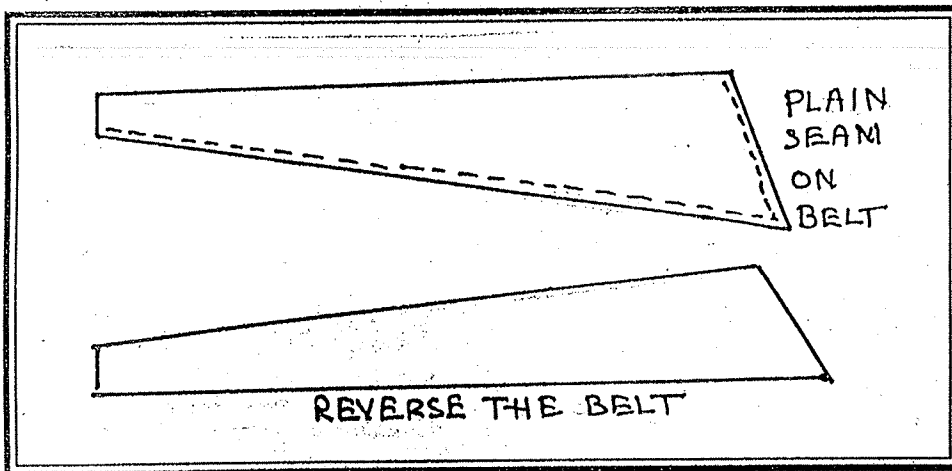
अब स्लीव को आर्महोल में जोड़ें। सब गैदर्स आर्महोल से ऊपर के हिस्से में रखें।



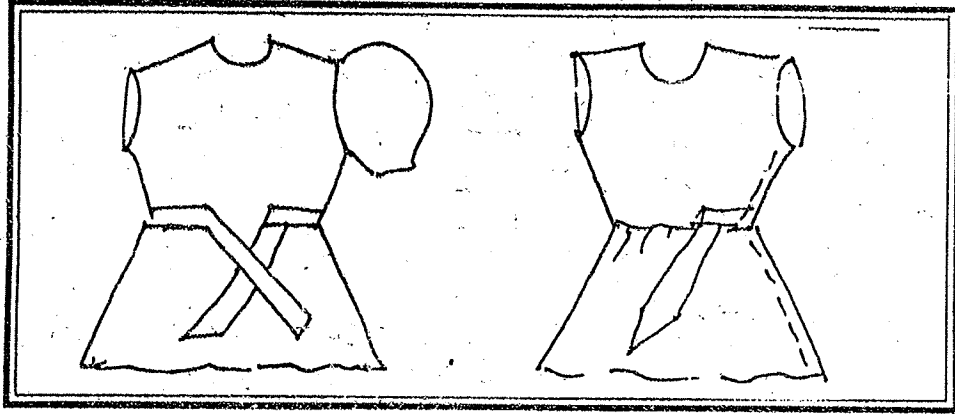
अब गैदर्स को सामने और पीछे के बॉडिस में जोड़ दें।



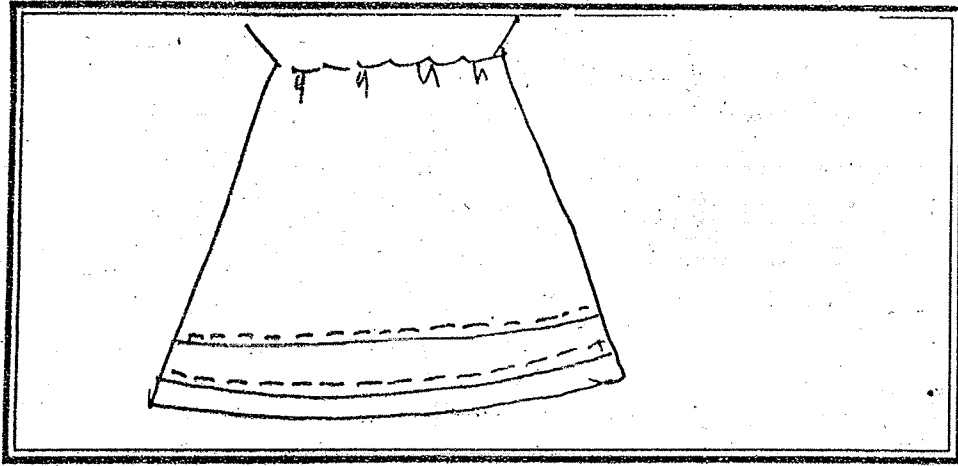
अब बेल्ट स्टिच करें और उसे उलट कर प्रेस कर लें।



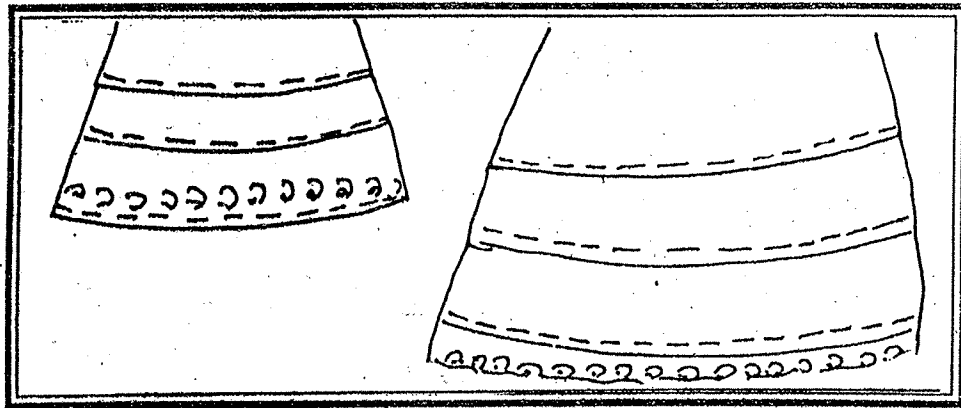
बेल्ट को जगह पर रखकर दोनों तरफ स्टिच कर दें।



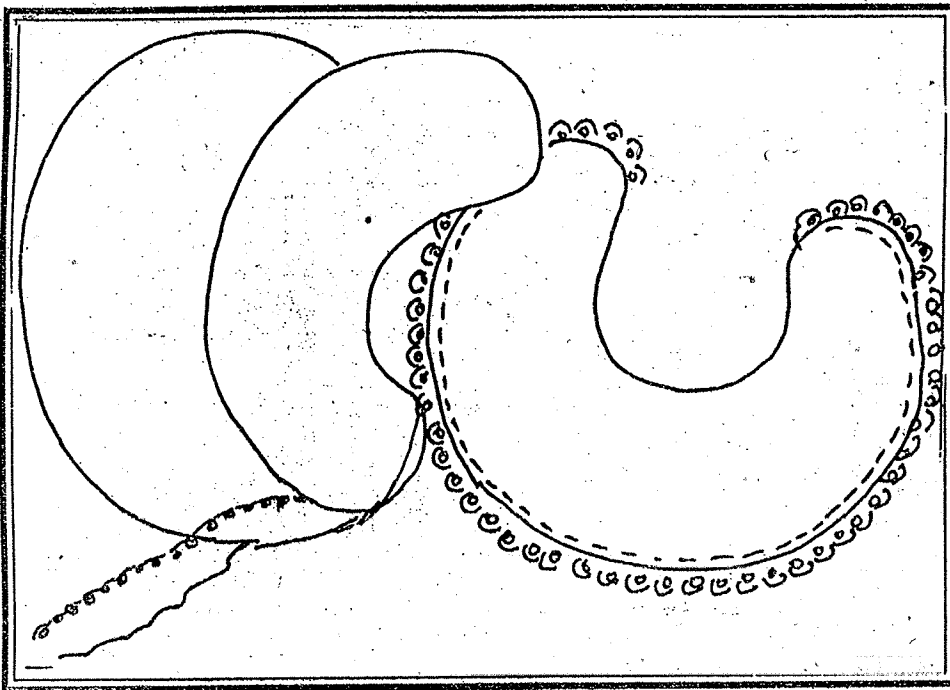
अब गैलर्स पर नीचे की ओर हेम से २ इंच के अन्दर पर दो टक्स  $9\frac{1}{2}$  इंच की दूरी पर डालें।



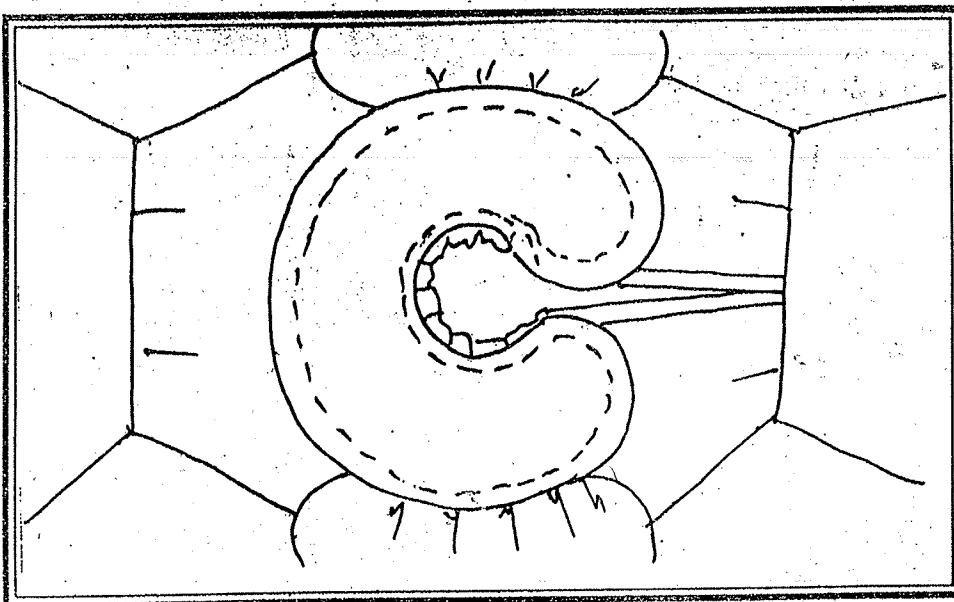
नीचे हेम जो लेस से फिनिश करें। अब बाकी फ्राक की साइड सीम कर दें, फिनिश कर दें।



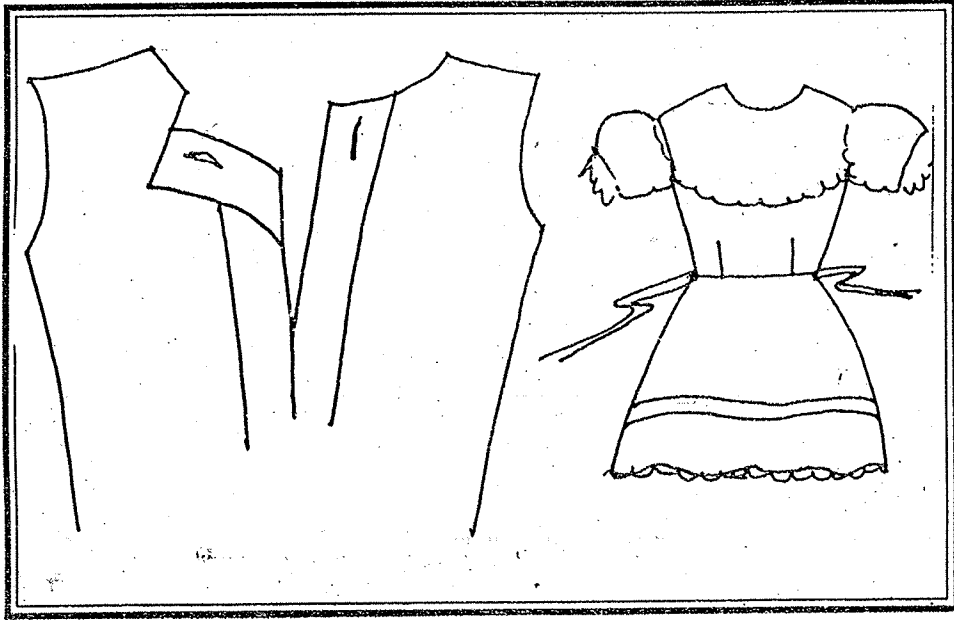
कॉलर के एक पीस पर सीधी तरफ लेस रखें। कॉलर का दूसरा पीस पहले के ऊपर रखें। सीधी तरफ एक दूसरे के सामने दूसरा कॉलर का पीस पहले की तरह रखें। लेस लगी किनारे पर सिलाई लगायें। इनको पलट लें, लेस बाहर आ जायेगी। प्रेस करें। लेस वाले किनारे पर टॉप स्टिच करें।



नेक लाइन पर कालर टैक करें। नेक लाइन को पाइपिंग या फेसिंग से फिनिश करें।



बटन होल पट्टी पर 'आई' बनायें और हुक टॉक लें। आप स्टिच बटन भी लगा सकते हैं। सब धागे जो बाहर लटके हों काट दें। टैकिंग के सभी धागे निकाल दें। आयरन करें और फिनिश कर दें।

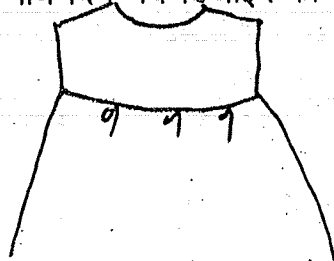


अभ्यास-

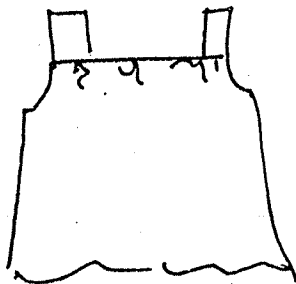
१- पाठ्य मे दिये गये डिजाइन बनाकर, काटकर सिलें।

६.४ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

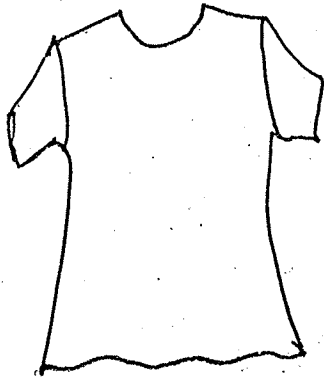
प्रश्न-१ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



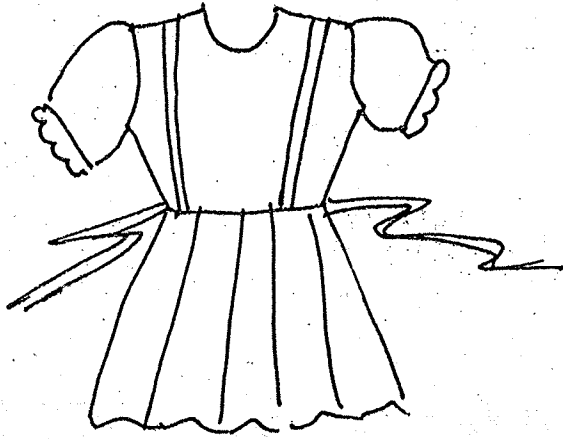
प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



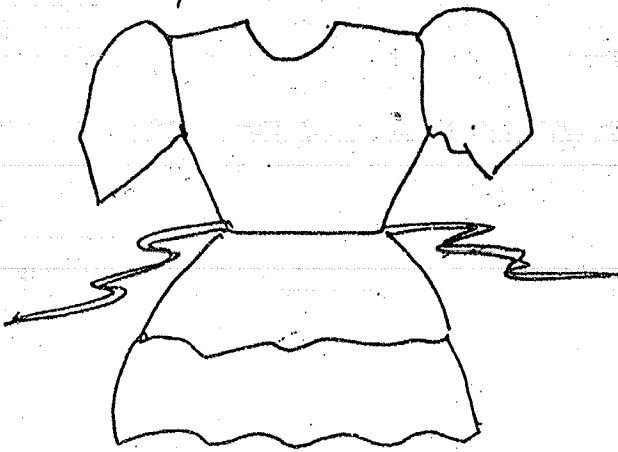
प्रश्न-३ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



६.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के०आर० जारापकर पब्लिकेशन,  
नवनीत प्रकाशन इण्डिया लिमिटेड।

संरचना

- १०.१ यूनिट प्रस्तावना
- १०.२ उद्देश्य
- १०.३ स्कर्ट टॉप तथा नाइट ड्रेस
- १०.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास
- १०.५ स्वाध्ययन हेतु
- १०.१ यूनिट प्रस्तावना:-

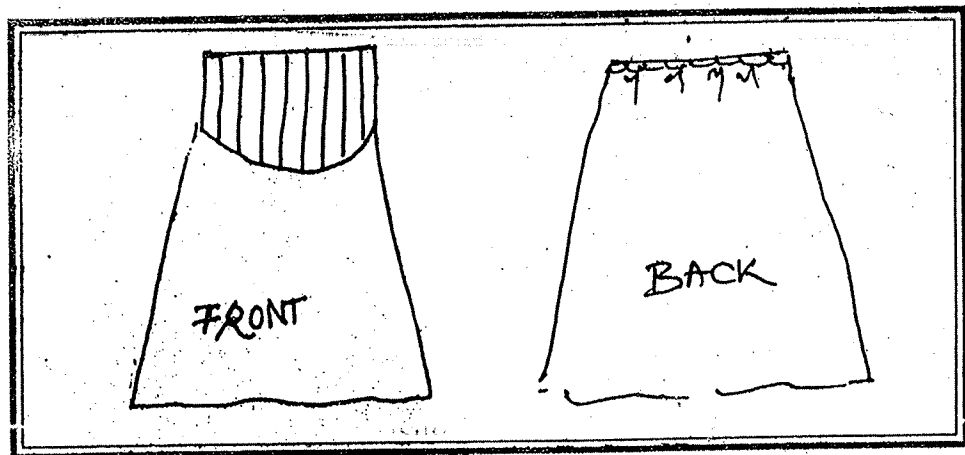
इस यूनिट में वस्त्र बनाने के तरीके बताये गये हैं। यह भी बताया गया है कि स्कर्ट, टॉप और नाइटसूट की ड्राफ्टिंग, कटिंग, स्टिचिंग और फिनिशिंग कैसे करते हैं?

१०.२ उद्देश्य:-

एक डिजाइनर के यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि उसके द्वारा बनाया गया डिजाइन कैसे दिखेगा। इस यूनिट में बच्चों के स्कर्ट टॉप तथा नाइटसूट बेसिक पक्षों के बारे में बताया गया है।

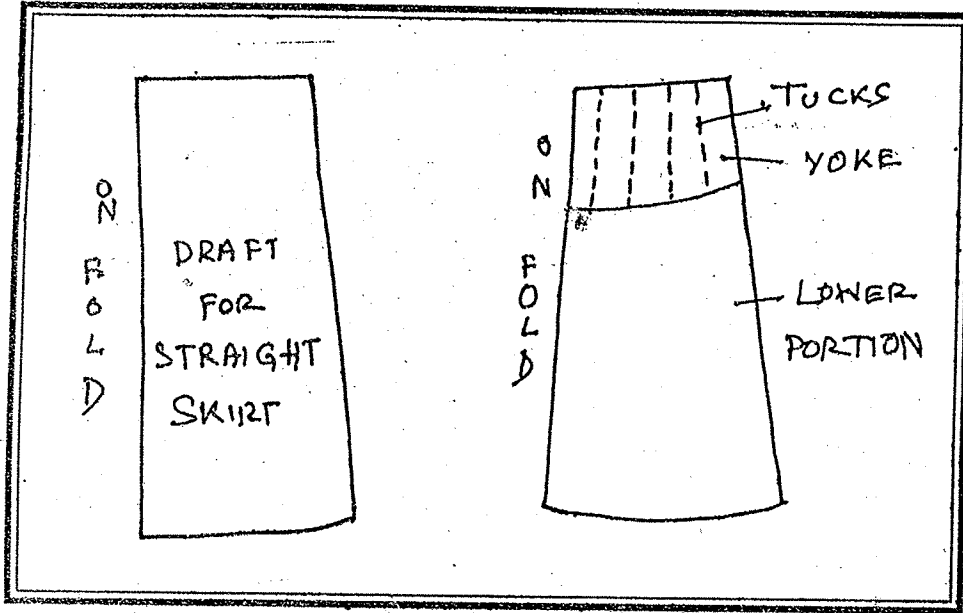
१०.३ स्कर्ट टॉप तथा नाइटसूट:-

अब हम १० वर्ष की बच्ची की स्कर्ट डिजाइन करके स्टिच करेंगे।

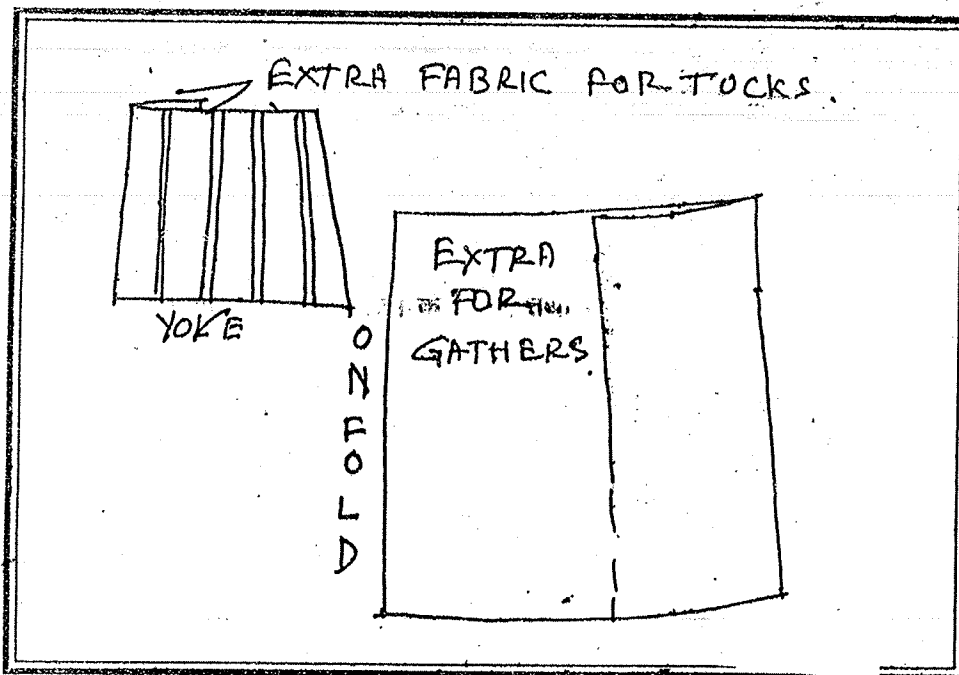




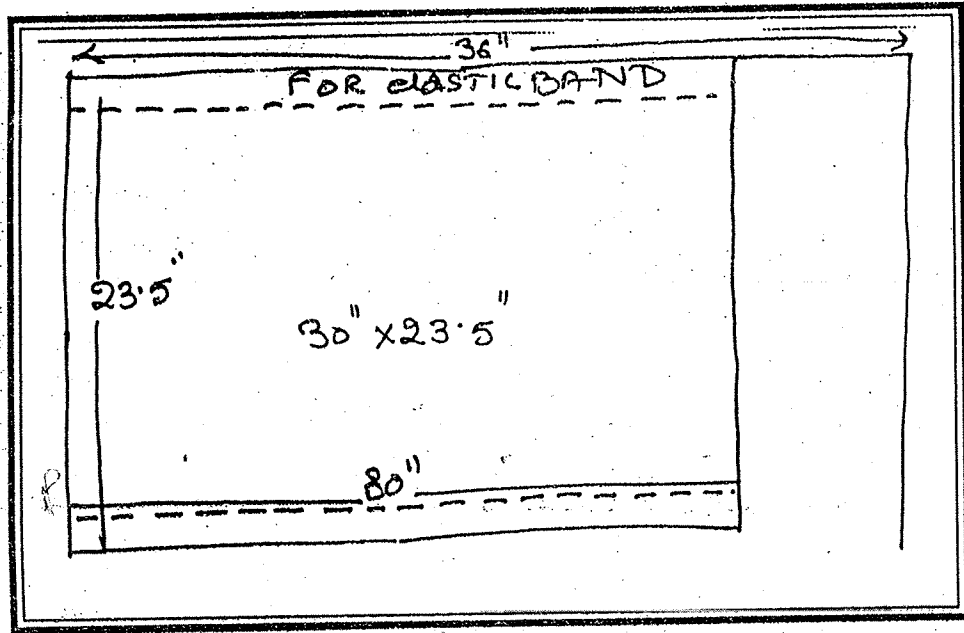
अब हम हिप का नाप मान कर चलें ३० इंच, और कमर का नाप चारो ओर २६ इंच, स्कर्ट की लम्बाई २० इंच होगी। सबसे पहले हम एक स्ट्रेट स्कर्ट का ड्राफ्ट बनायें जिसके नाप ऊपर दिये हैं। स्कर्ट की योक का ड्राफ्ट बनायें और योक में जितने टक्स डालने हैं उनके निशान लगायें।



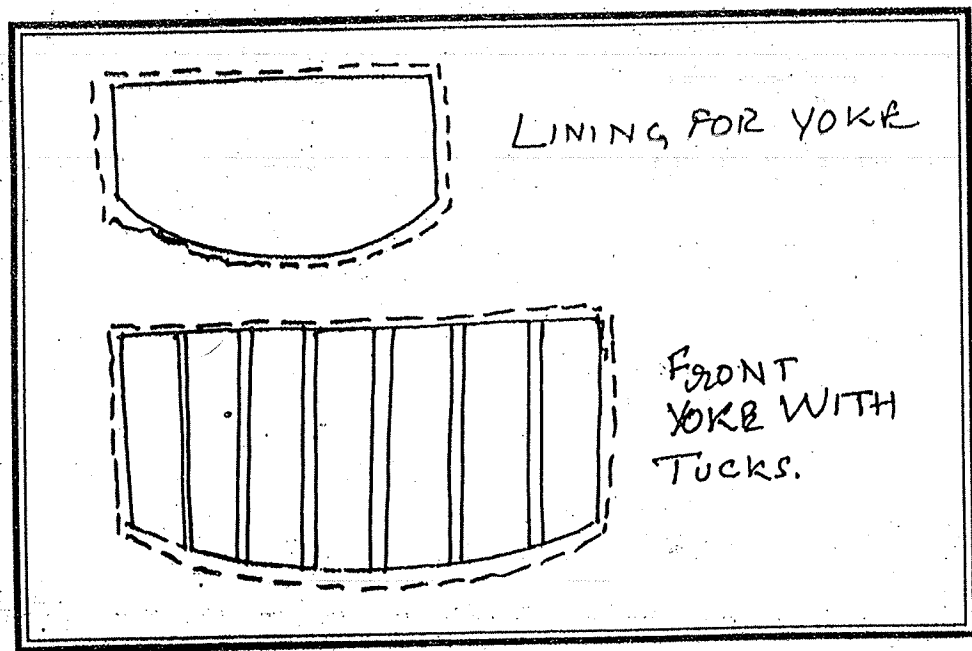
ब्राउन पेपर का योक काटकर, दूसरे पीस पर ड्राफ्ट बनाकर गैदर्स के लिये अलग से निशान लगायें। योक की शेप का ध्यान रखें। गैदर्स और योक की शेप एक दूसरे से मिलनी चाहिये।



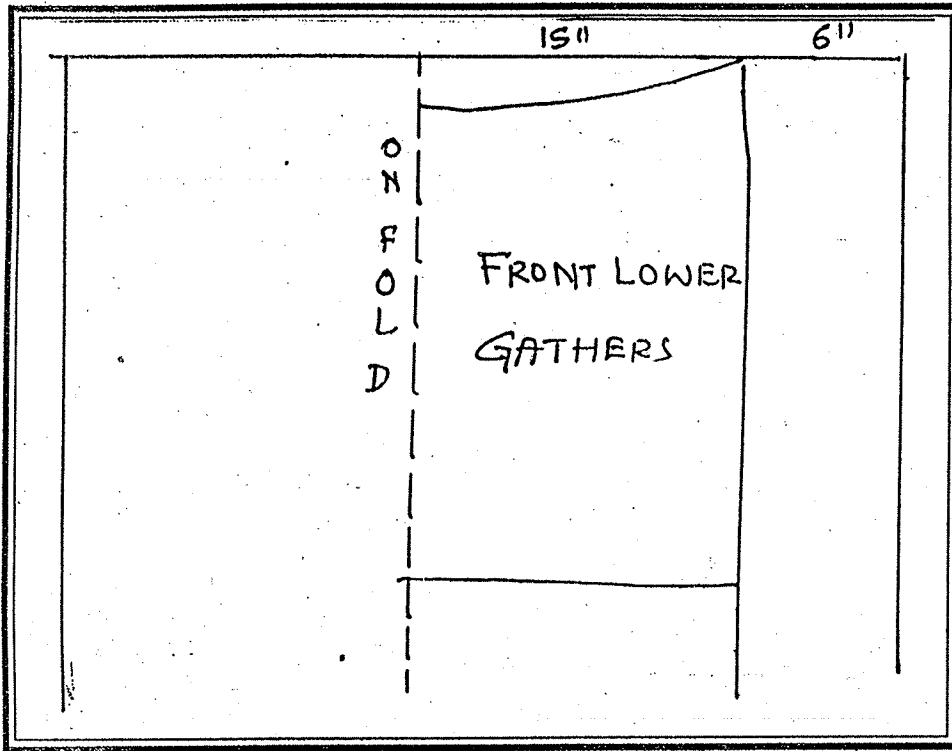
अब कपड़ा काटें। सबसे पहले बैक पीस काटेंगे, इसमें केवल गैदर्स है। पीछे के हिस्से का नाप लम्बाई + २ इंच बेल्ट के लिये, १.५ इंच नीचे की हेम के लिये अर्थात्  $20 + 2 + 1.5 = 23.5$  इंच लम्बाई स्कर्ट की कुल गैदर्स हिप से डबल होंगे। पीछे के हिस्से में हिप के गोलाई/२ गुणा २ = ३०/ गुणा २ = १५ गुणा २ = ३० इंच। इसलिये ३० इंच से २३.५ इंच बैक का पीस काट लें।



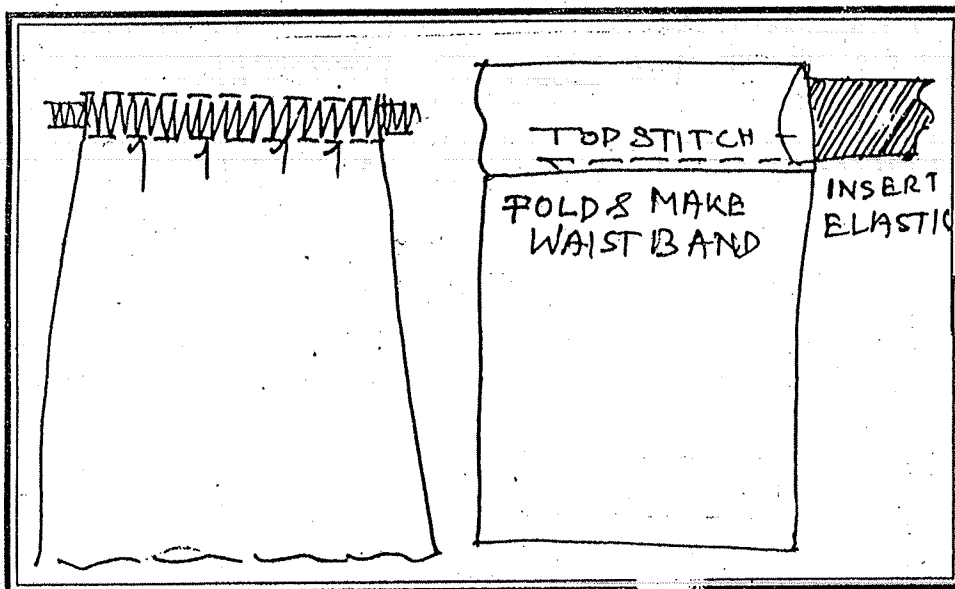
अब आगे सबसे पहले योक काटें। एक पीस प्लेन और एक टक्स के लिये अधिक कपड़ा लेंगे। एक पीस पर टक्स डालें फिर योक काटें।  $9/2$  इंच सीम एलाउन्स लें।



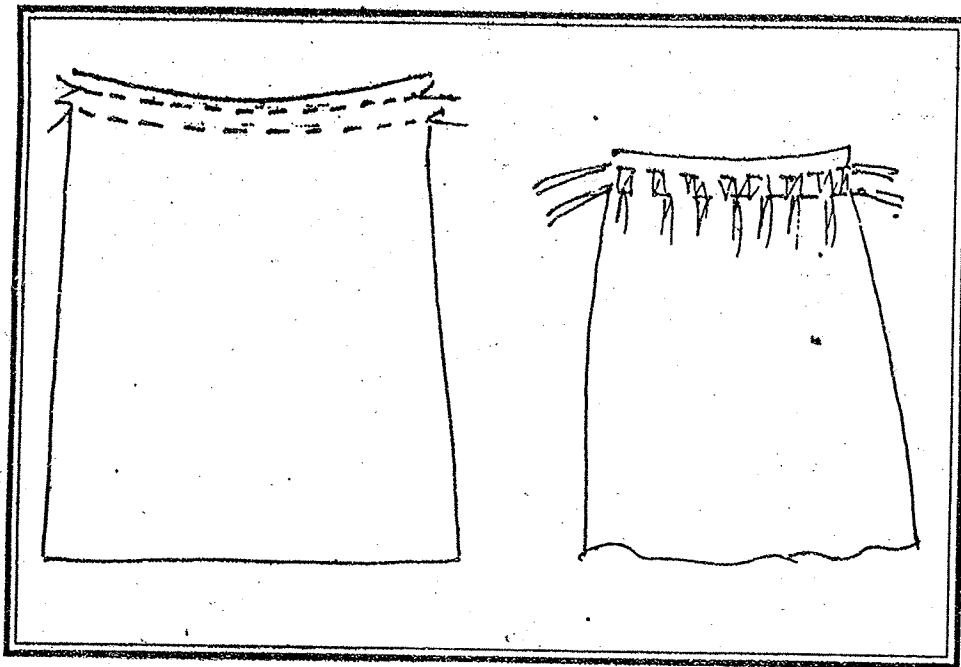
अब एक पीस सामने गैदर्स का ड्राफ्ट काटें। याद रखें चौड़ाई ३० इंच होनी चाहिये। लम्बाई के लिये १/२ इंच सीम एलाउन्स ऊपर के लिये, १.५ इंच नीचे हेम के फोल्ड के लिये रखें।



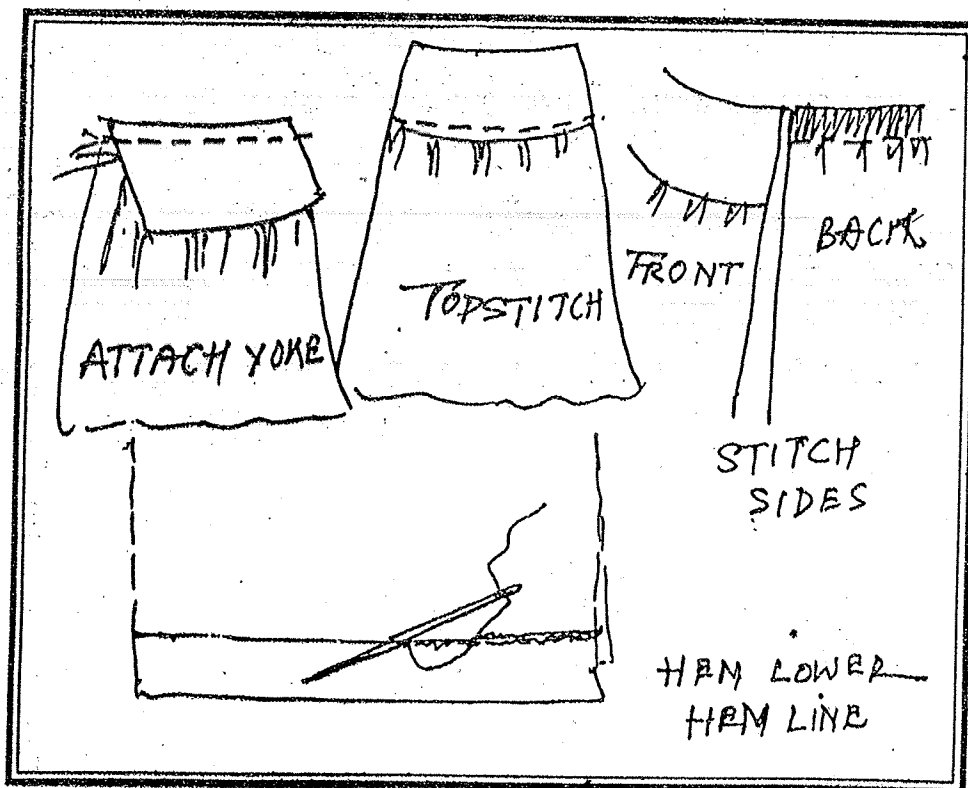
फैब्रिक काटने के बाद अब स्टिचिंग करेंगे। अब पीछे का पीस लेकर बेल्ट का २ इंच मोड़ लें। पहले १/२ इंच मोड़े और फिर १.५ इंच मोड़े। १.२५ इंच की चौड़ी और १० इंच लम्बी इलास्टिक बैंड में डालें और दोनों तरफ मजबूती से टैक कर दें।



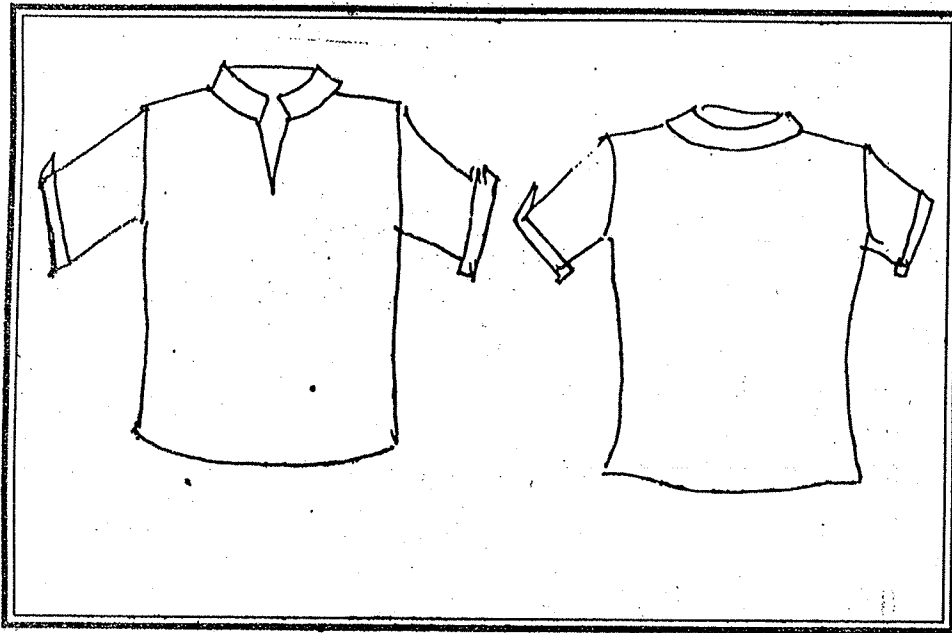
अब सामने के लिये नीचे के हिस्से में गैदर्स डालें। योक के बराबर गैदर्स को खींचकर सामना बना लें। योक को नीचे गैदर किये कपड़े में जोड़ लें जैसे जम्पसूट में जोड़ा था।



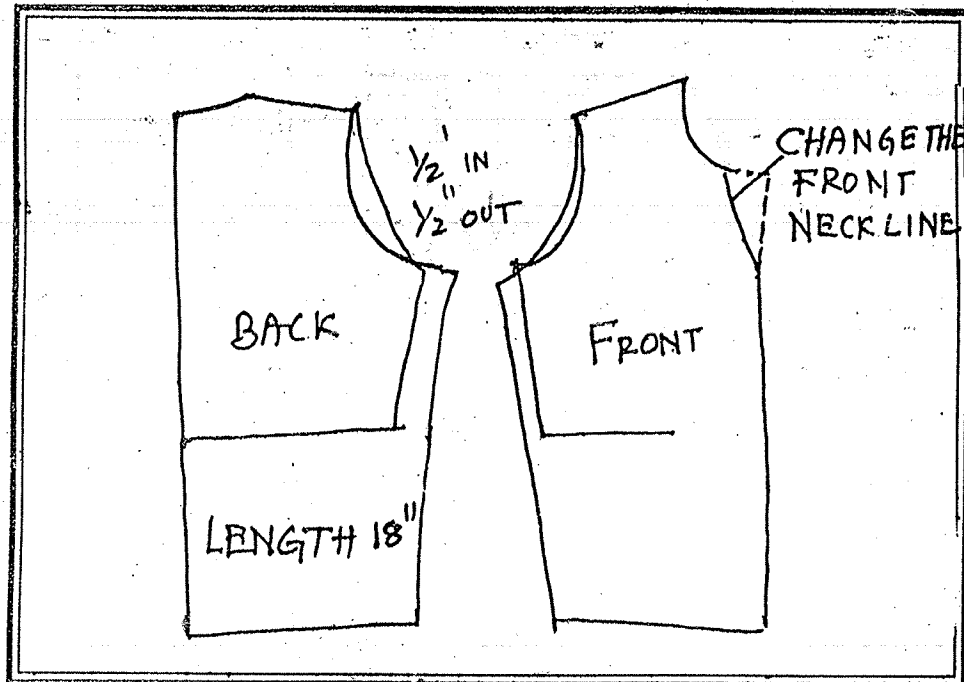
अब साइड को जोड़ लें और नीचे हेम लाइन को १.५ इंच मोड़ कर साफ हेमिंग कर फिनिश कर लें।



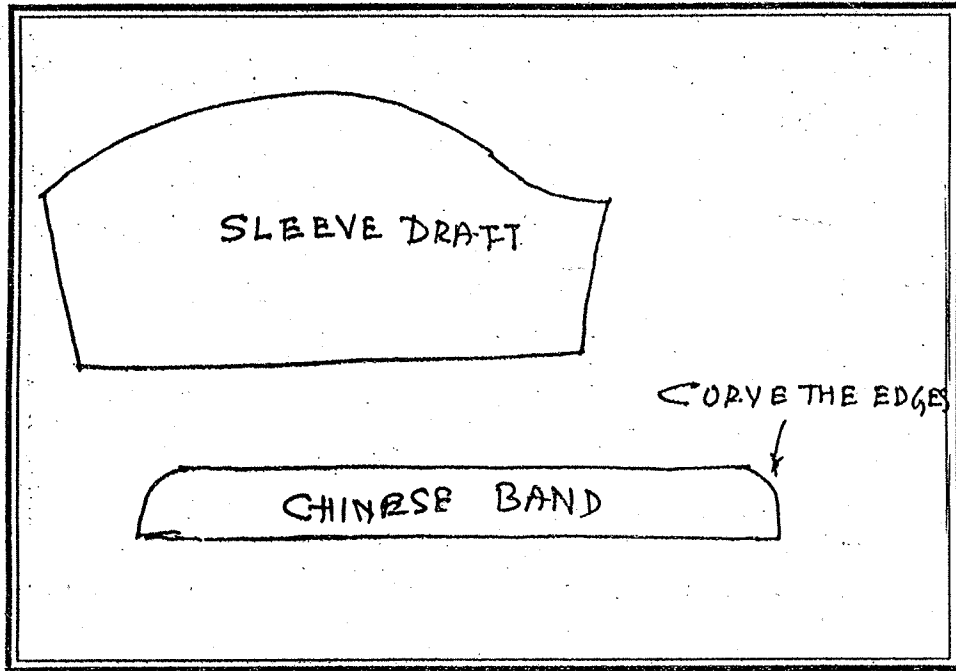
अब १० वर्ष की बच्ची के स्कर्ट के लिए नीचे दिये गये डिजाइन की तरह टॉप बनायें।



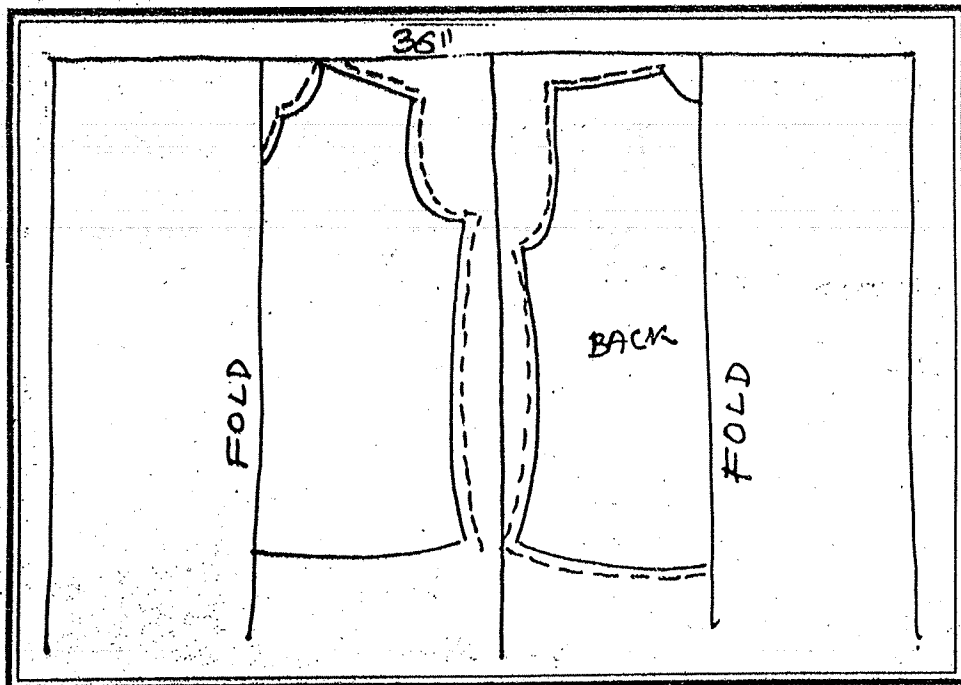
सबसे पहले १० साल की बच्ची का बॉडिस ब्लाक लें। इसकी नेकलाइन डिजाइन के हिसाब से बदल लें। क्योंकि यह ढीला गारमेन्ट है इसलिये सामने और पीछे का आर्महोल  $1/2$  इंच नीचे कर लें। अन्दर बाहर से आर्म होल के प्रभाव को दुबारा ठीक कर लें। टॉप की लम्बाई १८ इंच रखें। बॉडिस की लम्बाई १८ इंच रखें, नीचे थोड़ा सा बढ़ाते हुये जैसा कि नीचे दिखाया गया है।



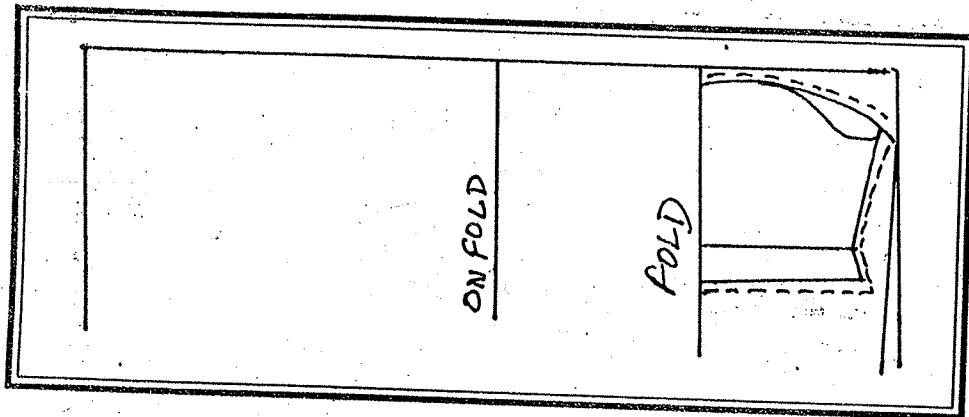
स्लीव का प्लेन ड्राफ्ट बनायें। नेक के लिये चाइनीज बैंड बनायें, लेकिन इसके लिये ड्राफ्ट की नेकलाइन नाप लें। चाइनीज बैंड गले की गोलाई तक लगता है।



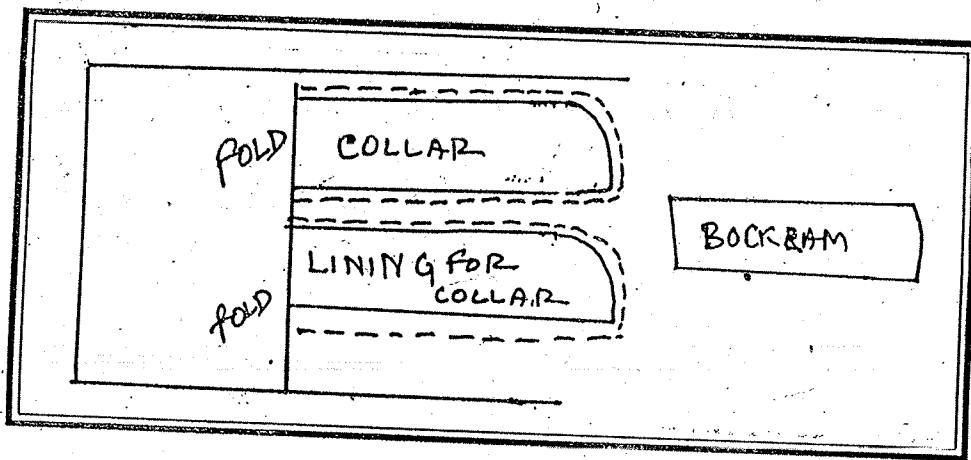
अब हम फैब्रिक काटेगें। कपड़ा 36 इंच अर्ज का लें। दिखाये गये चित्र के अनुसार फोल्ड करें। कपड़े पर सामने और पीछे का ड्राफ्ट रखें जैसा कि दिखाया गया है।  $\frac{9}{8}$  इंच सीम एलाउन्स नेक और आर्महोल पर लें। 9 इंच साइड सीम के लिये लें,  $\frac{9}{2}$  इंच नीचे के फोल्ड के लिये लें।



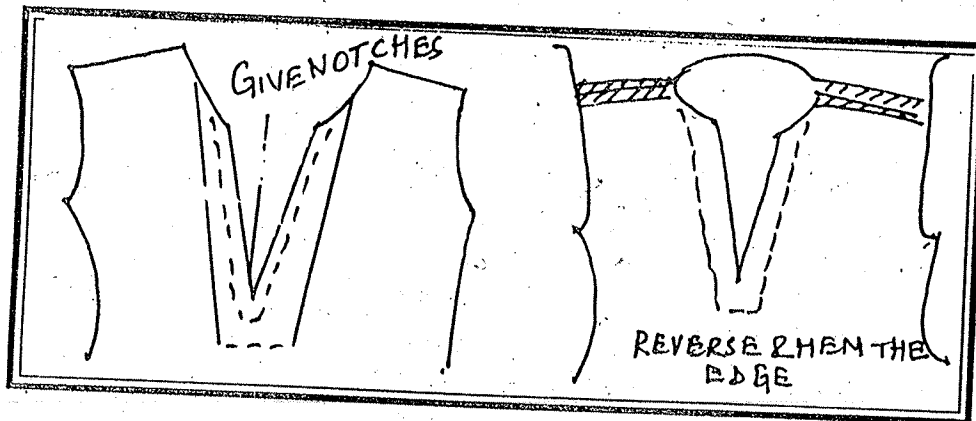
अब स्लीव का ड्राफ्ट रखें और आर्महोल पर  $\frac{1}{8}$  इंच का सीम एलाउन्स रखकर, 9 इंच साइड सीम के लिए तथा 9.5 इंच स्लीव की हेम के लिये लें।



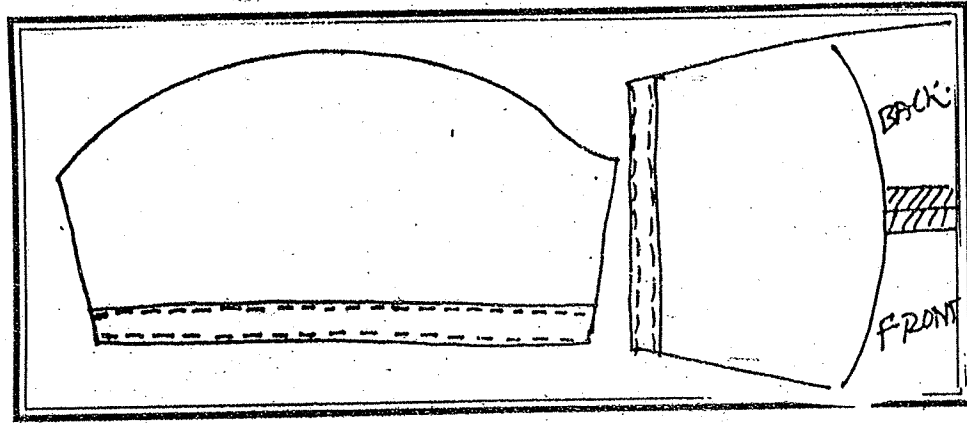
अब सिलाई कॉलर काटना है। एक पीस फ्यूज बकरम ठीक नाप का काट लें। दो पीस  $\frac{1}{2}$  इंच सीम एलाउन्स चारो ओर कपड़े पर काट लें।



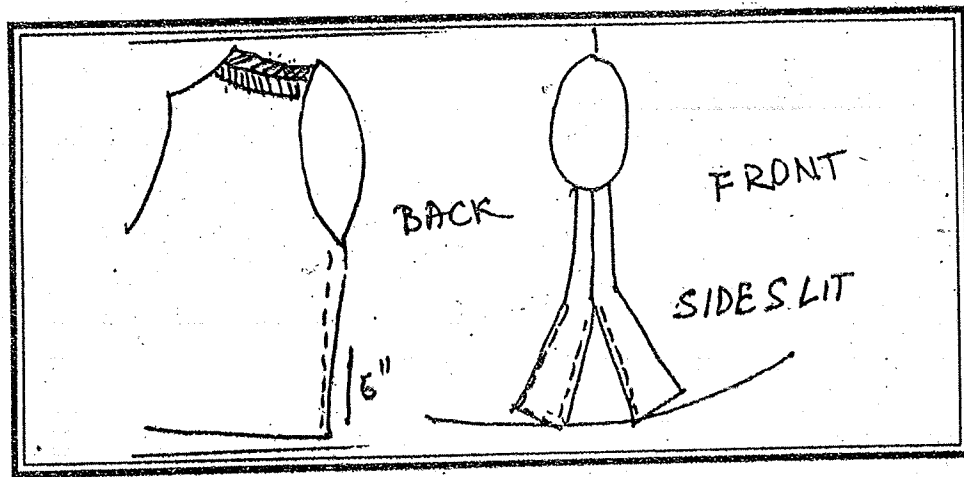
अब सिलाई शुरू करना है। सबसे पहले 'वी' बैक का फिनिश करें तथा कन्धे जोड़ लें।



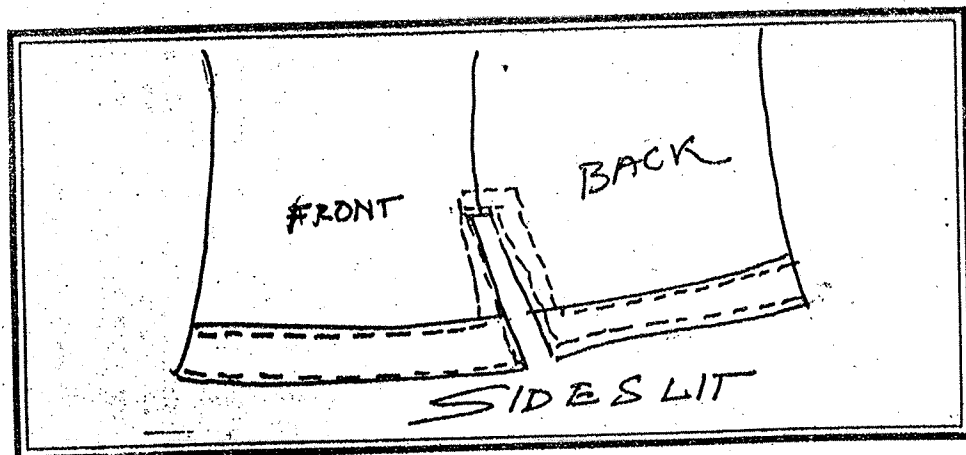
स्लीव वा नीचे की हेम लाइन को मोड़कर डबल टॉप स्टिचिंग कर लें। अब स्लीव आर्महोल में जोड़ लें।



अब साइड सीम हेम लाइन से ५ इंच ऊपर तक जोड़ लें।

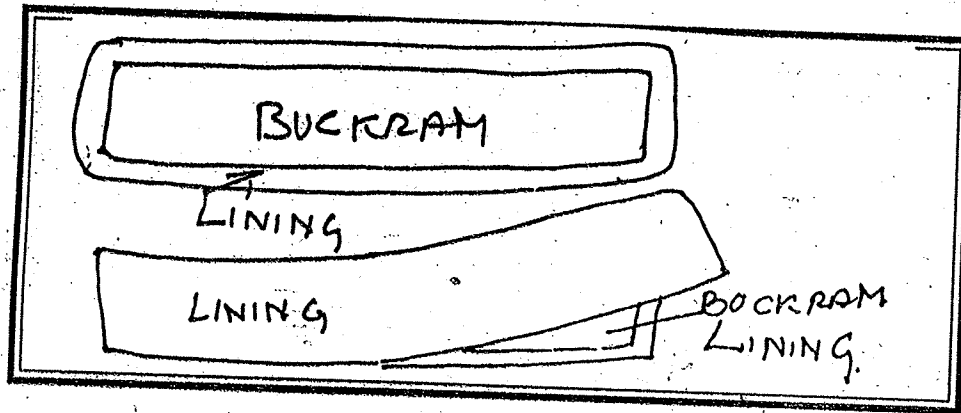


अब कपड़े को मोड़ते हुए नीचे की हेम को फिनिश करें तथा लोवर हेम के चारों ओर टॉप स्टिचिंग कर लें।

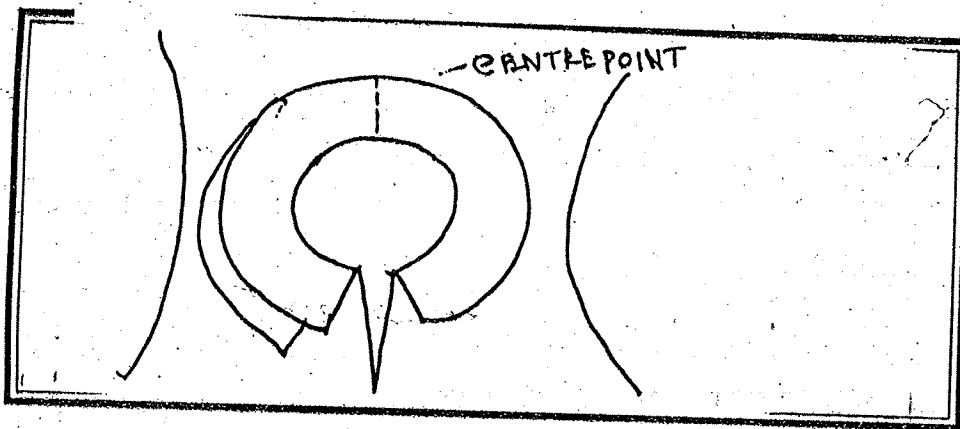




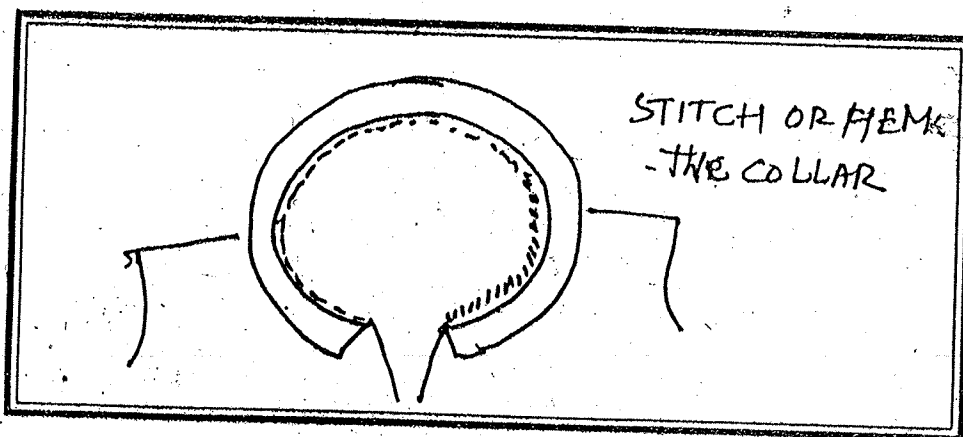
अब कालर के लिये दोनों पीस लेकर सीधी साइड एक दूसरे के सामने रखें। अब बकरम का कॉलर इसके ऊपर रखें। प्रेस कर लें जिससे यह कॉलर पर चिपक जाये। अब फैब्रिक के पीस को साथ रखकर ऊपर का स्टिच करके उलट लें और प्रेस कर लें।



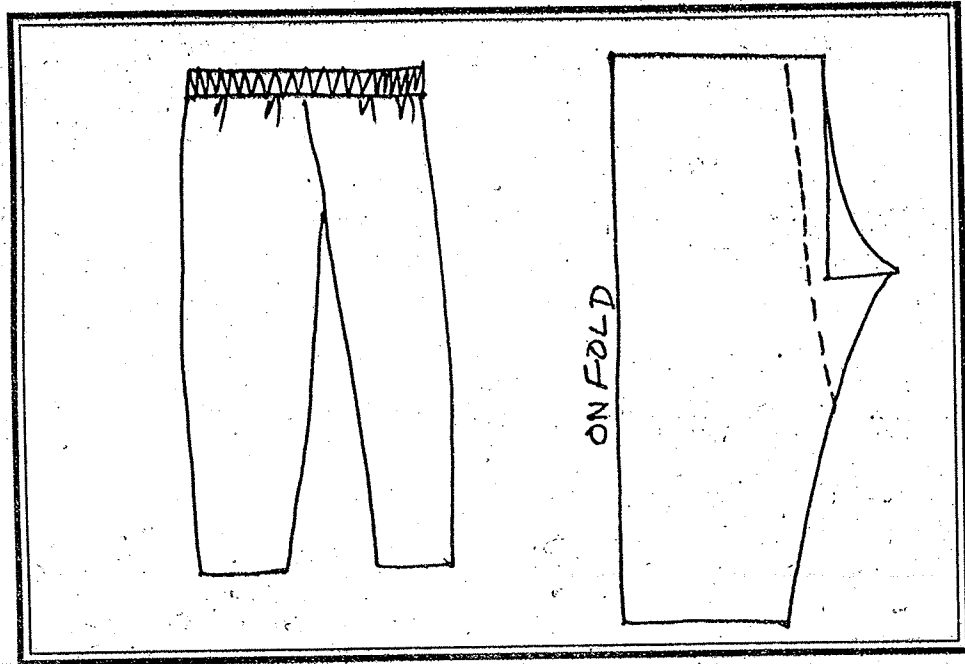
अब नेक और कालर के बीच का प्वाइन्ट लें। दोनों प्वाइन्ट को मिलाकर एक फैब्रिक नेकलाइन पर स्टिच कर लें।



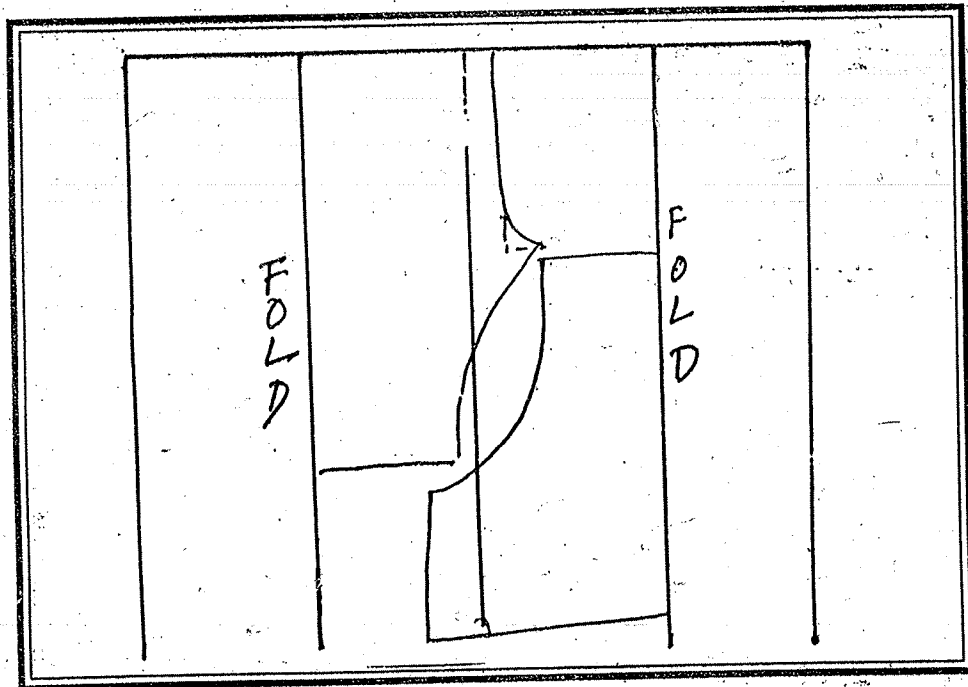
दूसरे पीस को फोल्ड करें तो हेम या सफाई से स्टिचिंग कर लें और कालर फिनिश कर लें।



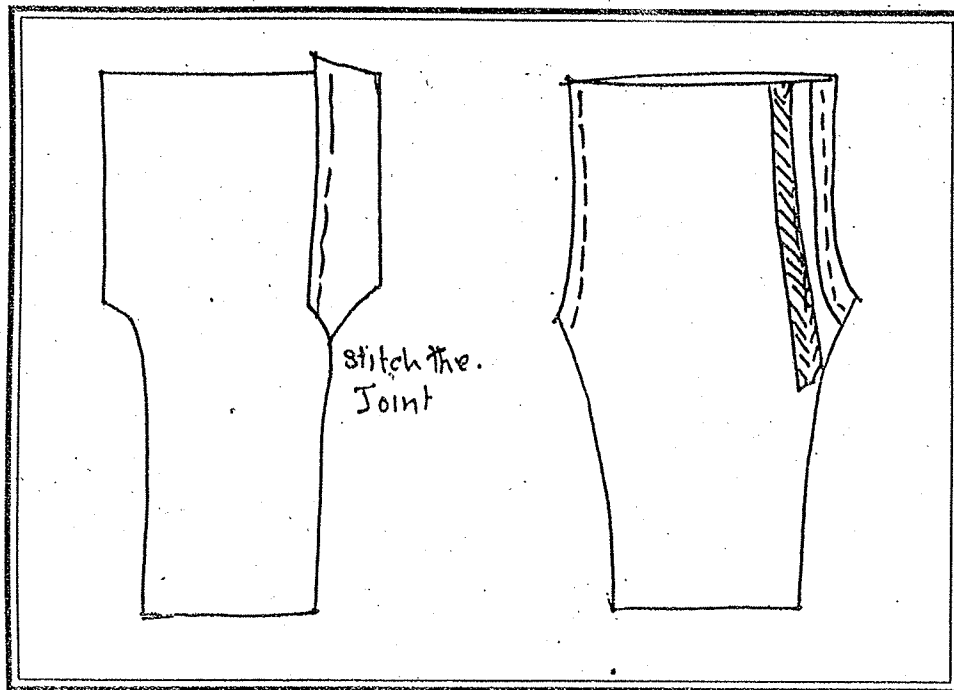
अब हम नाइटसूट का पॉयजामा स्टिच करेंगे। हिप का नाप ३४ इंच तथा लम्बाई ४० इंच लें। सीट की लम्बाई पूरी लम्बाई का  $\frac{9}{8} + 9$  इंच अर्थात्  $40 \div 8 + 9$  इंच =  $5 + 9$  इंच = १४ इंच लें।



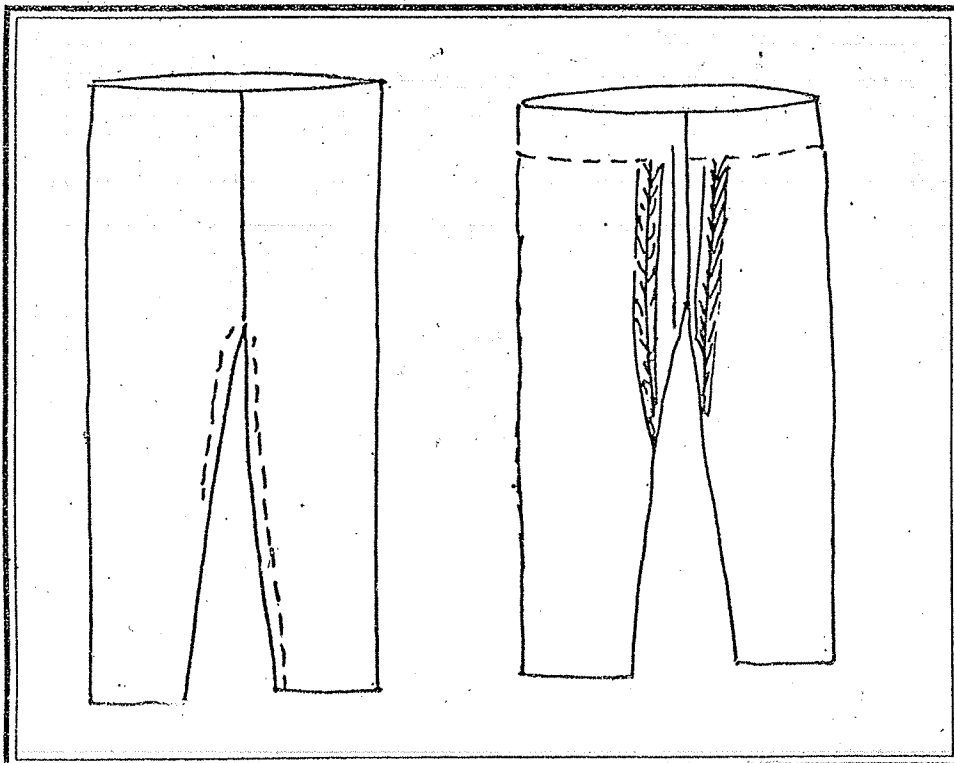
दिखाये तरीके से फैब्रिक को फोल्ड करें। बीच में १ से०मी० जो ओवर लैप अर्थात् एक के ऊपर एक चढ़ाते हुये रखें। अब पायजामे का ड्राफ्ट बनायें और फैब्रिक पर रखें जैसा दिखाया गया है। उलट कर दूसरे लेग के लिए रखें। ड्राफ्ट रखकर ५ इंच स्टिचिंग एलाउन्स की तरह काट लें।



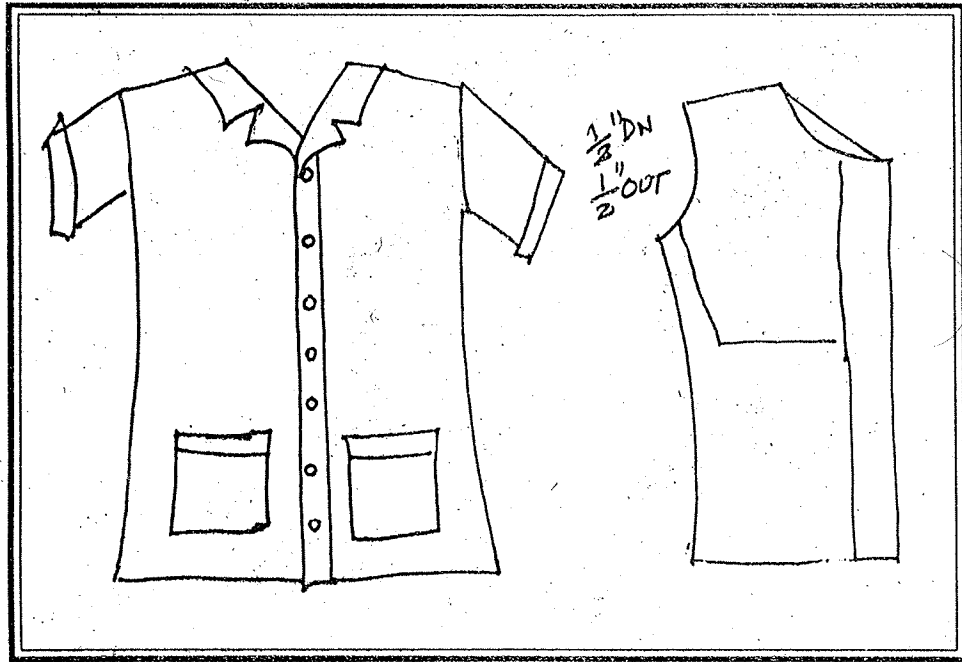
अब पायजामा की सिलाई एक करते हैं। सबसे पहले ऊपर के जोड़ लगा लें।  
अब दोनों टॉगो के बीच के फोर्क सिलाई लगा लें।



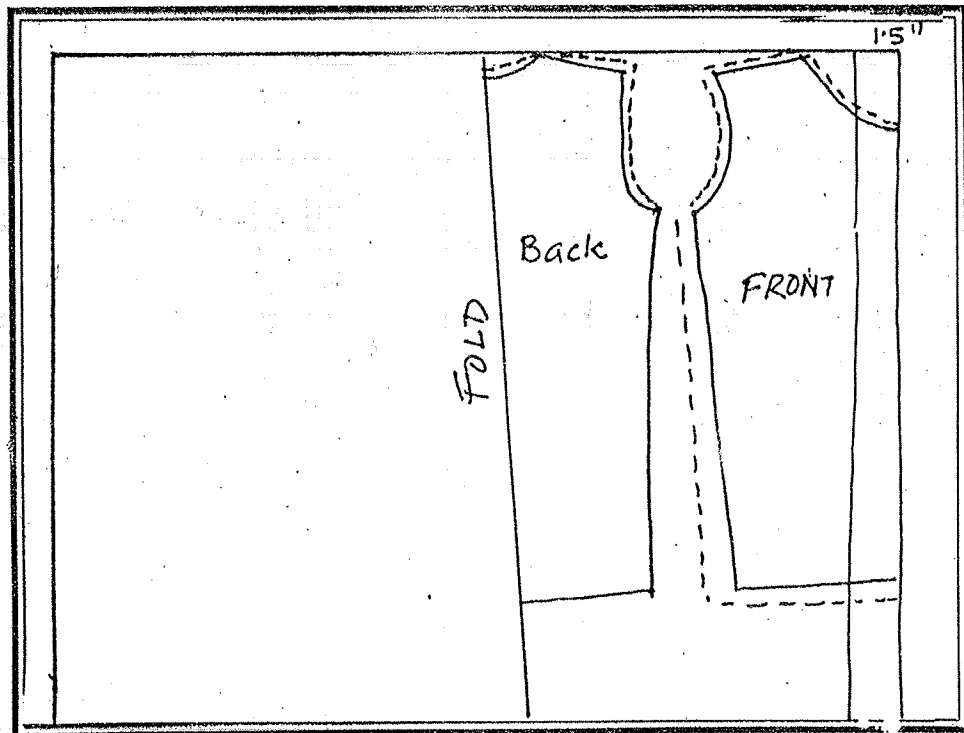
अब अन्दर की सिलाई और नीचे के घेर को फोल्ड कर लें। ऊपर का कमर पर मोड़े और इलास्टिक डाल कर फिनिश करें।



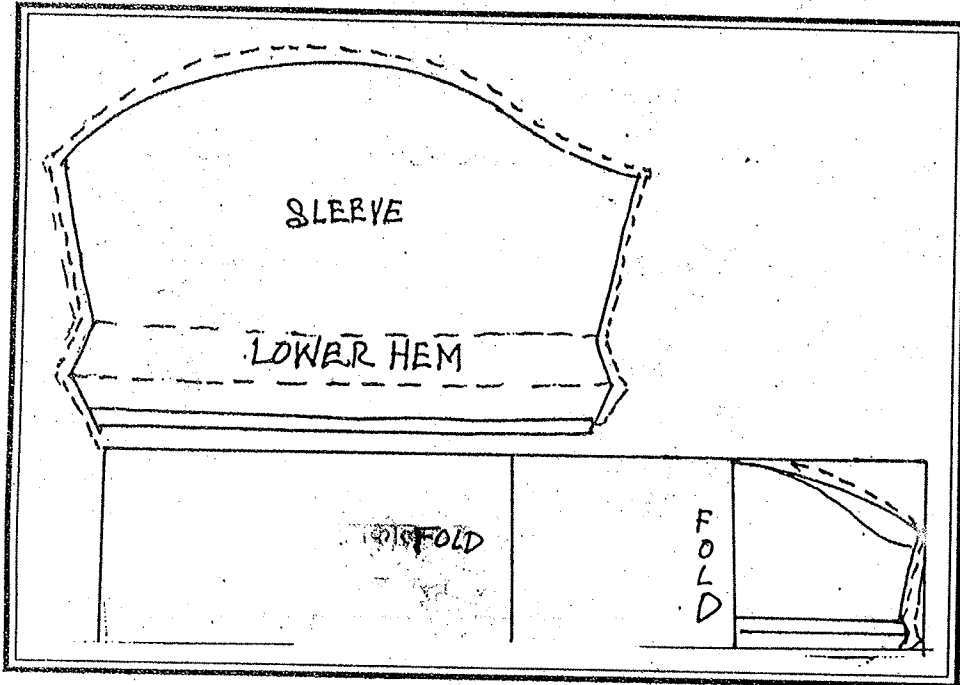
अब नाइटसूट का टॉप नीचे दिये गये डिजाइन के अनुसार बनायें।



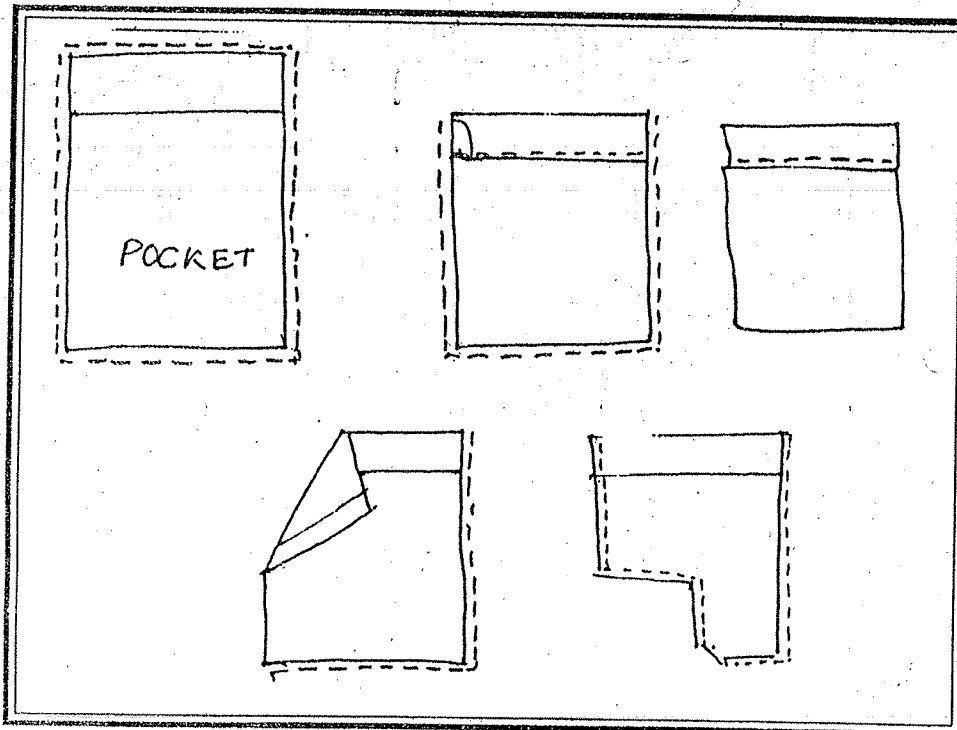
फैब्रिक को फोल्ड करके बेसिक ड्राफ्ट नाइटसूट के टॉप का बनायें। जो डी०एफ०डी०-०३ ब्लॉक में बताया गया है। पीछे और सामने का ड्राफ्ट फैब्रिक पर रखें। २.५ इंच सीम एलाउन्स गले और आर्महोल के लिए १ इंच साइड सीम लाइन पर और नीचे के हेम पर लें। बटन के लिये १.५ इंच अधिक कपड़ा लें।



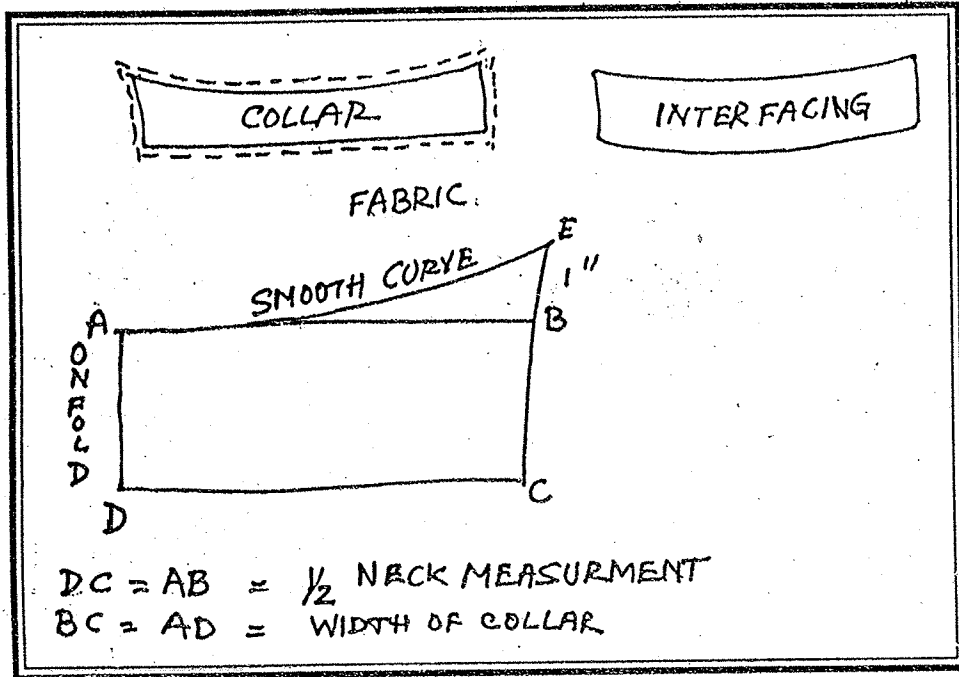
अब स्लीव ड्राफ्ट लेकर फैब्रिक पर रखें। .२५ सीम एलाउन्स आर्महोल पर लें।  
 १ इंच साइड सीम १.५ इंच नीचे के फोल्ड के लिये रखें।



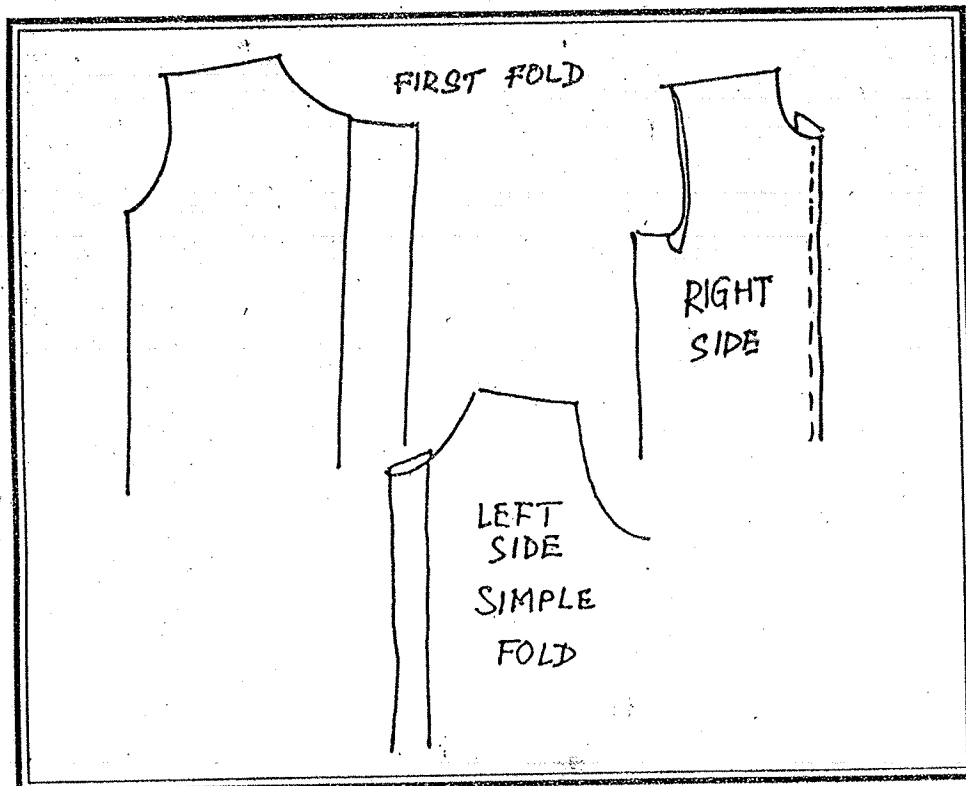
अब पॉकेट का ड्राफ्ट बनायें। फैब्रिक पर रखकर .२५ इंच सीम एलाउन्स चारो ओर लें तथा ऊपर की टॉप ओपनिंग के लिये १.५ इंच का लें।



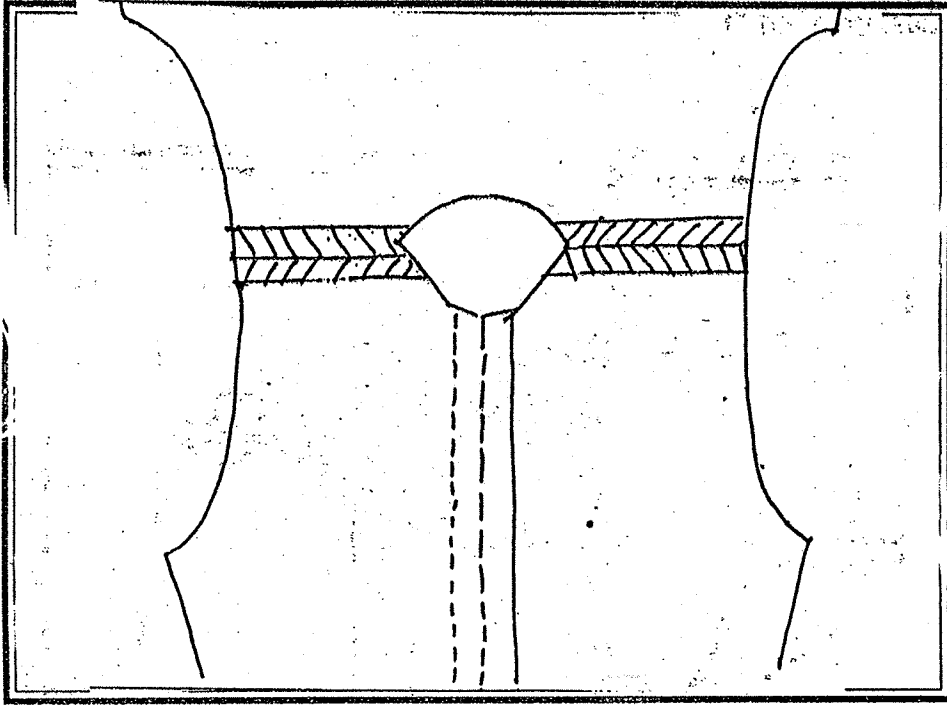
अब कालर का ड्राफ्ट बनायें। इसके लिये दो पीस ५ इंच सीम एलाउन्स चारो तरफ लें।



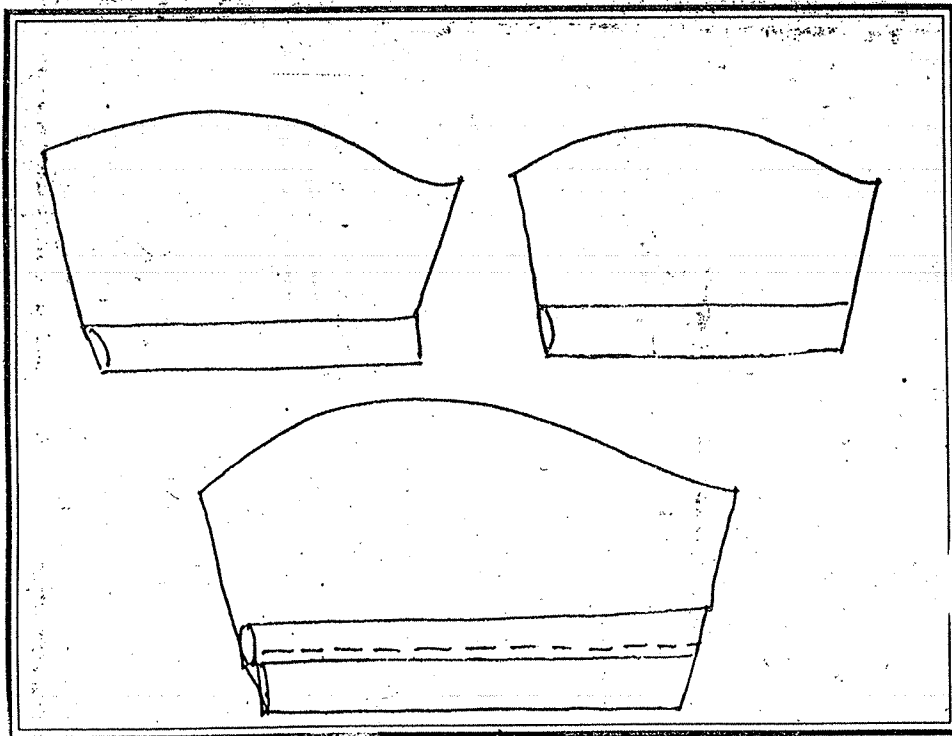
अब सिलाई शुरू करें। सामने की पॉकेट ओपनिंग फोल्ड के लिये सीधी तरफ फोल्ड करके स्टिच करें जैसा दिखाया गया है। उल्टा करें, यह कालर का लेपल यानी नीचे का हिस्सा बनेगा।



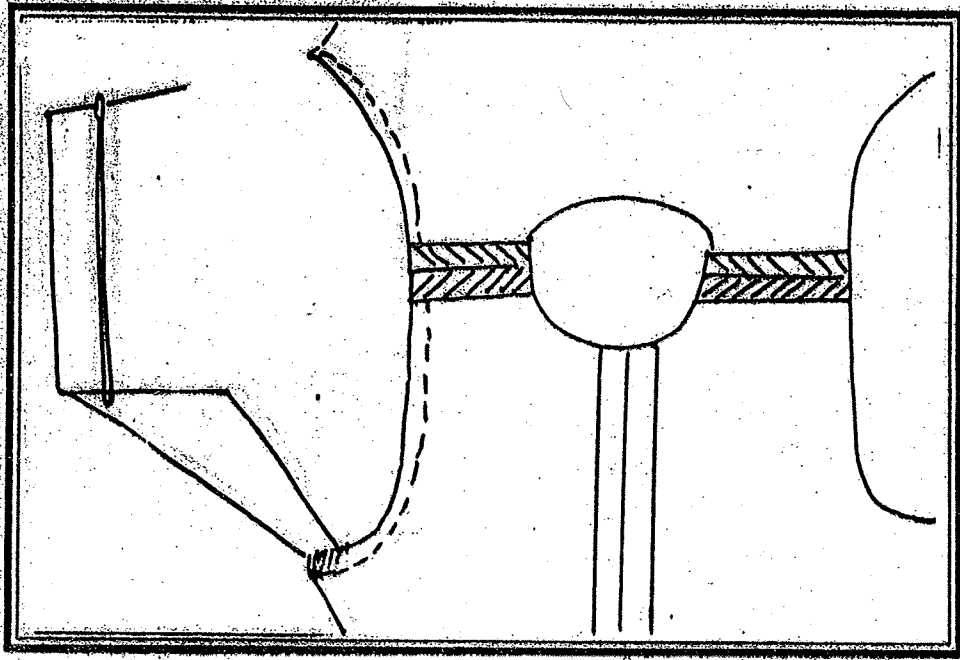
अब सामने और पीछे के कन्धे प्लेन सीम से जोड़े।



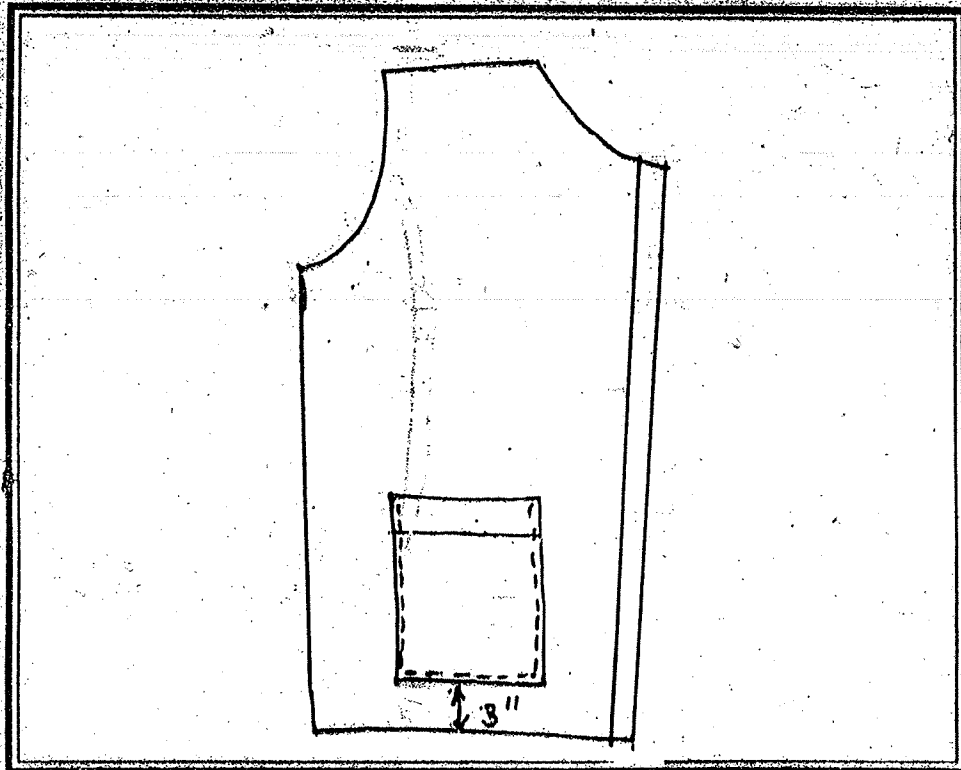
अब हेम लाइन स्लीव की हेम लाइन पर लें। पॉकेट के ऊपर की तरफ ओपनिंग पर हेम करें। १ इंच सीधी तरफ फैब्रिक को फोल्ड करें जैसा कि दिखाया गया है। अब .२५ इंच किनारे से दूरी पर प्लेन सीम लगायें। अब यह ऊपर की तरफ मुड़ी फिनिश होगी।



अब स्लीव जोड़ लें जैसे कि पिछले गारमेंट में जोड़े थे। साइड सीम लगा कर नीचे डबल टॉप स्टिच से पूरा करें।

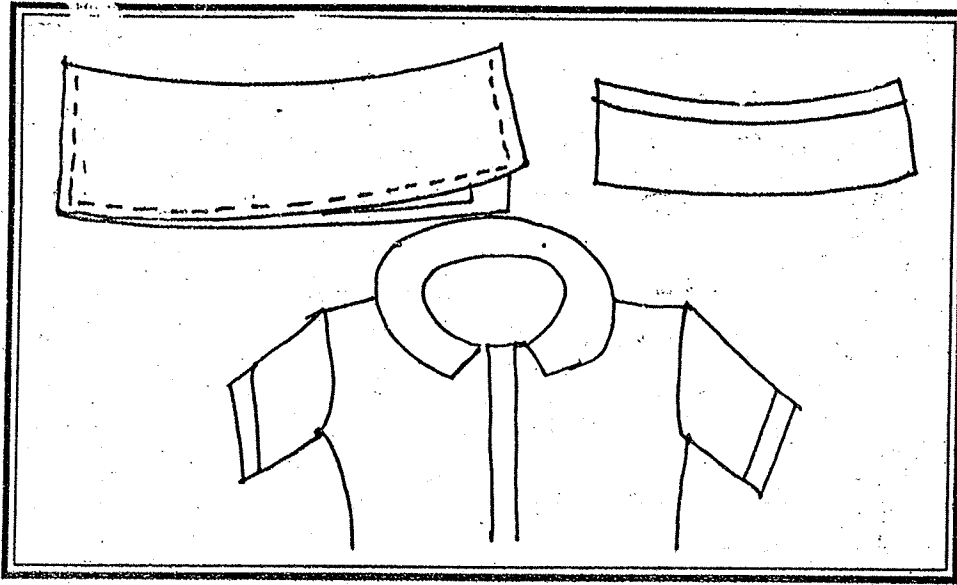


अब पॉकेट को हेम लाइन से ३ इंच ऊपर रखकर टॉप स्टिच से लगा लें।





अब कालर के बाहरी किनारा स्टिच करें। कालर को पलट लें। कालर को टॉप से जोड़ लें, ठीक उसी तरह जैसे चाइनीज बैंड लगाया था।

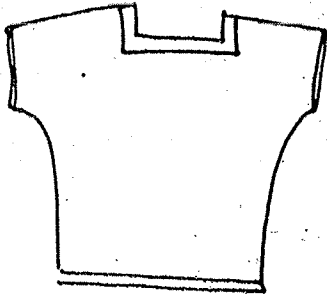


अभ्यास-

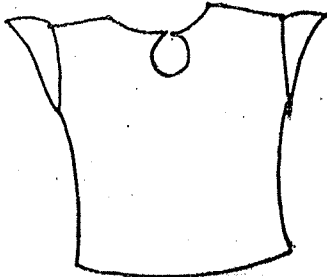
१- पाठ्य मे दिये गये डिजाइन बनाकर गारमेन्ट स्टिच करें।

१०.४ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

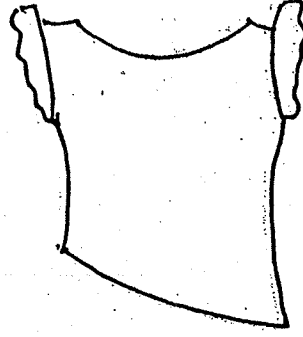
प्रश्न-१ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



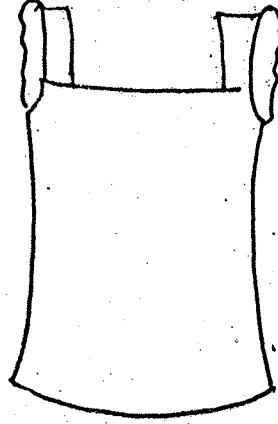
प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



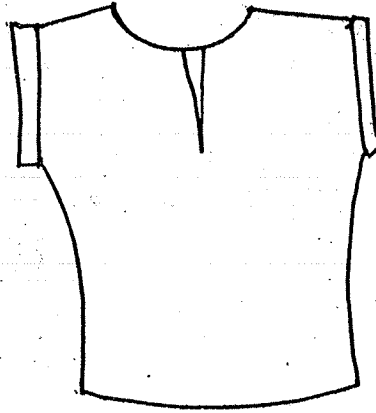
प्रश्न-३ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



१०.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के०आर० जारापकर पब्लिकेशन,  
नवनीत प्रकाशन इण्डिया लिमिटेड।

संरचना

१.१ यूनिट प्रस्तावना

१.२ उद्देश्य

१.३ लोवर तथा शर्ट

१.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

१.५ स्वाध्ययन हेतु

१.१ यूनिट प्रस्तावना:-

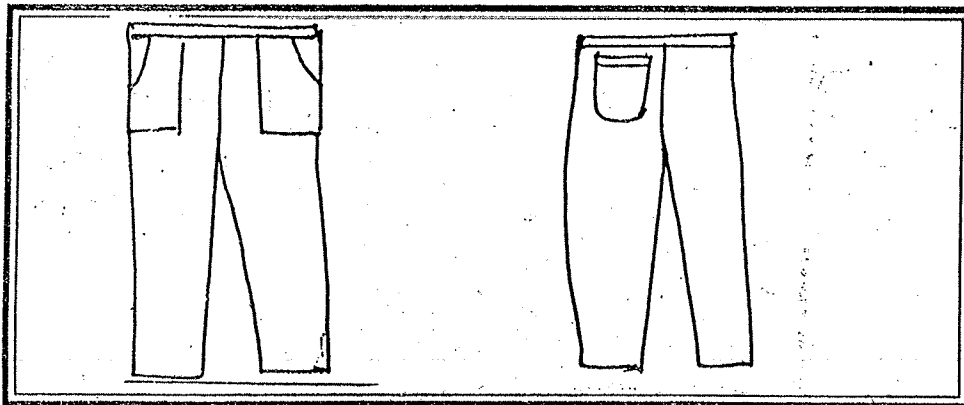
इस यूनिट में गारमेन्ट बनाने के बारे में बताया गया है तथा इसमें यह भी बताया गया है कि लोवर व शर्ट में ड्रापिंग, कटिंग, स्टिचिंग तथा फिनिशिंग कैसे की जाती है।

१.२ उद्देश्य:-

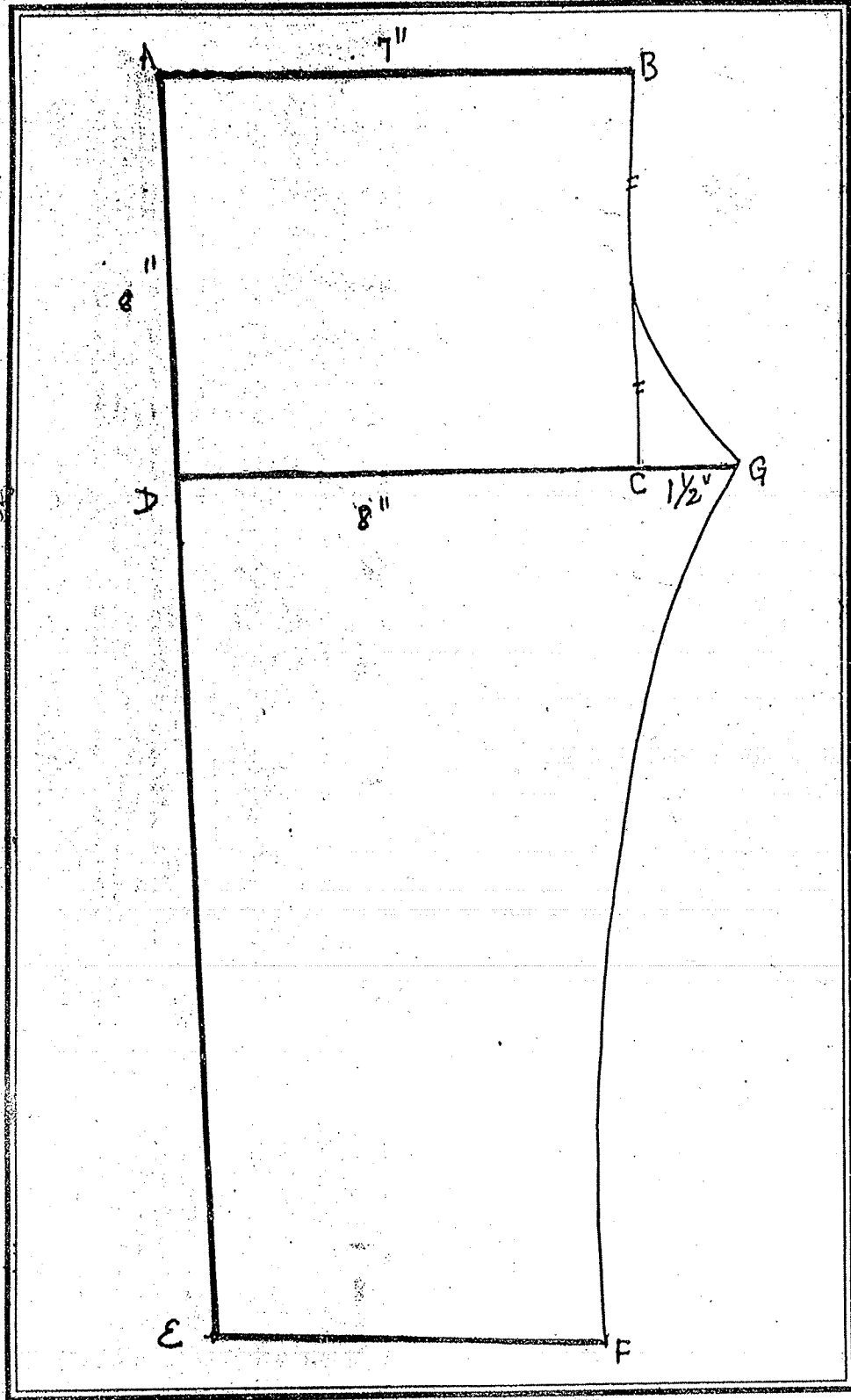
एक डिजाइनर के लिये यह जानना काफी महत्वपूर्ण है कि उसके द्वारा बनाया गया डिजाइन कैसा लगेगा। इस यूनिट में बच्चों के लोवर तथा शर्ट बनाने के बेसिक पक्षों के बारे में बताया गया है।

१.३ लोवर और शर्ट:-

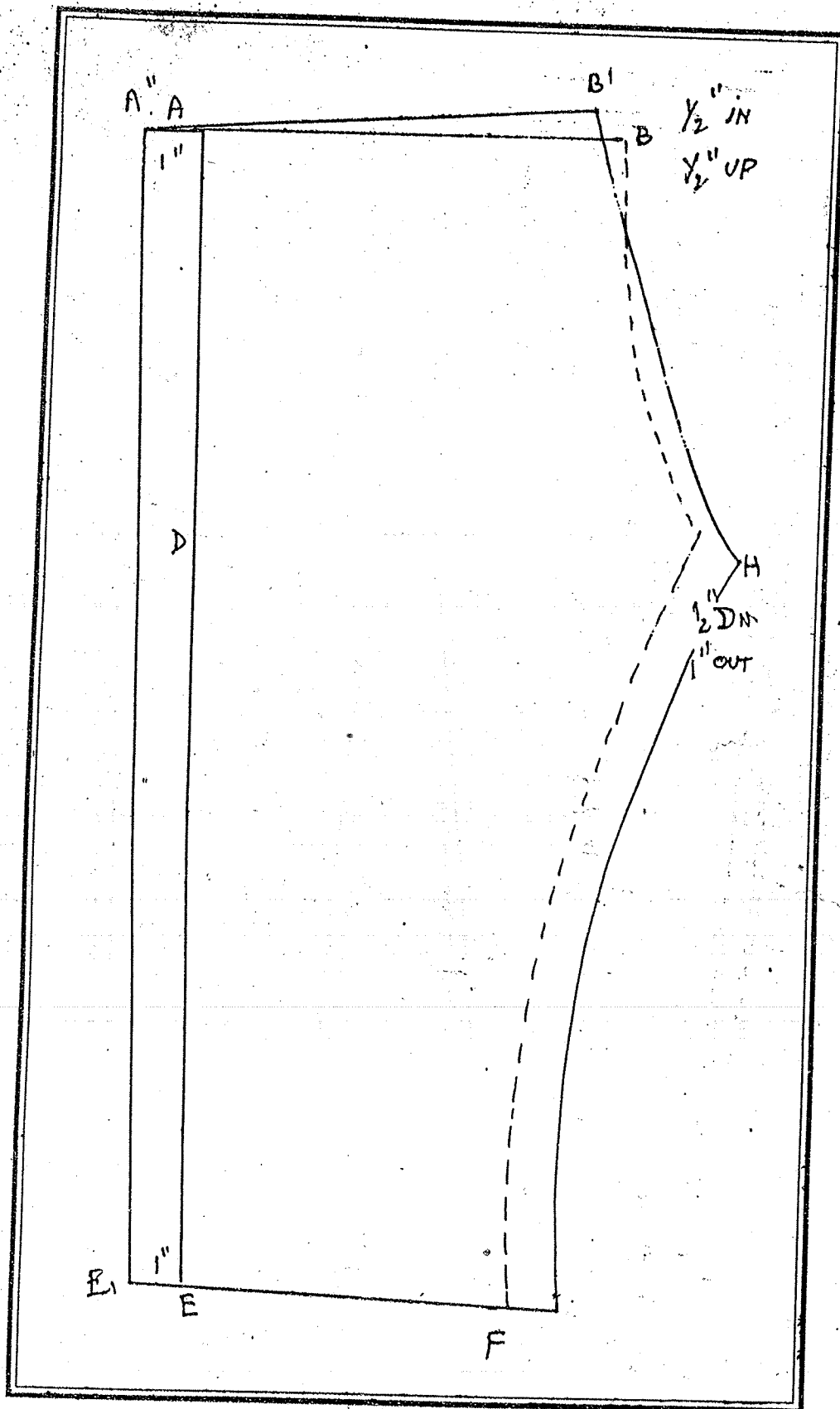
अब हम एक १२ वर्ष के बच्चे के लिए लोवर का ड्राफ्ट डिजाइन करके स्टिच करते हैं। नाप हैं- लम्बाई ३० इंच, हिप्स २८ इंच और कमर २४ इंच।



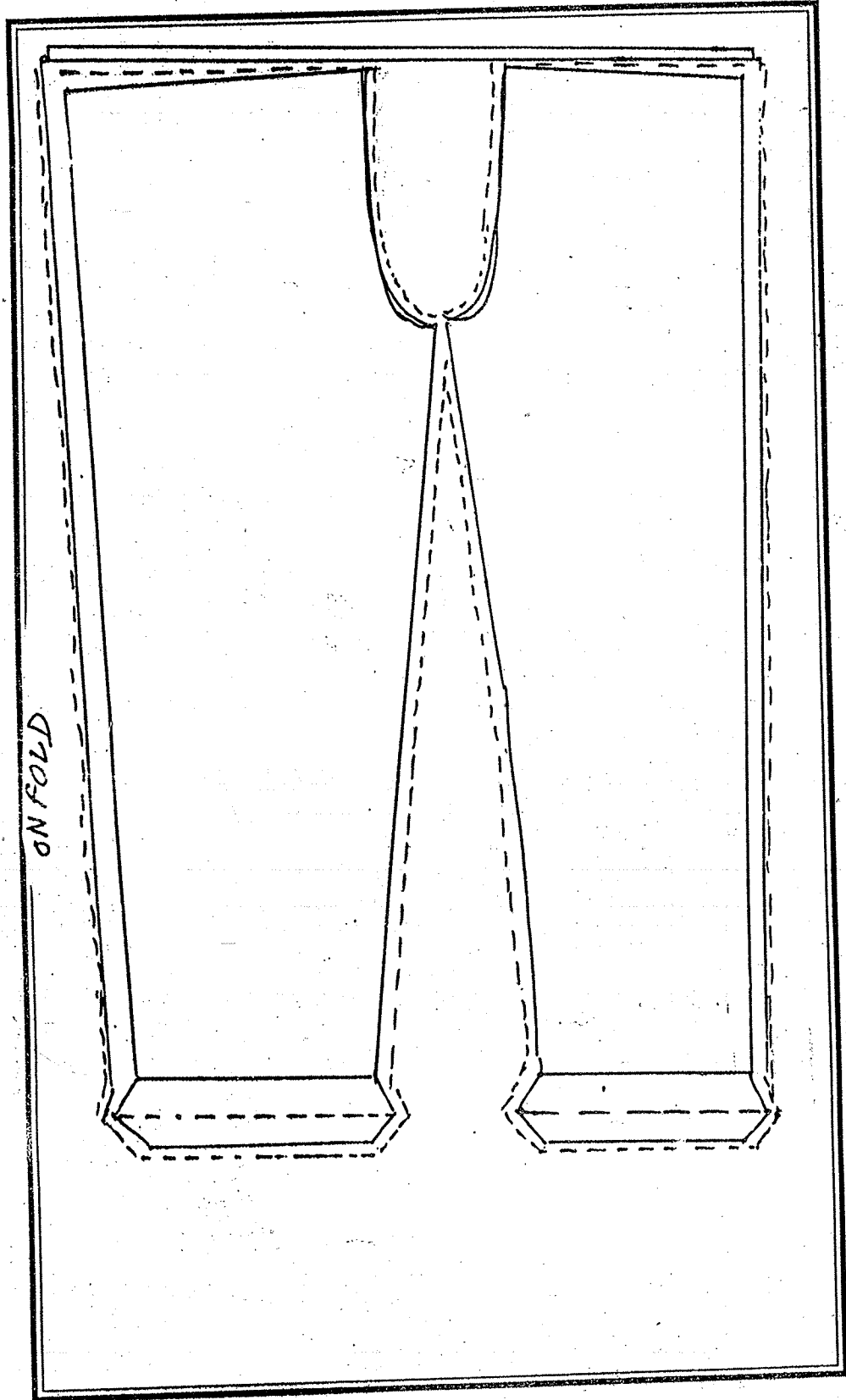
सर्वप्रथम पैन्ट का बेसिक डिजाइन बनायेंगे। फोर्क की लम्बाई हिप का  $9/8 = 7$  इंच, कमर की नाप  $9/8 + 9$  इंच जैसे  $28/8 + 9 = 7$  इंच होगी। हिप का नाप हिप का  $9/8 + 9$  इंच = 6 इंच होगी। अब पीछे ड्राफ्ट नीचे दिये गये डाईग्राम के अनुसार बनायें।



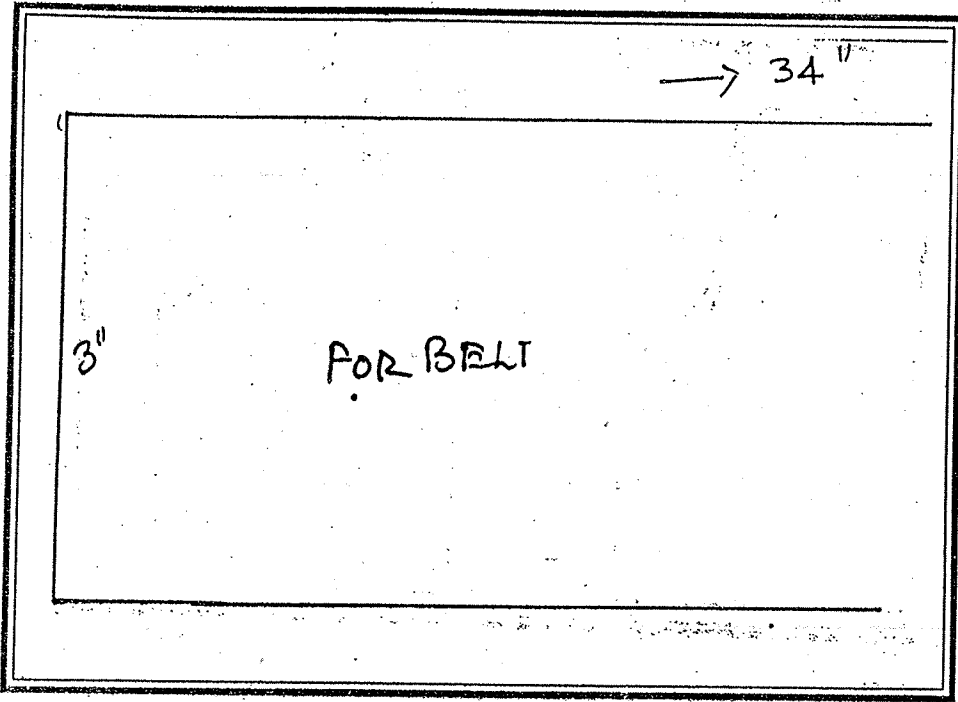
अब पीछे ड्राफ्ट के लिये सामने के ड्राफ्ट को ट्रेस करके नीचे दिये गये ड्राफ्ट के अनुसार बदलाव करें। आपके लोवर का बैक ड्राफ्ट तैयार हो जायेगा।



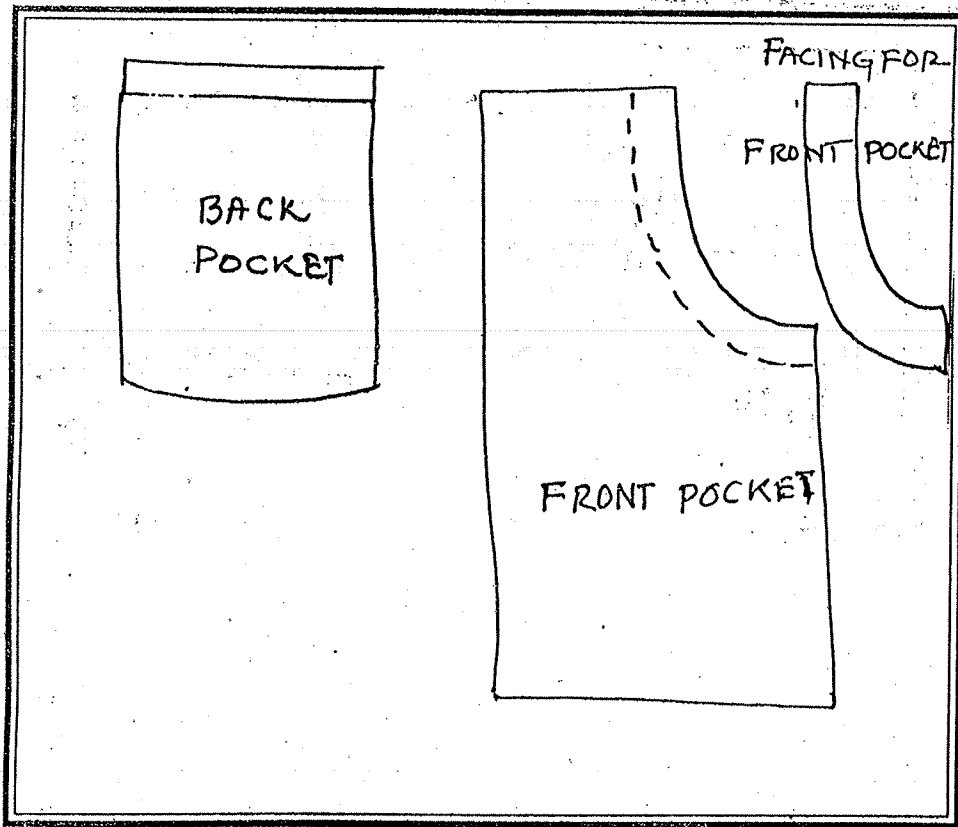
अब फैब्रिक लेकर नीचे दिखाये गये ड्राफ्ट के अनुसार फोल्ड करके फैलायें।  
सामने और पीछे का ड्राफ्ट रखें। १ इंच अधिक पीछे के ड्राफ्ट में ढील के लिये रखें।  
१/२ इंच स्टिचिंग एलाउन्स चारो तरफ रखकर पैटर्न काट लें।



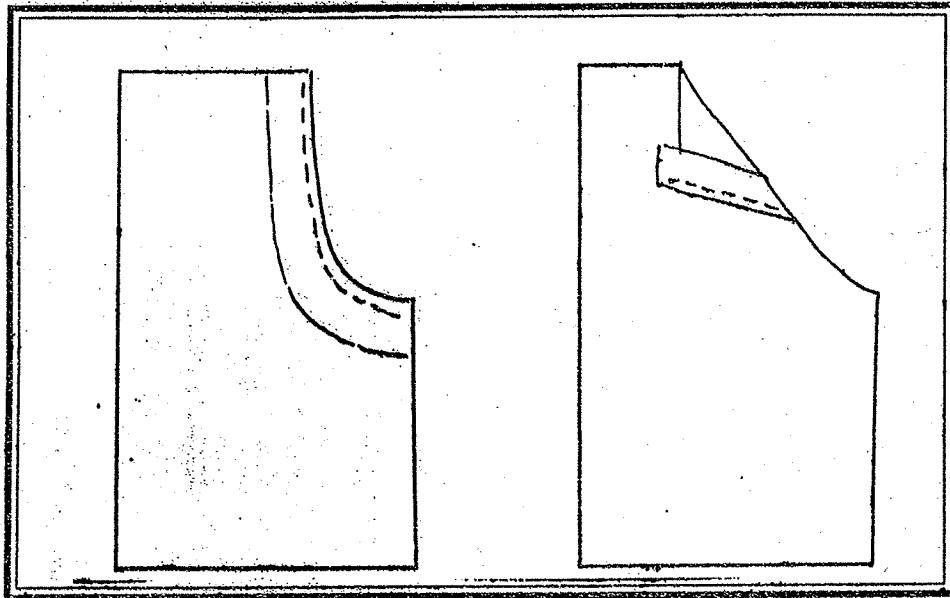
एक बेल्ट ३४ इंच गुणा ३ इंच कपड़े पर काटें।



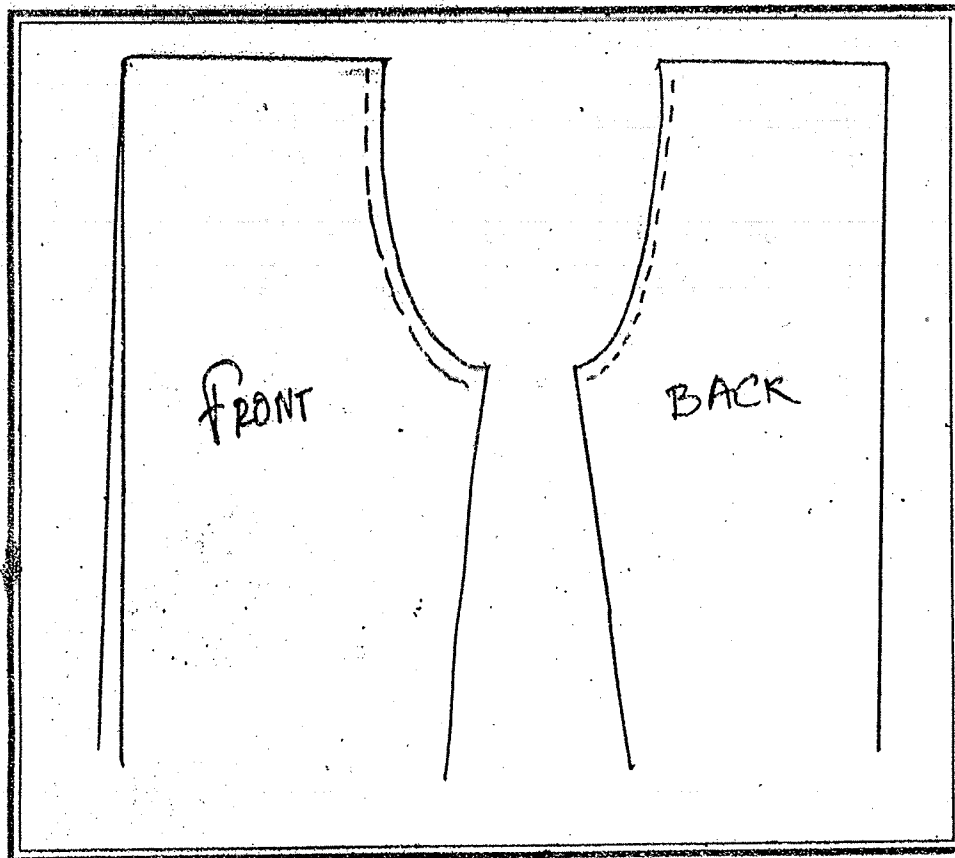
बैक के लिये पैच पौकेट काटें।



सामने की साइड पॉकेट के लिये कपड़ा काटें, जिसकी शेष नीचे दी गई पॉकेट की १/२ इंच स्टिचिंग एलाउन्स चारों ओर लेकर काटें।

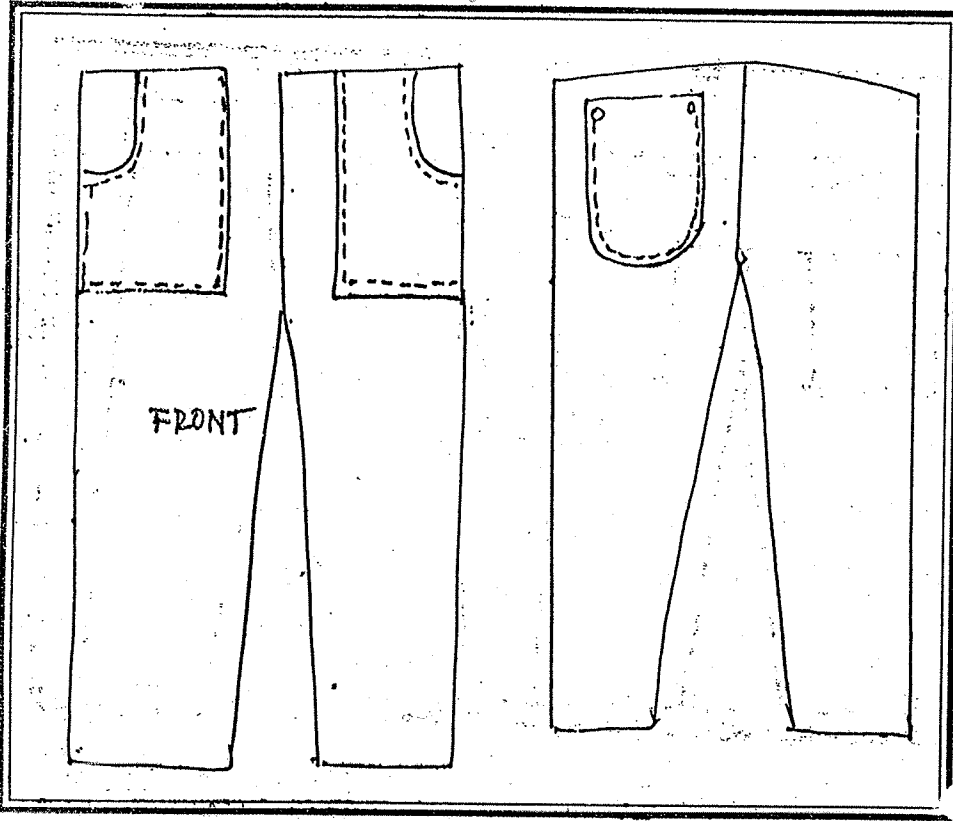


अब स्टिचिंग शुरू करेंगे। सबसे पहले सामने की फ़ोर्क लाइन सामने के दोनों पीस और पीछे के दोनों पीस मिलाकर जोड़े, जो कि लाइन पर मशीन करें।

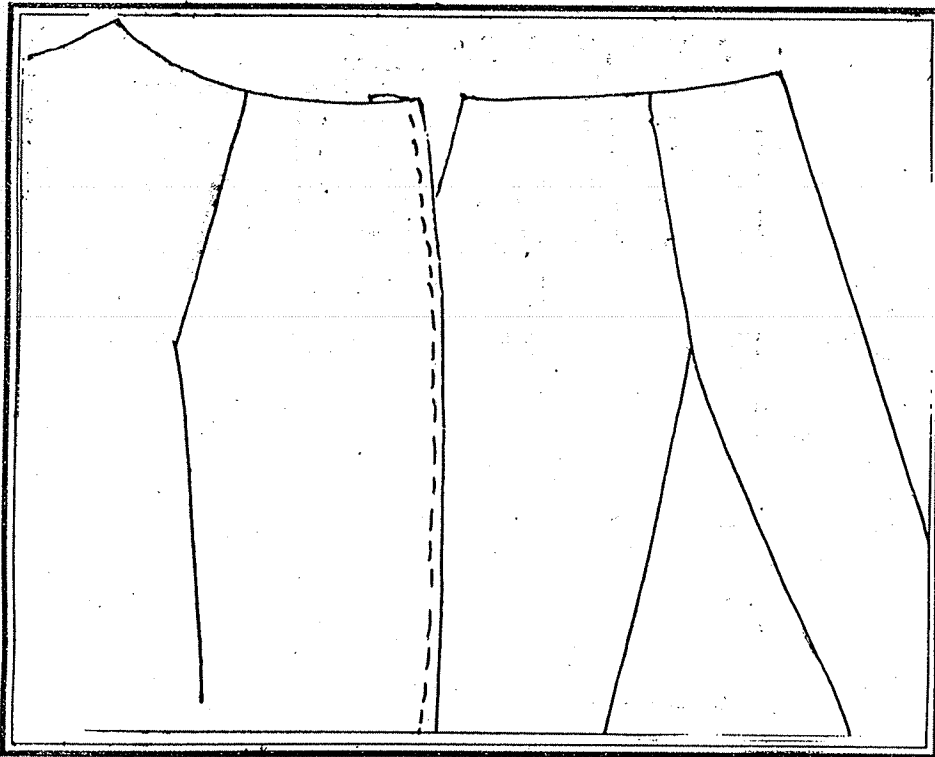




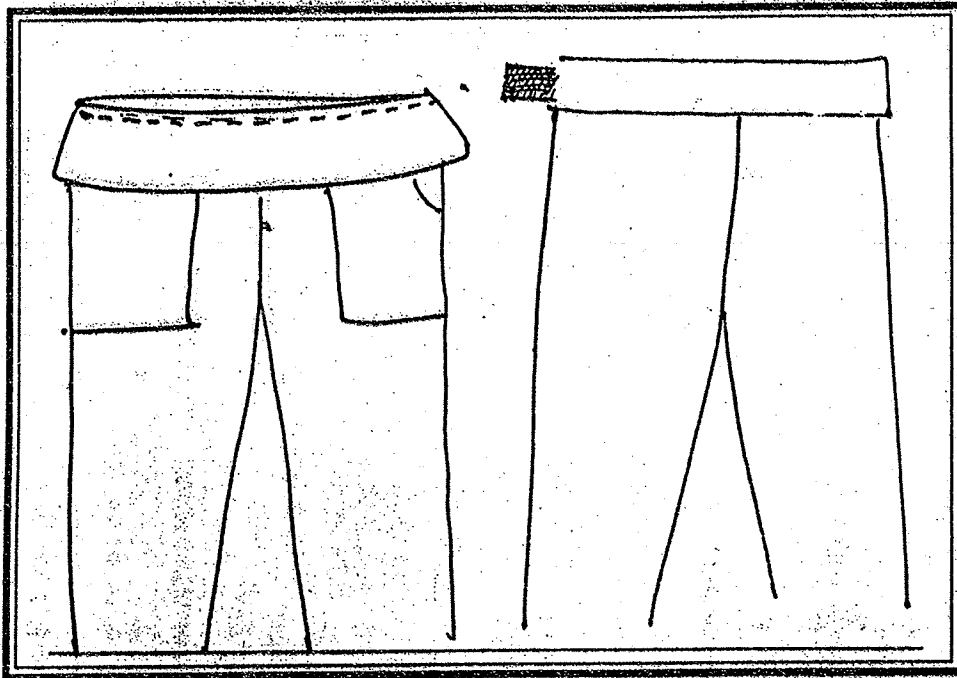
सामने की और पीछे के पैच पॉकेट को स्टिच कर लें।



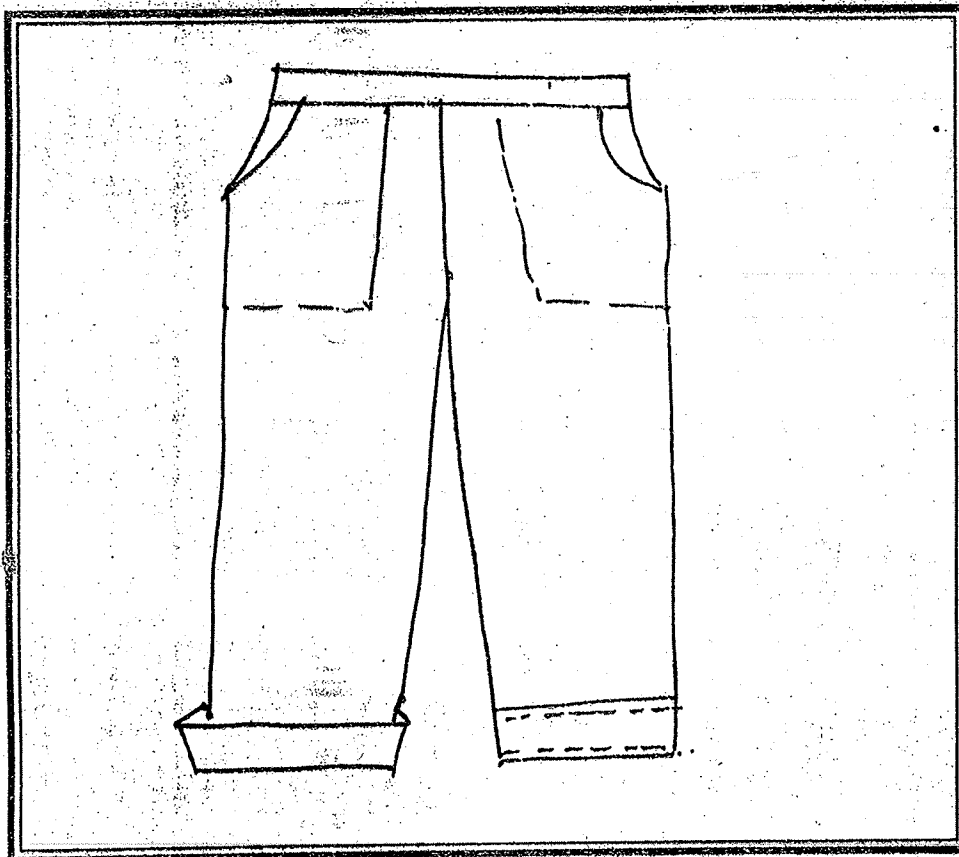
अब साइड सीम जोड़कर टॉप स्टिचिंग करें।



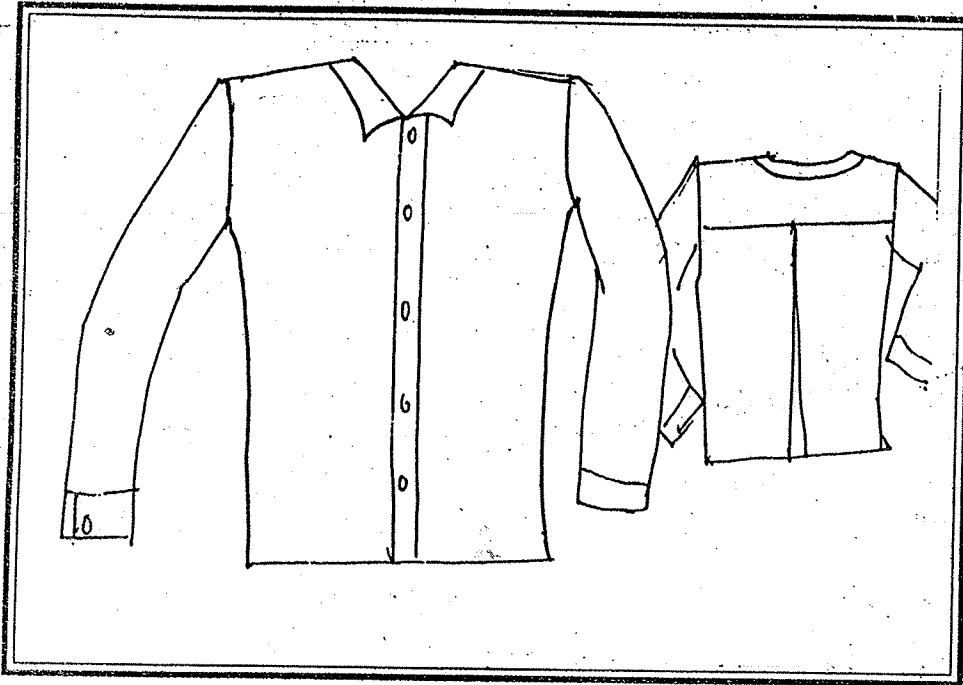
अब टॉप बेल्ट जोड़ लें और इलास्टिक डाल दें।



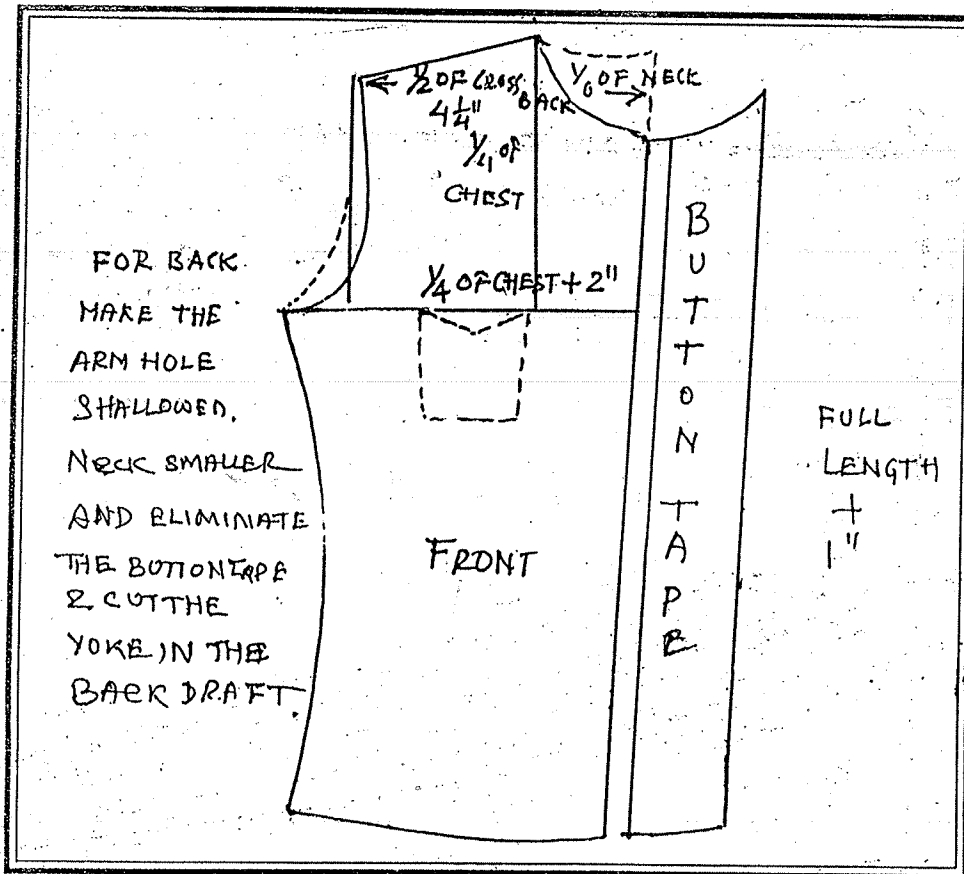
अब अन्दर की टॉग की लम्बाई दोनों मिलाकर सिलाई कर लें। टॉप स्टिचिंग करें। नीचे की हेम लाइन पर डबल टॉप स्टिचिंग करें।



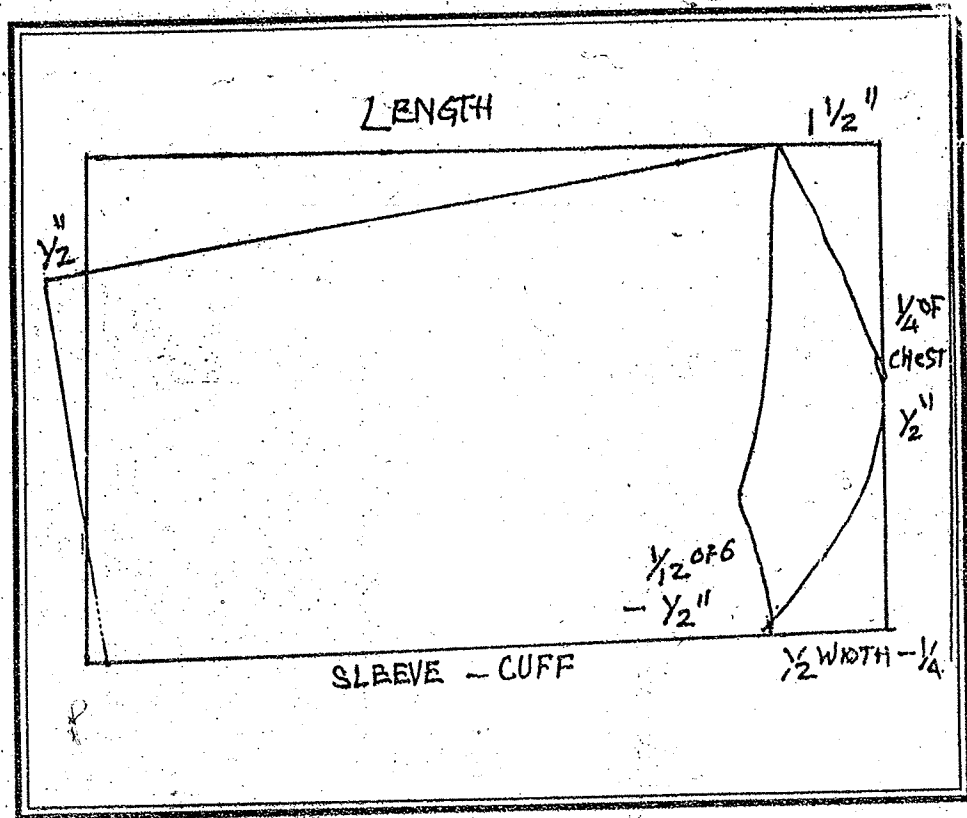
अब नीचे दिये गये शर्ट की डिजाइन को स्टिच करेंगे



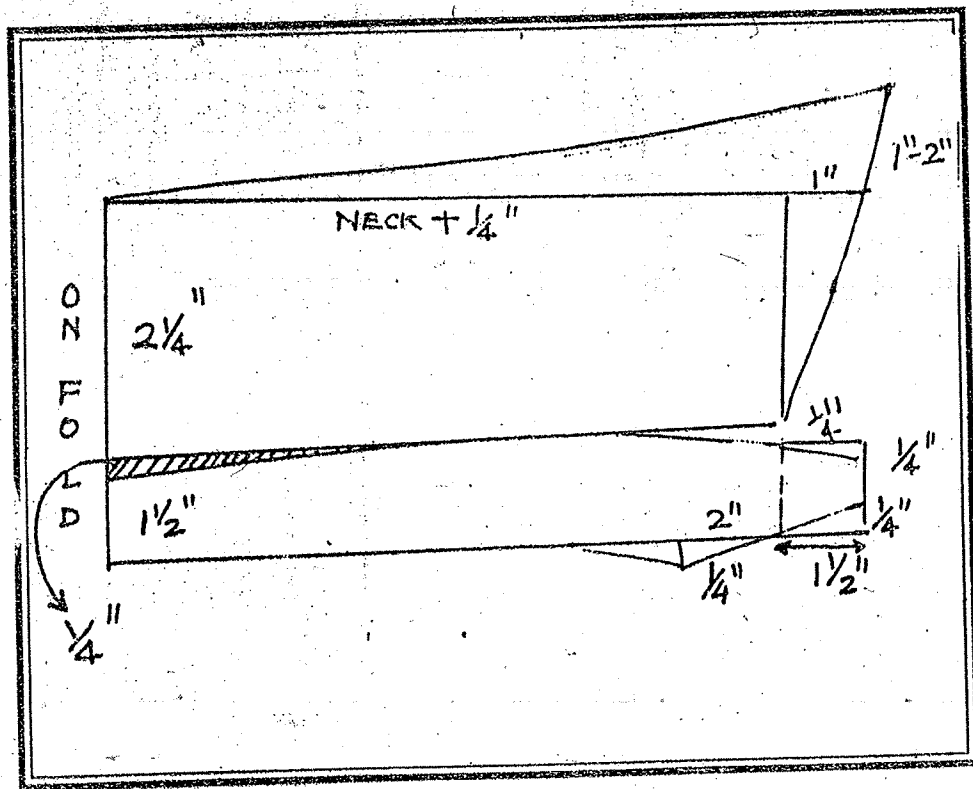
ड्राफ्ट के लिये नीचे दिये पैटर्न को बनायें।



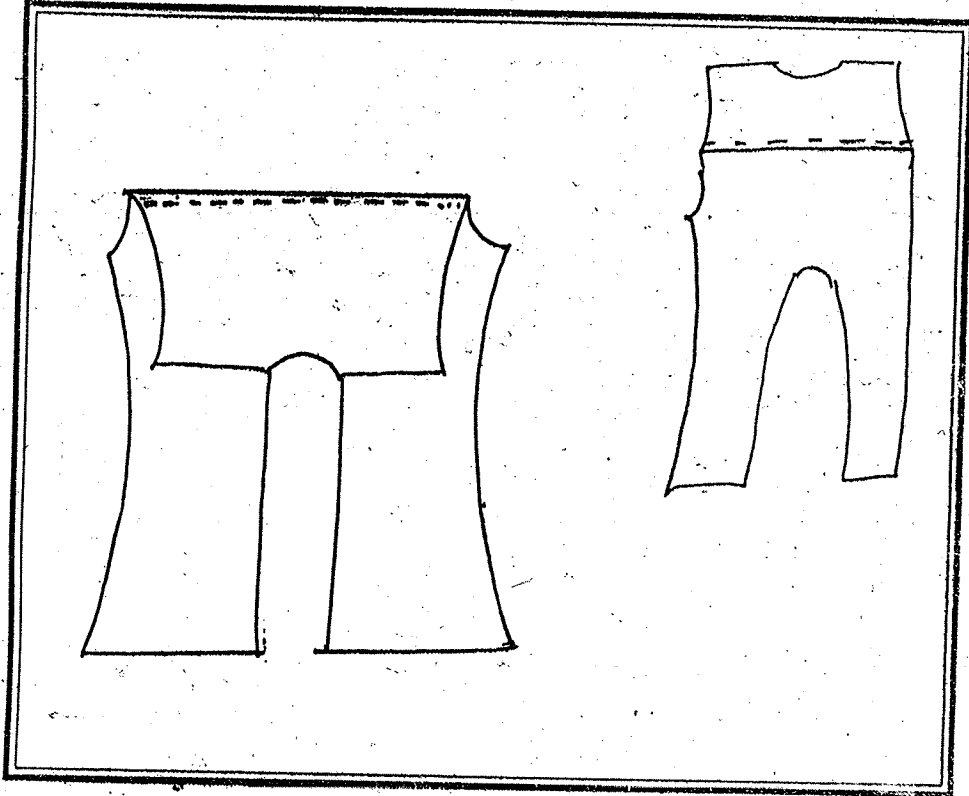
स्लीव का ड्राफ्ट नीचे दिये गये पैटर्न पर बनायें।



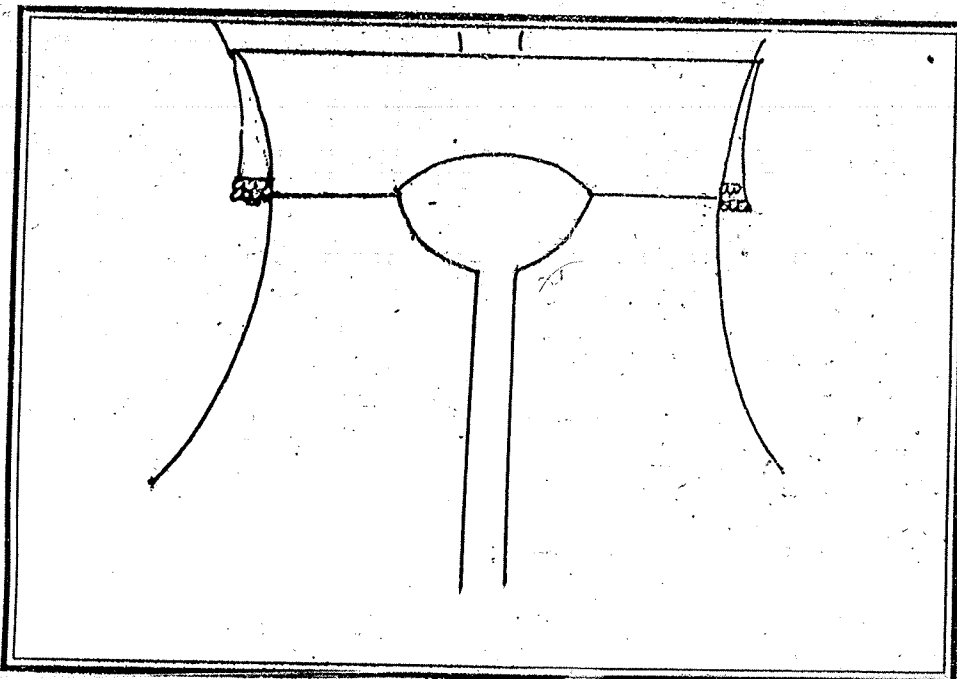
कालर का ड्राफ्ट इस प्रकार बनायें।



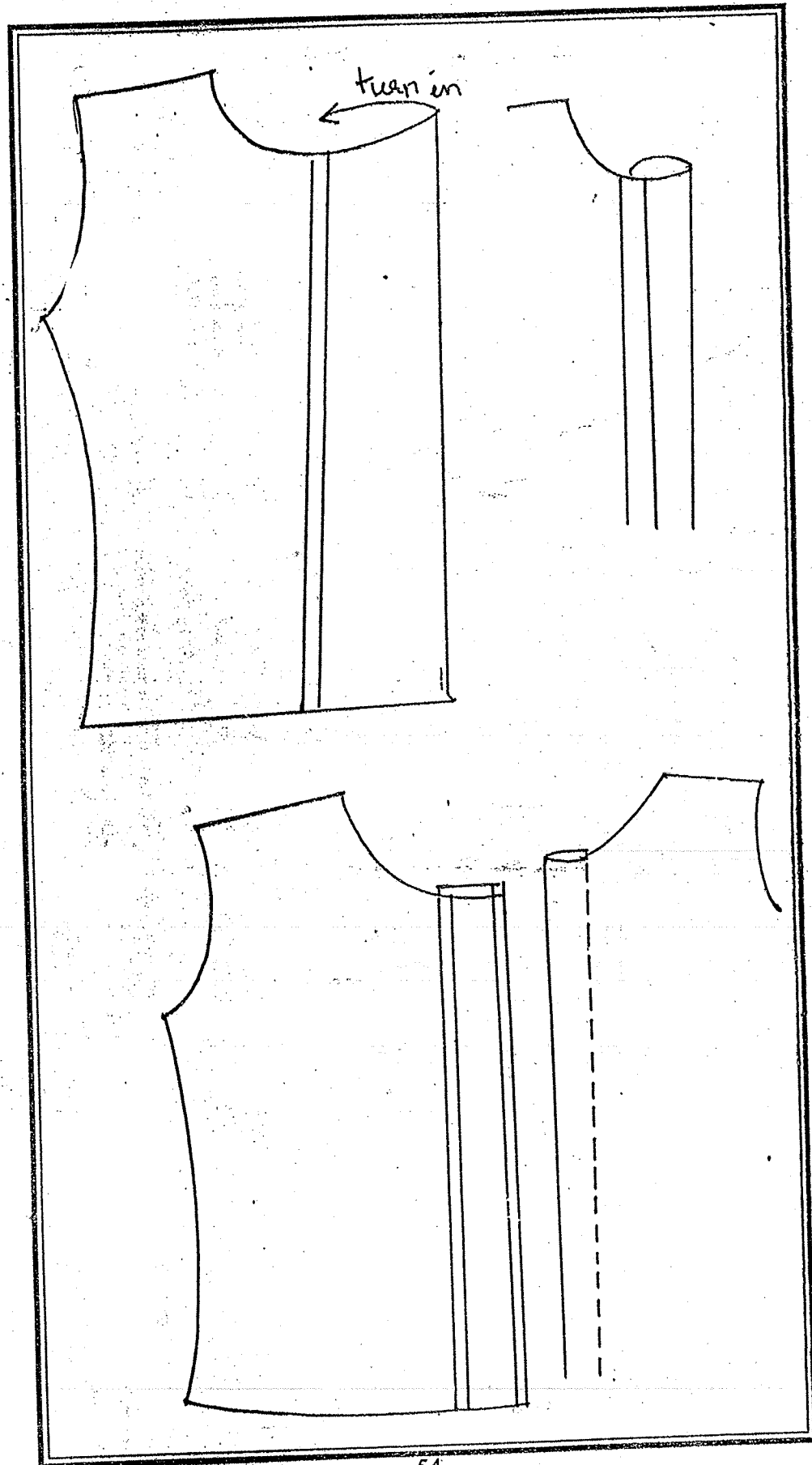
अब स्टिचिंग में सबसे पहले बैक में योक इस तरह जोड़े कि सिलाई अन्दर चली जाये।



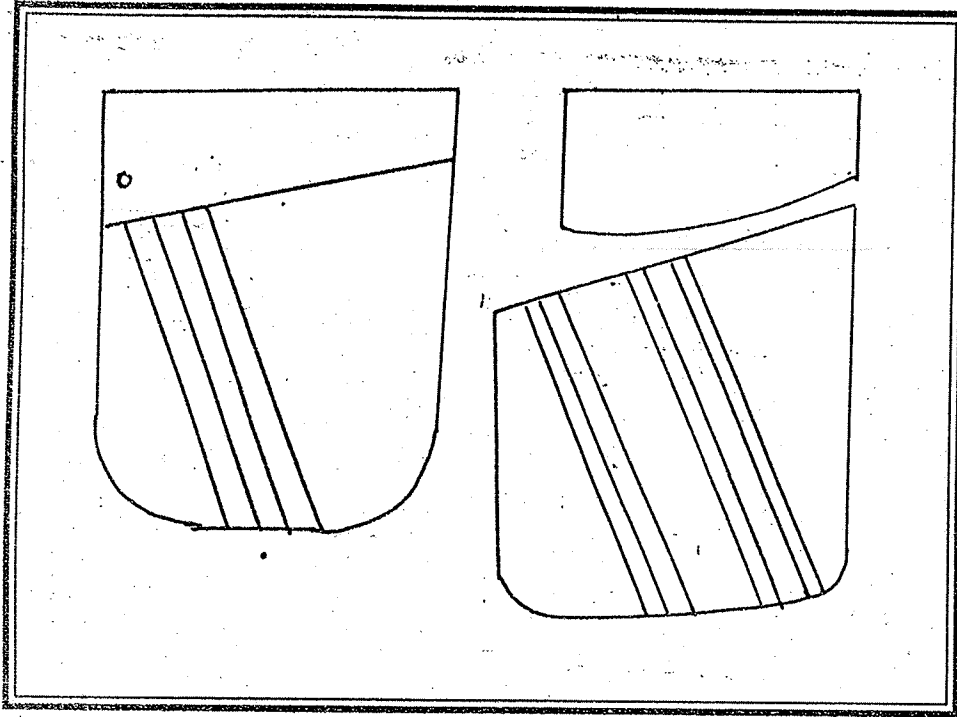
अब पीछे योक से सामने के कन्धे इस तरह जोड़े कि सिलाई दिखाई ना दे।



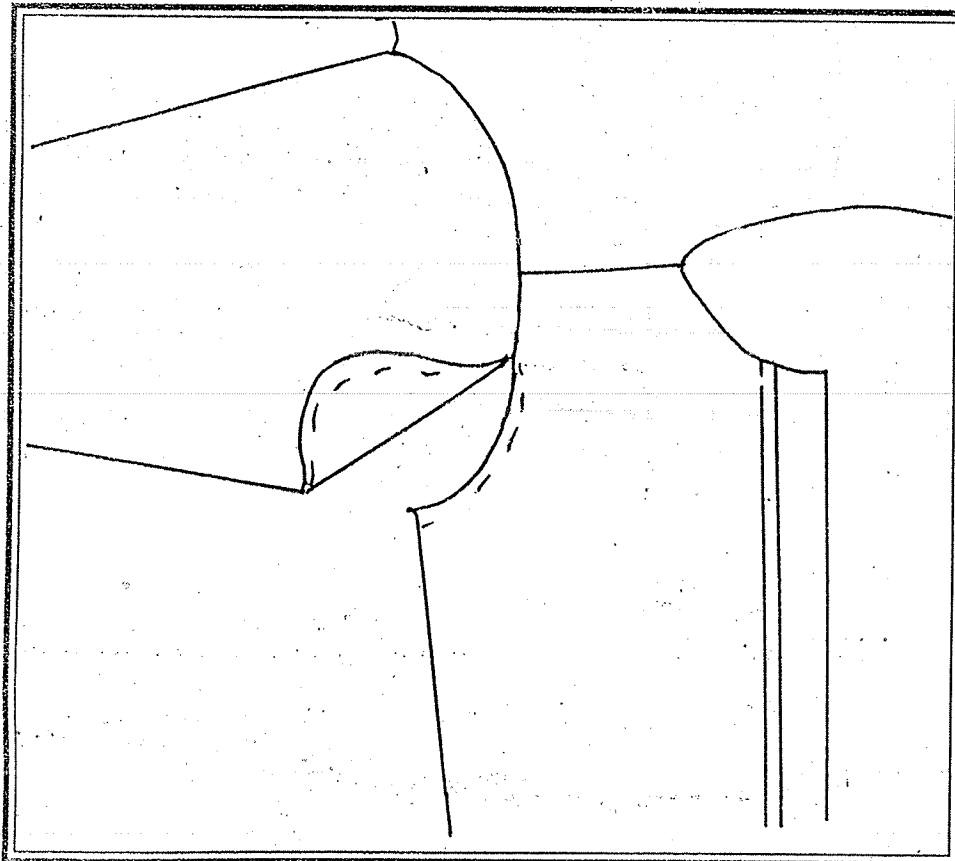
सामने की बटन टेप नीचे दिये गये तरीके से बनायें।



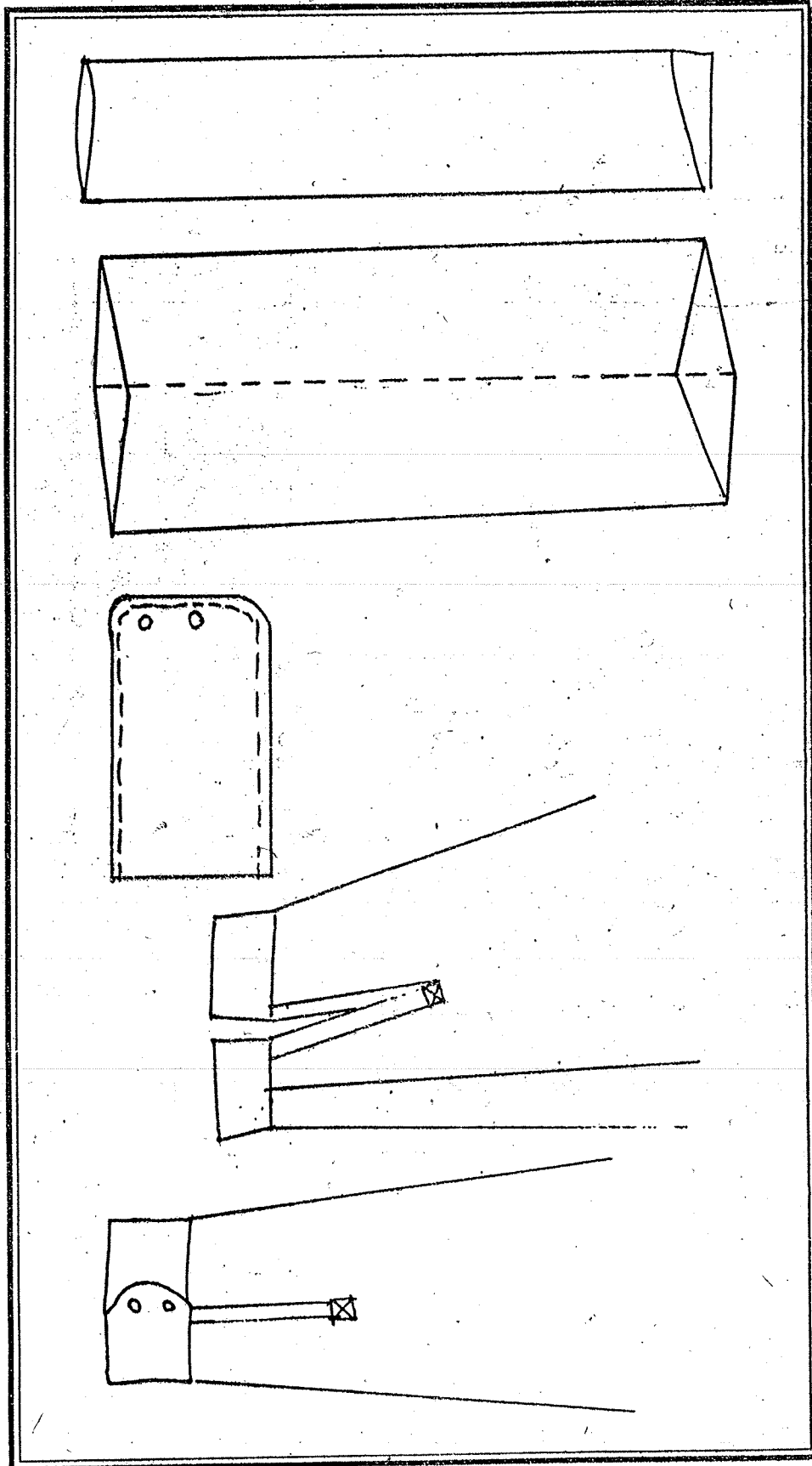
अब पैच पॉकेट बनायें, स्लीव लगाकर साइड से सिलाई करें।



अब स्लीव में जोड़ दें और सिलाई करें।

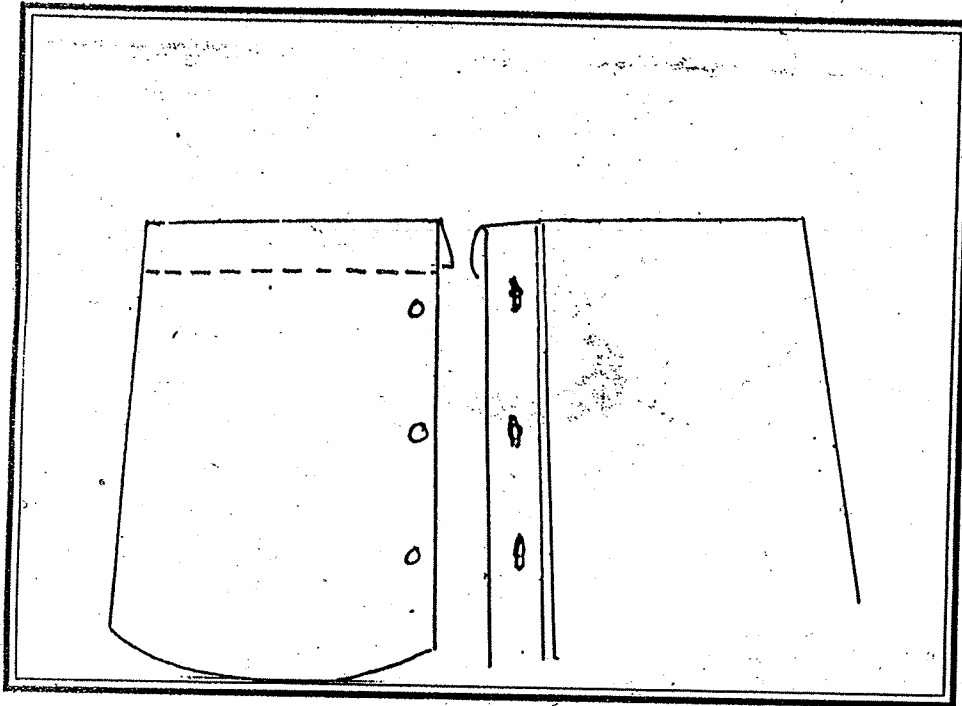


अब कफ तैयार करं तथा कफ को आस्तीन से जोड़ दें।

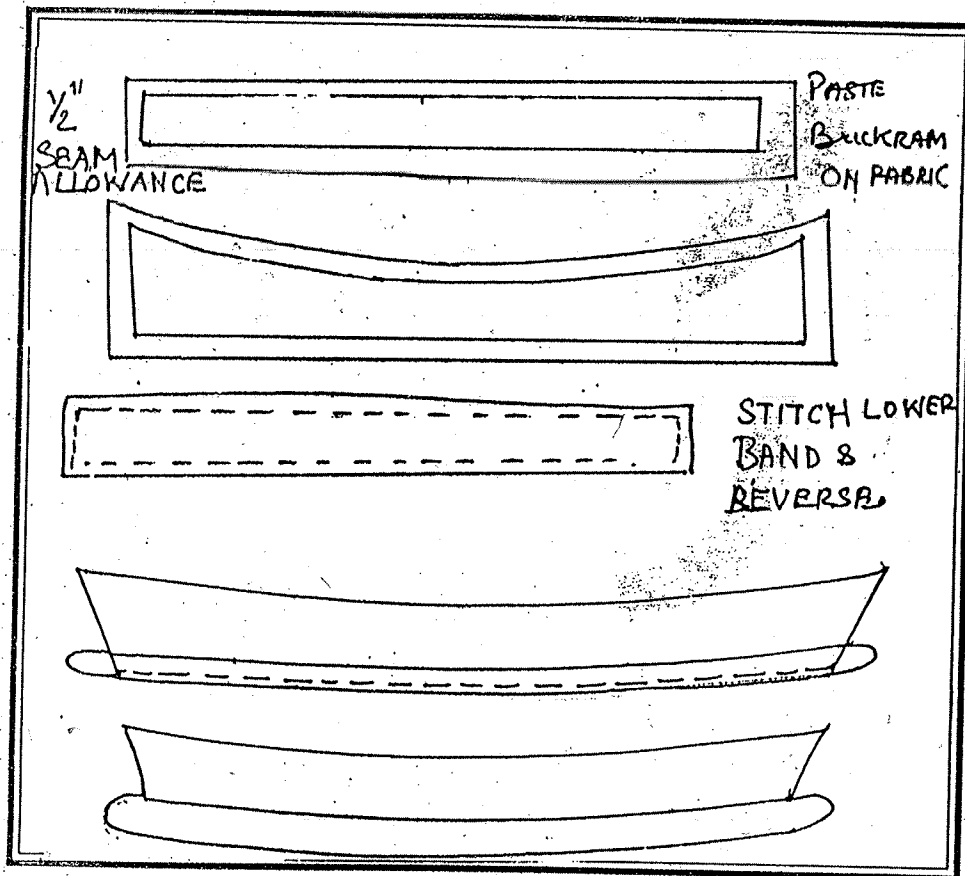




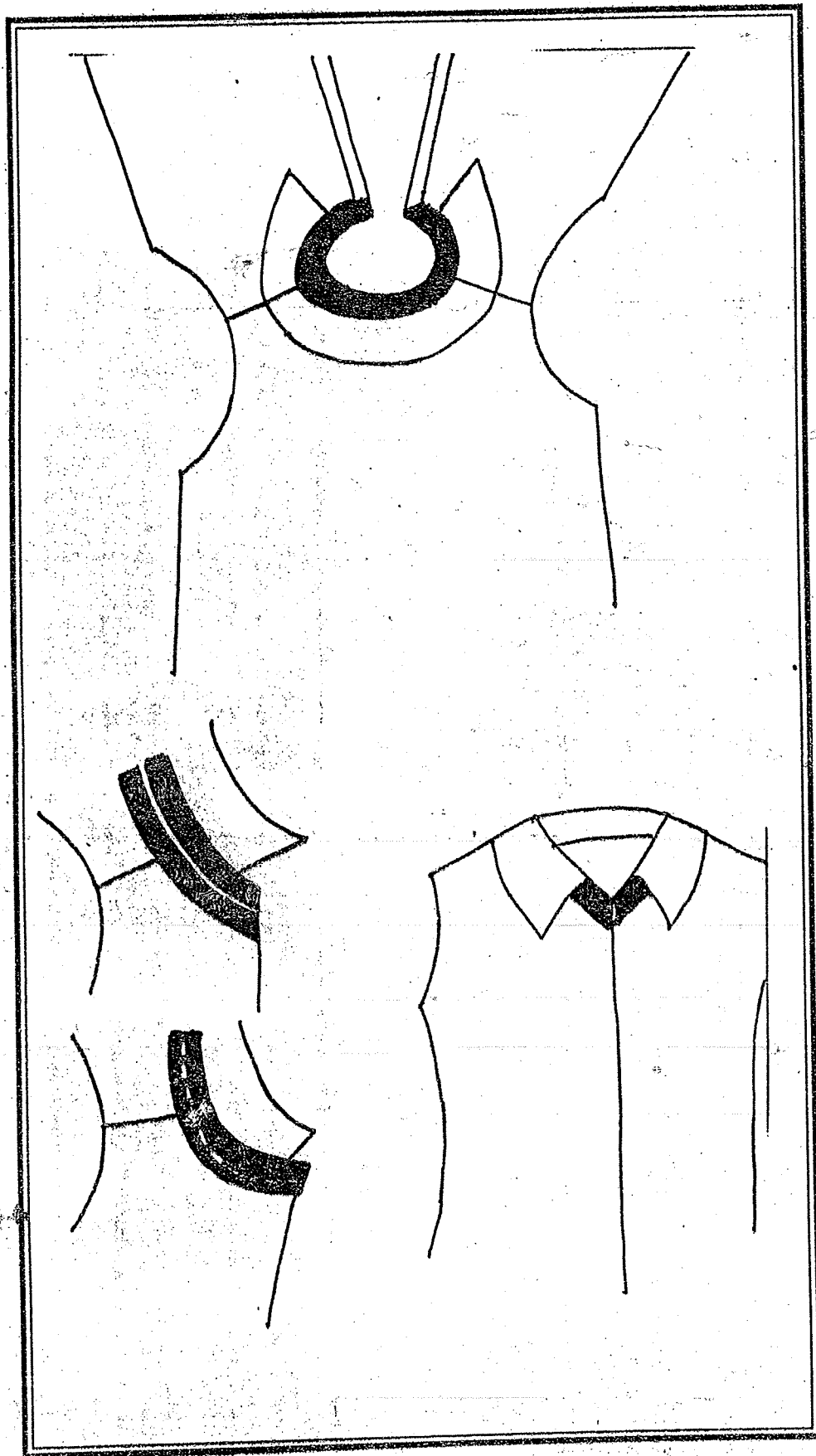
अब शर्ट की नीचे की हेम को मोड़कर फिनिश करें।



अब कालर बनायें।



अब कालर को नेकलाइन पर जोड़ कर सफाई से टॉप स्टिचिंग लगा दें।

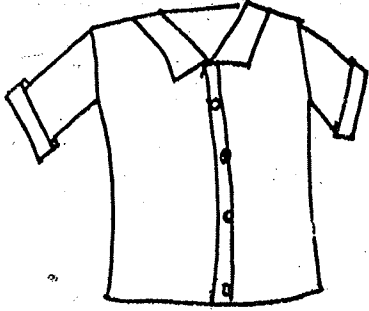


अभ्यास-

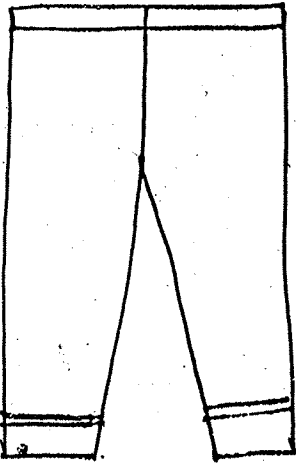
१- पाठ्य मे दिये गये सभी डिजाइन को बनायें व सिलाई करें।

११.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

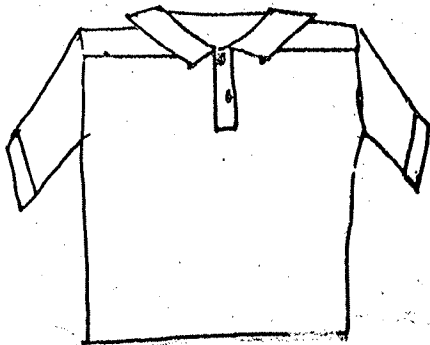
प्रश्न-१ नीचे दिये गये शर्ट की डिजाइन को सिलें।



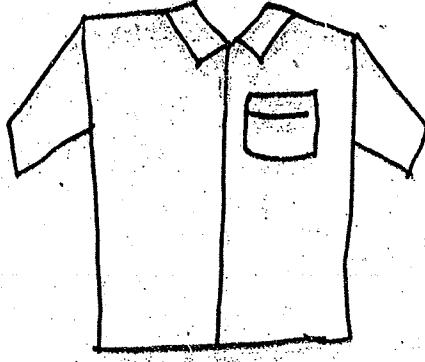
प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



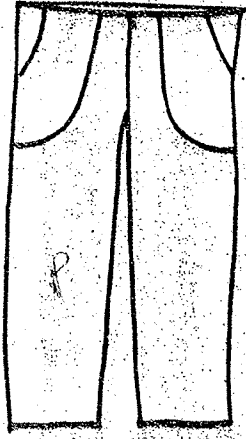
प्रश्न-३ नीचे दिये गये शर्ट की डिजाइन बनायें?



प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन की शर्ट बनायें।



प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन के अनुसार सिलाई करें।



११.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के०आर० जारापकर पब्लिकेश-  
नवनीत प्रकाशन इण्डिया लिमिटेड।

संरचना

१२.१ यूनिट प्रस्तावना

१२.२ उद्देश्य

१२.३ पेटिकोट, ब्लूमर और पॉयजामा

१२.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

१२.५ स्वाध्ययन हेतु

१२.१ यूनिट प्रस्तावना:-

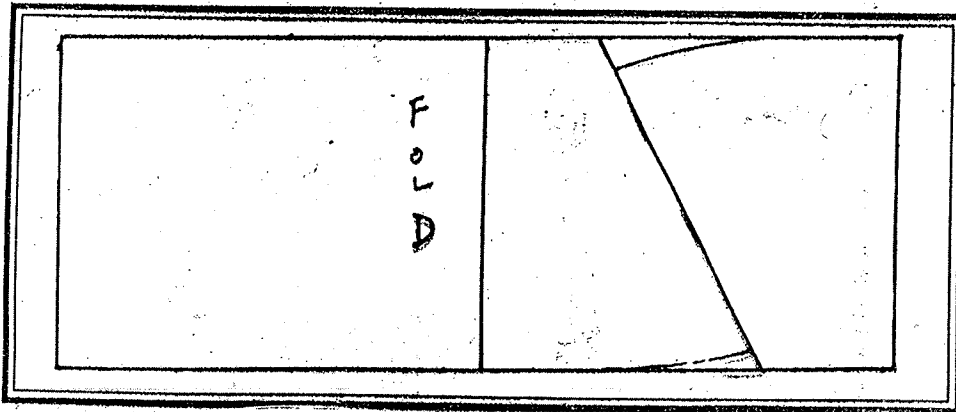
इस यूनिट में गारमेन्ट बनाना, ड्रापट बनाना, स्टिच करना तथा फिनिशिंग करना बताया गया है। इसमें पेटिकोट ब्लूमर तथा पॉयजामा के बारे में बताया गया है।

१२.२ उद्देश्य:-

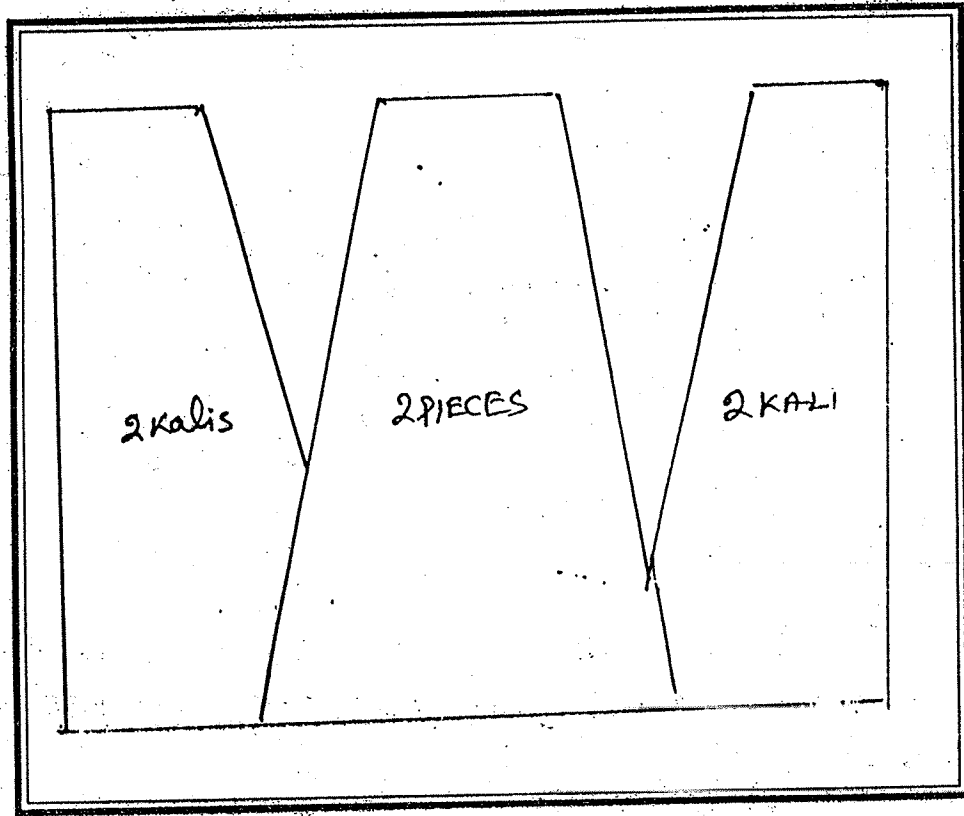
एक डिजाइनर के लिये यह जानना काफी महत्वपूर्ण है कि उसके द्वारा बनाया गया डिजाइन कैसा लगेगा। इस यूनिट में पेटिकोट, ब्लूमर तथा पॉयजामा बनाने के बेसिक पक्षों के बारे में बताया गया है।

१२.३ पेटिकोट, ब्लूमर और पॉयजामा:-

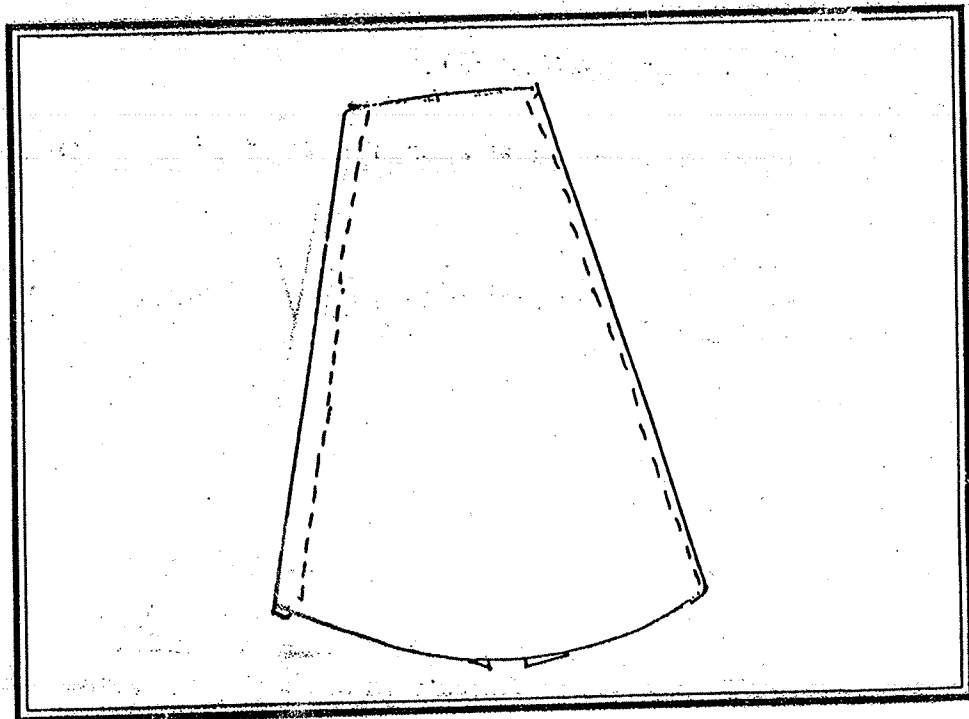
आपने पेटिकोट का ड्रापट बनाना पहले ही सीख चुके हैं। अब कपड़े पर पेटिकोट को ड्रापट करें।



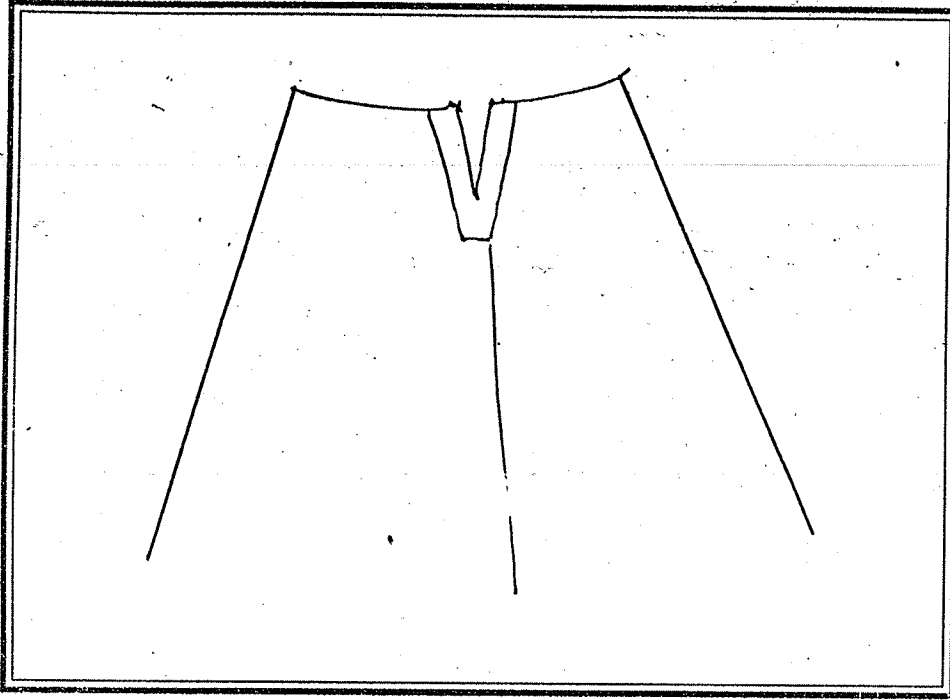
जब पीसेस खोलेंगे तब इस तरह दिखाई देंगे।



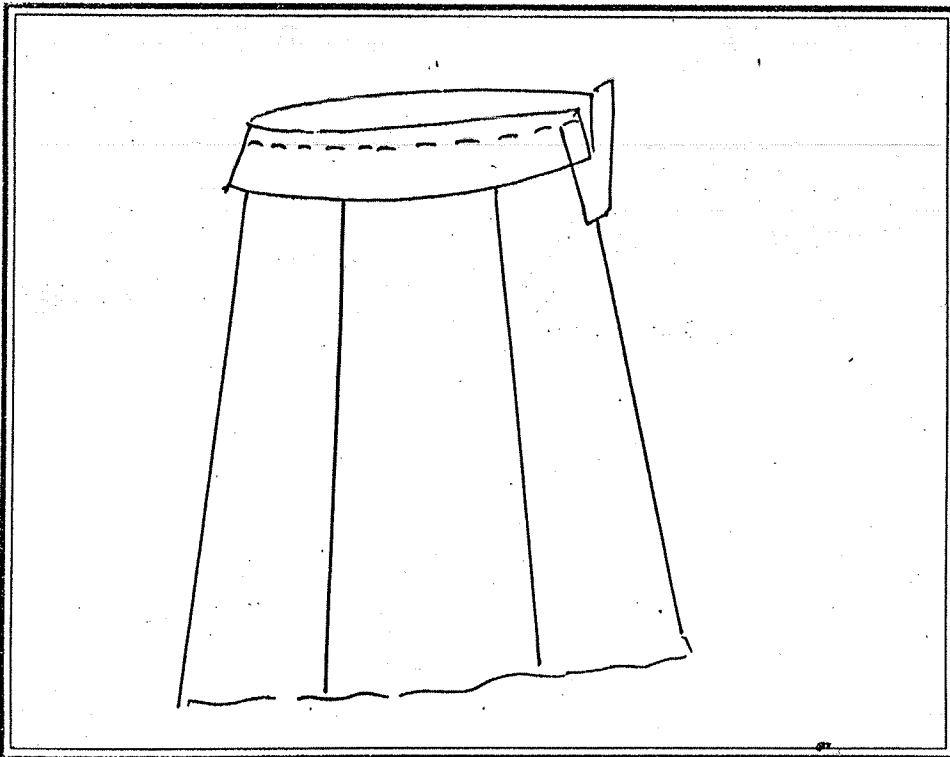
अब सिलाई में ध्यान रखना है कि सीधे किनारे में सीधा किनारा जोड़ना है तथा टेढ़ा कटा किनारा, टेढ़े किनारे में जोड़े।



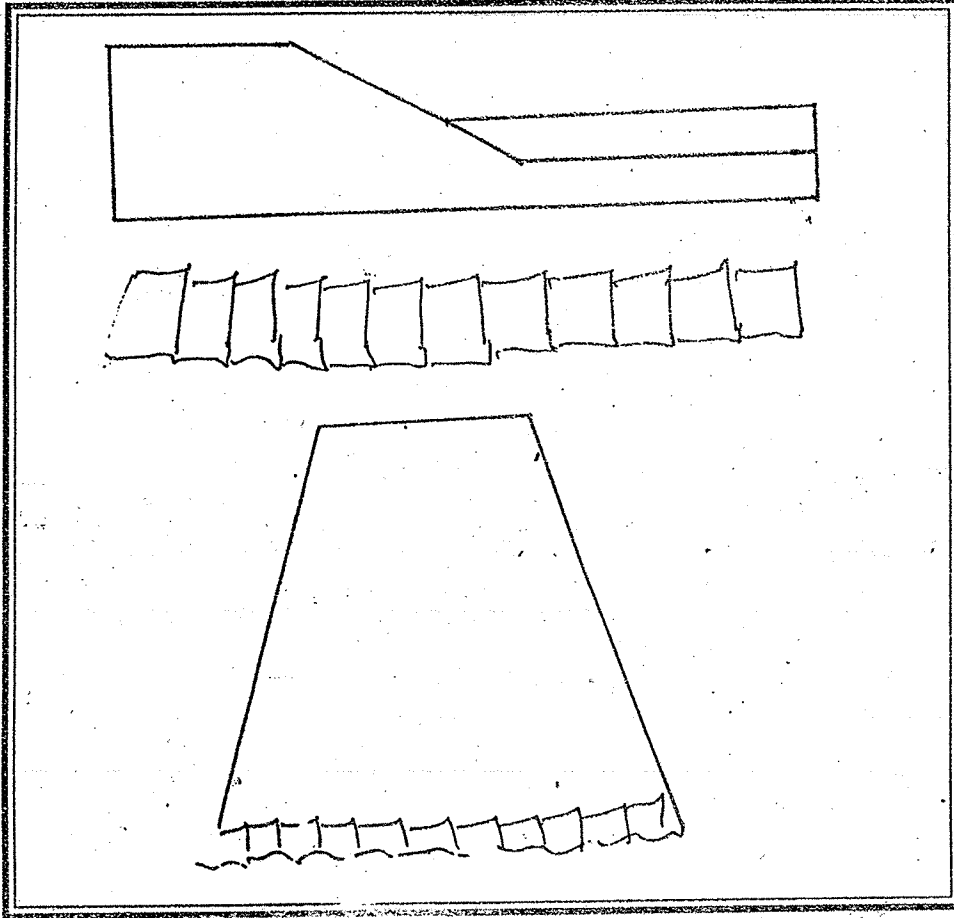
एक सीधे किनारे पर ६ इंच लम्बी दो पीस की ओपनिंग बनायें तथा साइड स्टिच कर लें।



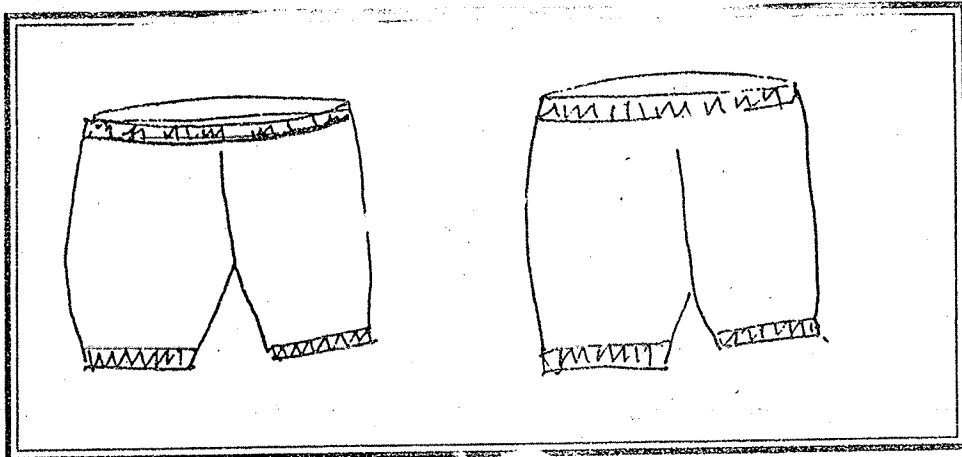
अब २ इंच की पट्टी लगाकर, अन्दर की ओर इसे मोड़कर एक बैन्ड की पट्टी बना लें।



अगर आप पेटीकोट में २ इंच की फ्रिल लगाना चाहते हैं तब यह ध्यान रखना होगा कि पेटीकोट की लम्बाई २ इंच कम काटनी होगी, और तब २ इंच की फ्रिल लगेगी, फ्रिल की ५ इंच की पट्टी लेकर उबल करके प्लीट करें। पेटीकोट का हेम जोड़कर टॉप स्टिचिंग करें।

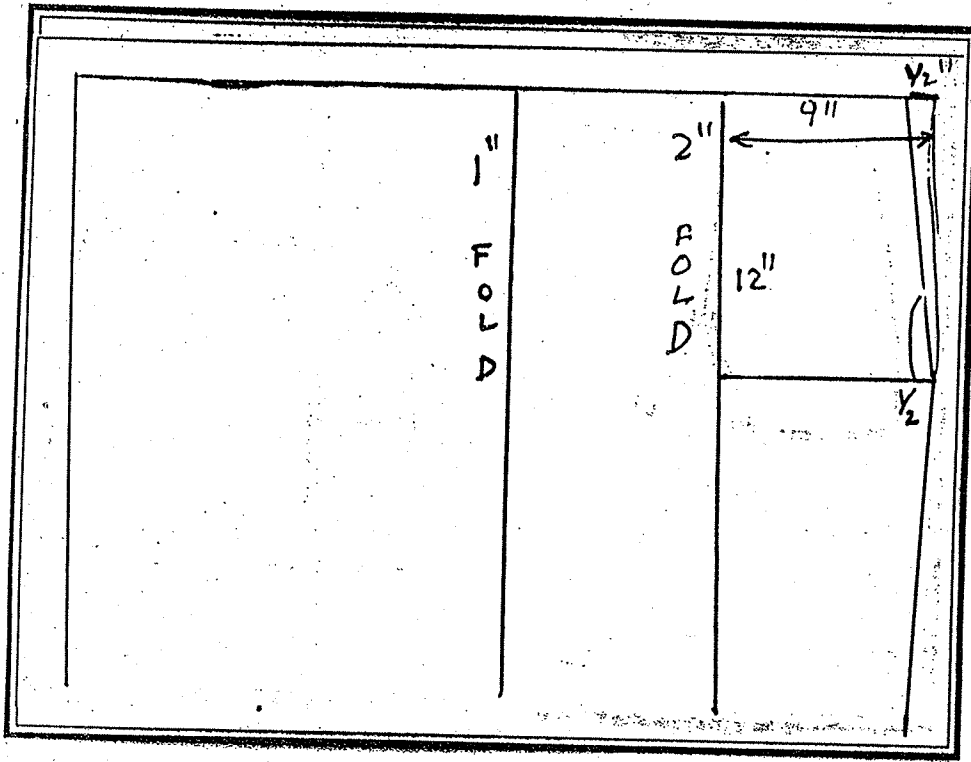


अब ब्लूमर स्टिच करें।

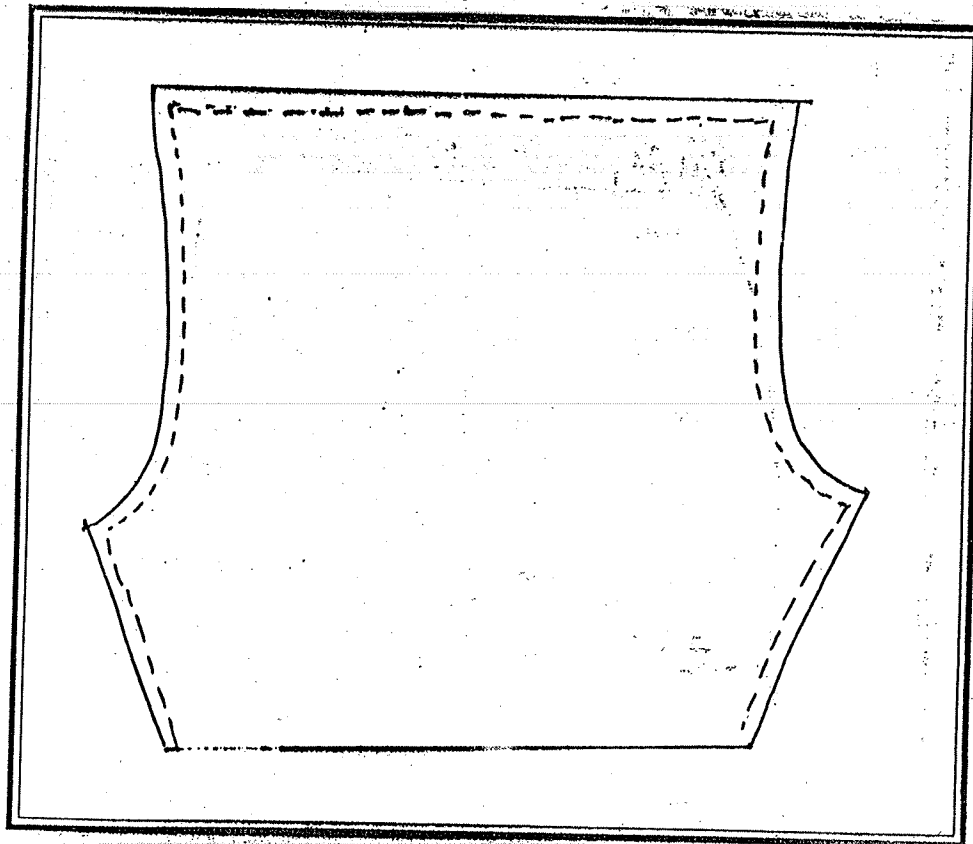




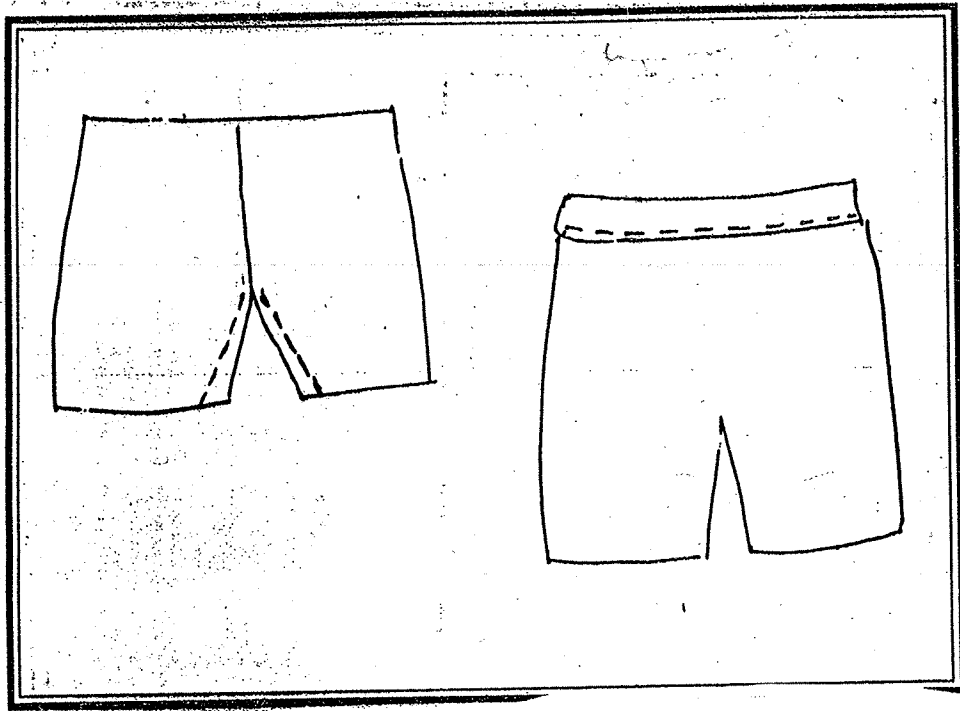
ब्लूमर नीचे दिये ड्राफ्ट के अनुसार कपड़े पर निशान लगाकर काटें।



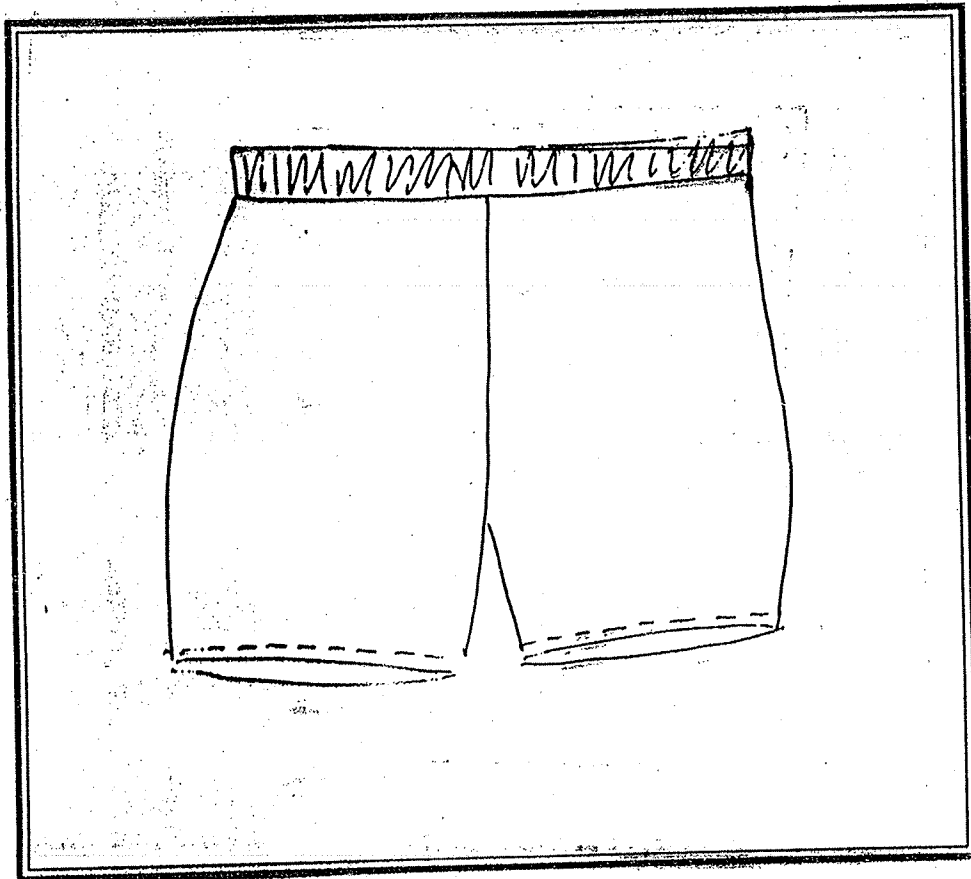
ब्लूमर के बीच में सिलाई करें जैसा दिखाया गया है।



ऊपर कमर बैंड के लिये फोल्ड करें और इलास्टिक डाल दें।

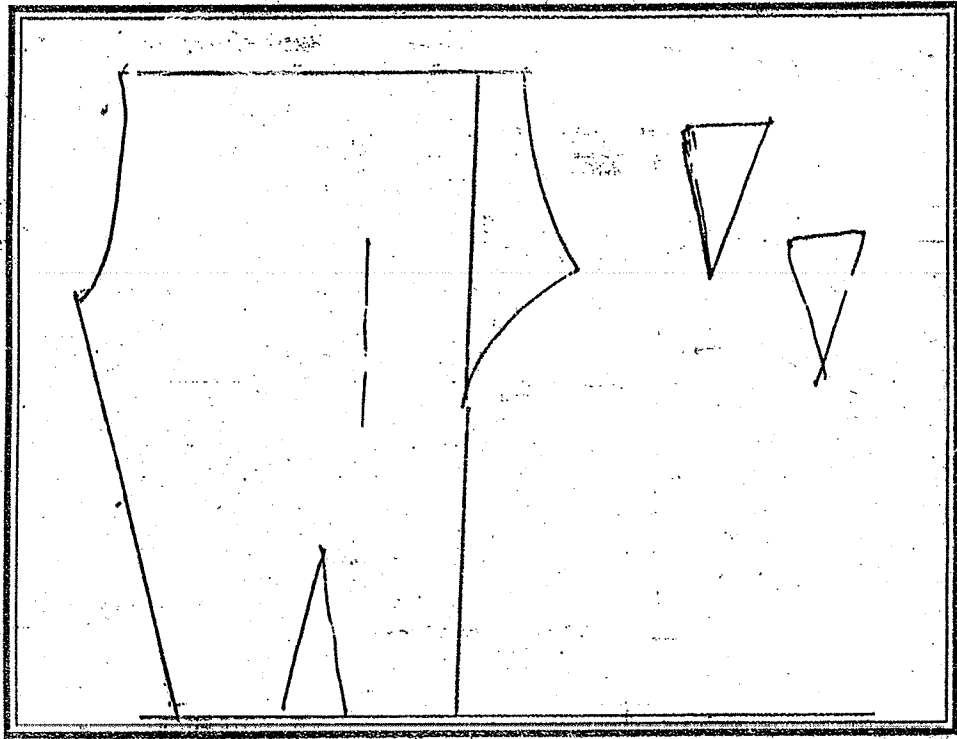


नीचे टॉग पर छोटा मोड़े और पतली इलास्टिक डालकर फिनिश करें।

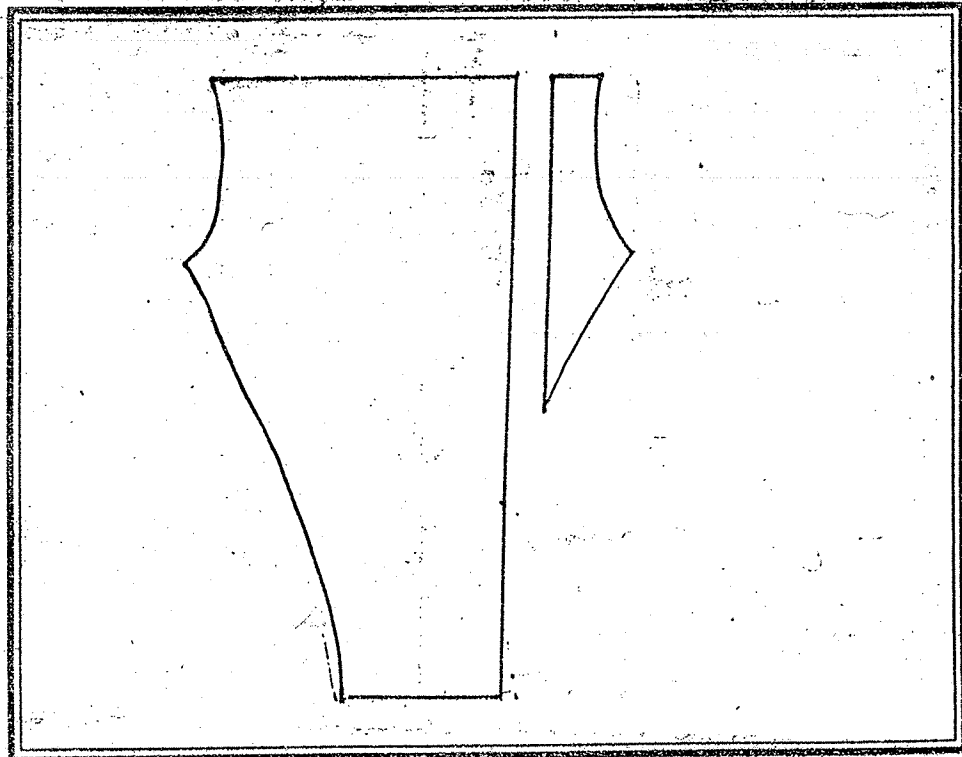




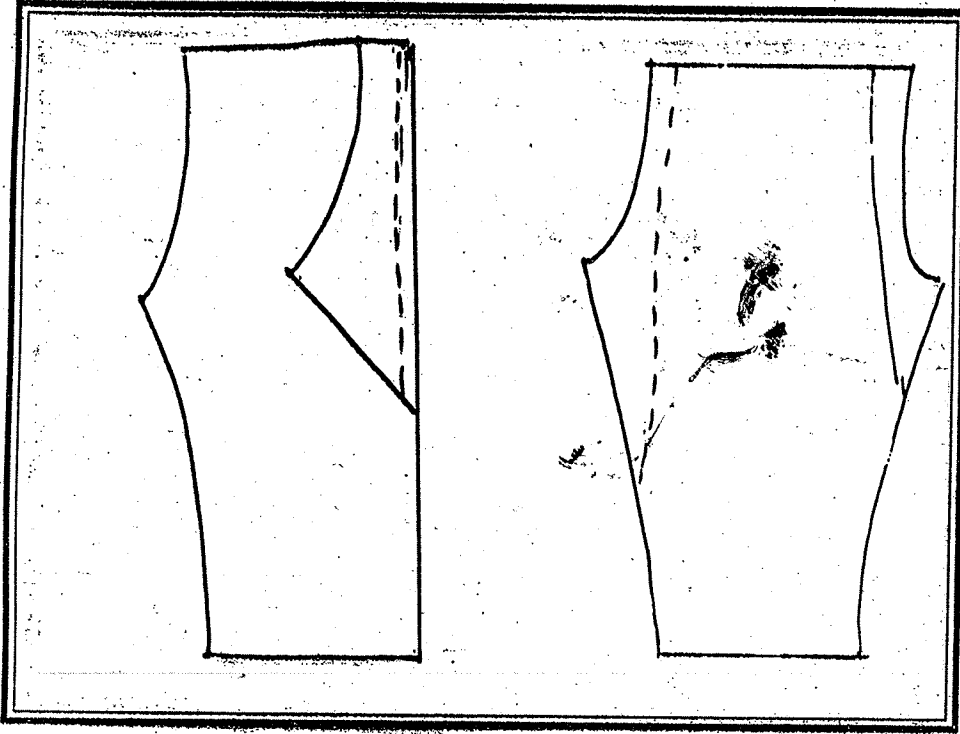
जब इसके काटे पीसेज खोलेंगे तब नीचे दिये चित्र की तरह लगेंगे।



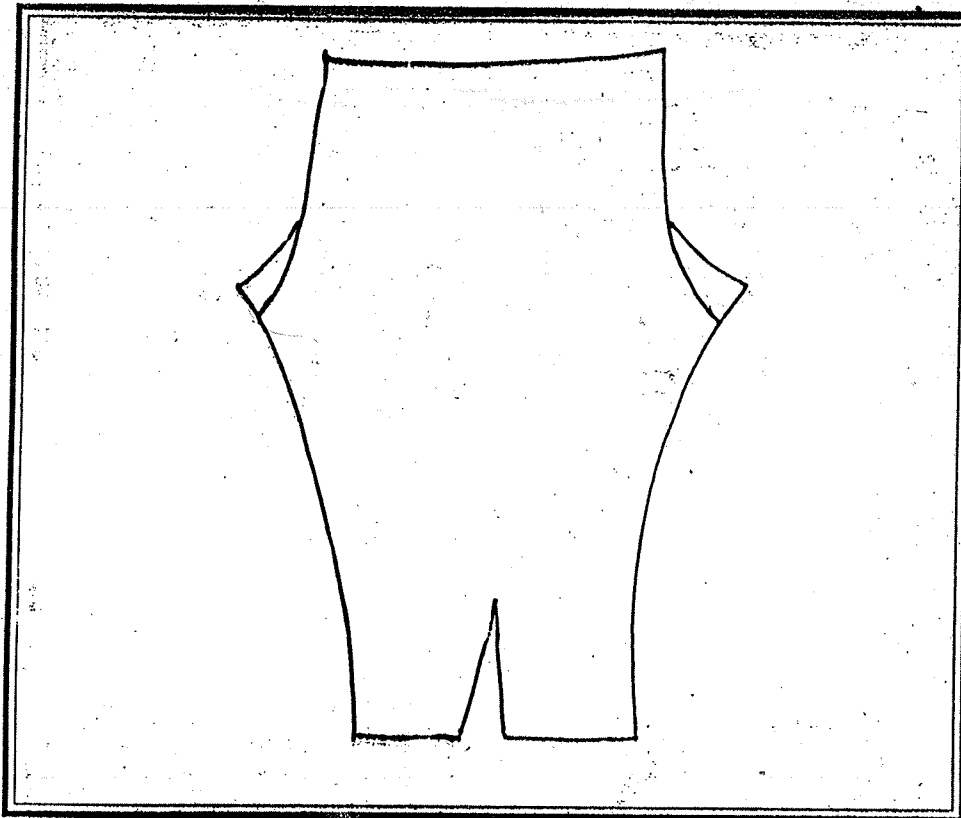
अगर आप नीचे घेर कम रखना चाहते हैं तब घेर कम करके नीचे मोड़ दें। अब कटे टुकड़े नीचे दिये चित्र की तरह दिखाई देंगे।



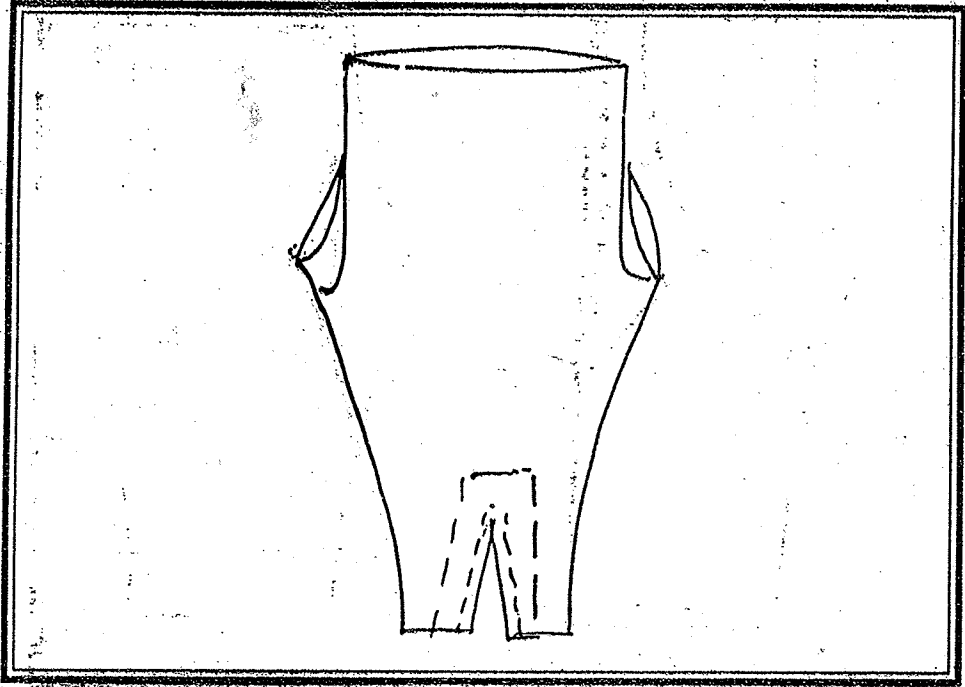
अब ऊपर जोड़ स्टिच करें।



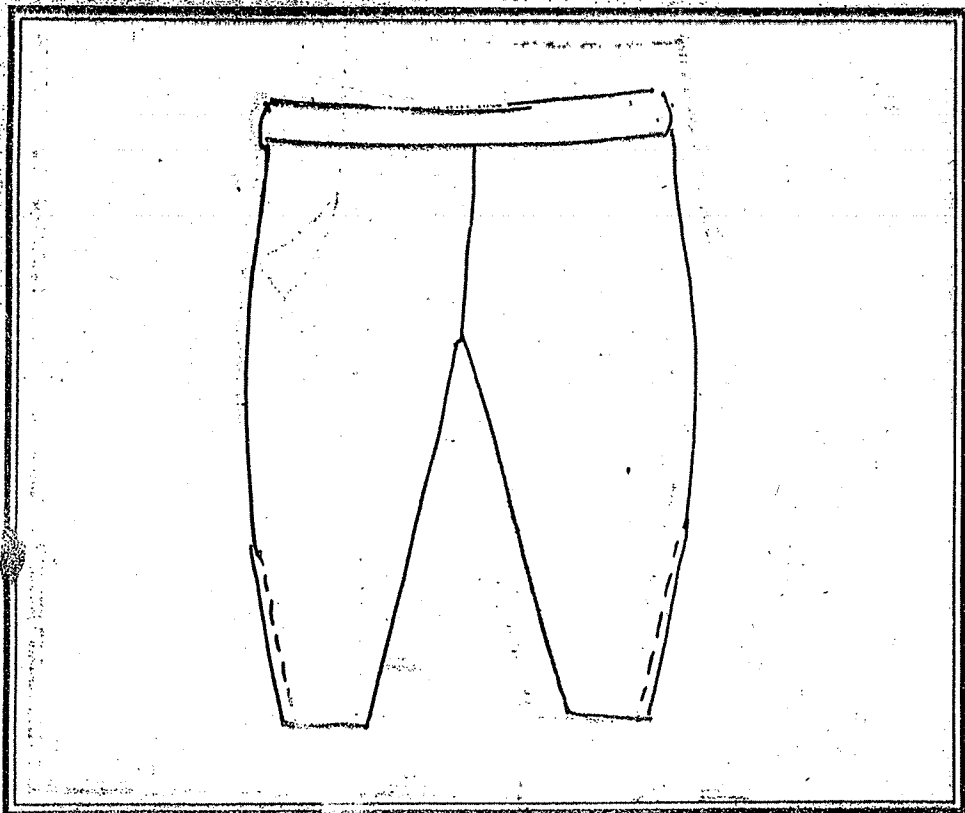
अब मियानी सामने और पीछे की तरफ एक टॉय में जोड़ें।



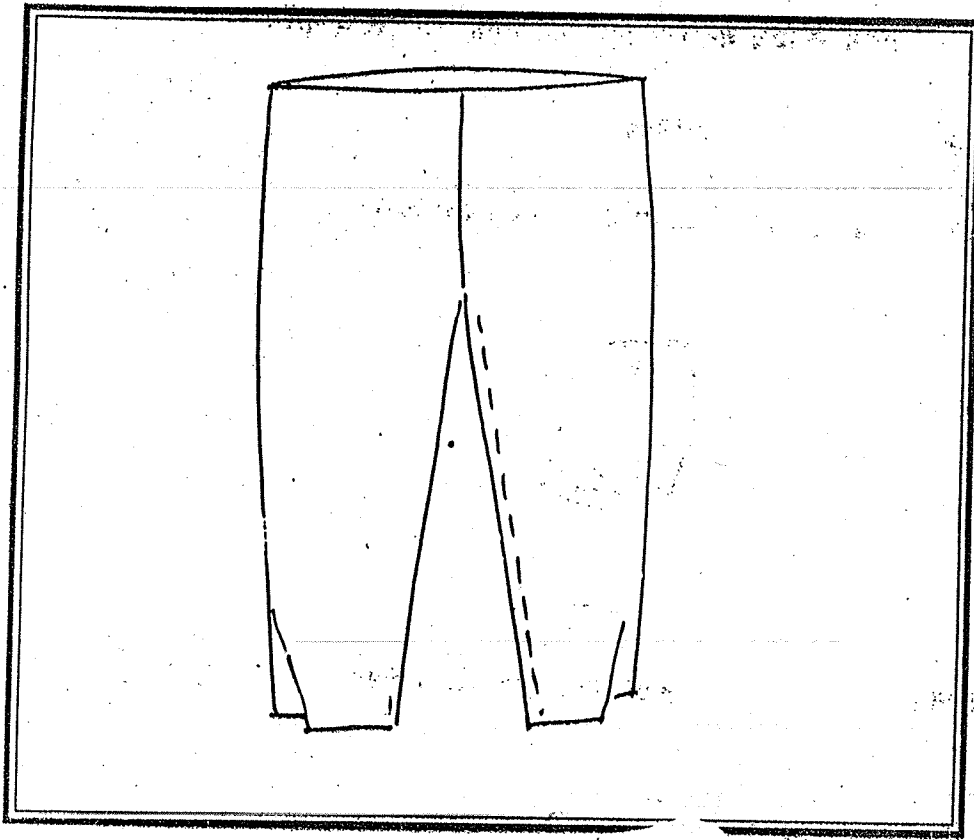
दूसरी टॉग को दिखाये गये तरीके से जोड़ें।



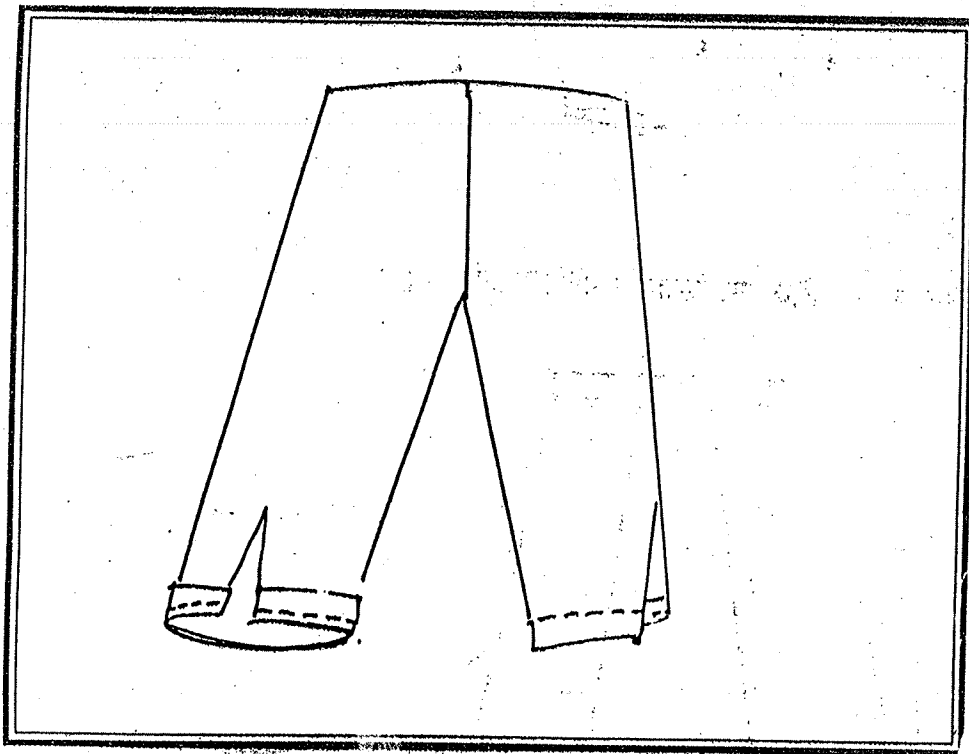
अब वेस्ट बैंड को इसके अन्दर की ओर मोड़कर टॉप स्टिच करें।



अन्दर की तरफ टांग की साइड सीम स्टिच करें।



पॉयजामे के नीचे के हेम को मोड़े और टॉप स्टिच करें।

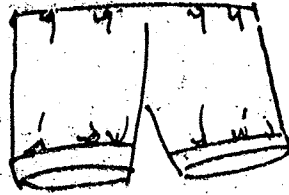


अभ्यास-

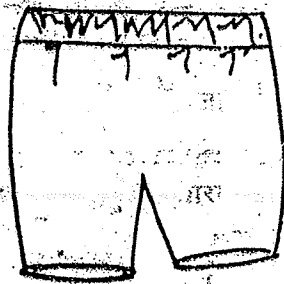
१- पाठ्य में दिये गये डिजाइन को बनाये और स्टिच करें।

१२.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

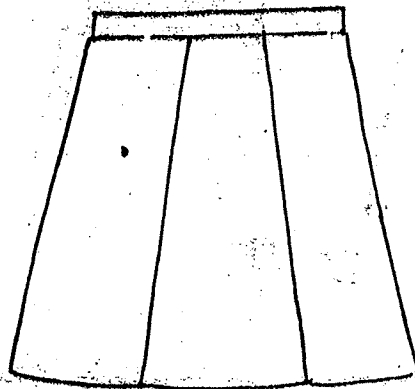
प्रश्न-१ नीचे दिये गये डिजाइन का ब्लूमर स्टिच करें?



प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन का ब्लूमर स्टिच करें?

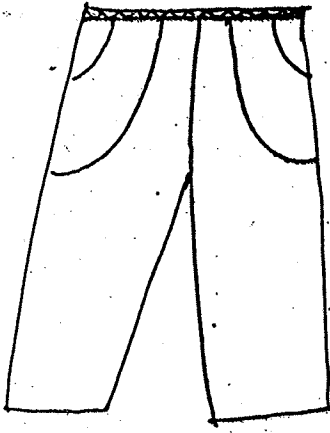


प्रश्न-३ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।

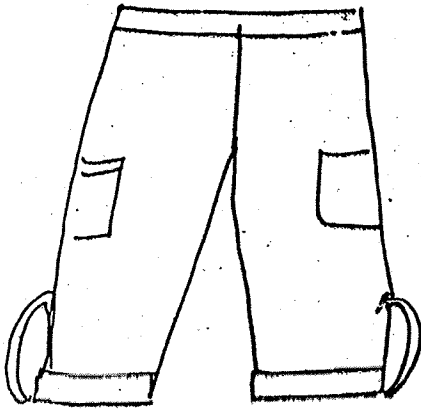




प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन को स्टिच करें।



१२.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के०आर० जारापकर पब्लिकेशन,  
नवनीत प्रकाशन इण्डिया लिमिटेड।

**NOTES**



SEE DRAWING OF SITE



उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टण्डन मुक्ता विश्वविद्यालय

डी०एफ०डी०-05

फैशन डिजाइनिंग

कस्ट्यूम डिजाइन एवं फैब्रीकेशन

ब्लॉक

८

महिलाओं के वस्त्र की सिलाई

यूनिट-१३

ऐसेम्बली टेक्निक

यूनिट-१४

ब्लाउज

यूनिट-१५

सलवार कमीज, पैरलेल, चूड़ीदार

यूनिट-१६

नाइटी गारुन, बाथिंग गारुन इत्यादि।

## ब्लाक-४

### षाट्यक्रम प्रतिरूप:-

इस ब्लाक में वस्त्र विन्यास का वर्णन किया गया है। क्रम से निर्देश दिये गये हैं जिससे आप महिलाओं के किसी विशेष डिजाइन के वस्त्र को काटकर सिल सकते हैं।

### महिलाओं के वस्त्रों का निर्माण:-

#### यूनिट-१३

#### ऐसेम्बली तकनीक:-

इस इकाई में व्यवसायिक उद्योग में कपड़ों का बड़ी मात्रा में काटने तथा निर्माण करने की विधि बताई गई है। विभिन्न कटाई व सिलाई की मशीनों की भी चर्चा की गई है।

#### यूनिट-१४

#### ब्लाउज:-

इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए साड़ी ब्लाउज का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।

#### यूनिट-१५

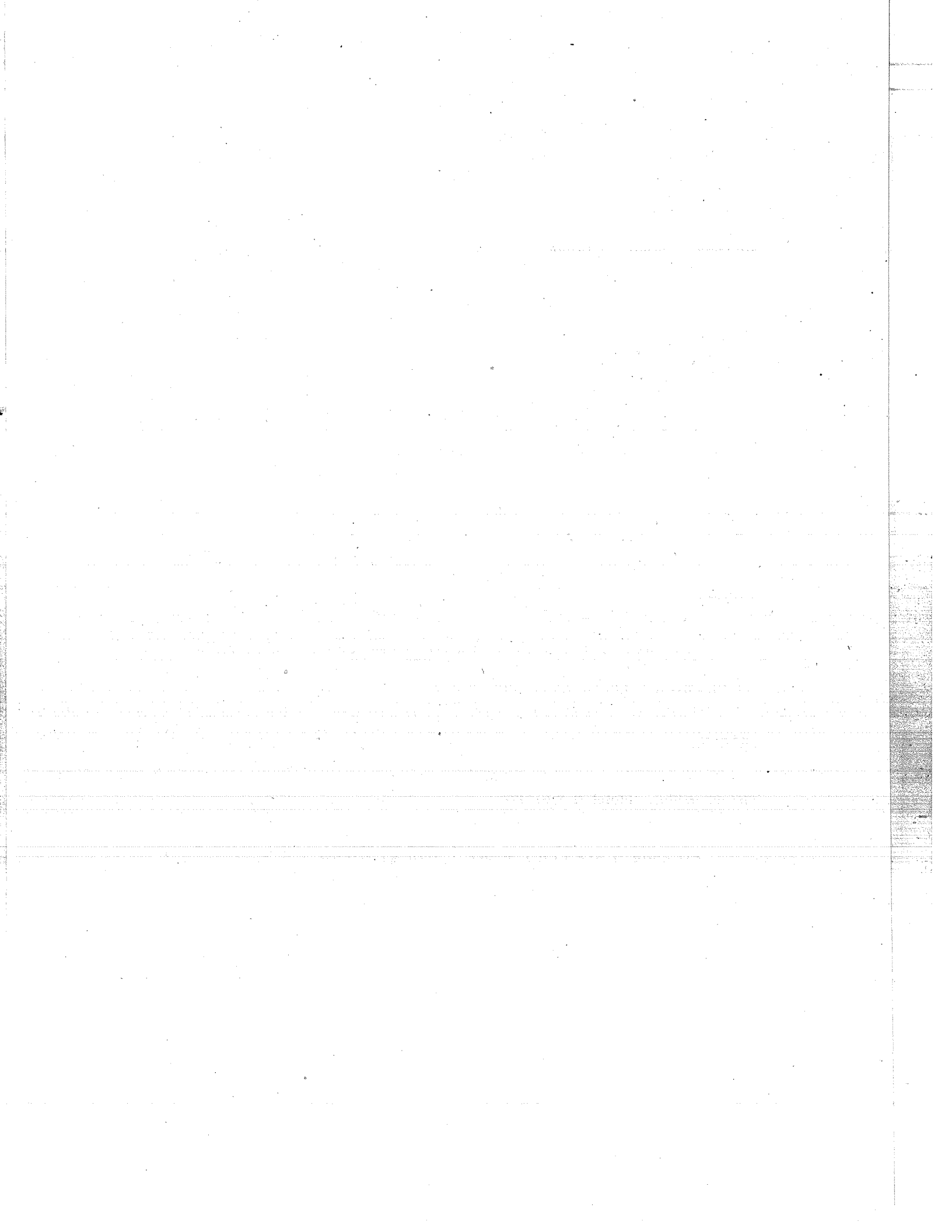
#### सलवार कमीज, पैरलेल व चूड़ीदार:-

इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए सलवार, कमीज, पैरलेल व चूड़ीदार का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।

#### यूनिट-१६

#### नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि:-

इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।



### संरचना

- १३.१ यूनिट प्रस्तावना
- १३.२ उद्देश्य
- १३.३ ऐसेम्बली तकनीक
- १३.४ सारोंश
- १३.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास
- १३.६ स्वाध्ययन हेतु
- १३.१ यूनिट प्रस्तावना:-

इस इकाई में व्यवसायिक उद्योग में कपड़ों का बड़ी मात्रा में काटने तथा निर्माण करने की विधि बताई गई है। विभिन्न कटाई व सिलाई की मशीनों की भी चर्चा की गई है।

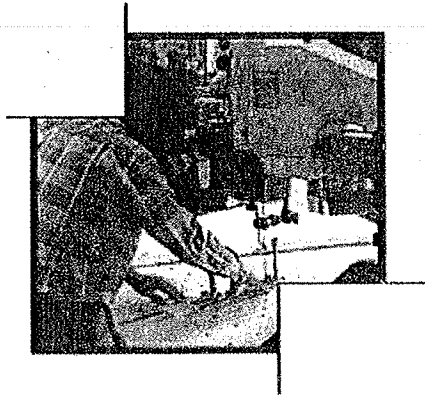
### १३.२ उद्देश्य:-

एक डिजाइनर को फैशन उद्योग के साथ जुड़ना होता है इसीलिए उसे उन सभी प्रक्रियाओं से परिचित होना चाहिए जो उद्योग में वस्त्र निर्माण के लिए अपनाई जा रही हैं। इस इकाई में चित्रों के माध्यम से आपको वस्त्र निर्माण उद्योग से परिचय कराने की कोशिश की गई है।

### १३.३ ऐसेम्बली तकनीक:-

अपारेल निर्माण क्षेत्र में, उद्योग को उनके निर्माण के तरीके के आधार पर दो विशिष्ट भागों में बाटा गया है।

१- कट-स्टिच-यानी आप कपड़ा खरीदे काटे और सिले तथा



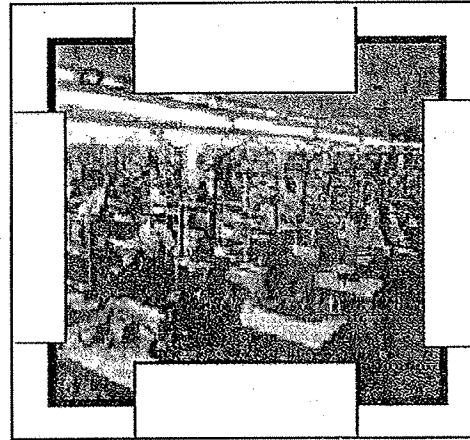


२- पहले कपड़े को बुने या वीव करें फिर काटें और सिलें।

अपारेल निर्माण के अर्न्तगत विभिन्न निर्माण केन्द्र आते हैं जो रेडी-मेड वस्त्रों की पूरी रेंज तैयार करते हैं तथा विशेष लोगों के लिए विशेष कपड़े बनाना अपारेल कन्ट्रैक्टर, का काम होता है जो और लोगों के कपड़ों को काटकर सिलते

हैं; जॉबर लोग इन्टरप्रेन्यूरियल फंक्शन का काम अपारेल के निर्माण में करते हैं तथा टेलर जो अलग-अलग लोगों के लिए उनकी जरूरत के अनुसार कपड़े सिलते हैं।

जहाँ पर कपड़े की सिर्फ बुनाई की जा रही हो उसे टेक्सटाइल मिल का सब सेक्टर माना जाता है परन्तु जब वहाँ पूरे, वस्त्र का उत्पादन होता है तो उसे अपारेल निर्माण का भाग माना जाता है।

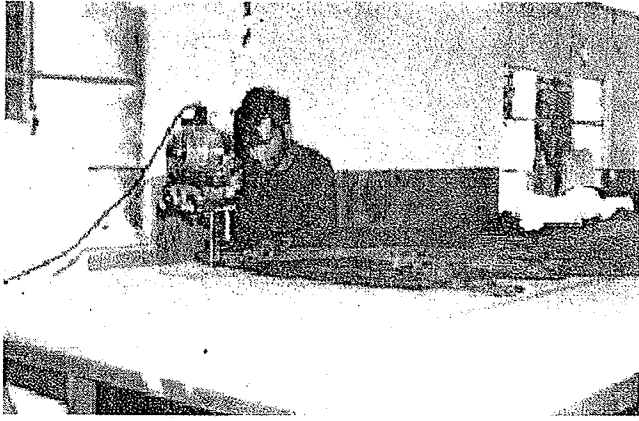


अपारेल उद्योग में दो तरीकों से कपड़ों का निर्माण होता है। एक जहाँ पर पूरा वस्त्र एक ही व्यक्ति द्वारा सिला जा

रहा है, जैसी साधारण दर्जी करते हैं और दूसरा जहाँ वस्त्र का हर भाग एक विशेष मशीन पर सिला जाता है और फिर पूरे वस्त्र के भागों को लेकर एक जगह जोड़ दिया जाता है। इस तरीके को असेम्बली लाइन कहते हैं। कपड़ों के उत्पादन के इस तरीके में आधुनिक मशीनों का प्रयोग होता है।

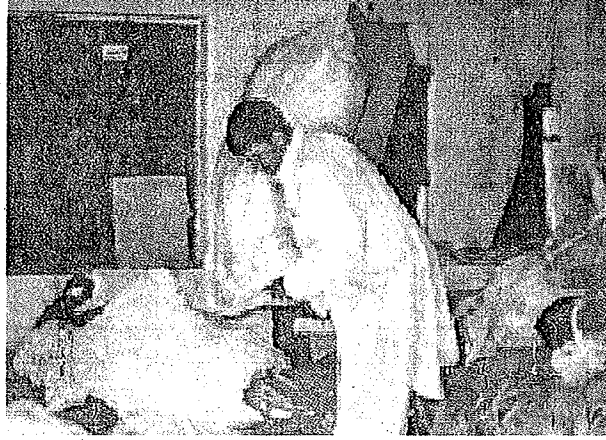
विशेष मशीनें जिनका प्रयोग उद्योग जगत में होता है वह हैं फ्लैट लॉक मशीन, सिंगल नीडिल लॉक स्टिच मशीन, डबल नीडिल लॉक स्टिच मशीन, थ्री थ्रेड ओवर लॉक स्टिच मशीन, फाइव थ्रेड ओवर लॉक स्टिच मशीन, बार टैकर बटन होलिंग मशीन, बटनिंग मशीन, कटिंग मशीन, इलेक्ट्रॉनिक स्टीम आइरन, फैब्रिक टेस्टिंग मशीन इत्यादि।

यह मशीन एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का दावा करती है। वस्त्र उद्योग में इसके बिना काम नहीं चलता है। हर स्थिति में क्वालिटी को नियन्त्रित किया जाता है और



एक इलेक्ट्रिक  
कटिंग मशीन से  
फैक्ट्री में कपड़ा  
काटते हुए।

फैक्ट्री में कपड़े की सॉर्टिंग  
करते हुए।



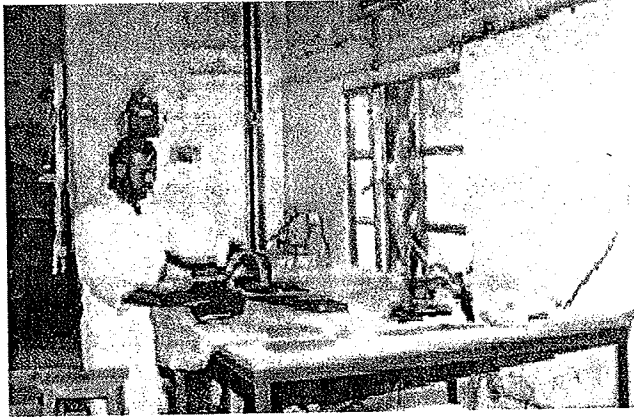
ओवर लॉक मशीन  
का प्रयोग करते  
हुए।

फैक्ट्री में वस्त्र  
सिलते हुए।



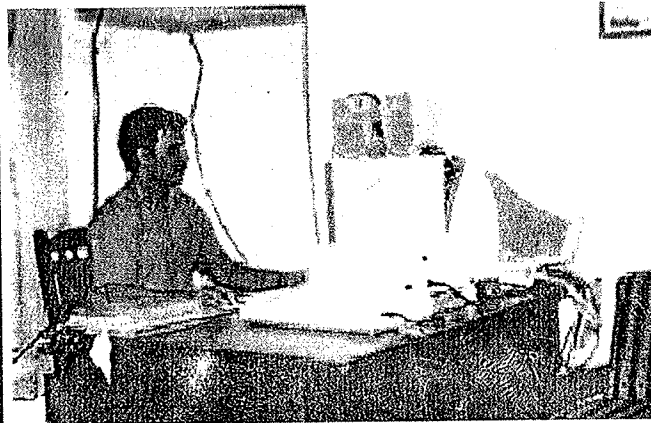


वस्त्रों की  
गुणवत्ता का  
निरीक्षण करते  
हुए।



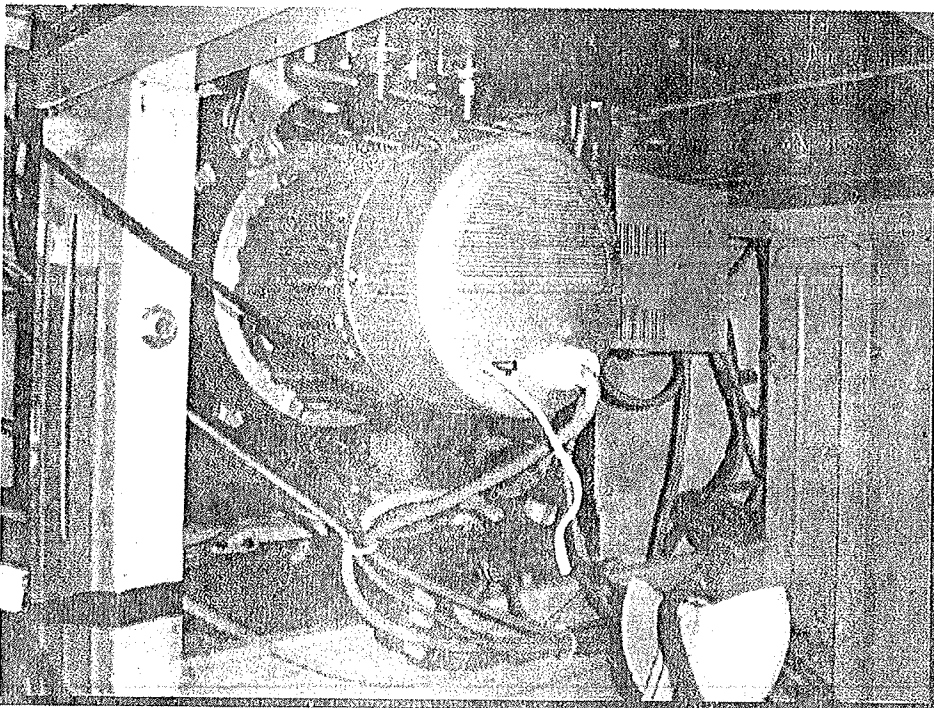
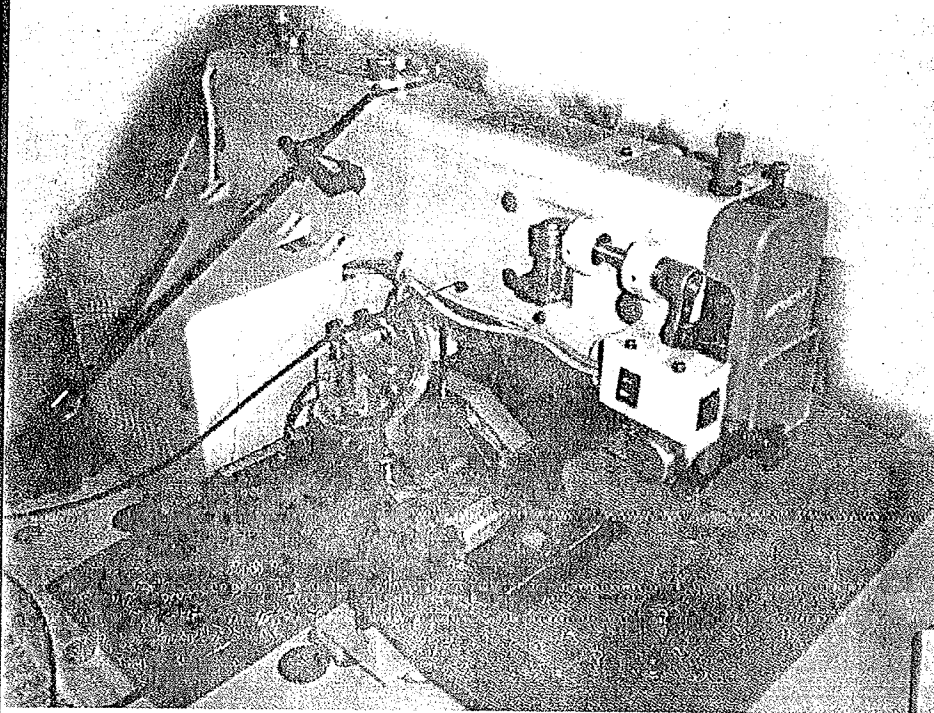
वस्त्रों को स्टीम प्रेस  
से फैक्ट्री में प्रेस करते  
हुए।

फैक्ट्री में वस्त्रों की  
पैकिंग करते हुए।



वस्त्र एक्सपोर्ट  
हाऊस का एक  
ऑफिस।

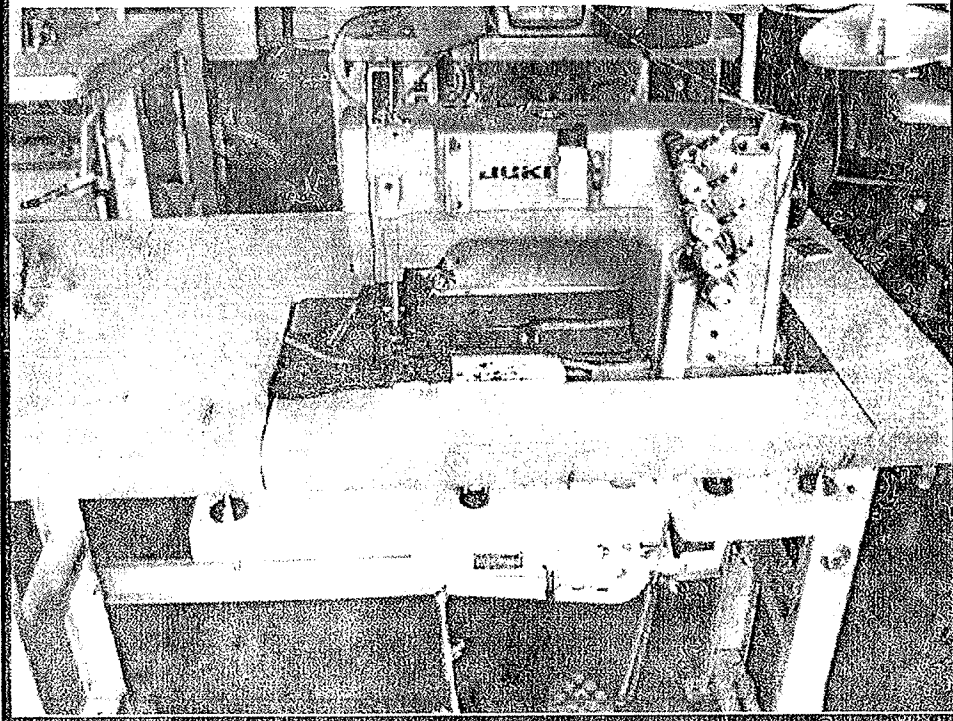
यह एक उद्योगिक मशीन है जिससे फैक्ट्री में कपड़े सिले जाते हैं।  
इसमें ज्यादा क्षमता की मोटर लगी होती है जो एक मिनट में ५५००  
स्टिच सिलती है।

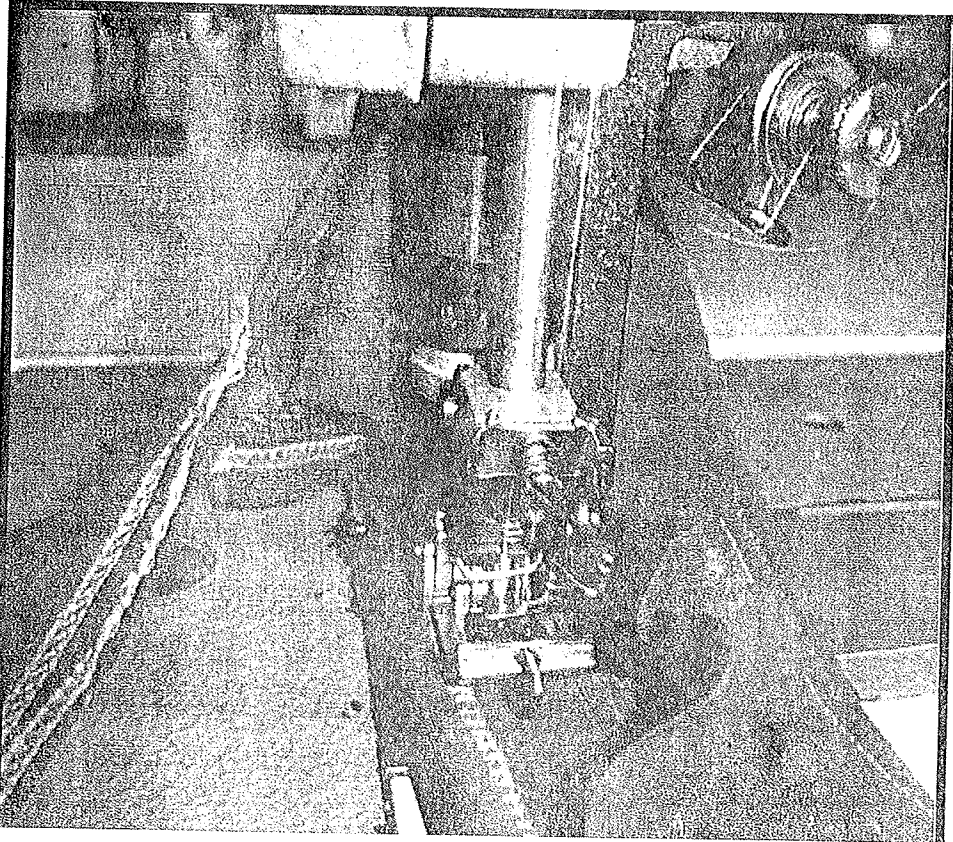




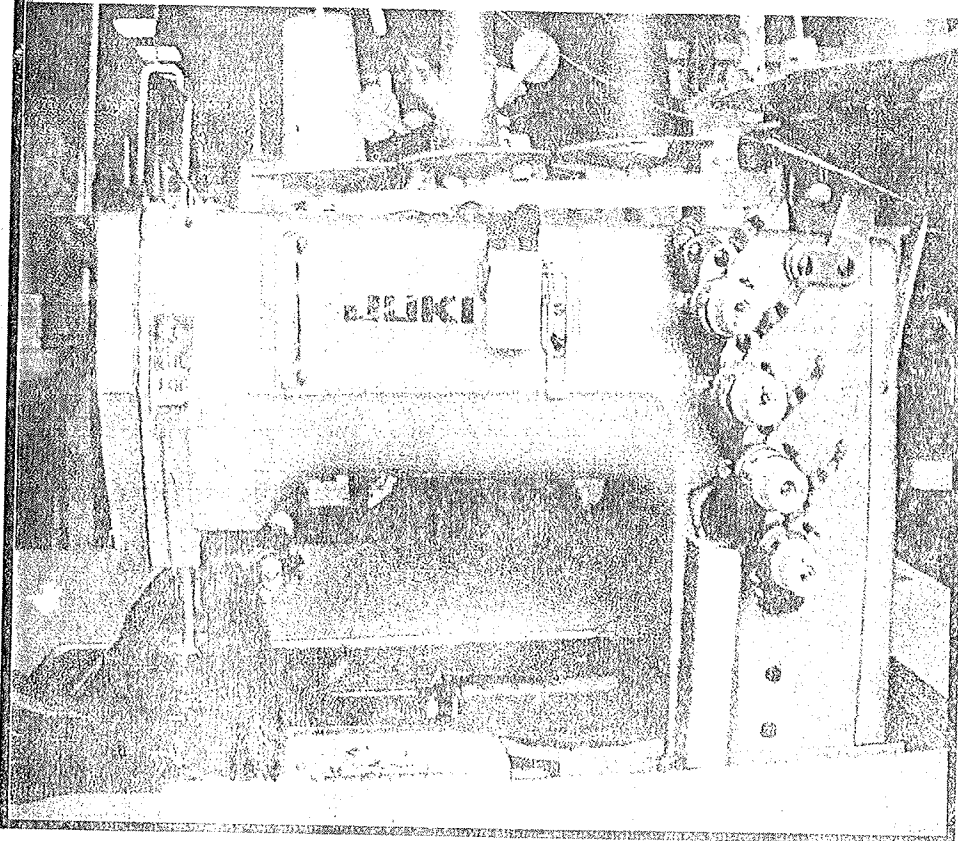
ऊपर दिया गया चित्र एक टच की नोट पैड को दिखाता है जिससे आप मशीन को चला सकते हैं।

नीचे दिया गया चित्र मशीन से सिलाई होते हुए नजदीक से दिखाता है।



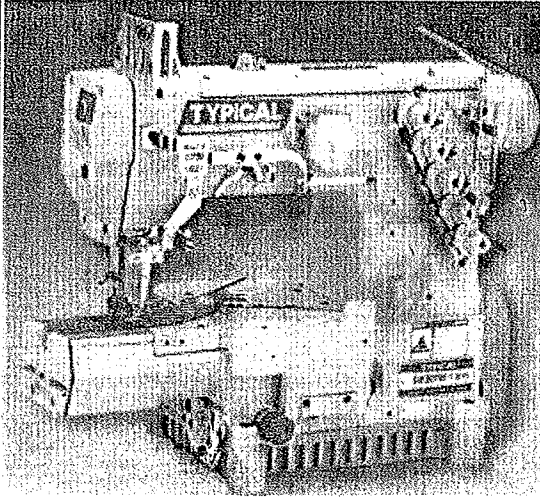


यह चित्र आपको थ्री-थ्रेड इन्टरलॉकिंग होते हुए दिखाता है।



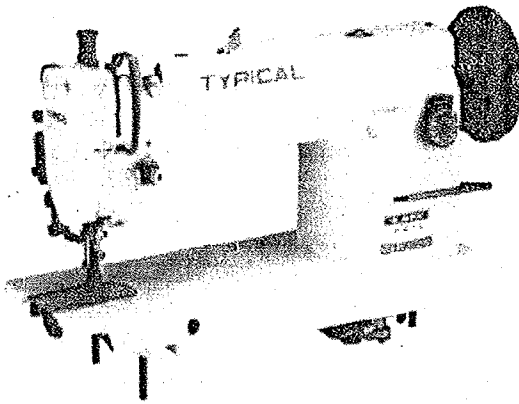
नीचे कुछ ऐसी विशेष मशीनों के चित्र दिये हुए हैं जिनका प्रयोग विशेष तरह की सिलाई के लिए किया जाता है।

यह एक तेज गति की तीन सुई सिलिन्डर चेन स्टिचर है। यह मशीन

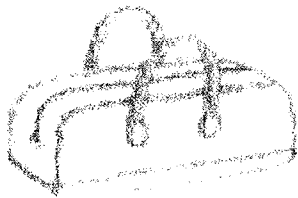
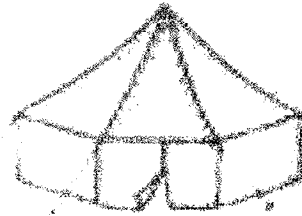
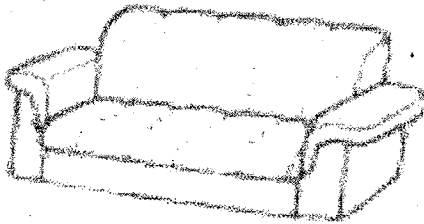


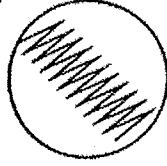
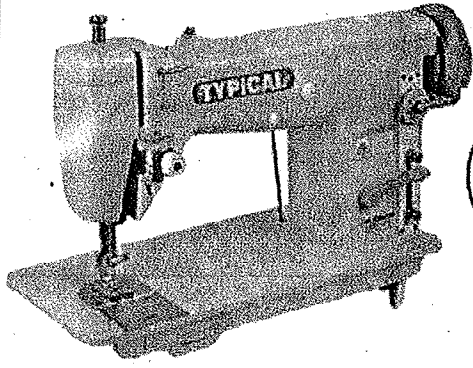
काम की सुविधा के लिए आकार में छोटी है। सिलिन्डर २८० मि०मी० व्यास का है और इससे कॉलर, आस्तीन व बच्चों के कपड़ों पर सजावटी सिलाई की जा सकती है। बुने हुए कपड़ों पर भी सिलिन्ड्रिकल सिलाई इससे की जाती है। यह विशेष प्रकार की सिलाई विशेष तथा विभिन्न कपड़ों पर कसने के

लिए उपलब्ध है। इसकी कार्य क्षमता अधिक है।

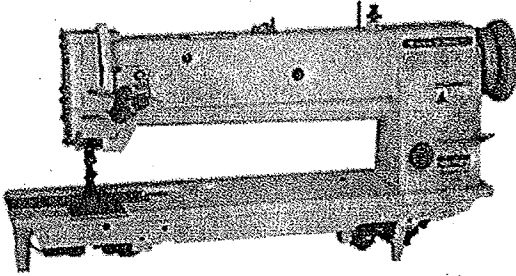


यह एक सिंगल नीडिल, बॉटम फीड, नीडिल फीड, वाकिंग फुट, ऑटो लुब्रिकेटिंग, मध्य तथा भारी सिलाई की मशीन है जिसका प्रयोग पर्दे तथा सोफा इत्यादि के सिलने में किया जाता है।

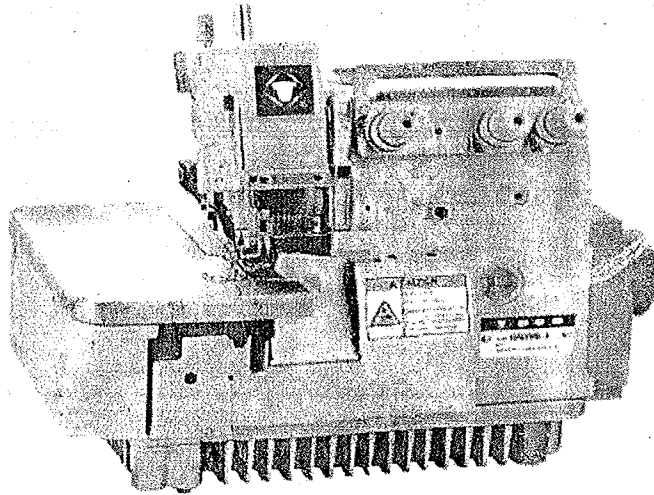
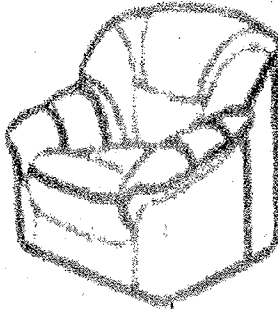
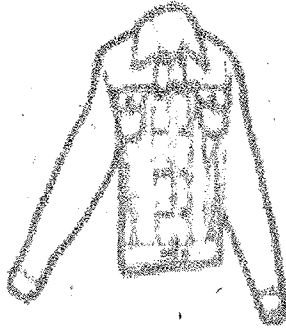




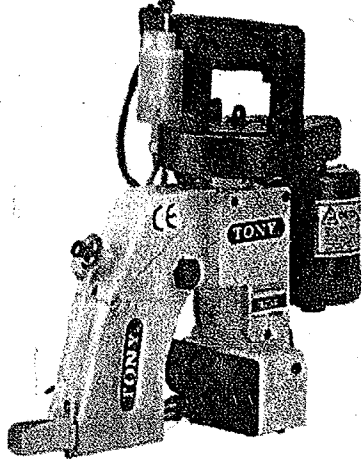
सिंगल नीडिल, बॉटम फीड, जिग  
जैग लॉक स्टिच सिलाई की  
मशीन ।



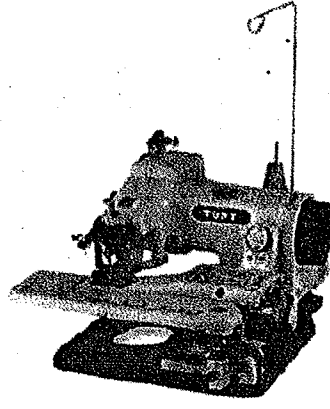
डबल नीडिल, १८ इंच लम्बी  
आर्म, बॉटम फीड, नीडिल  
फीड, वाकिंग फुट  
लॉक-स्टिच मशीन ।



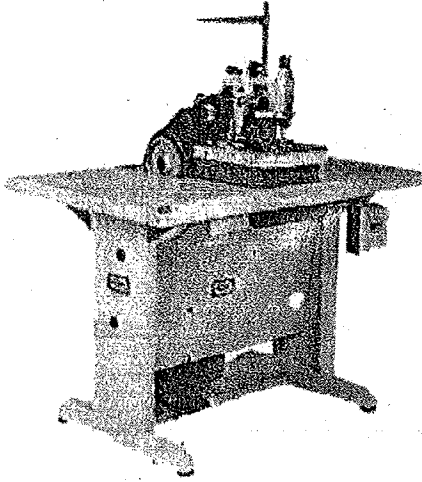
सुपर हाई  
स्पीड,  
थ्री-थेड  
ओवर लॉक  
मशीन ।



एक सिंगल नीडिल, सिंगल थ्रेड, ऑटोमैटिक थ्रेड कटिंग तथा तेल लुब्रिकेटिंग सिस्टम।



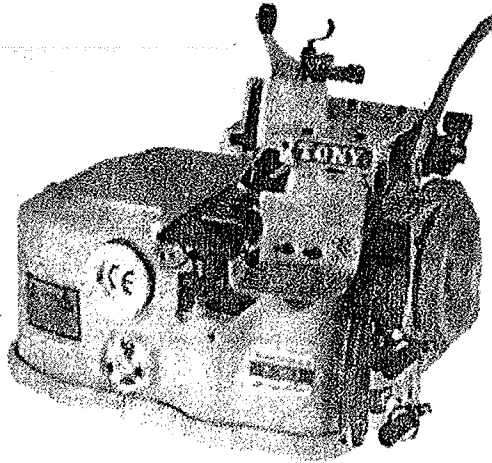
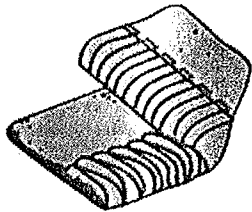
डेस्क ब्लाइन्ड स्टिच मशीन मिड मैटेरियल।



आईलेट तथा बटन होल मशीन।

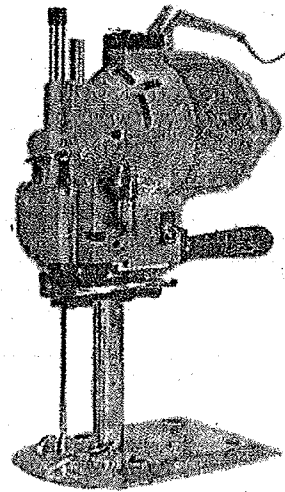
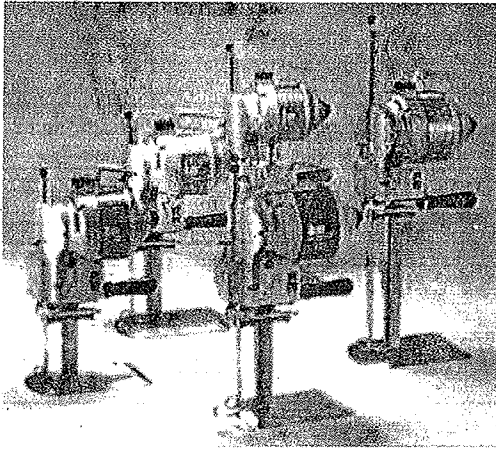
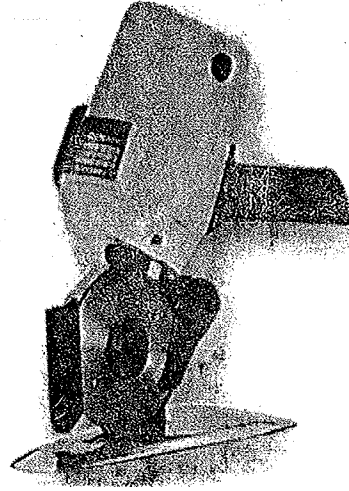
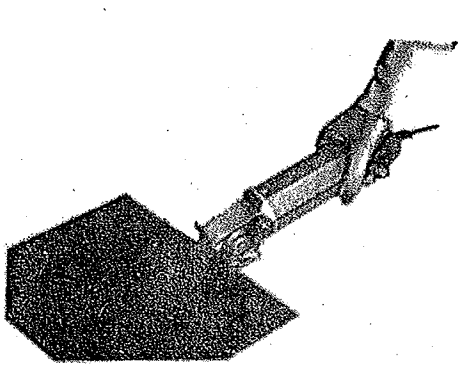
इसमें कपड़ा स्थिर रहता है, मशीन का हेड हिलता है जिससे सिलाई व कटिंग के दौरान बेहतर नियन्त्रण हो सकता है। मशीन का सर अन्दर खला जाता है जिससे बैग इत्यादि आसानी से सिले जा सकें।

एक सूई, दो धागे की कारपेट ओवर सेविंग मशीन।



## हाथ का राउन्ड कटर

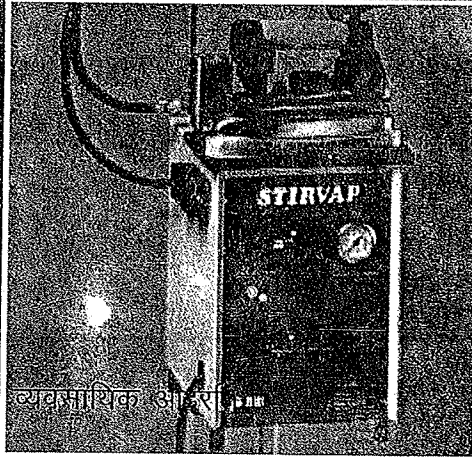
इस मशीन का प्रयोग कम कपड़ों को काटने के लिए किया जाता है। इससे चमड़ा तथा कारपेट इत्यादि अच्छी तरह कटते हैं।



## सीधी चाकू वाली कटिंग मशीन

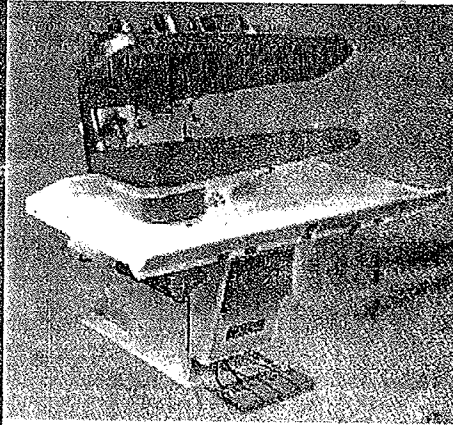
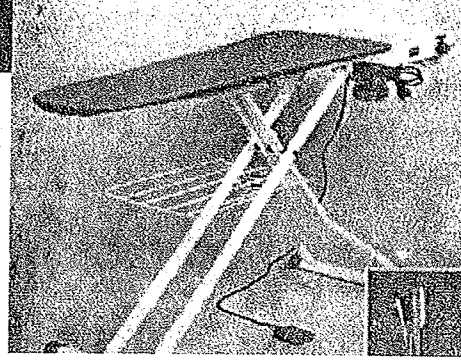
यह चाकू वाली कटिंग मशीन कम आवाज करती है, कम गरम होती है। इसमें पावर ज्यादा होती है। कम्पन्न कम होता है और अपने आप इसमें धार तेज की जा सकती है। इसके ब्लेड विभिन्न साइज में मिलते हैं। जरूरत अनुसार प्रयोग होता है।





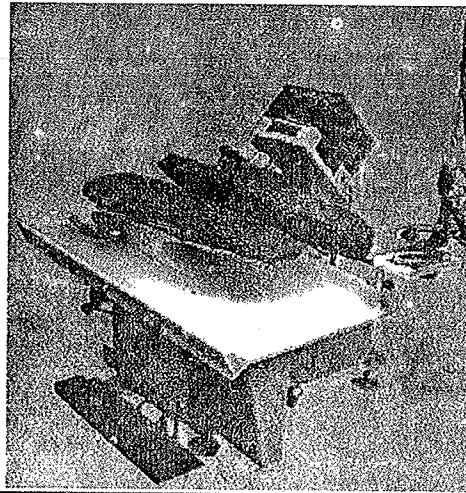
यह एक स्टीम ब्वायलर है जिसमें एक व्यवसायिक प्रेस लगी होती है। यह एक बेहतरीन डिजाइन है जिससे समय व ऊर्जा दोनों की बचत होती है और साथ ही हर तरह के कपड़े पर परिणाम अच्छे मिलते हैं।

व्यवसायिक वैक्यूम आइरनिंग बोर्ड जिसमें गर्म मेज भी है। यह एक बेहतरीन तरह का आइरनिंग यूनिट है जो समय तथा ऊर्जा की बचत करता है और हर प्रकार के कपड़े के बेहतरीन तरीके से प्रेस करता है।

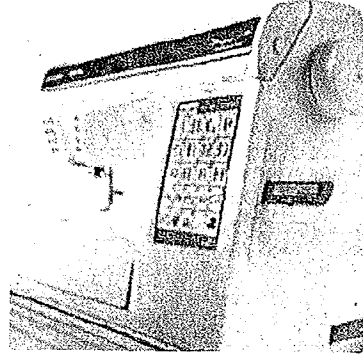
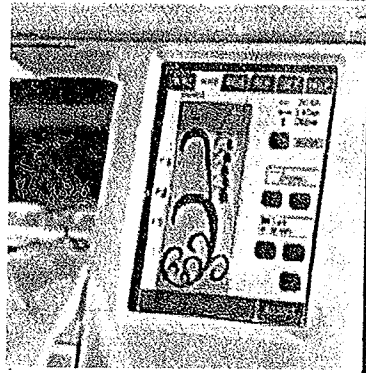


इलेक्ट्रो मैटिक प्रोग्राम के कारण मशीन अपने आप कपड़े को प्रेस कर देती है। कार्यकर्ता सिर्फ वस्त्र को लगाता व निकालता है। एक जना दो मशीनों पर एक साथ एक समय पर काम कर सकता है। जब पहली मशीन प्रेस करना शुरू करती है तो वह कपड़ा दूसरी में लगाता

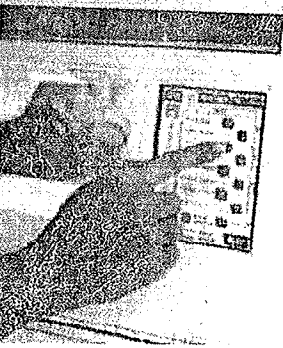
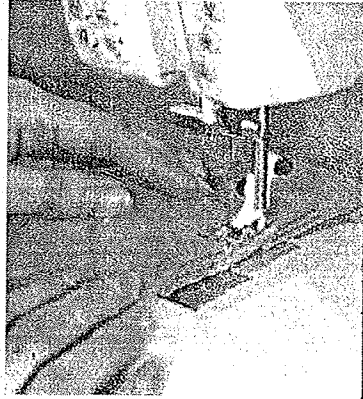
है। जब वह पहली का कपड़ा निकालता है तो दूसरी मशीन कपड़े को प्रेस करती है इस तरह समय तथा श्रम की बचत होती है और उत्पादन खर्च कम होता है, कार्यकर्ता की गलतियाँ नहीं होती और उच्च स्तर की प्रेस कपड़ों पर मिलती है।



कम्प्यूटराइज कढ़ाई की मशीन इसमें विशिष्ट सेन्सर फुट लिफ्ट, सेन्सर फुट पिपिट तथा सेन्सर फुट प्रेशर होता है जो आपके कपड़े की मोटाई को जाँचकर अपनी सेटिंग बदल लेता है। आप कपड़े को दोनों हाथों से नियन्त्रित कर सकते हैं, कोनों पर भी तेजी से मोड़ सकते हैं।



यह बहुत साधारण और सरल है। आप अपने कपड़े की किस्म, वजन व तकनीक का बस चयन कर लें। सिलाई का सलाहकार तुरन्त उपयुक्त सिलाई, स्टिच की चौड़ाई व लम्बाई, तागे का तनाव, सिलाई की गती, सेन्सर फुट इत्यादि सेट कर लेता है।



कलर टच स्क्रीन इसको केवल छूना होता है। स्टिच कढ़ाई या तकनीक का चयन करें। इसके लिए अपनी उंगली या स्टाइल्स का प्रयोग करें। आपका चयनित स्टिच स्क्रीन पर उसी दिशा में दिखेगा जिसमें सिलाई होनी है। जब आप कढ़ाई करेंगे तो आप आपने डिजाइन को कलर में स्क्रीन पर देख सकते हैं और यह भी काम शुरू करने से पहले।

पैक करने से पहले पूर्ण रूप फिनिशिंग विभाग में दिया जाता है।

वस्त्रों की पैकिंग भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर और मंजूरी प्राप्त पैकिंग मैटेरियल में की जाती है जिससे उस वस्त्र का लुक अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में परिवहन करते समय खराब न हो।

वस्त्र निर्माण न केवल श्रम एकाग्र उद्योग है परन्तु इसमें विचित्र और समय लेने वाली क्रियाएँ हैं जिन्हें कुशलता पूर्वक निभाना पड़ता है। सही कपड़े का चयन, सही रंग, बेहतरीन स्टाईल तथा टिकाऊ पैकिंग, उपभोक्ता की संतुष्टि के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कम्प्यूटरीकरण ने अब वस्त्र निर्माण उद्योग में भी प्रवेश कर लिए हैं। १९७० में सिलाई की मशीन को इलेक्ट्रॉनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके बनाया गया था। यह एक विशेष मशीन थी। उस समय जापान में 'मकैनिक तथा इलेक्ट्रॉनिक का फ्यूजना' की योजना बनी थी जिसे उद्योग से जोड़ा जा रहा था। इसी के चलते 'मेचा-इलेक्ट्रॉनिक' सिलाई की मशीनें बनीं। इसके बाद औद्योगिक सिलाई मशीनें तथा घरेलू सिलाई की मशीनें जो मेचा इलेक्ट्रॉनिक तकनीक से बनी थीं जिन्हें कम्प्यूटराइज किया गया।

वस्त्र निर्माण प्रक्रिया में कपड़े की कटाई तक के काम कम्प्यूटर द्वारा नियन्त्रित रहते हैं। सिलाई की प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक तथा माइक्रो कम्प्यूटर के जरिये नियन्त्रित होती हैं और फिनिशिंग की प्रक्रिया भी माइक्रो कम्प्यूटर से नियन्त्रित होती है।

क्योंकि वस्त्र उद्योग सबसे अधिक श्रमिक एकाग्र कार्य पर निर्भर करता है इसीलिए बढ़ती मजदूरी, खासतौर पर विकसित देशों में प्रबन्धकीय दिक्कतों को बढ़ा देती हैं। यह माना जाता है कि अच्छे वस्त्र उद्योग के परिणाम उत्पाद की संख्या, कार्यकर्ताओं की क्षमता तथा कुशलता और उत्पाद की कार्य श्रंखला के नियन्त्रण पर निर्भर करती हैं।

हाँलाकि, हाल के फैशन की प्रवृत्ति में वस्त्रों की फैक्ट्री काफी उत्पादन छोटी संख्या में करती हैं क्योंकि फैशन बहुत जल्दी बदलता है। इससे कार्यकर्ता को फिर से नये डिजाइन बनाना सीखना पड़ता है। यह एक चिन्ता का विषय है वस्त्रों के उद्योग के लिए।

इस समस्या का हल करने के लिए यह जरूरी है कि श्रमिक निर्भरता वस्त्र उद्योग में कम से कम हो। इस नजर से देख जाये तो श्रम पर बचत करना और स्वचल

यन्त्रीकरण करने से छोटी संख्या में उत्पादन करना सम्भव ही नहीं बल्कि फायदेमन्द होगा। यही आगामी विषय हैं जो भविष्य के वस्त्र उद्योग के प्रबन्ध को प्रभावित करेंगे।

मेचा इलेक्ट्रॉनिक तकनीक ने उपकरणों में उच्च स्तर की बहुविधा प्रदान की है जिसकी वजह से जल्दी से बदलाव लाये जा सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भविष्य में भी मेचा इलेक्ट्रॉनिक तकनीक अगामी वस्त्र औद्योगिकीकरण की मुख्य तकनीक होगी।

स्वचल यन्त्रीकरण की आवश्यकता सिलाई को जल्दी से बदलने के काम आती है। इसके लिए स्वचल यन्त्रों एवं मशीनों की आवश्यकता है। इन मशीनों में सिलाई की लाइन को फोटो इलेक्ट्रिकल स्कैनिंग से स्कैन करके स्वचल मशीन से सिला जाता है।

### अभ्यास-

१- किसी वस्त्र उत्पादन फैक्ट्री में जायें और वहाँ की कार्य प्रणाली पर एक रिपोर्ट तैयार करें?

### १३.४ सारांश:-

अपारेल निर्माण क्षेत्र में, उद्योग को उनके निर्माण के तरीके के आधार पर दो विशिष्ट भागों में बाटा गया है।

१- कट-स्टिच-यानी आप कपड़ा खरीदे काटें और सिले तथा

२- पहले कपड़े को बुने या वीव करें फिर काटें और सिलें।

अपारेल उद्योग में दो तरीकों से कपड़ों का निर्माण होता है। एक जहाँ पर पूरा वस्त्र एक ही व्यक्ति द्वारा सिला जा रहा है, जैसे साधारण दर्जी करते हैं और दूसरा जहाँ वस्त्र का हर भाग एक विशेष मशीन पर सिला जाता है और फिर पूरे वस्त्र के भागों को लेकर एक जगह जोड़ दिया जाता है। इस तरीके को असेम्बली लाइन कहते हैं। कपड़ों के उत्पादन के इस तरीके में आधुनिक मशीनों का प्रयोग होता है।

विशेष मशीनें जिनका प्रयोग उद्योग जगत में होता है वह हैं प्लेट लॉक मशीन, सिंगल नीडिल लॉक स्टिच मशीन, डबल नीडिल लॉक स्टिच मशीन, थ्री थ्रेड ओवर लॉक स्टिच मशीन, फाइव थ्रेड ओवर लॉक स्टिच मशीन, बार टैकर बटन होलिंग मशीन,

बटनिंग, मशीन, कटिंग मशीन, इलेक्ट्रॉनिक स्टीम आइरन, फैब्रिक टेस्टिंग मशीन इत्यादि।

१९७० में सिलाई की मशीन को इलेक्ट्रॉनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके बनाया गया था। यह एक विशेष मशीन थी।

वस्त्र निर्माण प्रक्रिया में कपड़े की कटाई तक के काम कम्प्यूटर द्वारा नियन्त्रित रहते हैं। सिलाई की प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक तथा माइक्रो कम्प्यूटर के जरिये नियन्त्रित होती हैं और फिनिशिंग की प्रक्रिया भी माइक्रो कम्प्यूटर से नियन्त्रित होती है।

क्योंकि वस्त्र उद्योग सबसे अधिक श्रमिक एकाग्र कार्य पर निर्भर करता है इसीलिए बढ़ती मजदूरी, खासतौर पर विकसित देशों में प्रबन्धकीय दिक्कतों को बढ़ा देती हैं। इस समस्या का हल करने के लिए यह जरूरी है कि श्रमिक निर्भरता वस्त्र उद्योग में कम से कम हो। स्वचल यन्त्रीकरण की आवश्यकता सिलाई को जल्दी से बदलने के काम आती है।

#### १३.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न-१ वस्त्र उद्योग में वस्त्र निर्माण के कौन से दो तरीके हैं?

प्रश्न-२ वस्त्र उद्योग में वस्त्र उत्पादन के कौन से दो तरीके हैं?

प्रश्न-३ वस्त्र उद्योग में वस्त्र प्रयोग होने वाली मशीनों का नाम बतायें?

प्रश्न-४ वस्त्र उद्योग में वस्त्र काटने की मशीनों का नाम बतायें?

प्रश्न-५ वस्त्र उद्योग में वस्त्र प्रेस करने वाली मशीनों का नाम बतायें?

#### १३.६ स्वाध्ययन हेतु

संरचना

१४.१ यूनिट प्रस्तावना

१४.२ उद्देश्य

१४.३ ब्लाउज

१४.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

१४.५ स्वाध्ययन हेतु

१४.१ यूनिट प्रस्तावना:-

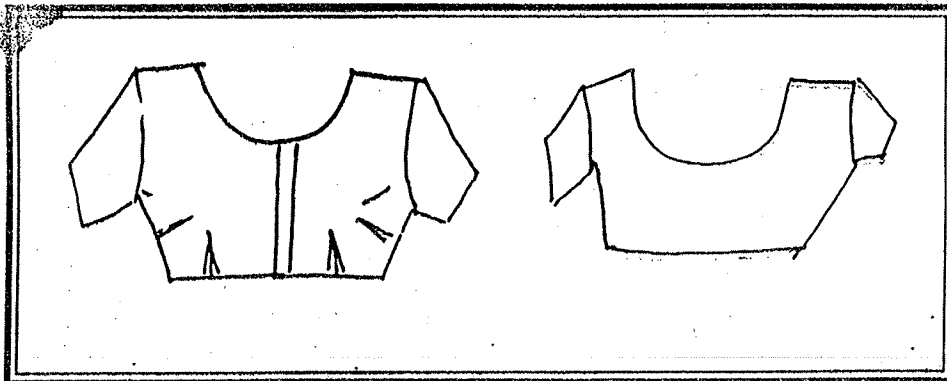
इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए साड़ी ब्लाउज का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।

१४.२ उद्देश्य:-

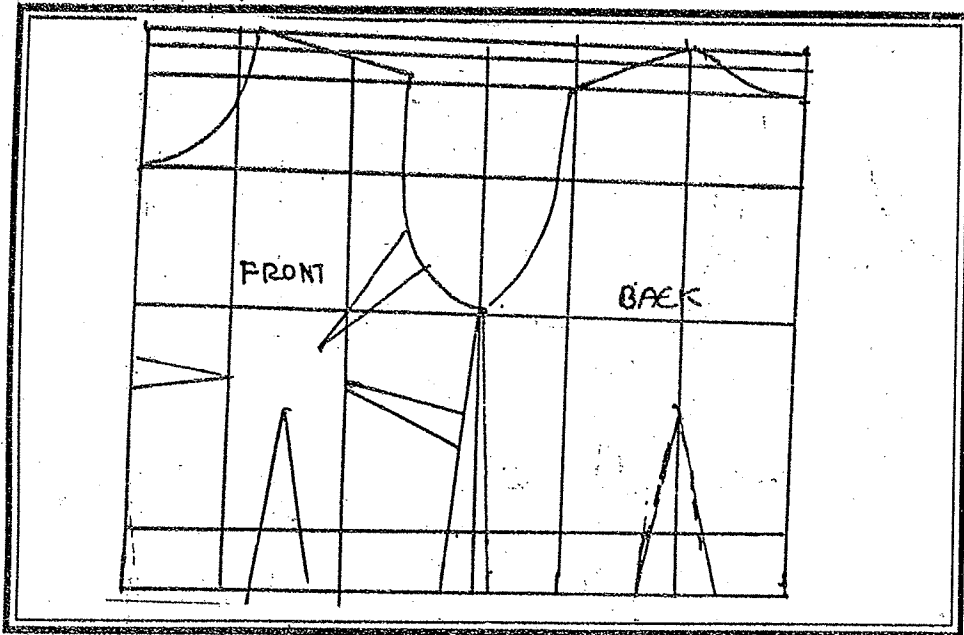
एक डिजाइनर के लिए यह जानना आवश्यक है कि उसके डिजाइन का निर्माण कैसे होगा। इस इकाई में बड़ी महिलाओं के लिए ब्लाउज का विवरण दिया गया है। साड़ी ब्लाउज एक फिटिंग वस्त्र है इसीलिए इसमें एक बेहतरीन फिट होना आवश्यक है।

१४.३ ब्लाउज:-

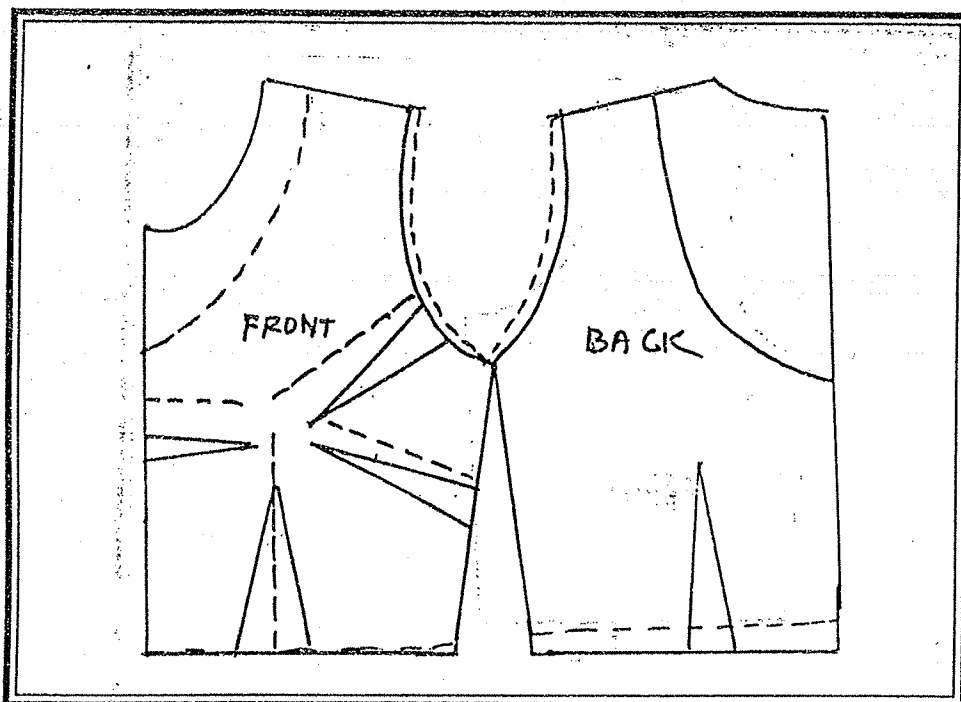
आइये दिये हुए डिजाइन का साड़ी ब्लाउज बनायें।



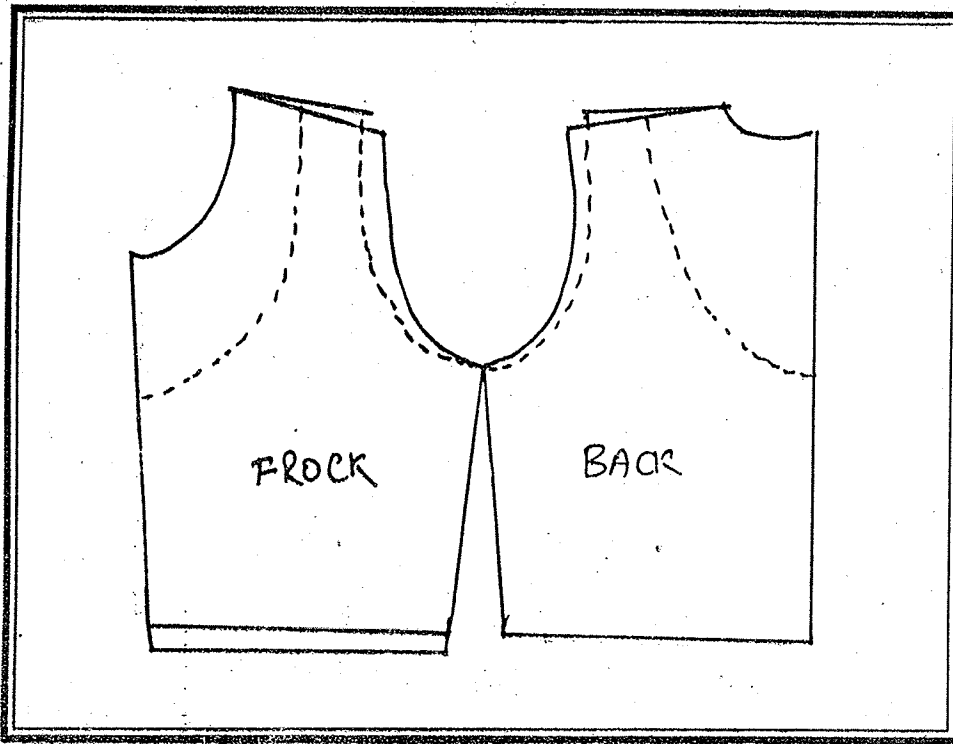
सबसे पहले ३४ इंच छाती के साइज का ड्राफ्ट बनायें, इसके लिए प्रमाणिक नाप के चार्ट का प्रयोग करें। ध्यान से आगे व पीछे की सारी खर्ट के निशान लगायें।



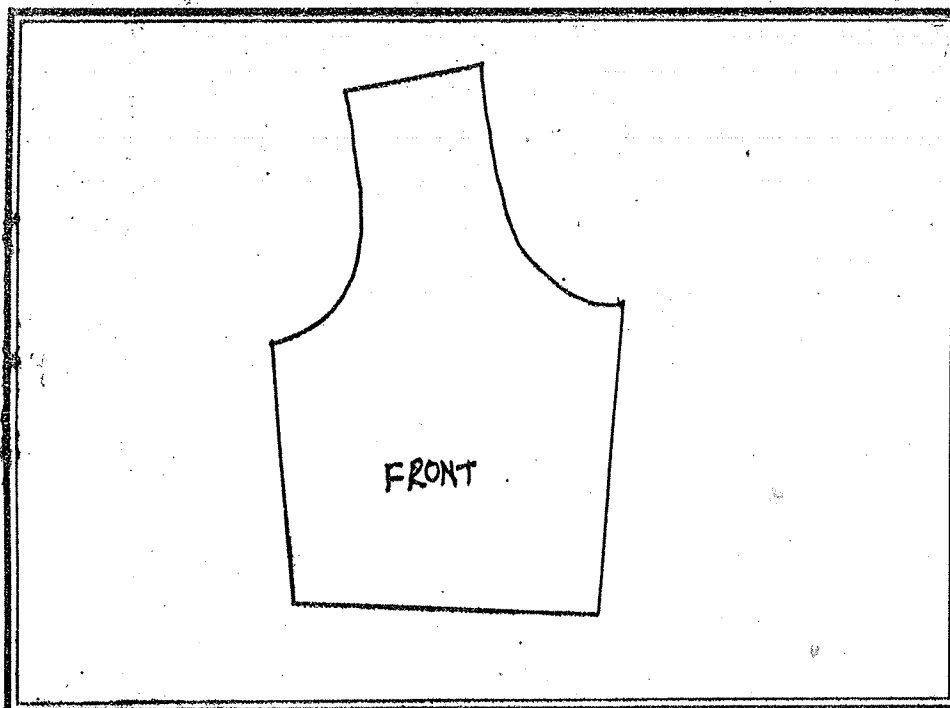
अब इस ड्राफ्ट को किसी विशेष इन्सान के लिए बदलें, जिसकी छाती ३४ इंच की हो। अगर क्रास बैक (कन्धा) १३ इंच है, राउन्ड वेस्ट (कमर) २५ इंच हो और बस्ट प्वाइन्ट ६ इंच तो बेसिक ड्राफ्ट में निम्न बदलाव करें।



आगे के ड्राफ्ट में कन्धा नापें। इसे १३ इंच का आधा यानी ६.५ इंच होना चाहिए। अगर ६.५ इंच है तो ऐसे ही रहने दें, अगर नहीं तो आवश्यकता अनुसार निशान आगे या पीछे लगाकर कन्धे की लाइन को दोबारा बनायें।

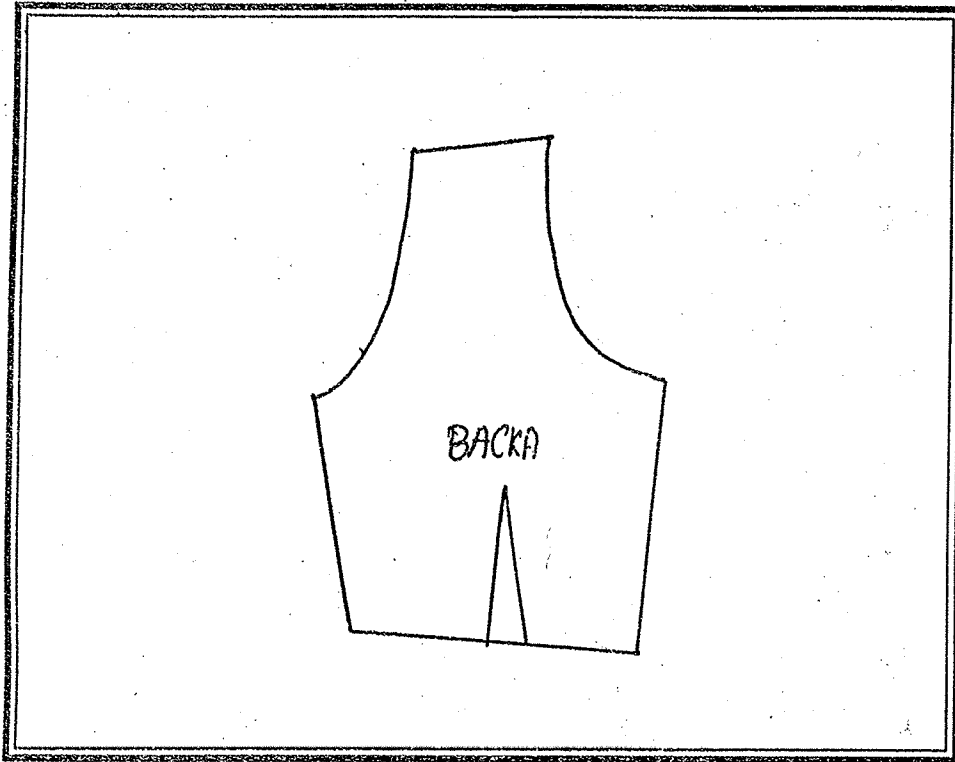


अब इस नये प्वाइन्ट से मुडदे को दोबारा से बनायें।

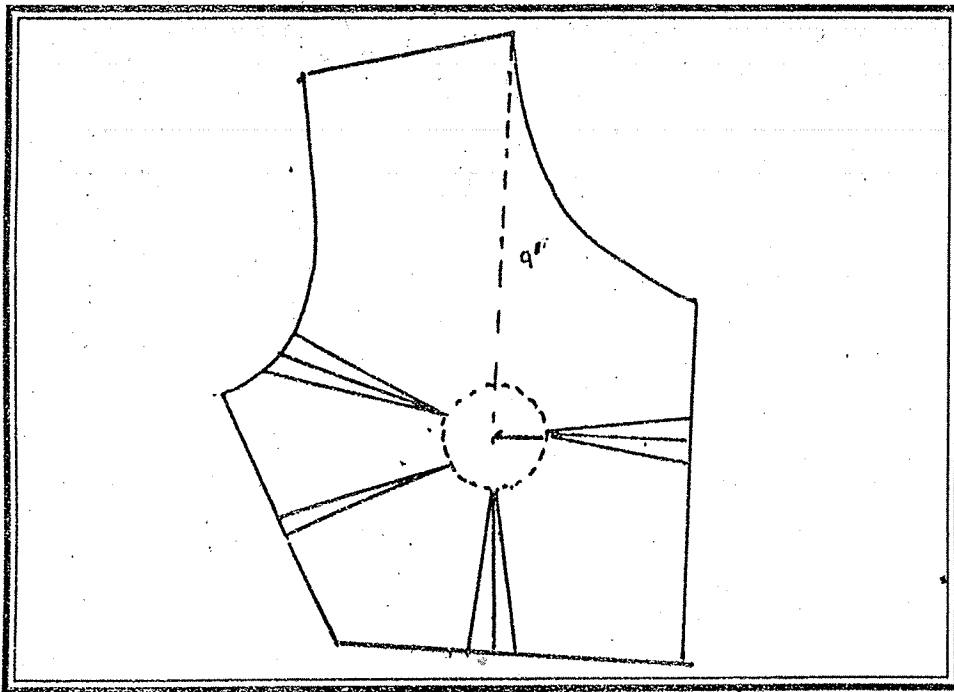




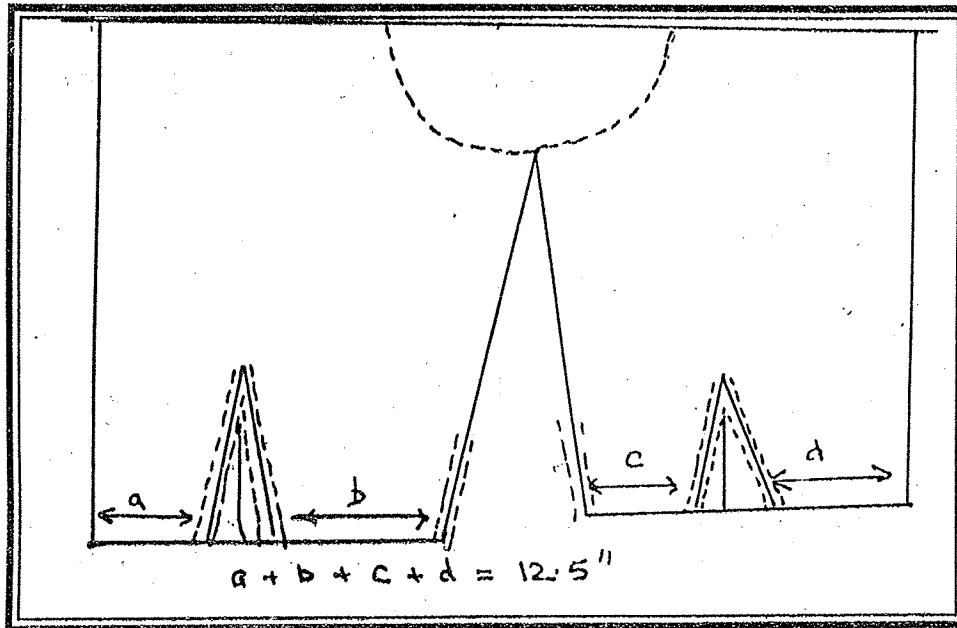
यही बदलाव पीछे के ड्राफ्ट में करें।



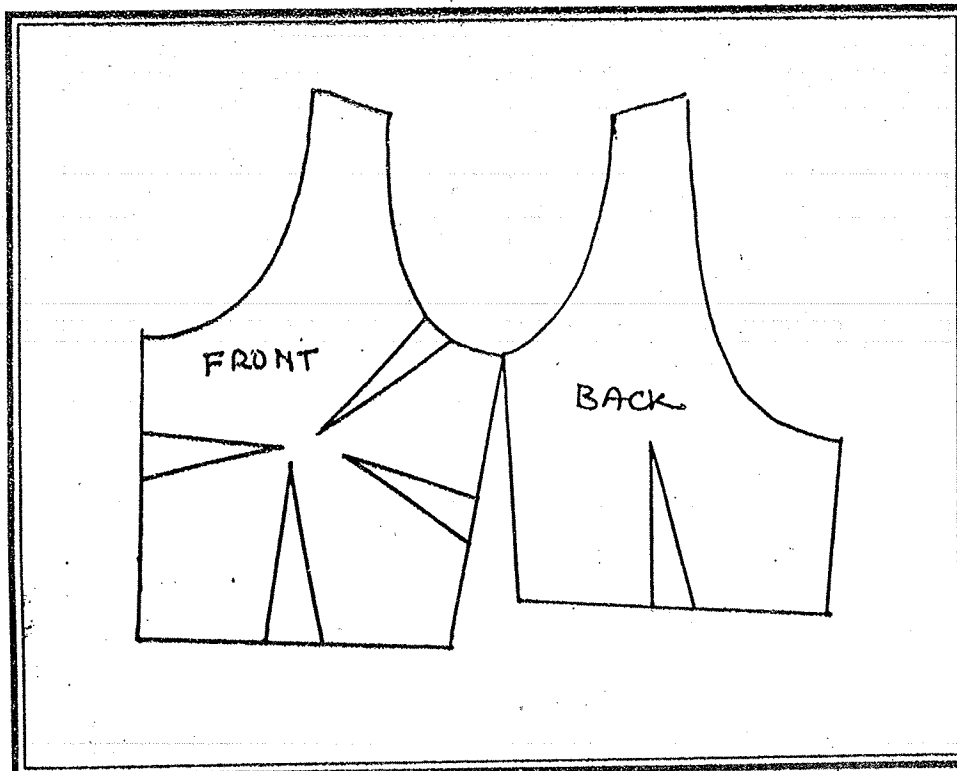
अब पहले प्वाइन्ट को नापें, इसे कन्धे से ६ इंच पर होना चाहिए। अगर नहीं है तो ६ इंच पर निशान लगायें और सारी डार्ट्स को फिर से बनायें। डार्ट के नियम ध्यान में रखें।



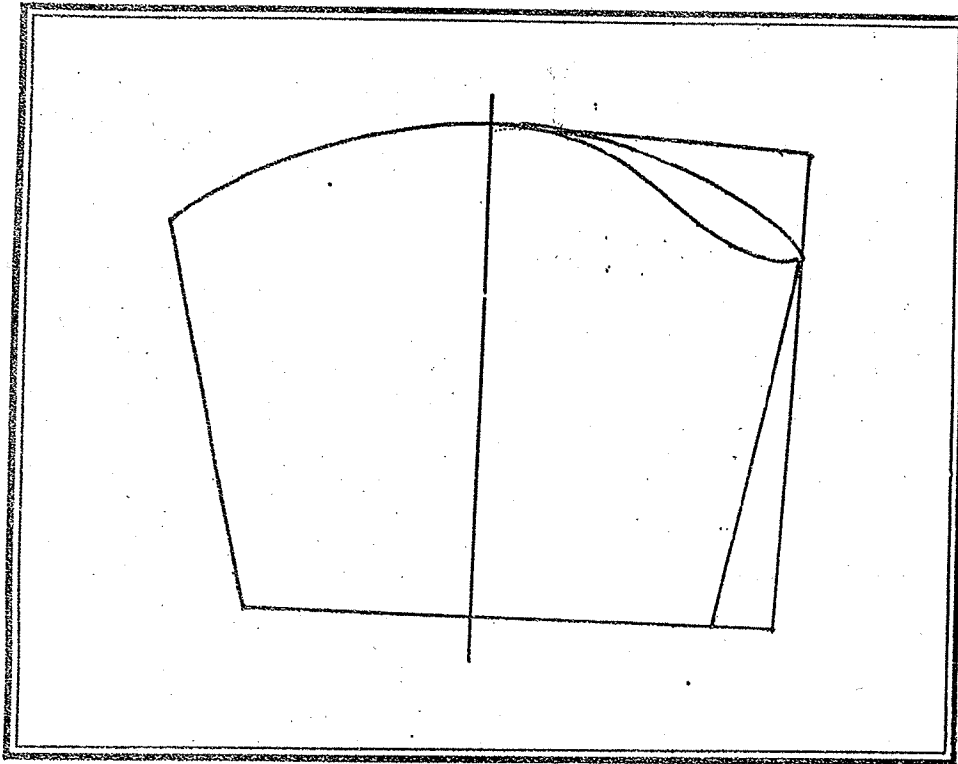
अब आगे व पीछे की कमर का नाप लें। इसका नाप राउन्ड वेस्ट (कमर) का आधा होना चाहिए। अगर नहीं है तो बगल की सिलाई वेस्ट लाइन डार्ट की चौड़ाई को कम ज्यादा करके कमर का नाप ठीक करें।



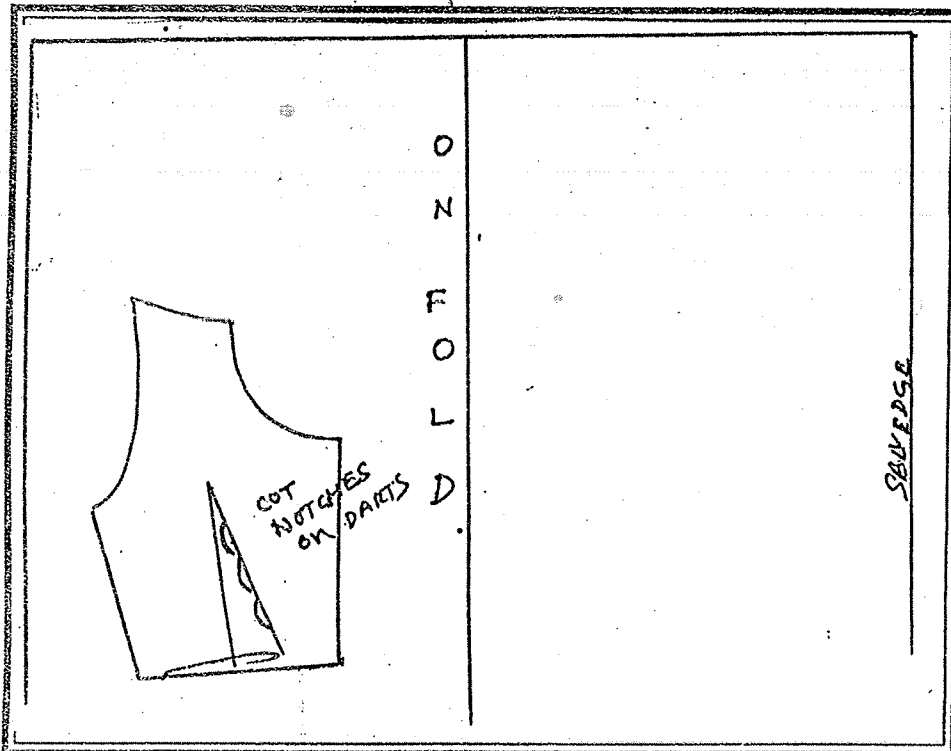
अब आगे और पीछे का गला आवश्यकता अनुसार बदलें।



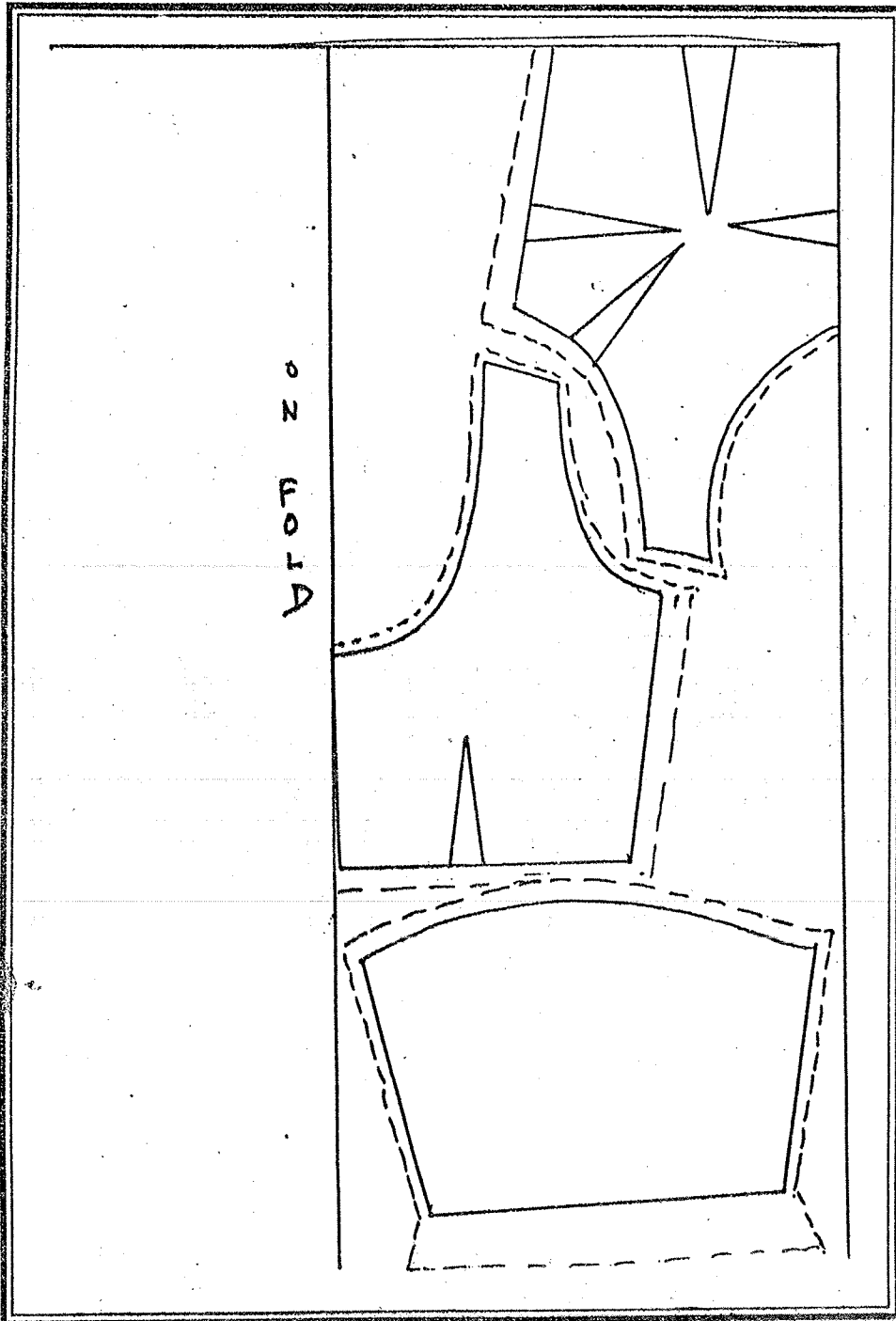
आइये अब आस्तीन का ड्राफ्ट बनायें।



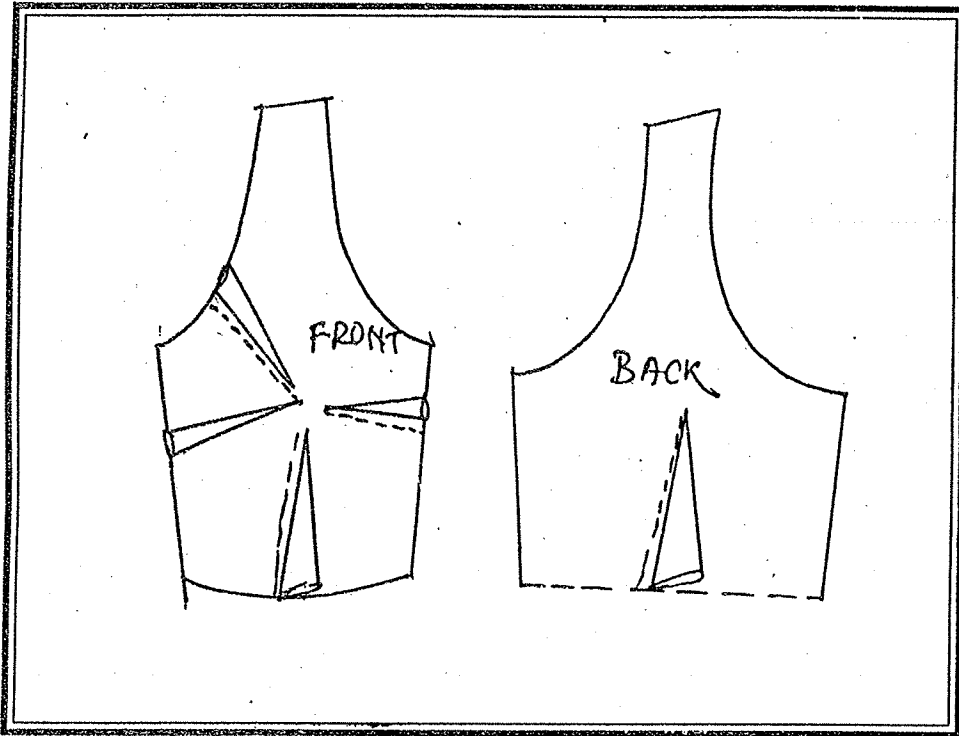
अब ३६ इंच अर्ज की रुबिया खरीदें और लम्बाई में एक बार मोड़कर फैलायें।  
अब ड्राफ्ट में डार्ट पर नोचेस लगायें (जैसे रेखाचित्र में दिखाया गया है।)



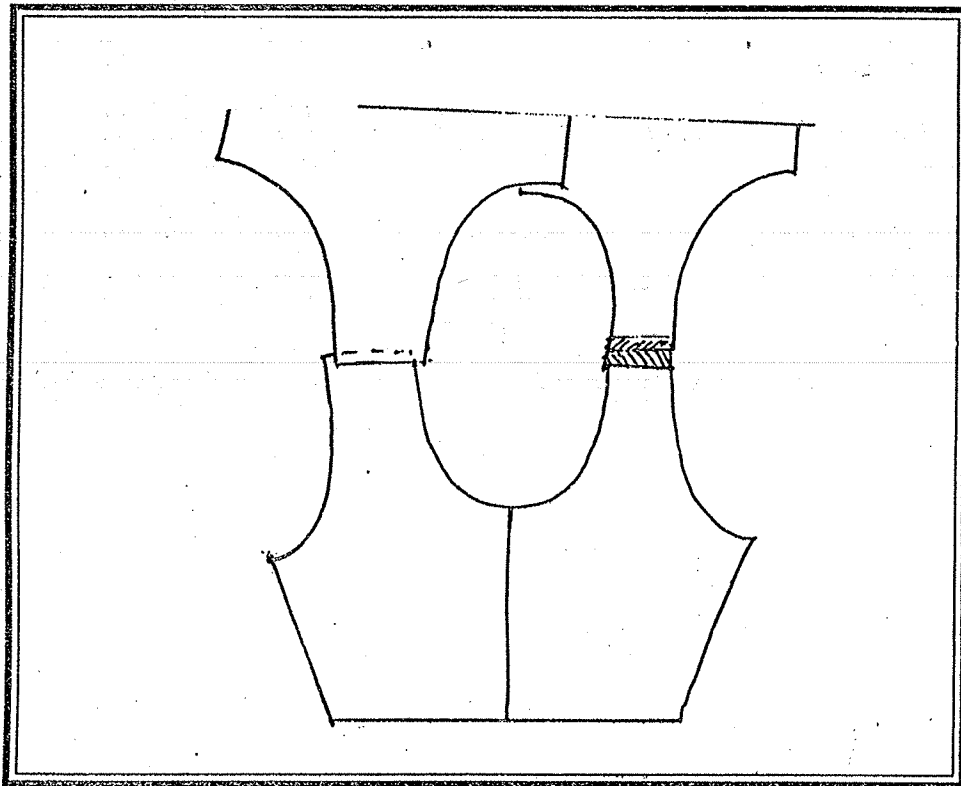
अब जैसे दिखाया गया है वैसे ही आगे और पीछे के बॉडिस को रखें। याद रहे की आगे का बॉडिस सेलवेज के किनारे पर रखा जायेगा और पीछे का फोल्ड पर। अस्तीन को दिखाये गये तरीके से रखें। अब १/४ इंच सिलाई का दवाब गले व मुडके पर रखते हुए निशान लगायें। बगल की सिलाई में १ इंच दवाब लें और नीचे की हेमलाइन कमर पर १/२ इंच का दवाब लें और अस्तीन की हेम में १.५ इंच के मोड़ के लिए रखें। आगे और पीछे के पल्लों के लिए बराबर दवाब लें। अब कटिंग लाइन पर कपड़े को काटें।



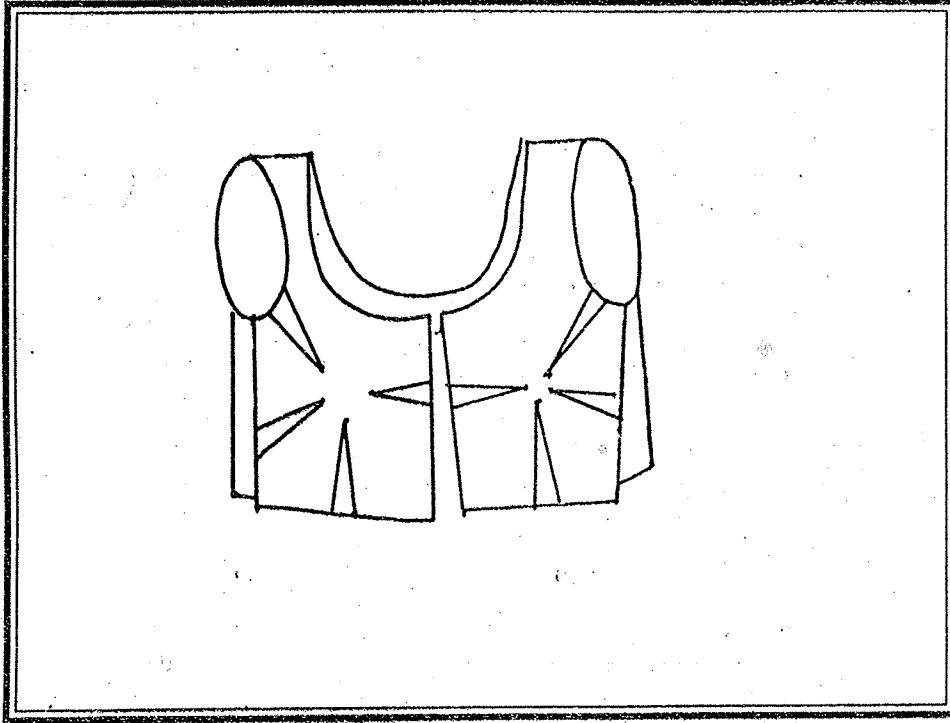
अब आइये ब्लाउज को सिलकर तैयार करें। सबसे पहले डार्ट्स का निशान सारे पल्लों पर लगायें और सिल लें।



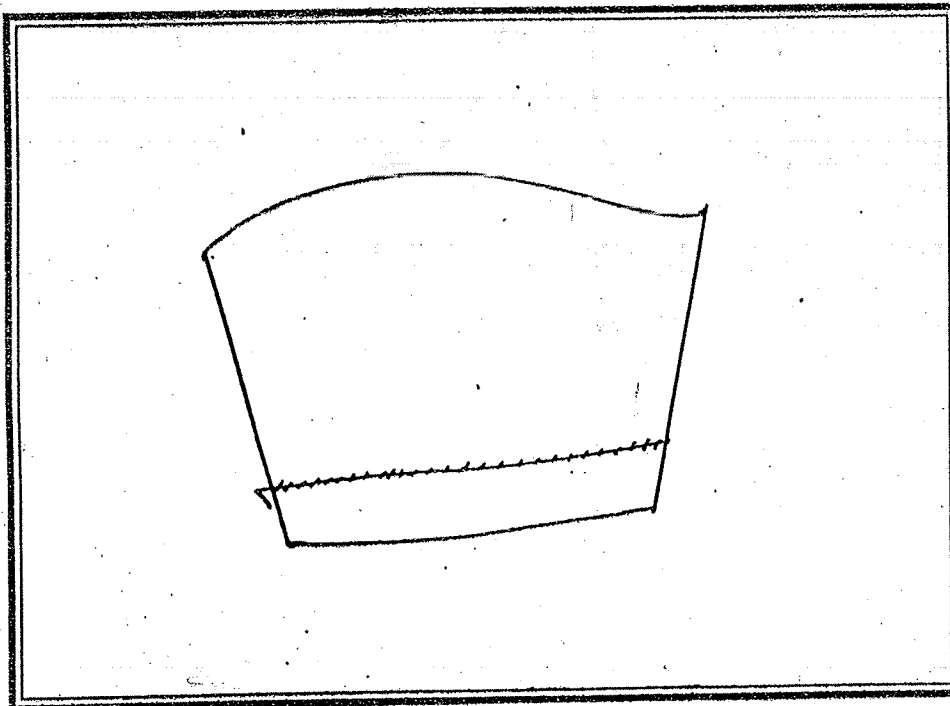
अब कन्धो को जोड़ें।



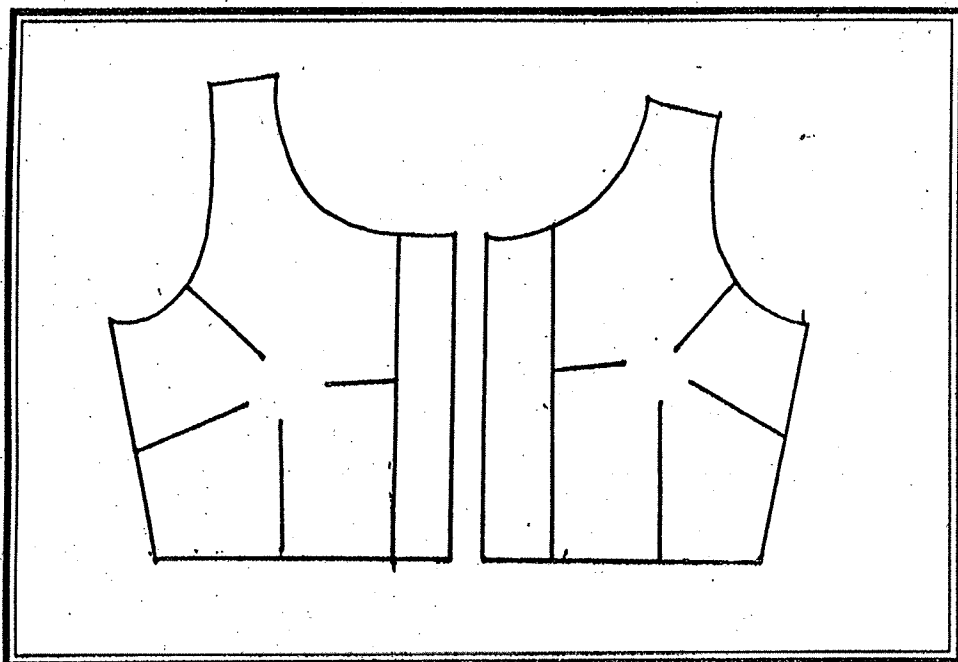
बगल की सिलाई लगाने के बाद वस्त्र को पहनकर देख लें। अगर कहीं से ढीला हो तो सिलाई का दबाव बढ़ा लें जिससे अच्छी फिटिंग मिले।



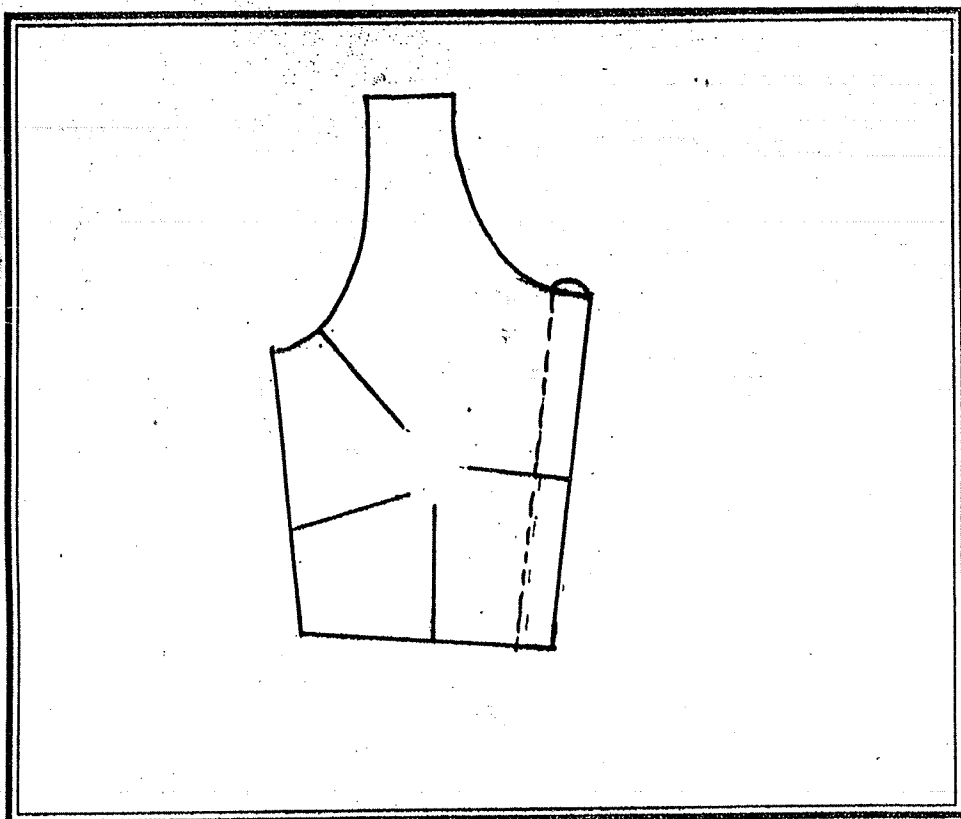
अब आस्तीन की हेमलाइन को मोड़े, एक साथ हेमिंग स्टिच करें। आस्तीन की बगल की सिलाई लगायें। मुडड़े की सिलाई को बॉडिस की सिलाई से मैच करके आस्तीन को बॉडिस के मुडड़े पर चढ़ायें।



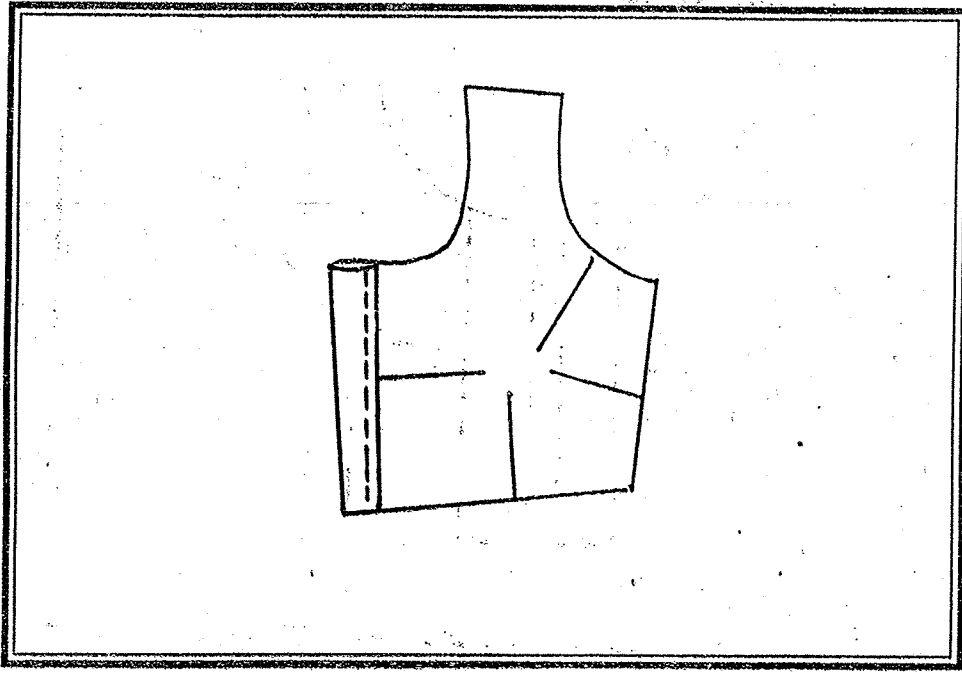
अब सामने की ओपनिंग के लिए एक १.२५ इंच की पट्टी सीधे पल्ले पर जोड़ें  
और २ इंच की पट्टी बाये तरफ।



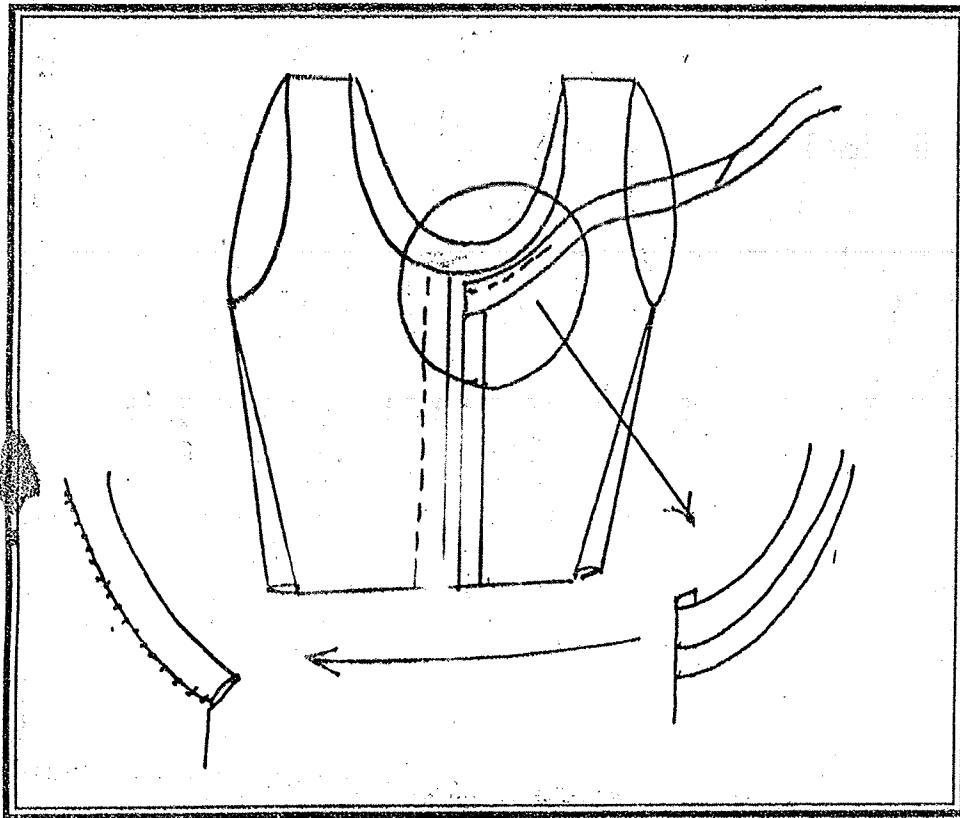
१.२५ इंच की पट्टी को अन्दर की तरफ मोड़कर हेम करें।



२ इंच की पट्टी को बाहर की तरफ मोड़ते हुए मशीन करें। यह आपका बटन पट्टी का काम करेगा इस पर हुक एवं आई लगाये।

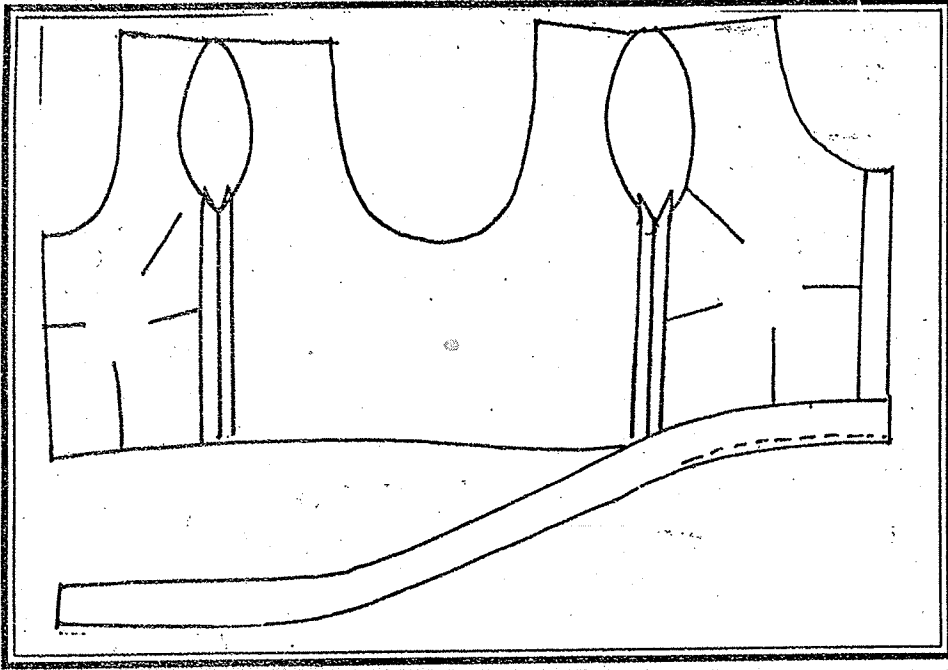


अब गले पर पाइपिंग लगाये, मोड़े और हेम करें।

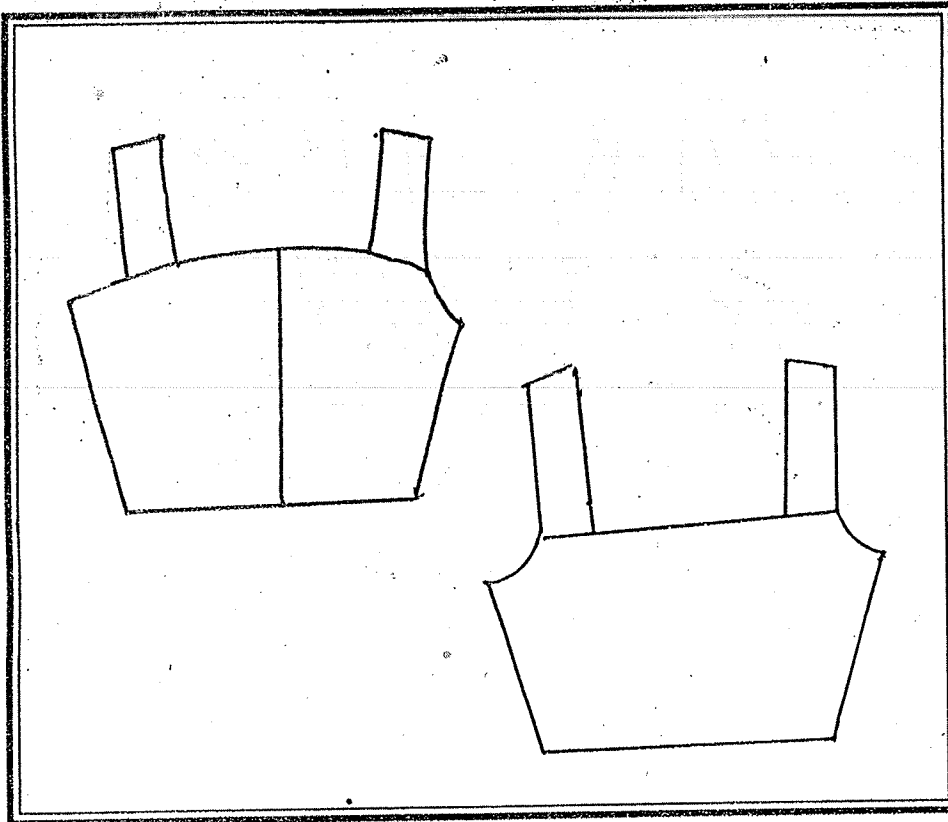




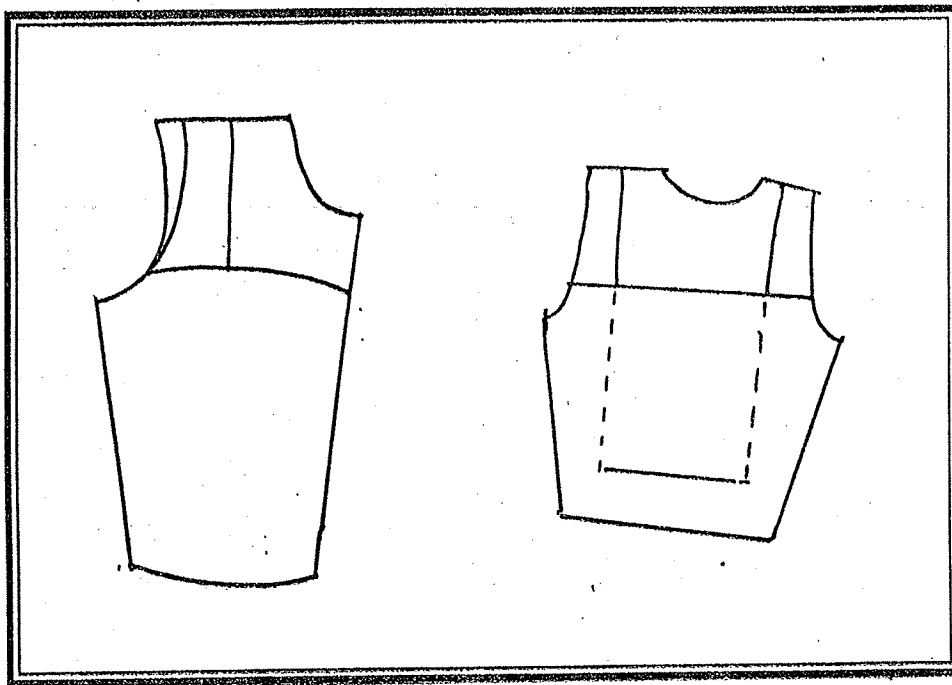
अब १.५ इंच की पट्टी काटें और कमर पर लगायें, मोड़े और हेम करें।



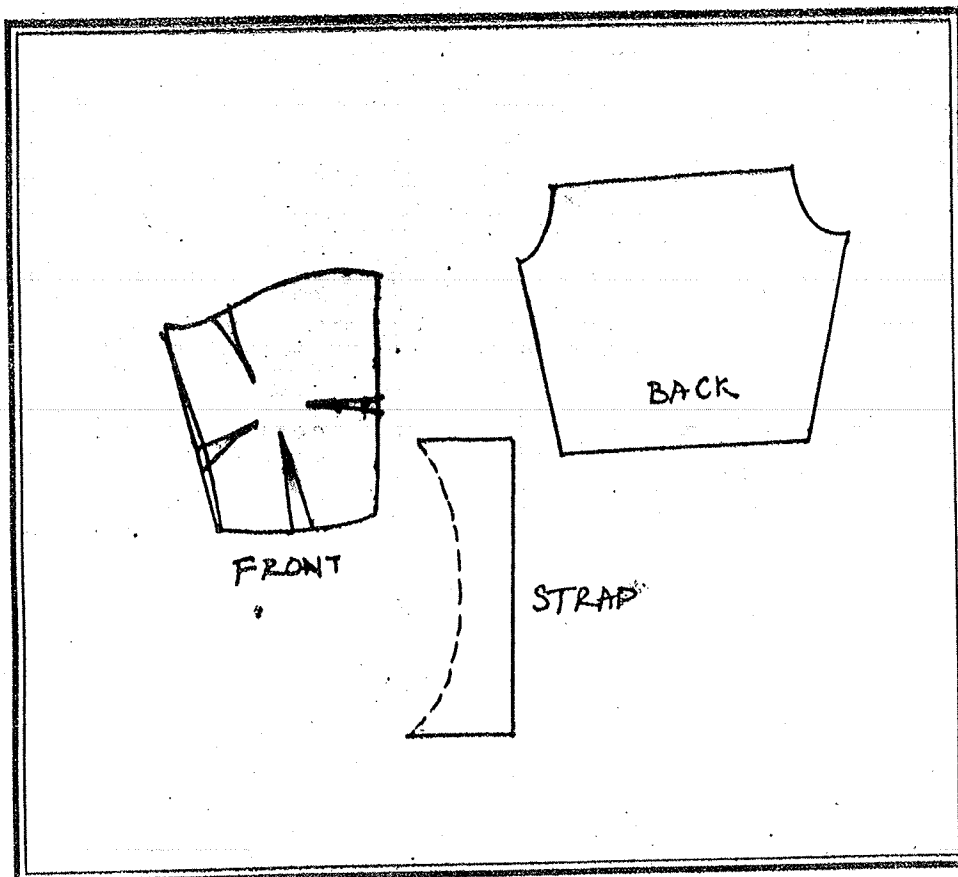
आइये अब एक और डिजाइन बनाएँ और ड्राफ्ट करें।



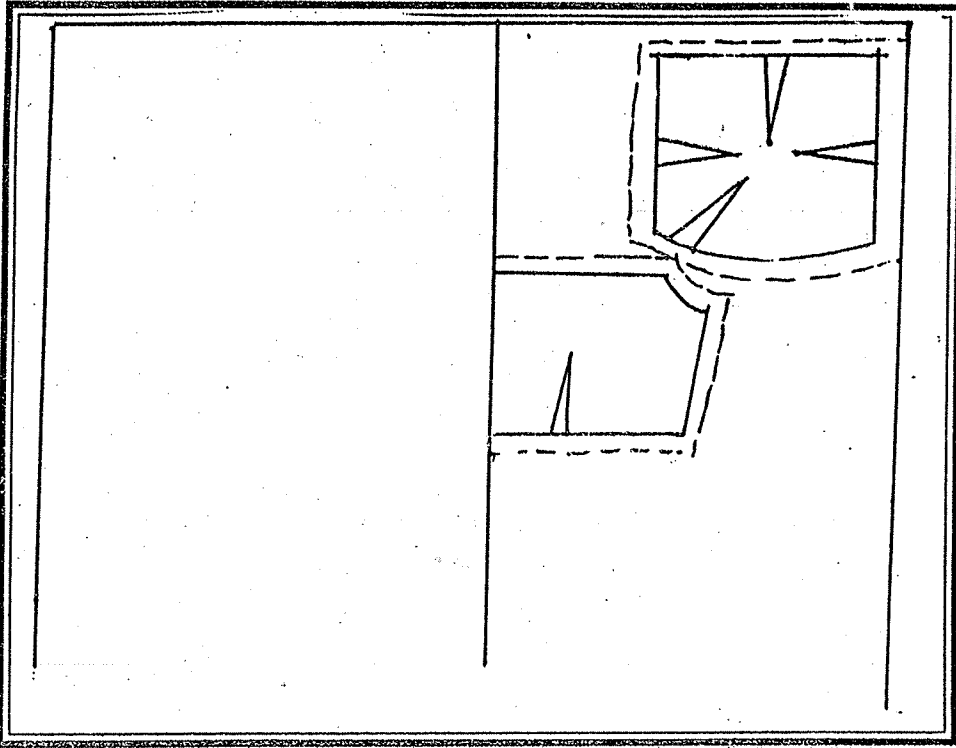
इस डिजाइन के लिए बेसिक ड्राफ्ट बनायें और डिजाइन के आधार पर बेसिक ड्राफ्ट में आगे और पीछे के ड्राफ्ट को बदलें।



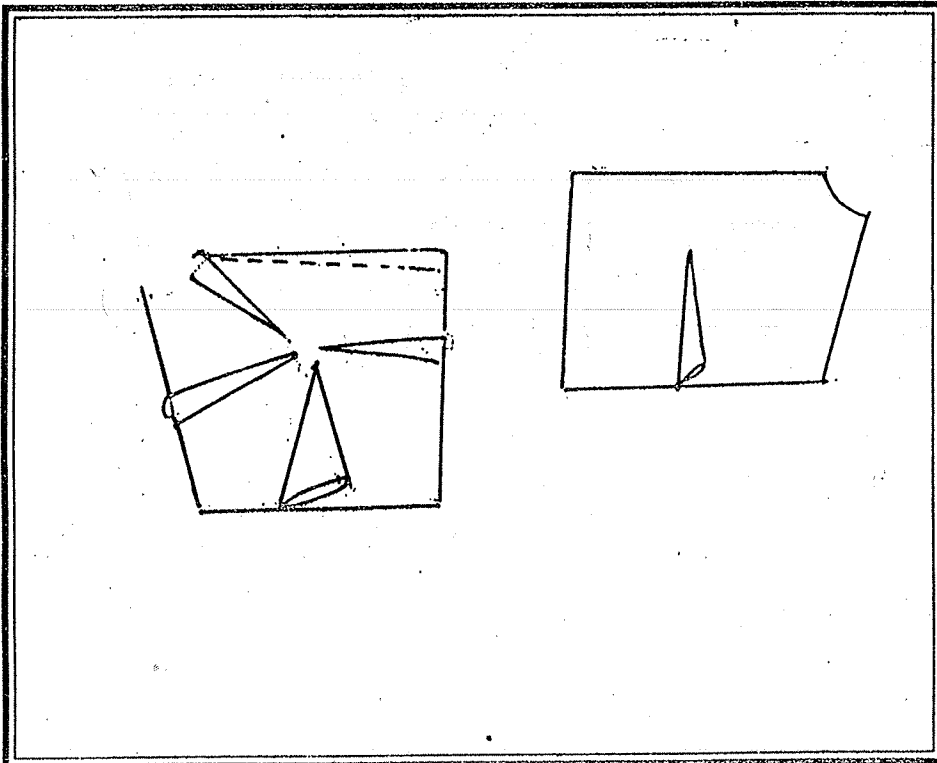
आपका ड्राफ्ट अब कुछ ऐसा दिखेगा।



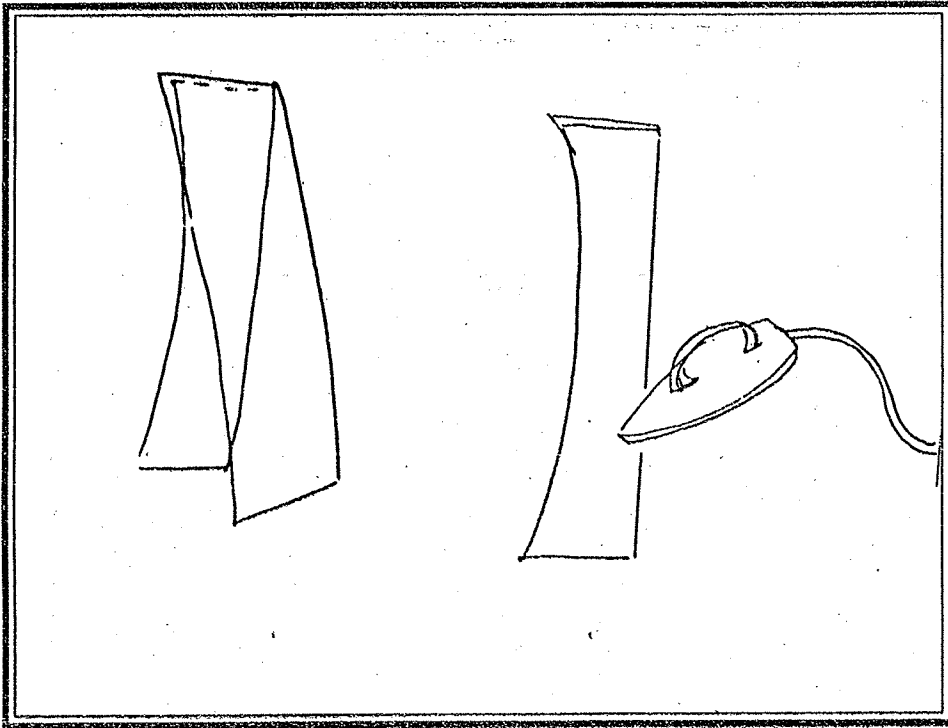
कपड़े को पहले की तरह रखें और डार्ट पर निशान लगायें। ऐसे डिजाइन में लाइनिंग लगाना बेहतर होता है। इसलिए इस ड्राफ्ट को लाइनिंग में भी काटें।



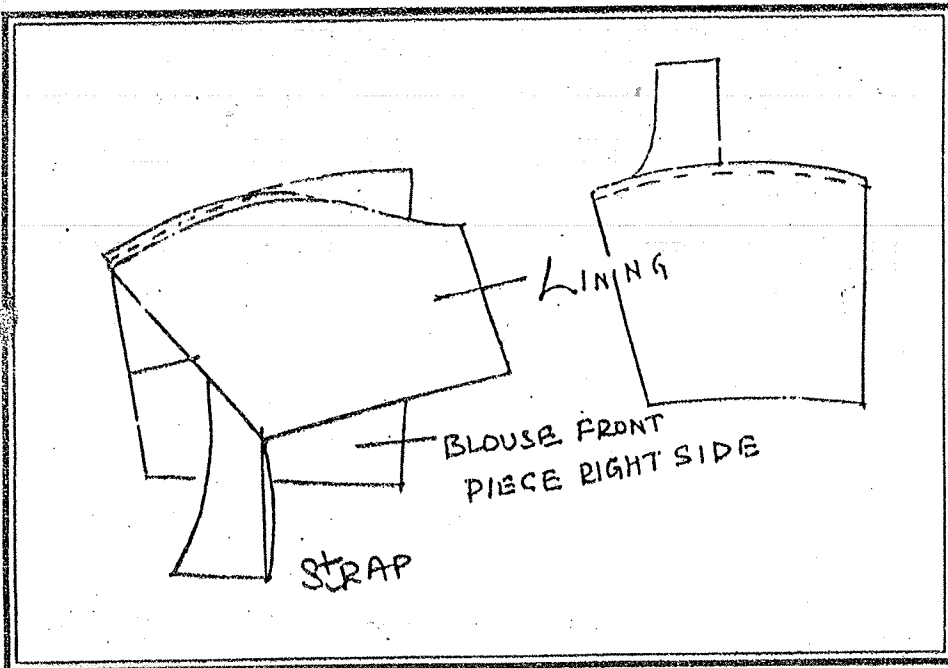
अब कपड़े और लाइनिंग दोनों में डार्ट डालें।



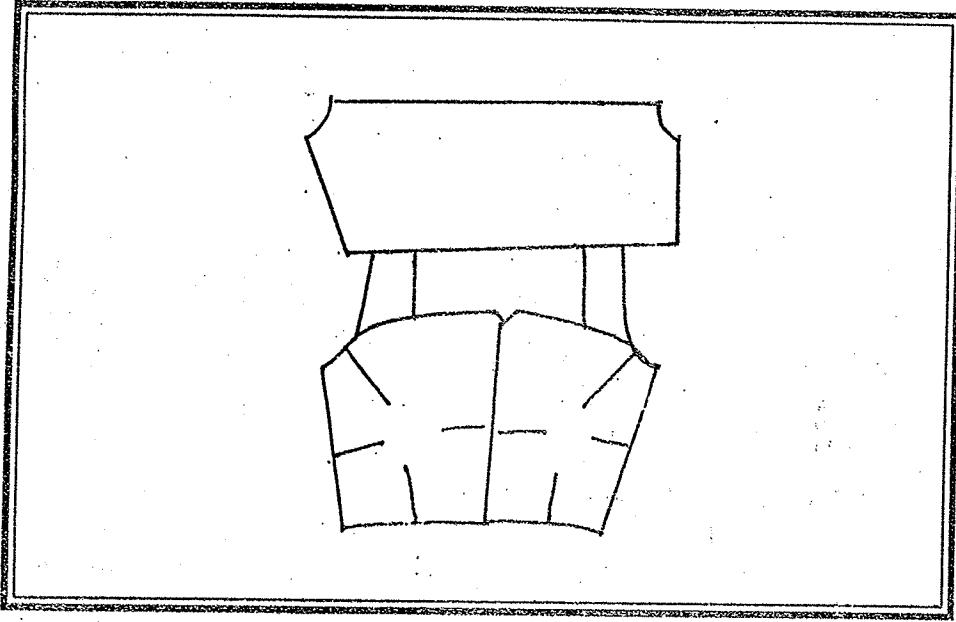
कन्धे की पट्टी को सिलकर पलट लें। इसे प्रेस करें।



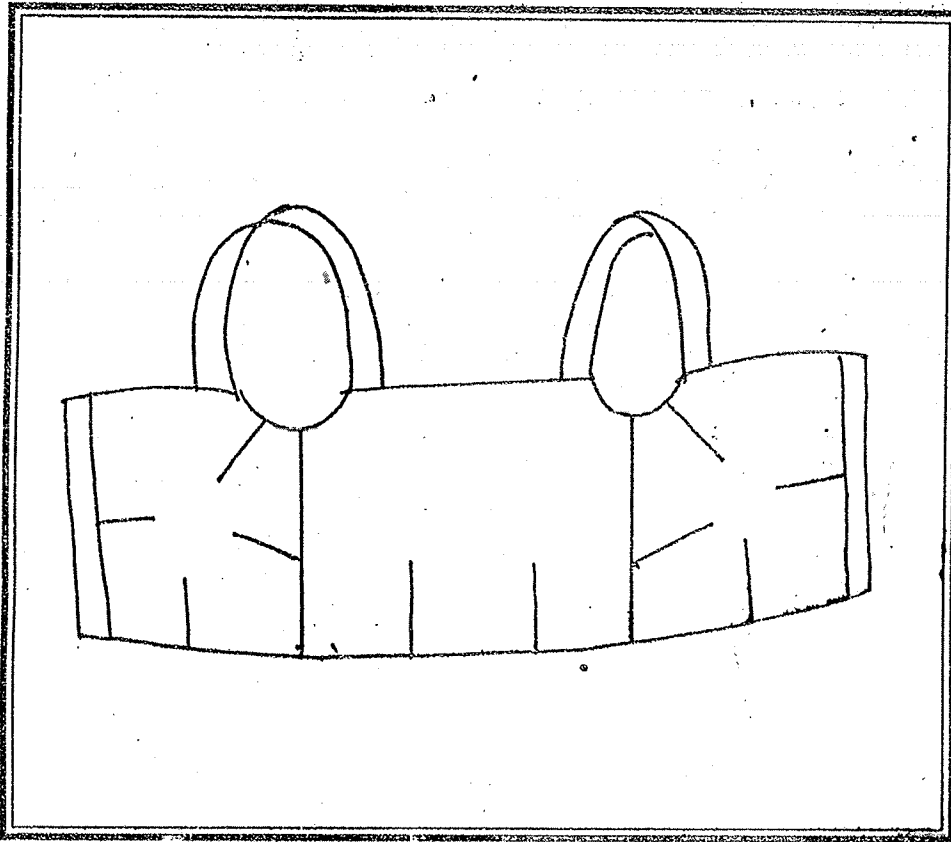
सामने के पल्ले में कन्धे की पट्टी को जोड़ें। दोनों आगे के पल्लों के लिए लाइनिंग तथा कपड़े के बीच में कन्धे की पट्टी को रखें और चारों तरफ से सिल दें। केवल २ इंच की जगह छोड़ें जहाँ से पल्ले को पलटा जा सकता है। कन्धे की पट्टी की सिलाई अन्दर चली जायेगी।



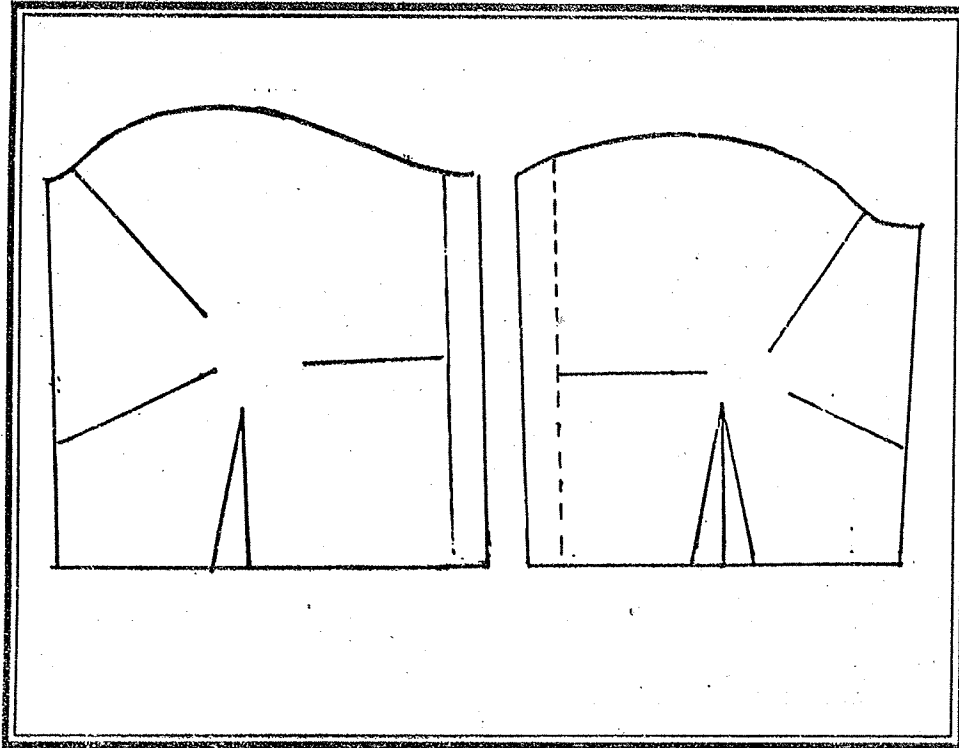
अब पीछे का पल्ला लेकर कन्धे की पट्टी का दूसरा किनारा लगायें। उसके ऊपर लाइनिंग लगायें और २.३ इंच छोड़कर चारों तरफ से सिल दें। अब इसको पलट दें जिससे सिलाई अन्दर जाये और कन्धे की पट्टी बाहर निकल आये।



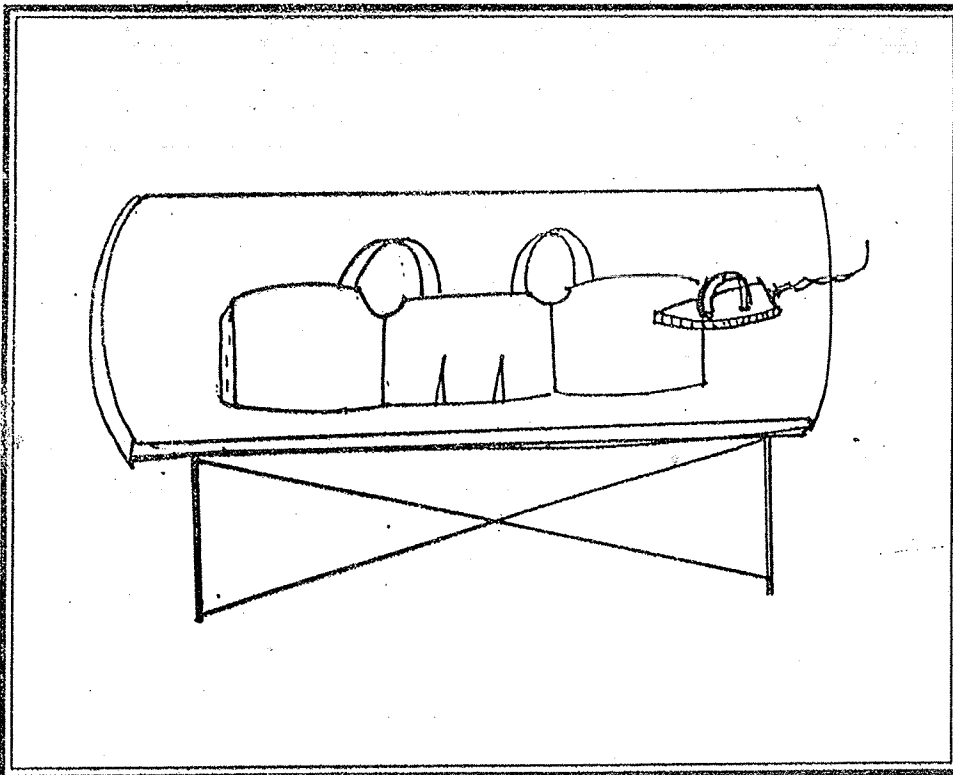
अब बगल की सिलाई लगायें।



सामने का बटन टेप बनायें। अगर आप चाहें तो मजबूती के लिए आप एक अतिरिक्त इन्टरफेसिंग सामने की पट्टी में लगा सकते हैं। सब तरफ से फिनिश करें।



पूरे वस्त्र को प्रेस करके फिनिश करें।

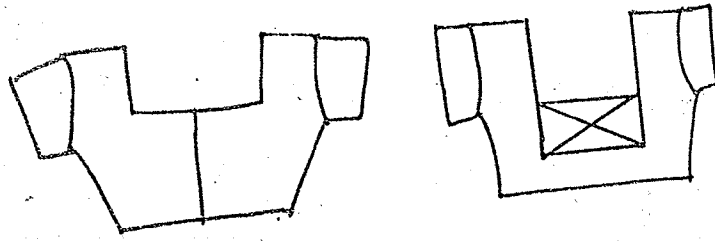


अभ्यास-

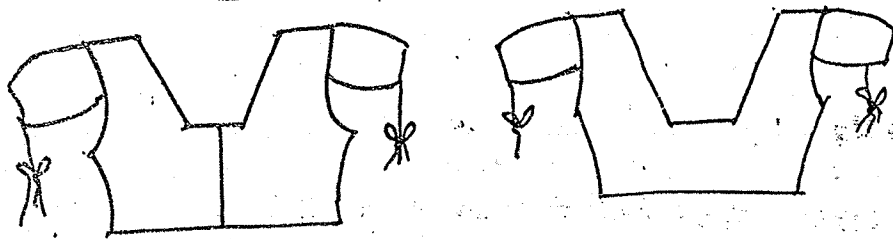
१- पाठ्य मे दिये गये डिजाइनों की सिलाई करें।

१४.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

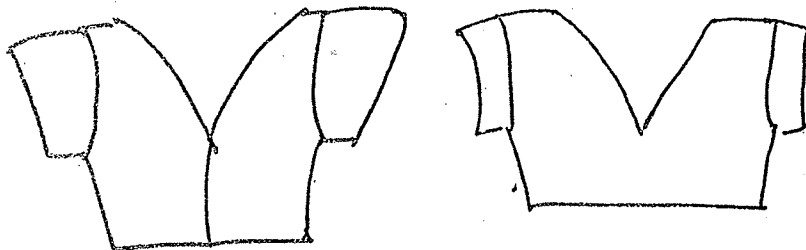
प्रश्न-१ दिया गये डिजाइन की सिलाई करें।



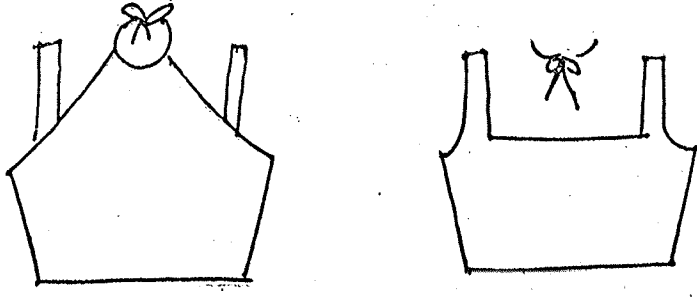
प्रश्न-२ दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



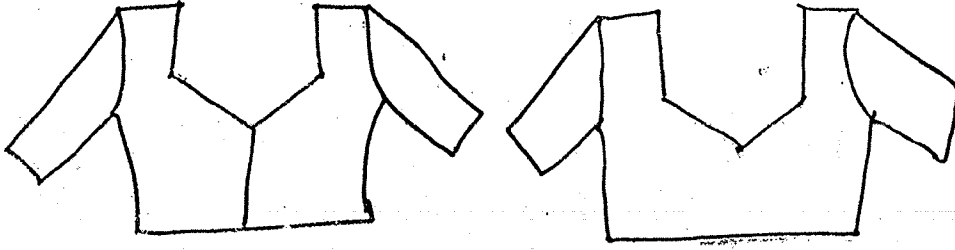
प्रश्न-३ दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



प्रश्न-४ दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



प्रश्न-५ दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



१४.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के० आर० जारापकर पब्लिकेशन, नामनीत पब्लिकेशन इण्डिया लिमिटेड।



संरचना

१५.१ यूनिट प्रस्तावना

१५.२ उद्देश्य

१५.३ सलवार कमीज, पैरलेल व चूड़ीदार

१५.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

१५.५ स्वाध्ययन हेतु

१५.१ यूनिट प्रस्तावना:-

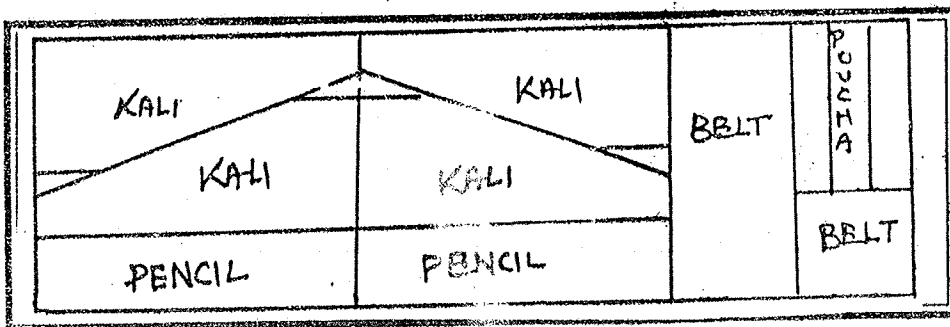
इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए सलवार, कमीज, पैरलेल व चूड़ीदार का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।

१५.२ उद्देश्य:-

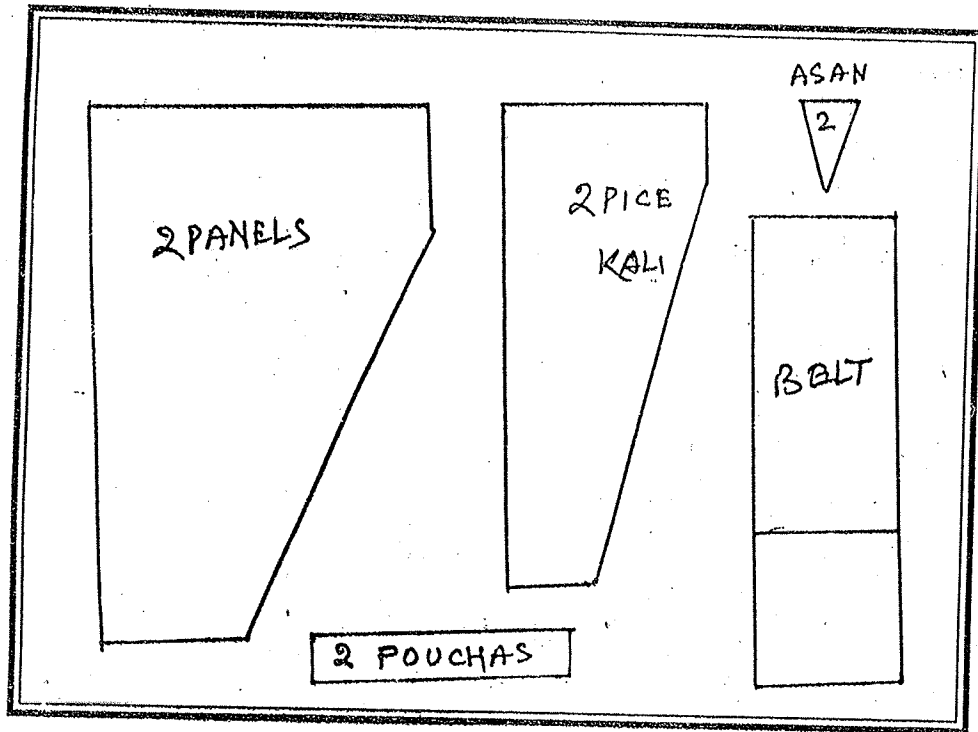
एक डिजाइनर के लिए यह जानना आवश्यक है कि उसके डिजाइन का निर्माण कैसे होगा। इस इकाई में बड़ी महिलाओं के लिए सलवार कमीज, पैरलेल तथा चूड़ीदार वस्त्रों के बेसिक विधि का वर्णन किया गया है।

१५.३ सलवार कमीज, पैरलेल व चूड़ीदार:-

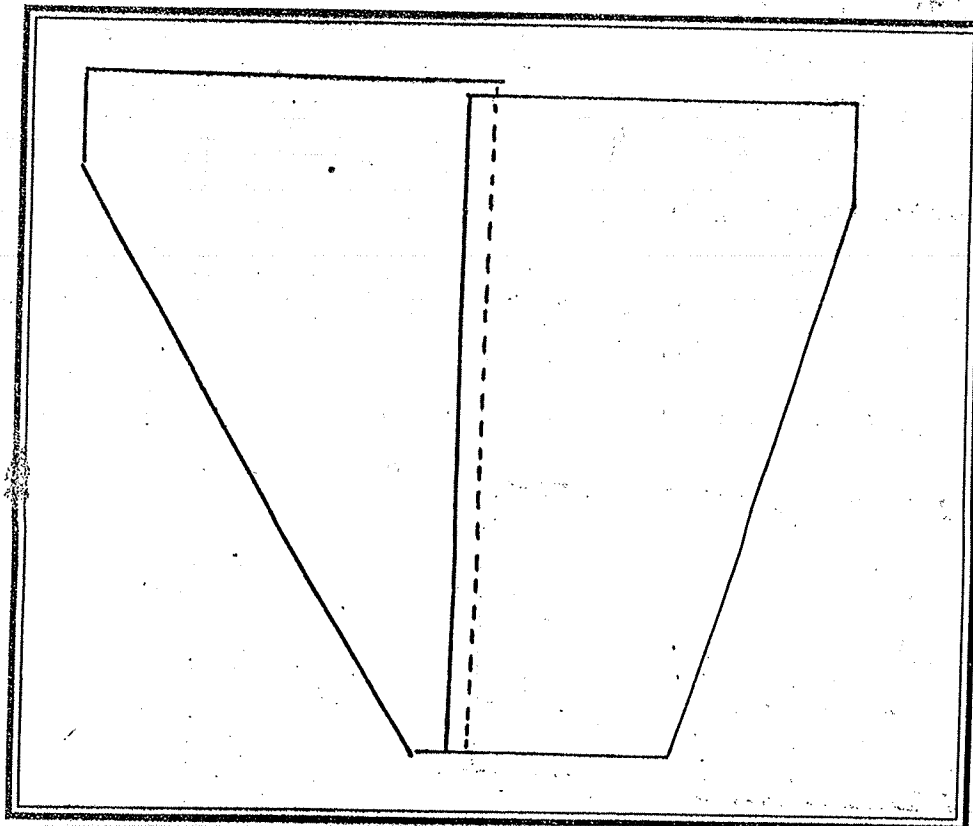
आपने ड्राफ्टिंग के पेपर में दो कली तथा चार कली की सलवार का ड्राफ्ट बनाना सीखा है। ३६ इंच चौड़ाई का कपड़ा लें और दो कली का ड्राफ्ट उस पर बनायें जैसे रेखाचित्र में दिखाया गया है।



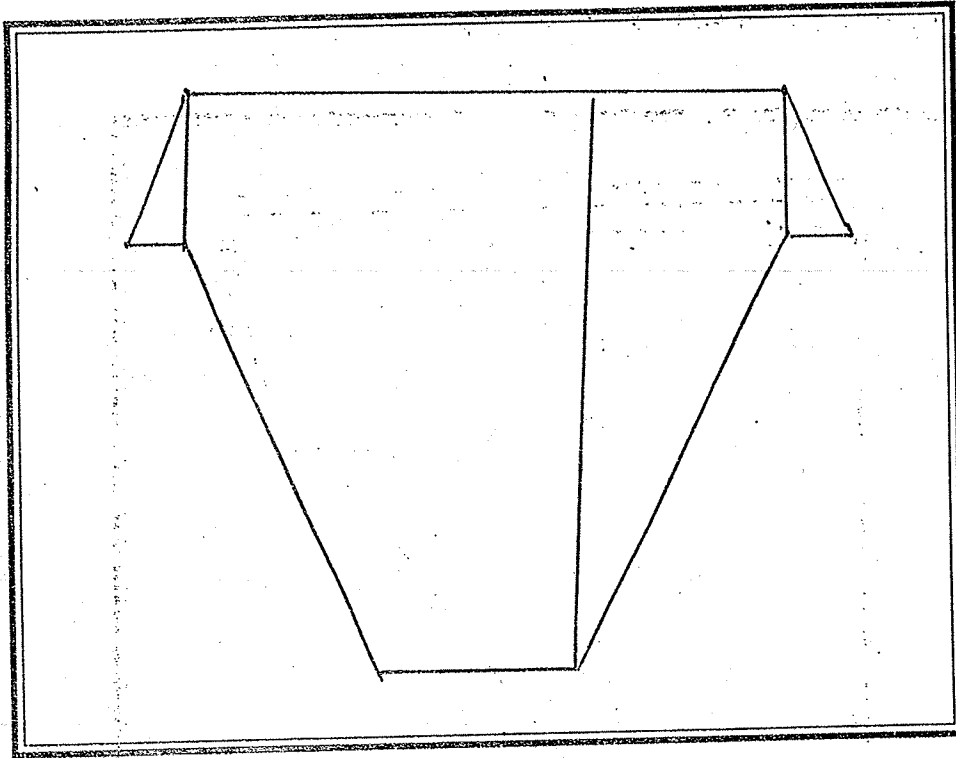
कटी सलवार के टुकड़े ऐसे दिखेंगे।



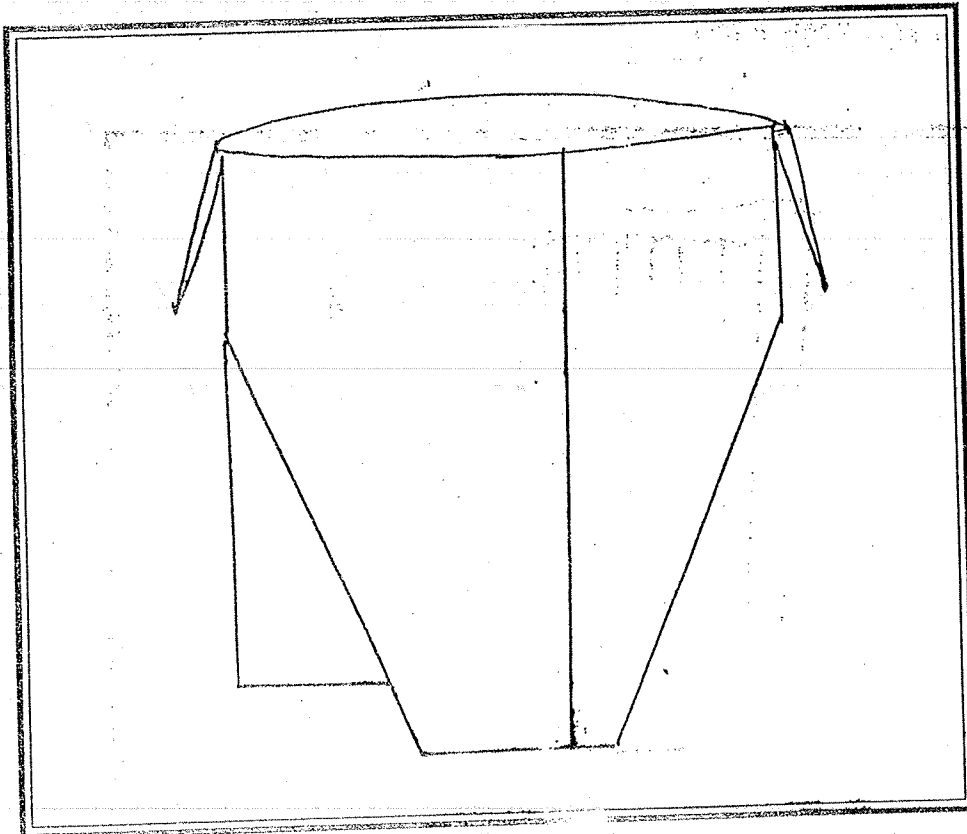
अब कली को पैनल से जोड़े।



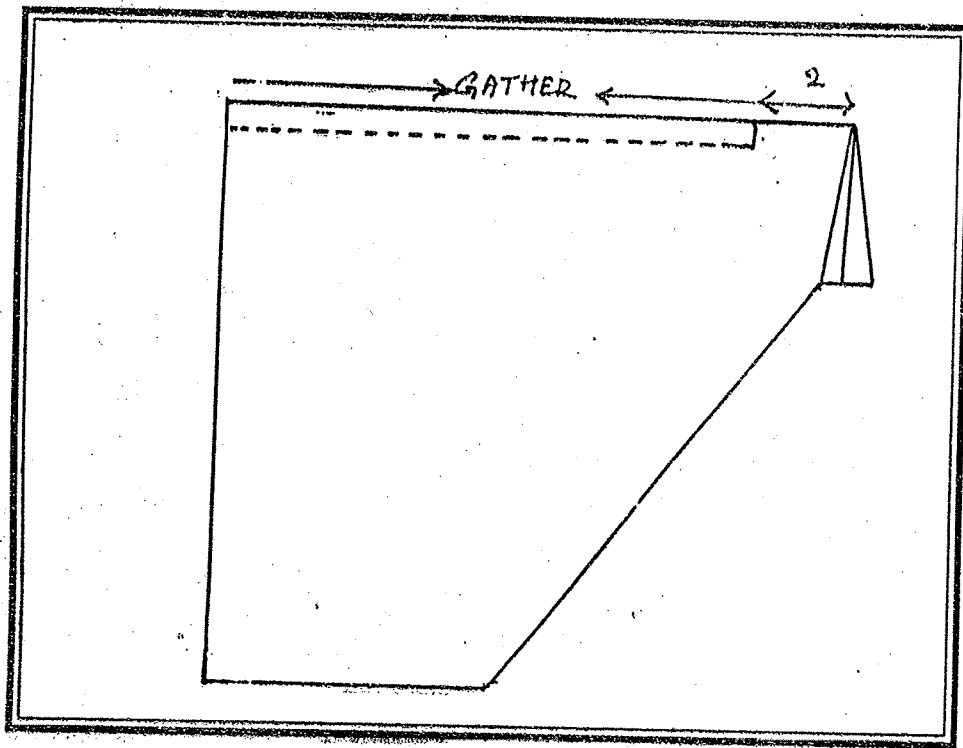
अब एक पैर में दोनों तरफ आसन जोड़े (रेखाचित्र के अनुसार)।



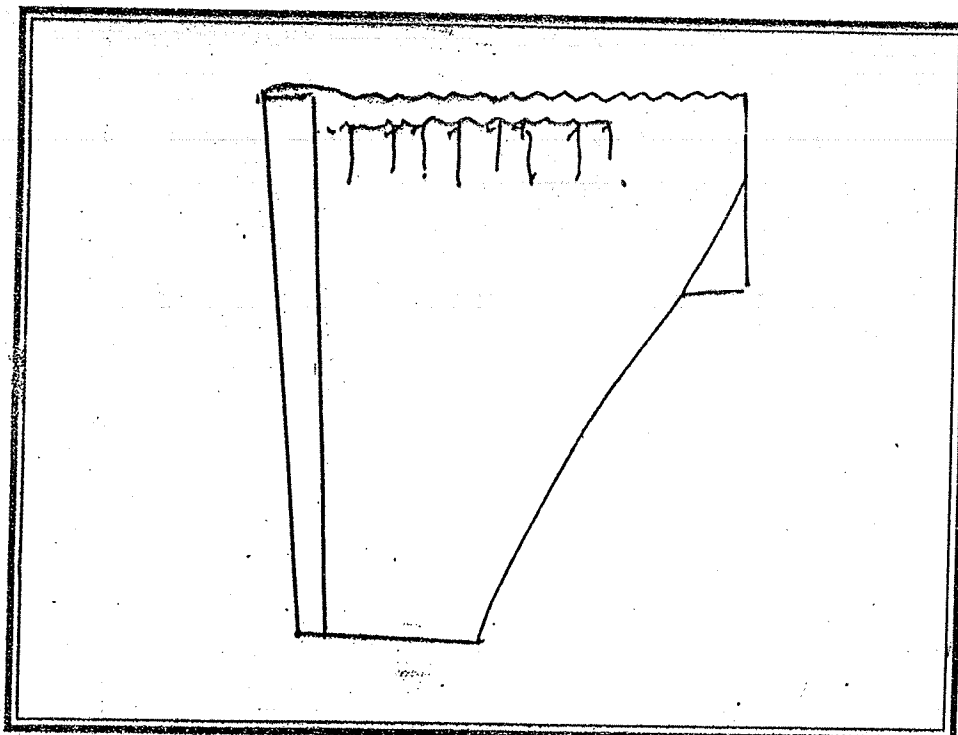
अब दूसरा पैर इसमें जोड़ें।



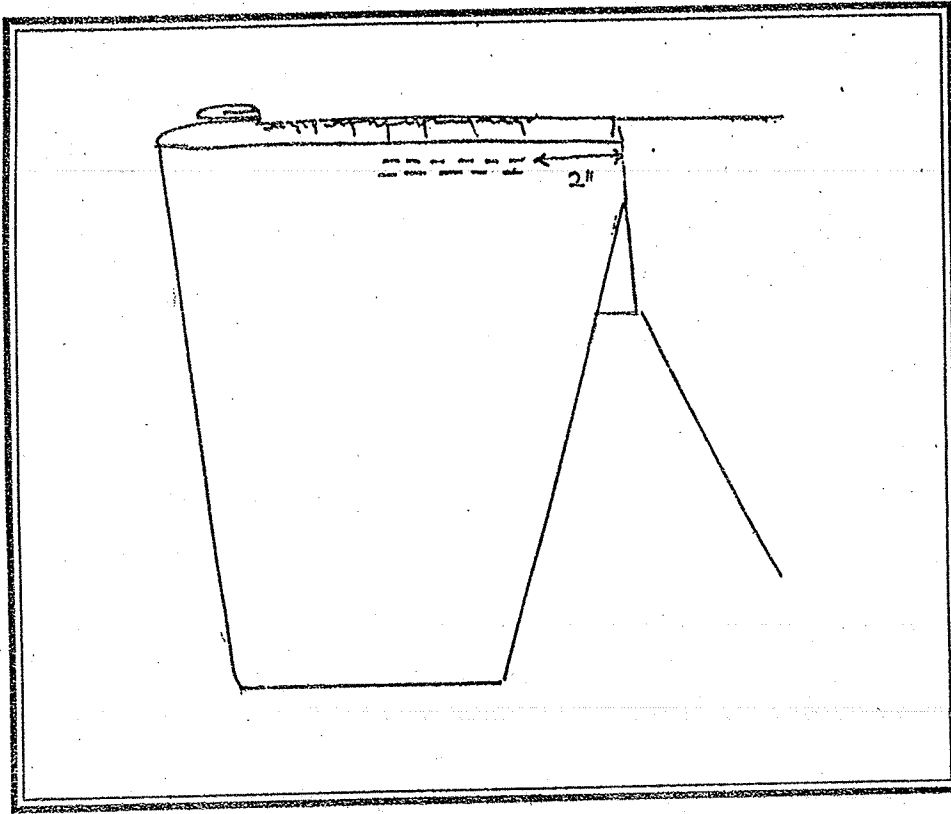
एक पैर के घेर में बीच आसन से दो इंच कपड़ा छोड़े और कपड़े के घेर के बीच तक चुन करें। इस चुन को ६-७ इंच तक फैलाएँ।



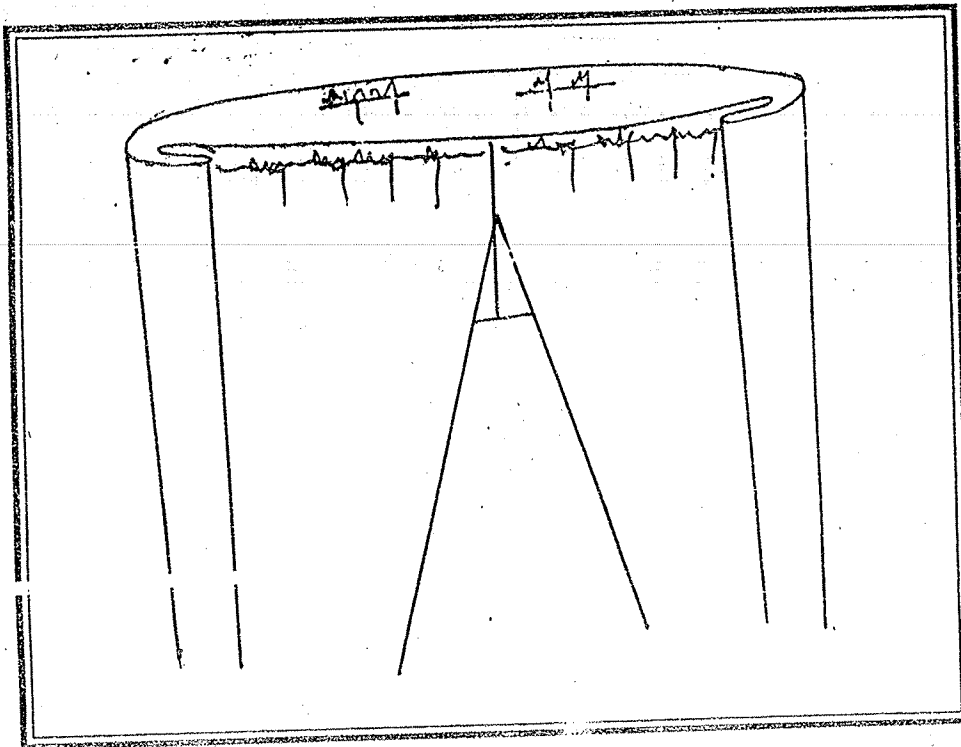
अब एक बड़ी नाइफ प्लीट डालें जिसका मुँह सामने की तरफ हो। इस पर सलवार की क्रीज लाइन बनेगी।



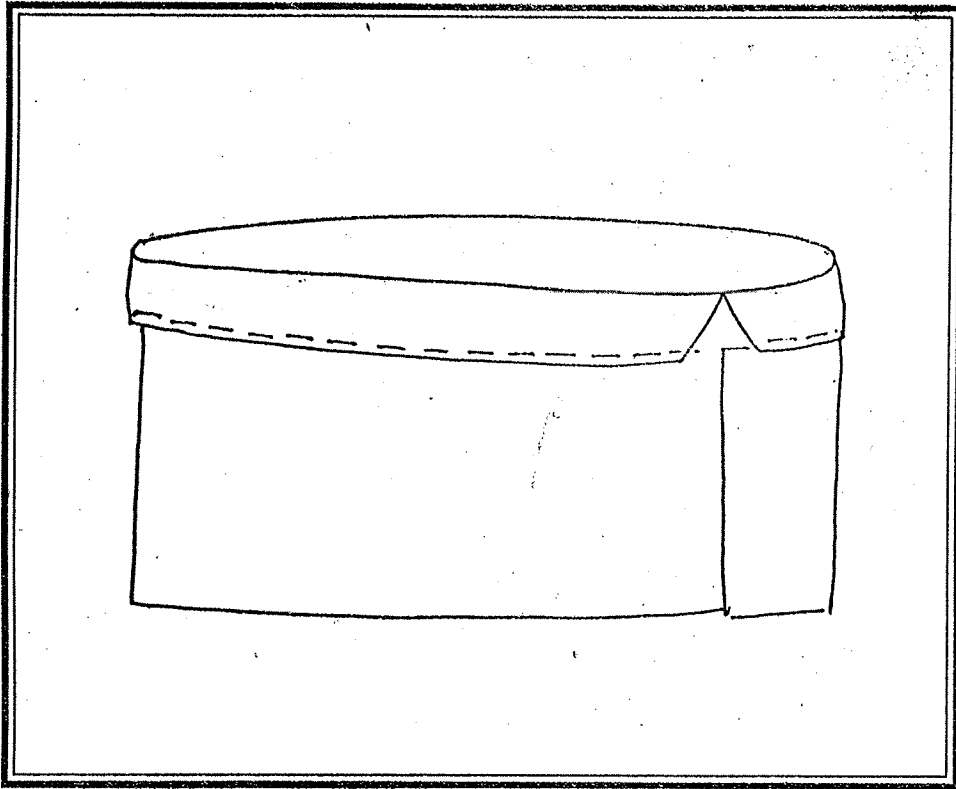
अब पीछे के आसन से दो इंच छोड़कर ३ से ५ इंच की चुन डालें।



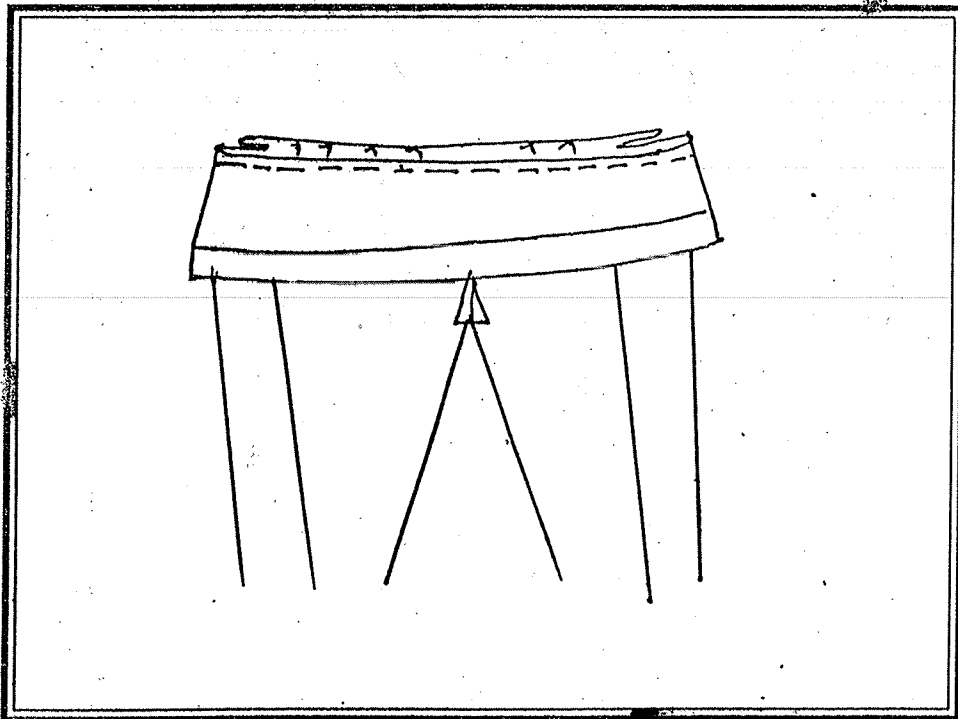
दूसरे पैर के लिए भी ऐसे ही प्लिट और चुन डालें।



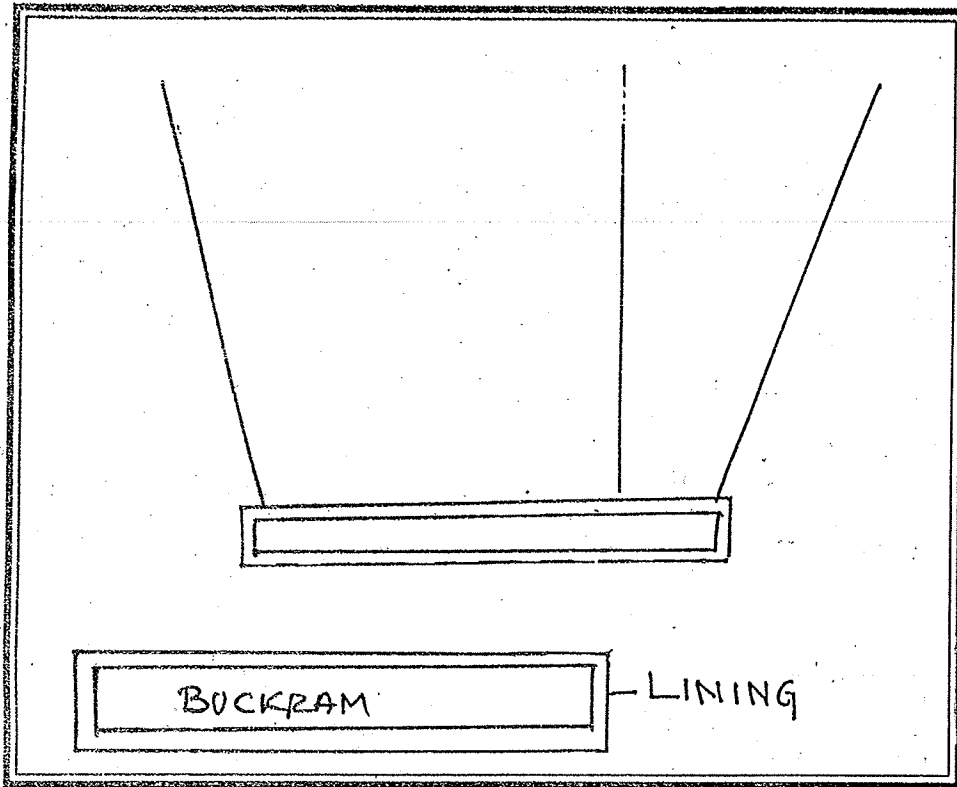
अब बेल्ट के ऊपर के वेस्ट बैंड के लिए १.५ इंच तक मोड़ें।



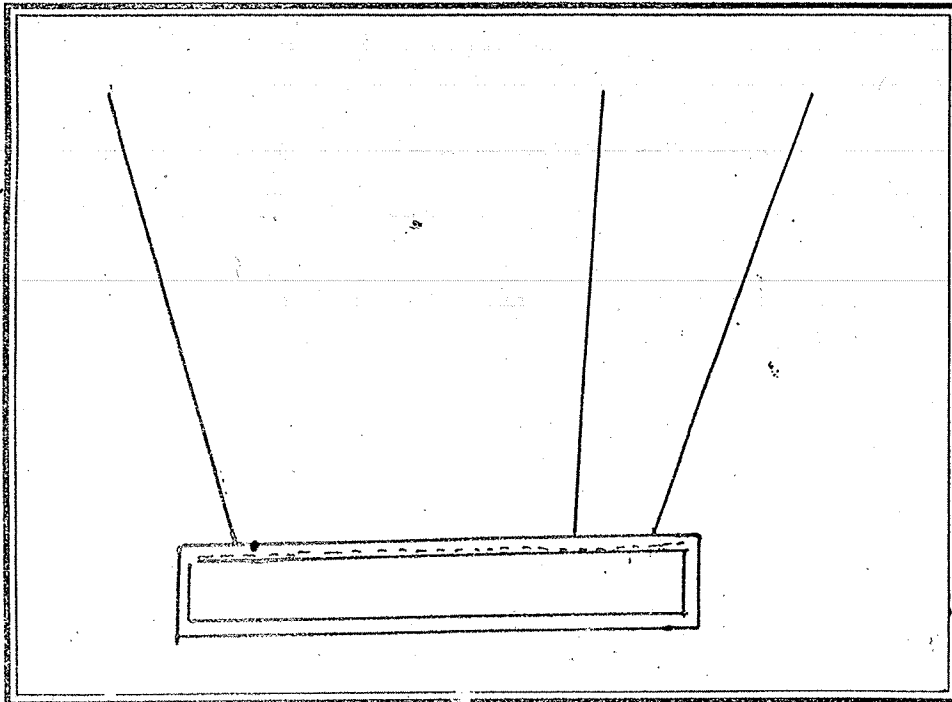
इस बेल्ट में चुन किये हुए पैनल व कली को जोड़ें। फिनिशिंग करने के लिए एक टॉप स्टिचिंग करें।



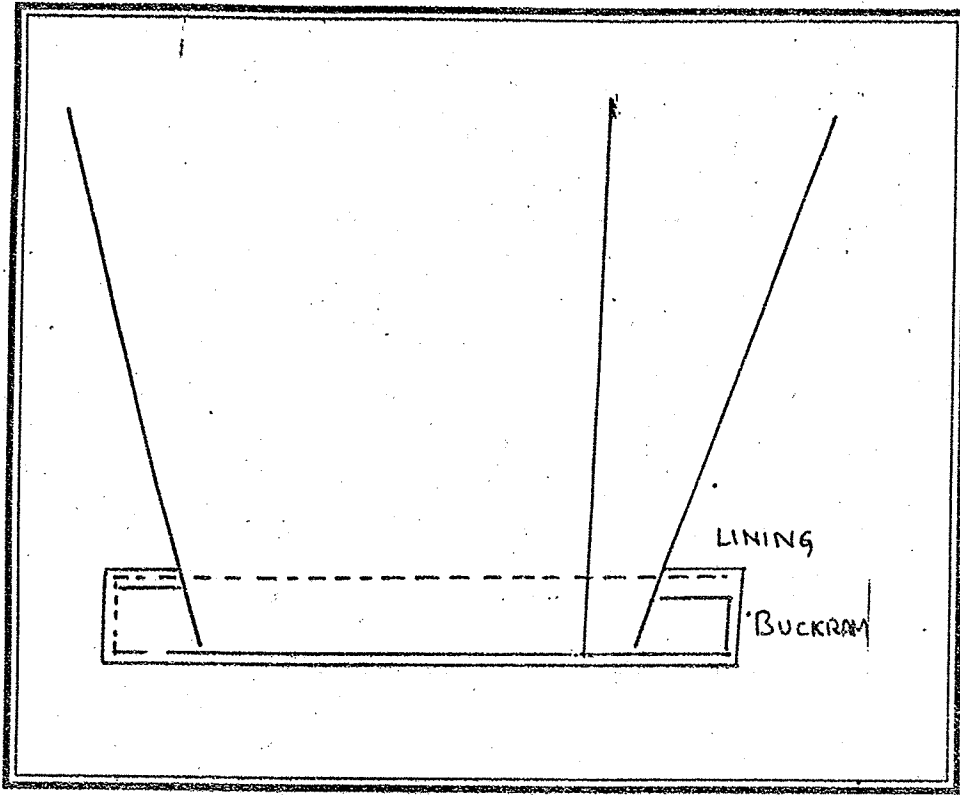
अब पाउच बनाने के लिए १ इंच चौड़ी बकरम के दो टुकड़े काटें। लम्बाई जरूरत अनुसार रखें।



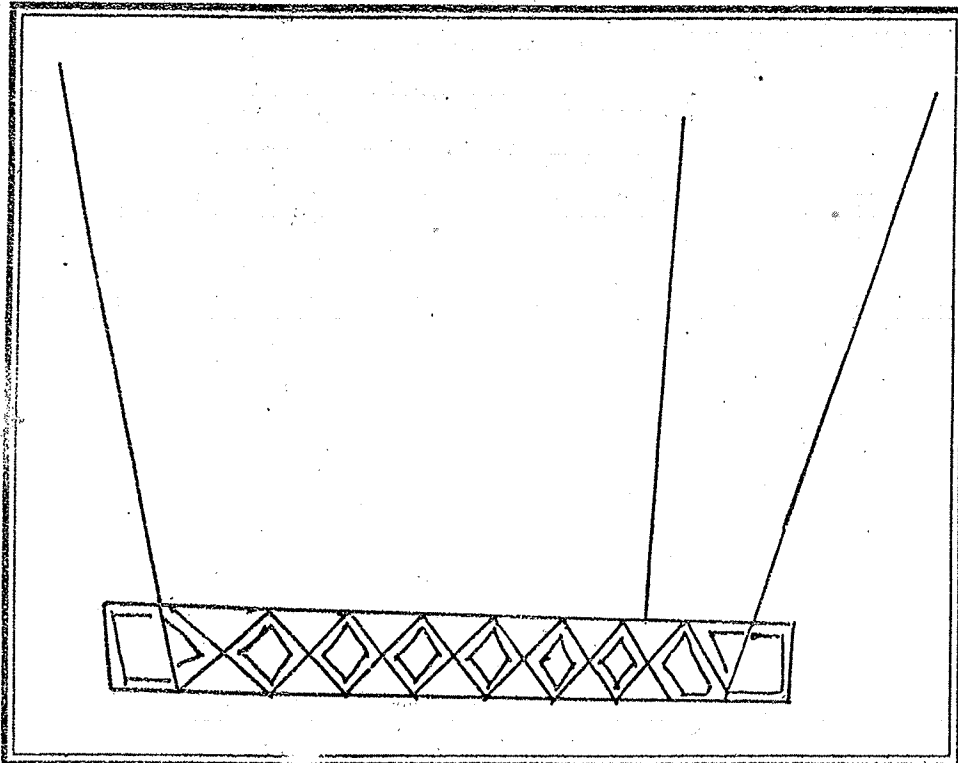
अब बकरम को कपड़े पर चिपकायें।



जैसा रेखाचित्र में दिखाया गया है वैसे पाउच सिलें और मोड़ें।

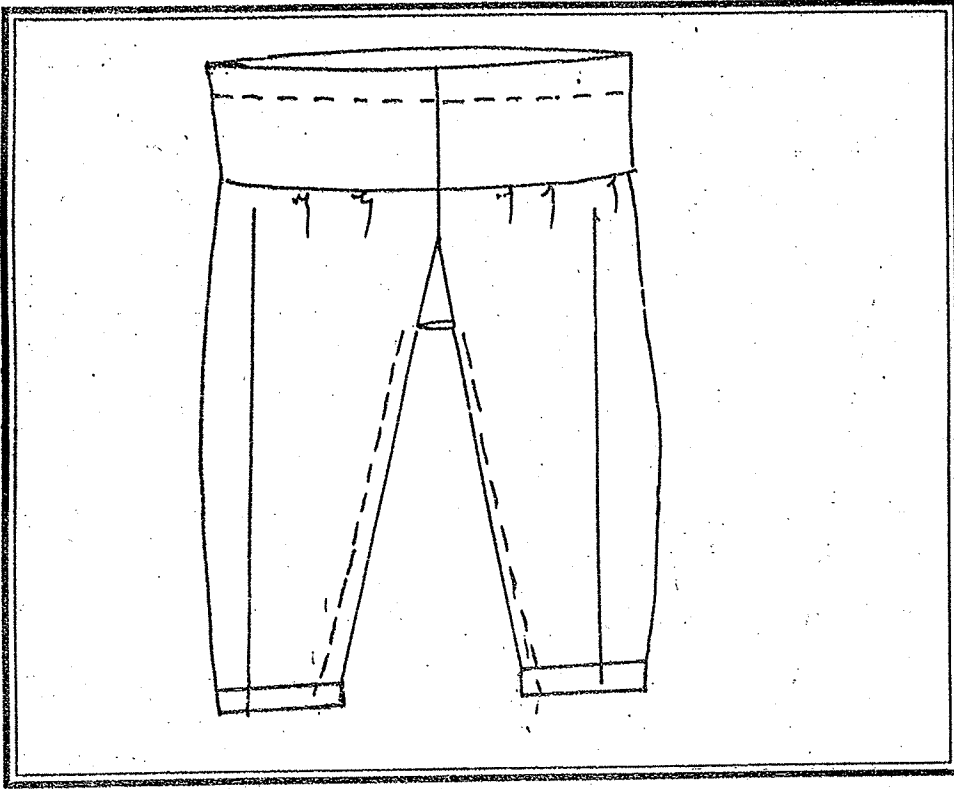


अब एक ऐच्छिक डिजाइन प्लेन या जिग-जैग स्टिचिंग के साथ बनायें।

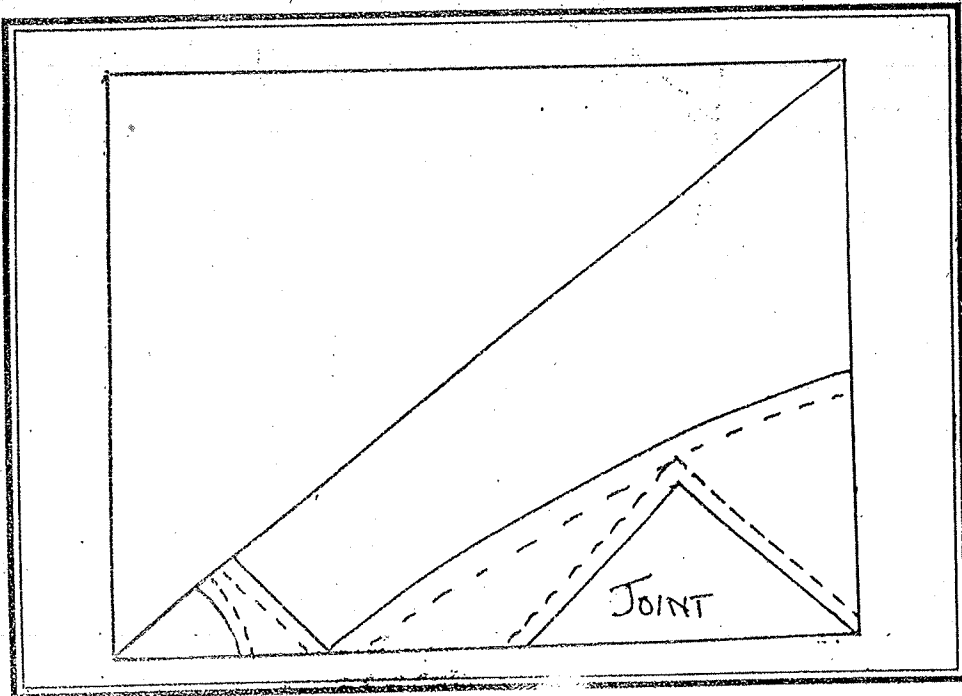




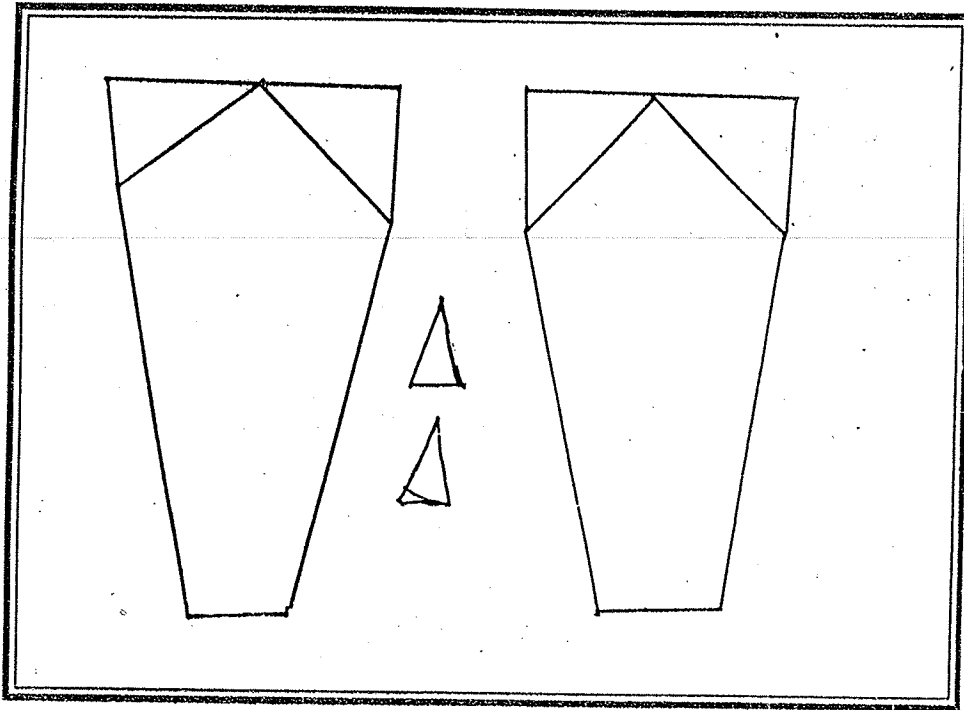
अब सलवार की अन्दर की सिलाई लगायें और वस्त्र को फिनिश करें।



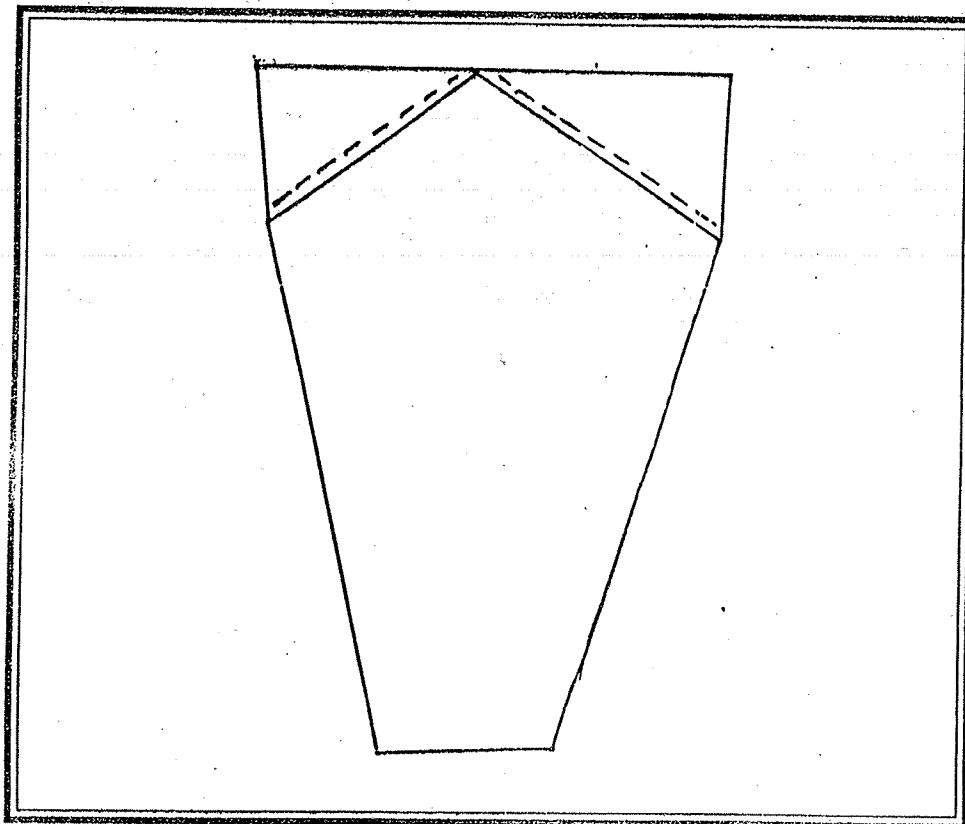
आइये अब एक चूड़ीदार पॉयजामा सिलें। आपने इसका ड्राफ्ट बनाना सीखा है। अब कपड़े को ठीक उसी प्रकार लगायें जैसे आपने चूड़ीदार के लिए ड्राफ्ट बनाया और निशान लगाया था।



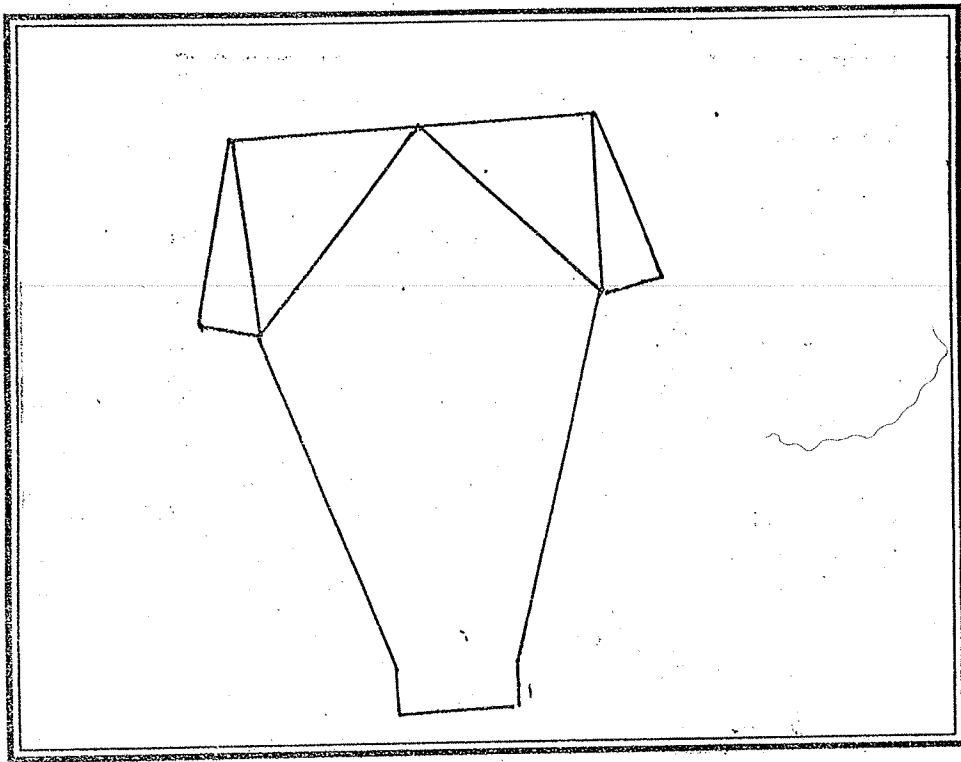
सीम एलाउन्स की तरह ही  $9/2$  इंच टुकड़ा लेकर काटें। कटा हुआ टुकड़ा बिल्कुल ऐसा दिखेगा।



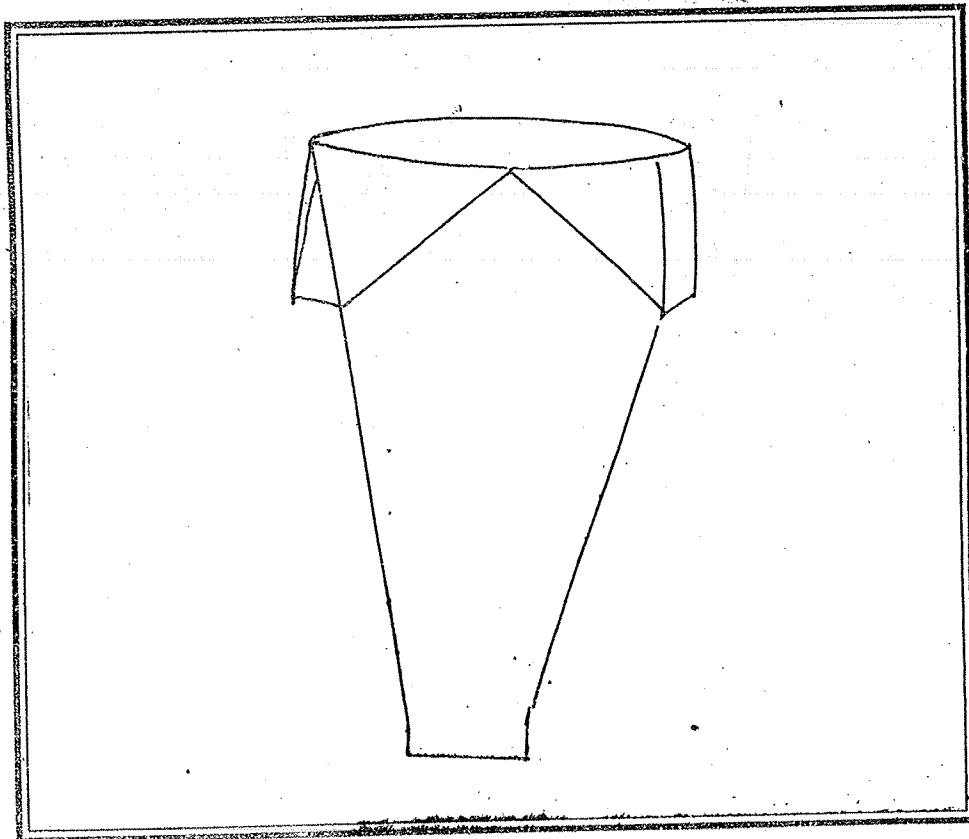
अब ऊपर के जोड़ को सिलें।



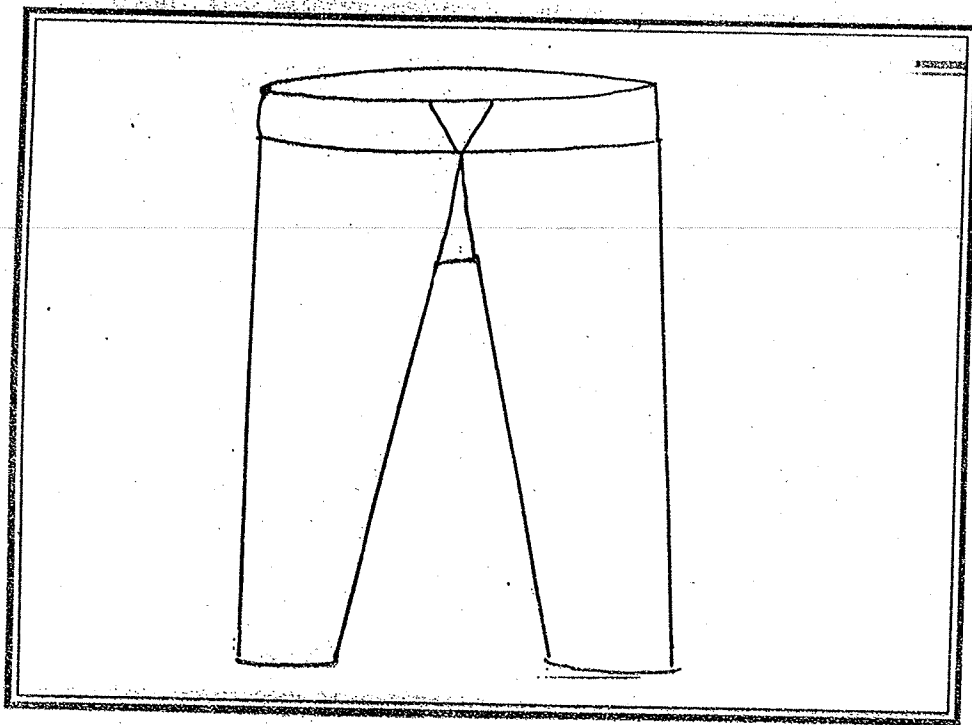
जैसे सलवार में मियानी जोड़ी थी वैसे जोड़े।



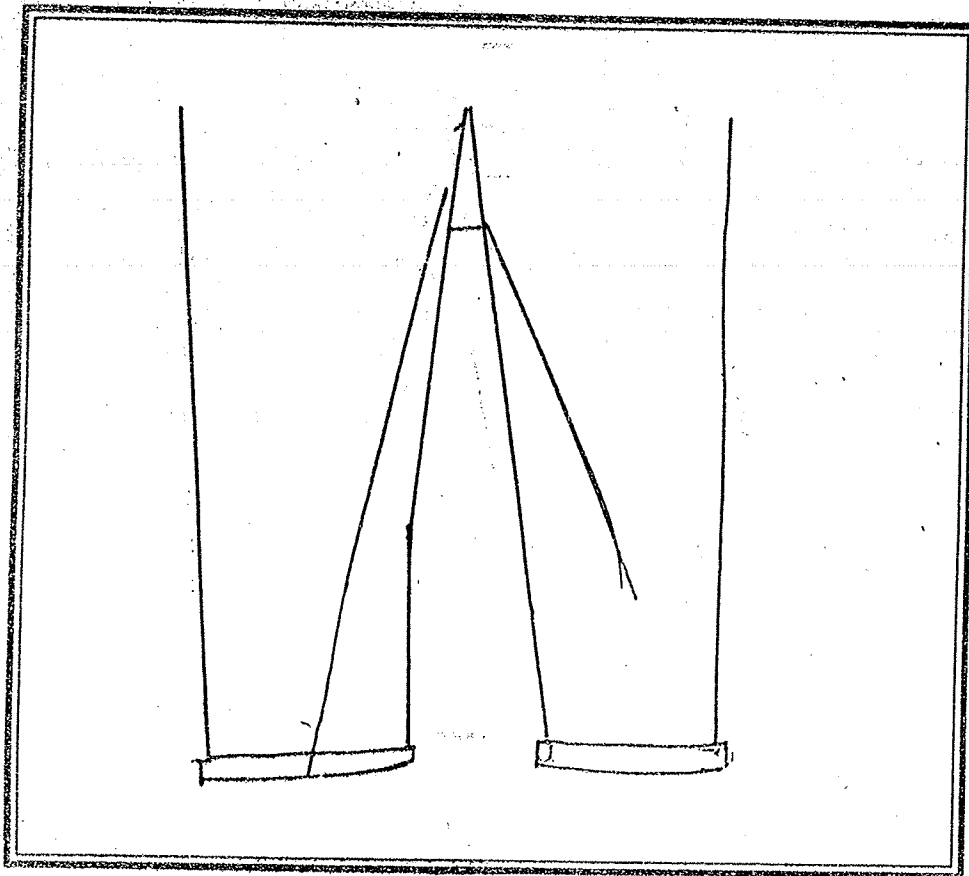
अब दोनों पैरों को जोड़े।



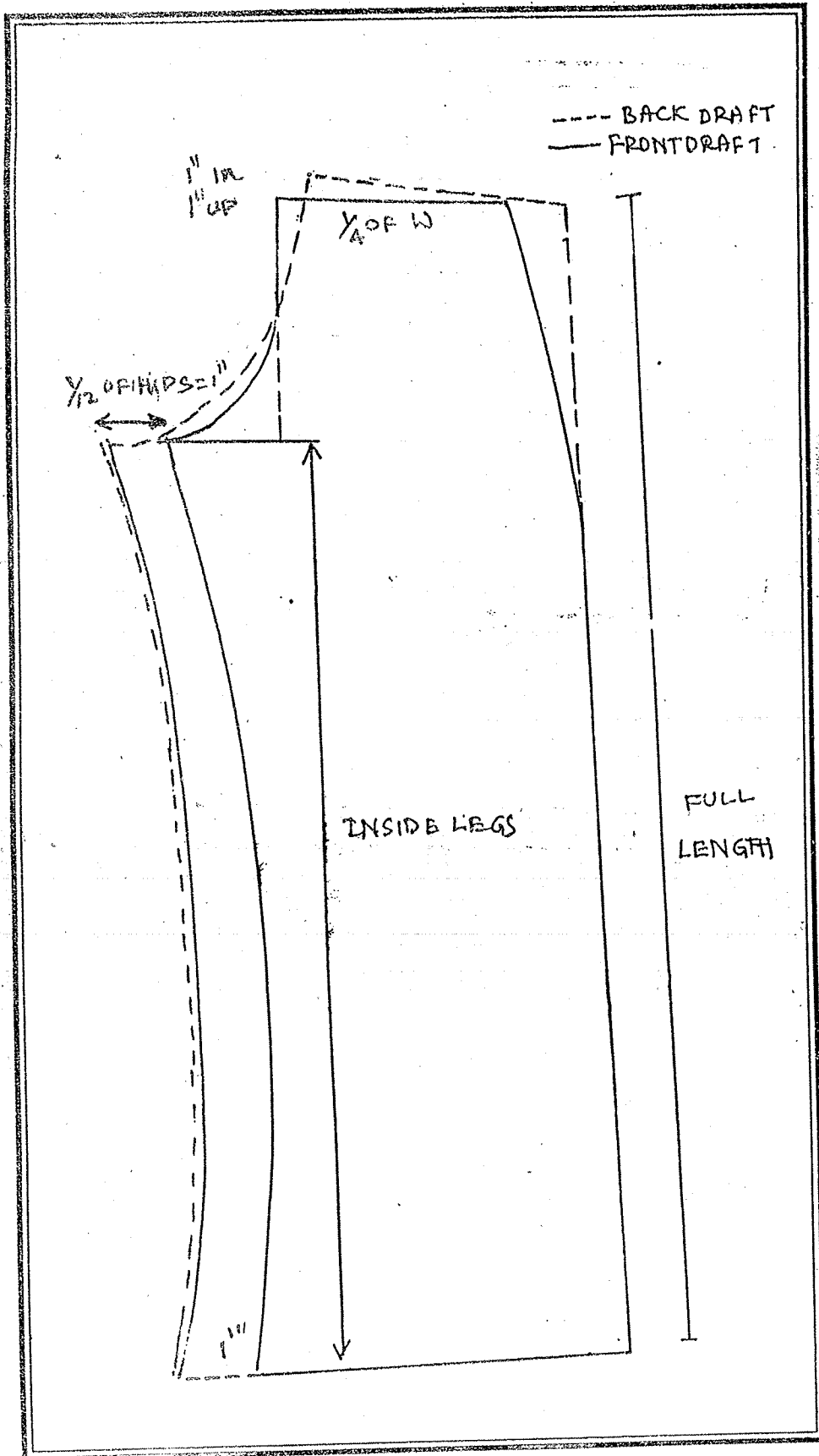
ऊपर की तरफ कमर पेटी बनायें।



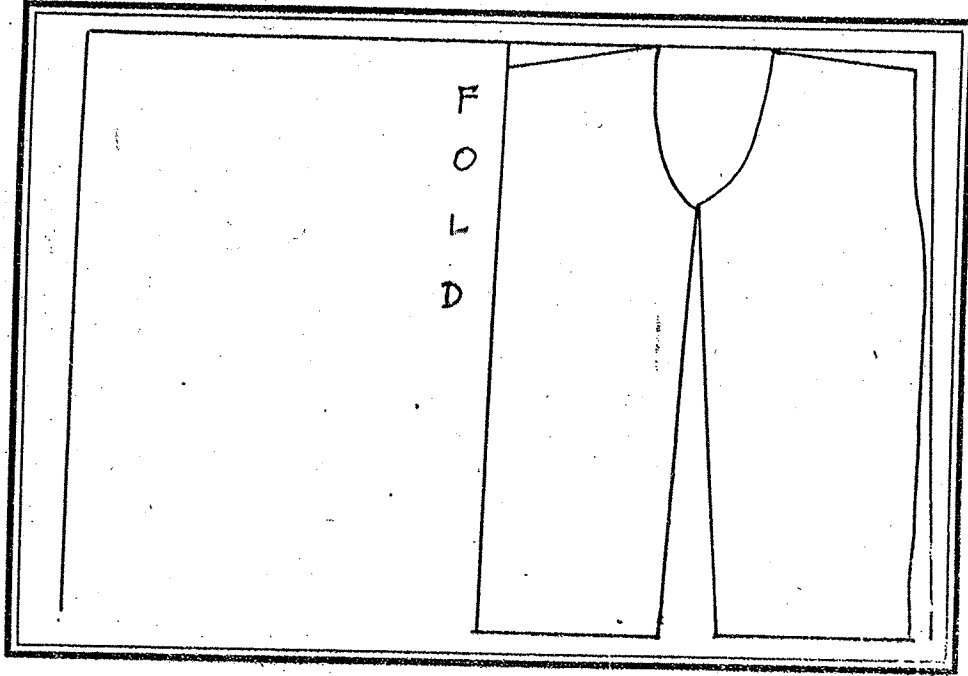
नीचे की हेम लाइन को मोड़ें और बीच की ओर सिलाई करें।



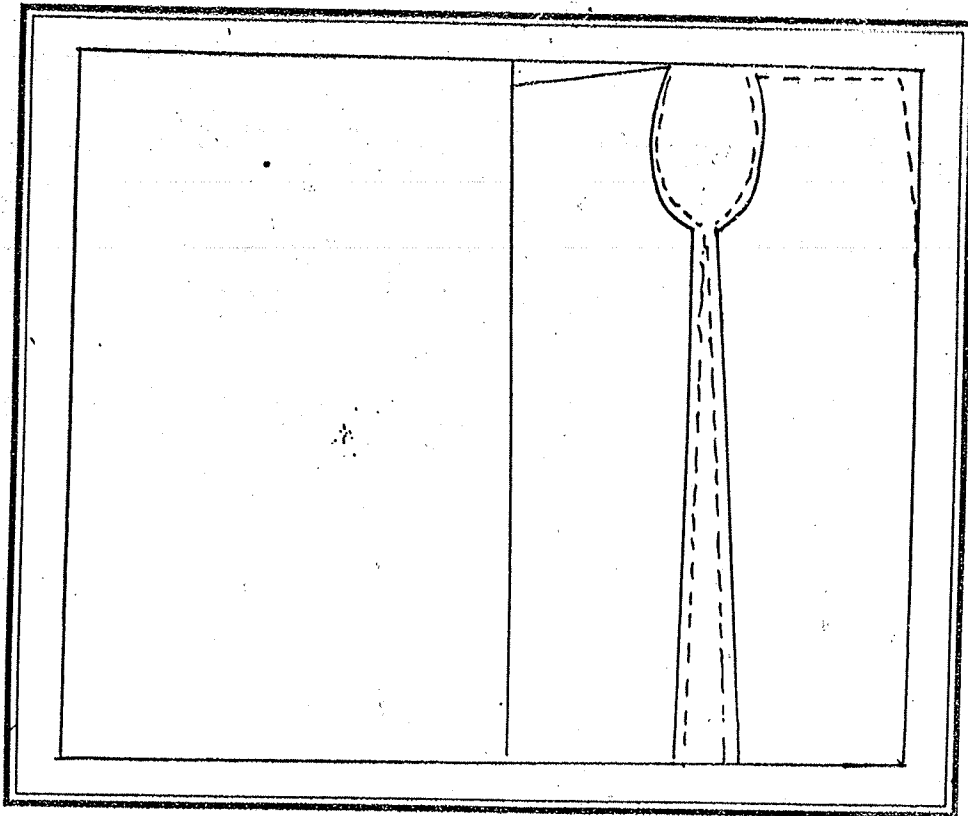
अब एक पैरलेल काटें और सिलाई करें। पैरलेल के लिए पहले ड्राफ्ट बनायें।



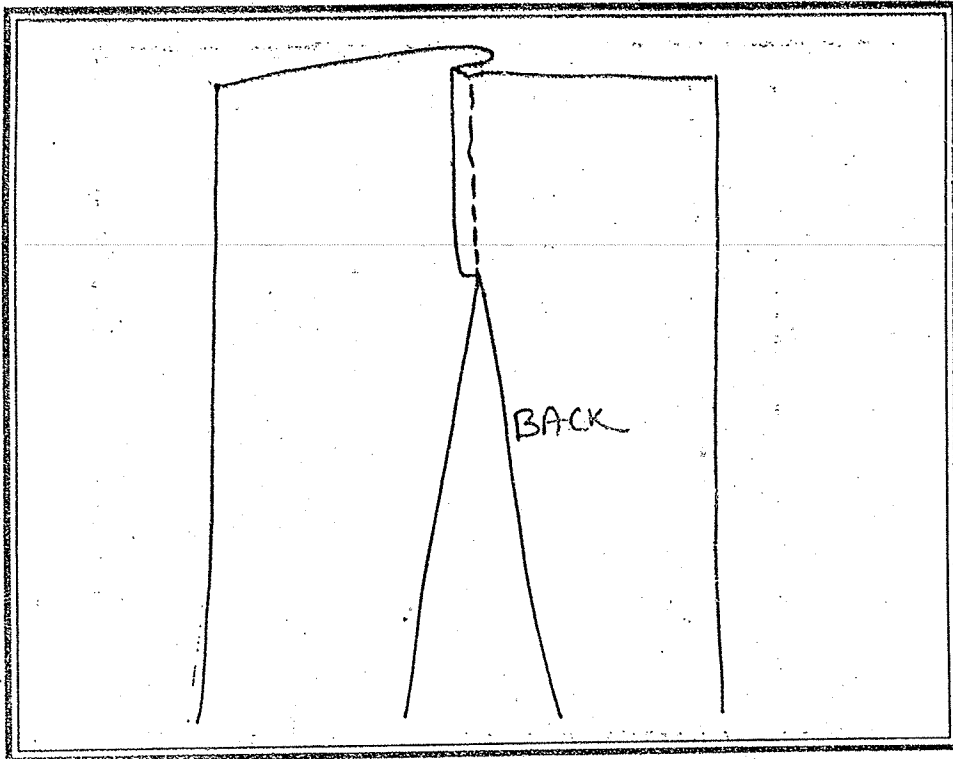
अगर पैरलेल की लम्बाई ४० इंच, हिप ३४ इंच तथा कमर २६ इंच और नीचे की मोहरी १६ इंच है तो ड्राफ्ट इस नाप से बनायें।



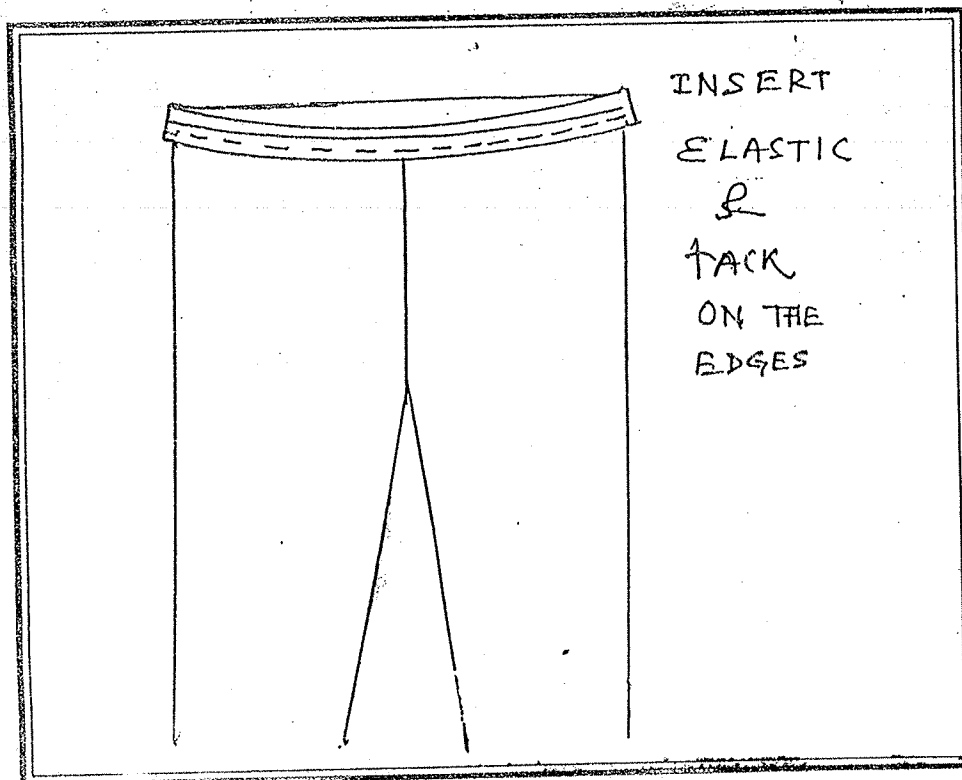
अब कपड़े के ऊपर ड्राफ्ट को रखें और सिलाई के लिए दवाब को रखते हुए काटें।



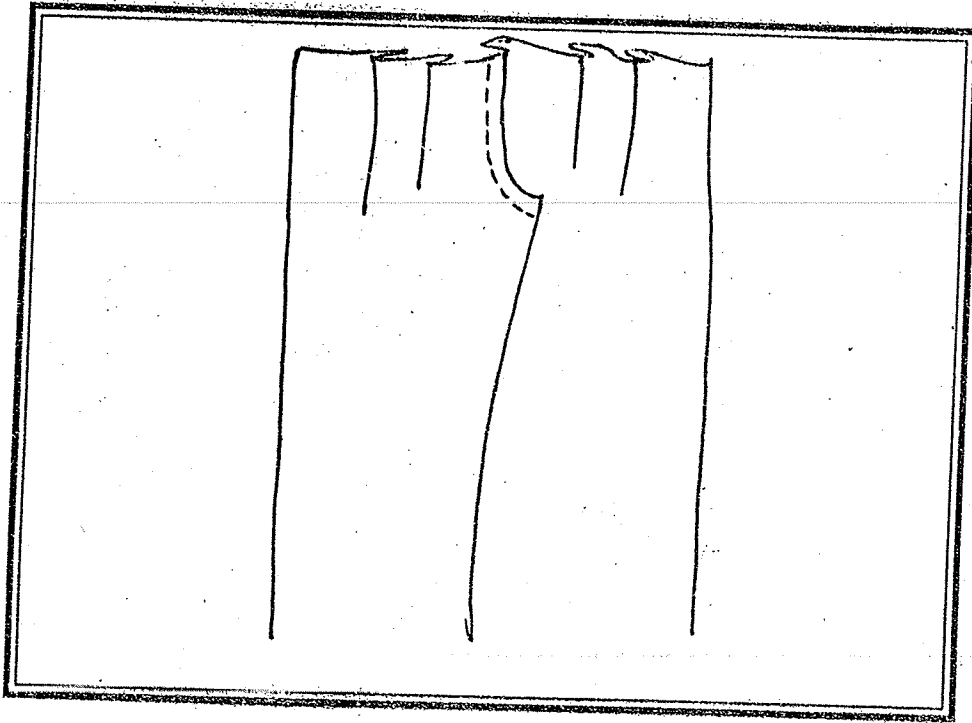
अब सिलाई के लिए सबसे पहले दोनों पीछे के हिस्सों को आसन से सिलें।



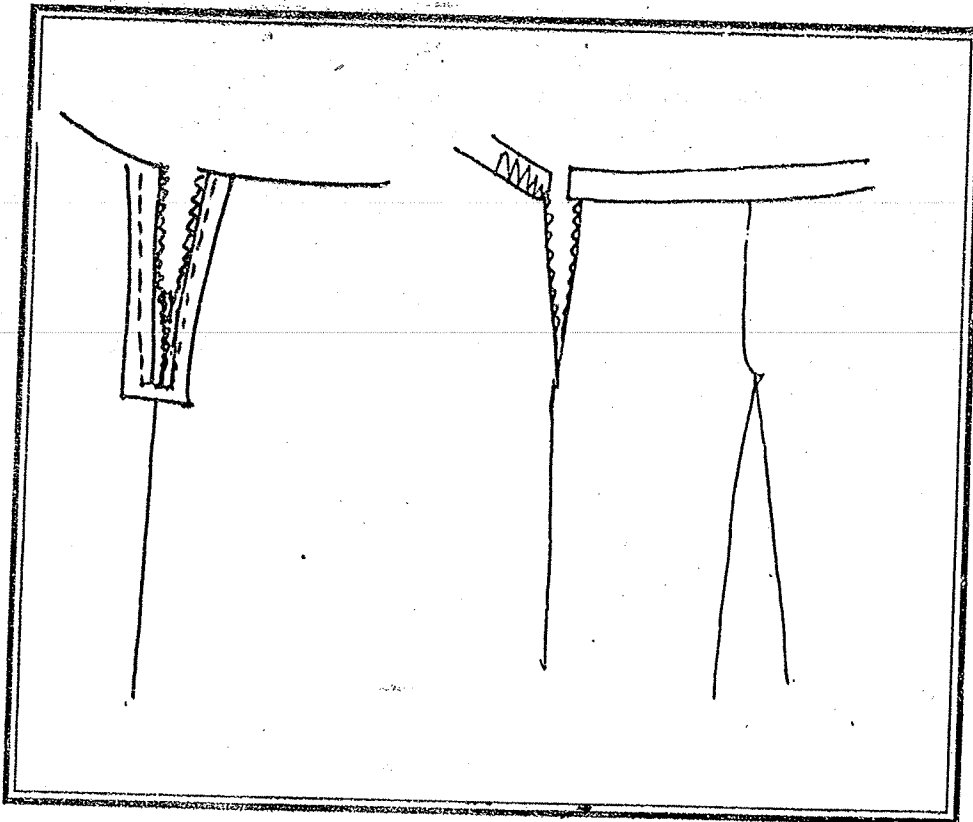
अब कमर पेटी बनाएँ जिससे इलास्टिक डाली जा सके।



अब आगे के लिए पहले प्लेट डालें और बीच की क्रीज लाइन बनायें। सामने की सिलाई करें। बकरम की बेल्ट लगायें।



बायें तरफ बगल की सिलाई करते समय जिप लगायें और फिर फिनिशिंग करें।



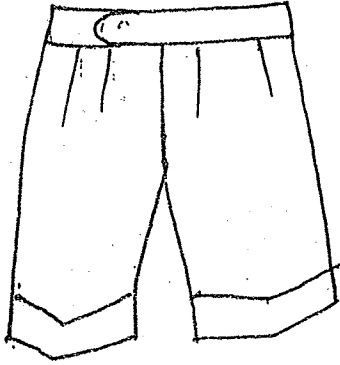


अभ्यास-

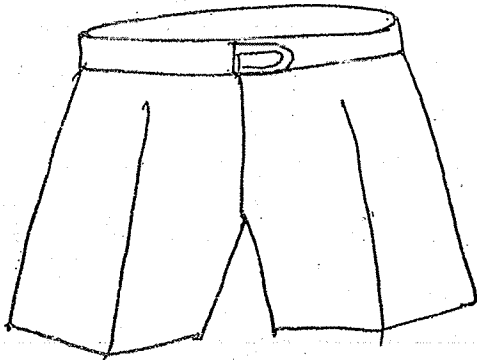
१- इकाई में दिये गये डिजाइन को सिलें।

१५.४ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

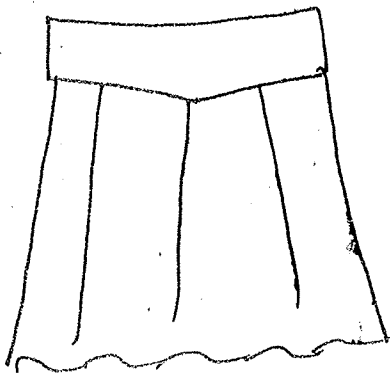
प्रश्न-१ नीचे दिये गये डिजाइन को सिलें।



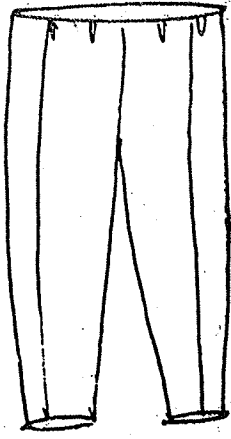
प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



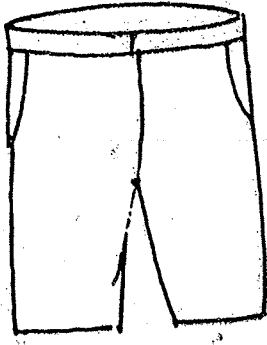
प्रश्न-३ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



१५.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के० आर० जारापकर  
पब्लिकेशन, नवनीत पब्लिकेशन इण्डिया लिमिटेड।

संरचना

१६.१ यूनिट प्रस्तावना

१६.२ उद्देश्य

१६.३ नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि

१६.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

१६.५ स्वाध्ययन हेतु

१६.१ यूनिट प्रस्तावना:-

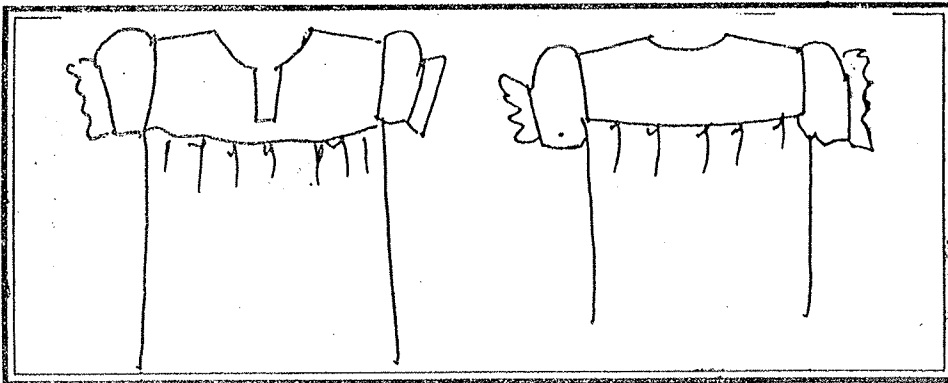
इस इकाई में वस्त्र निर्माण के बारे में बताते हुए नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि का ड्राफ्ट बनाना, काटना, सिलना व फिनिश करना बताया गया है।

१६.२ उद्देश्य:-

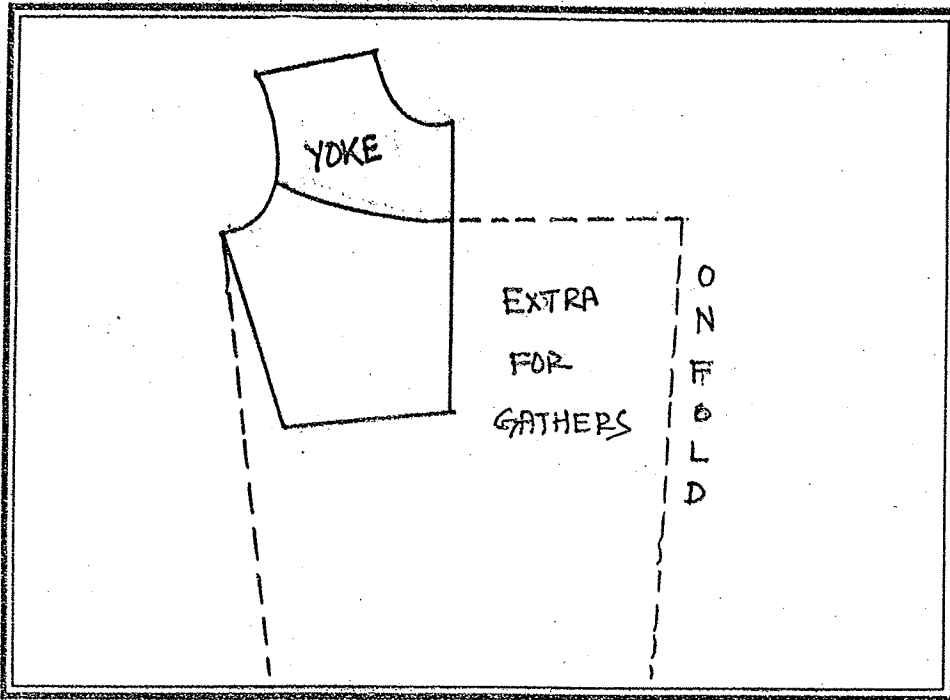
एक डिजाइनर के लिए यह जानना आवश्यक है कि उसके डिजाइन का निर्माण कैसे होगा। इस इकाई में बड़ी महिलाओं के लिए नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि वस्त्रों के बेसिक विधि का वर्णन किया गया है।

१६.३ नाइटी गाउन, बाथिंग गाउन इत्यादि:-

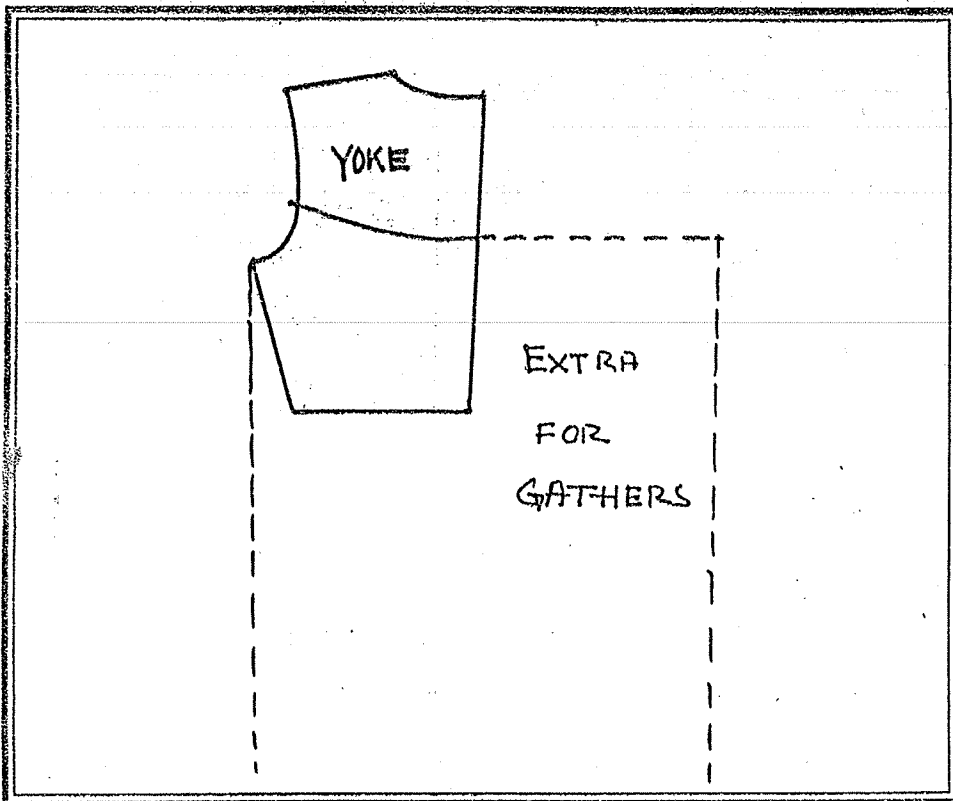
आइये सबसे पहले दिये गये नाइटी के डिजाइन को सिले। दिया गया डिजाइन ऐसा दिखेगा।



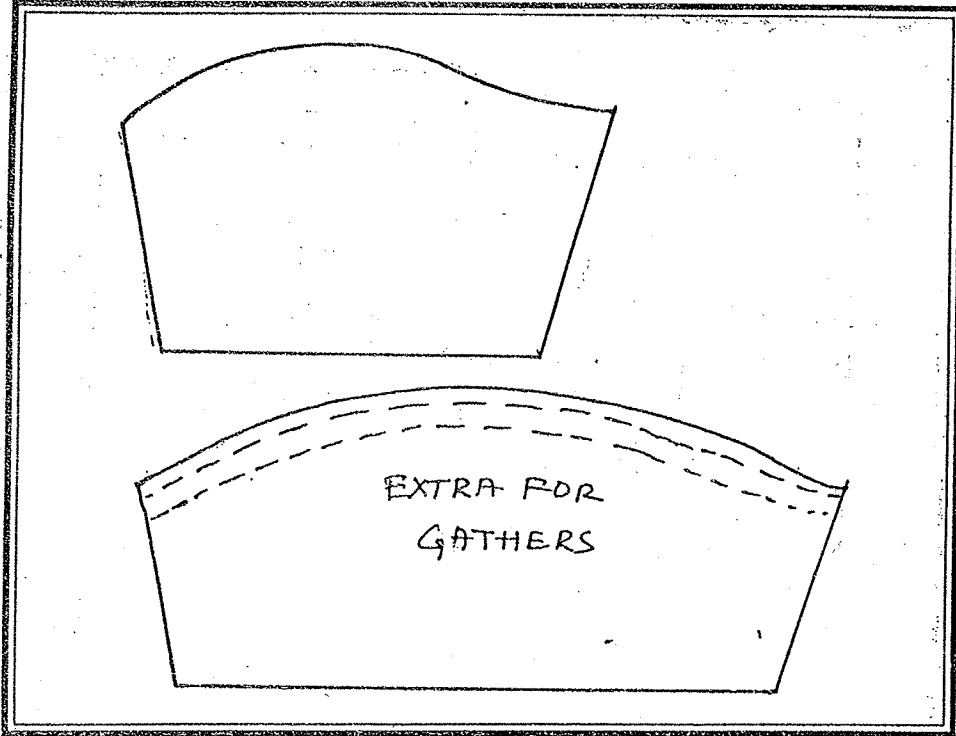
सामने का बेसिक बॉडिस ब्लाक लें और उस पर योक का निशान लगायें। अब दिखाये गये तरीके से चुन्नट के लिए अतिरिक्त कपड़ा लें।



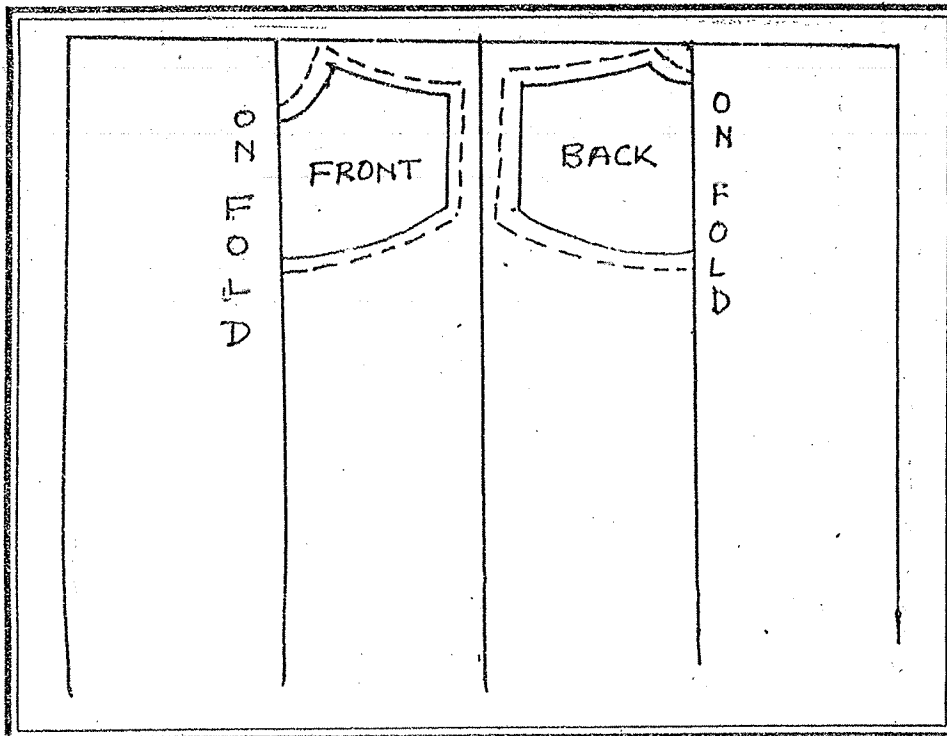
अब पीछे के योक का निशान लगायें। अब पीछे के पल्ले के चुन के लिए अतिरिक्त कपड़ा लें।



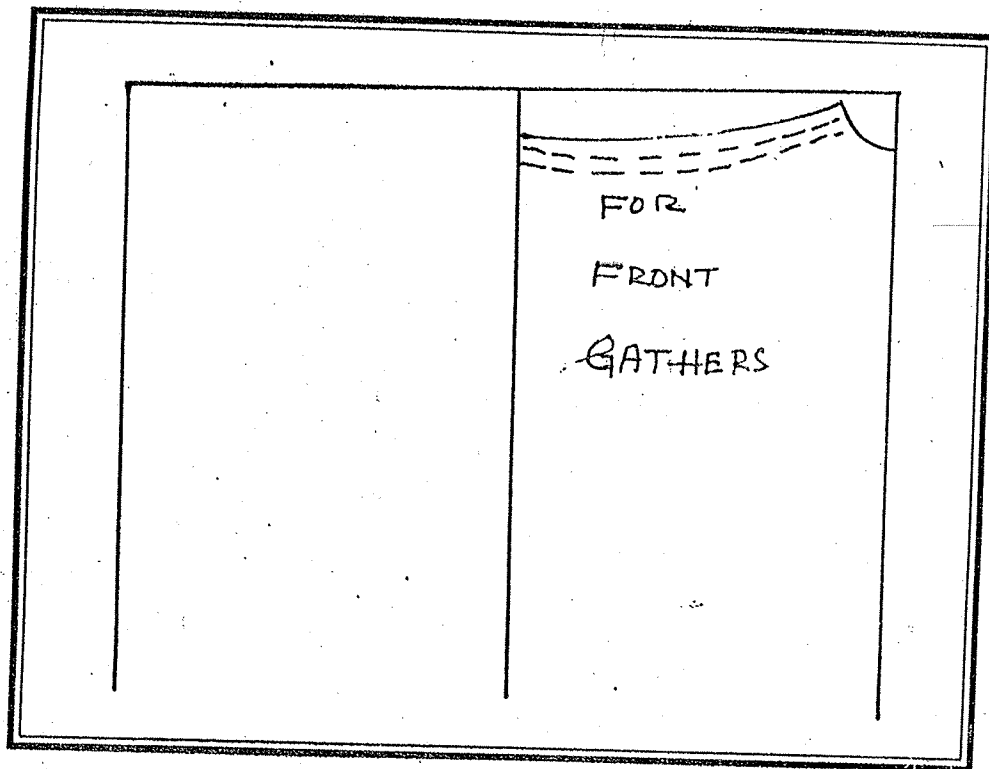
अब अस्तीन का ड्राफ्ट बनायें।



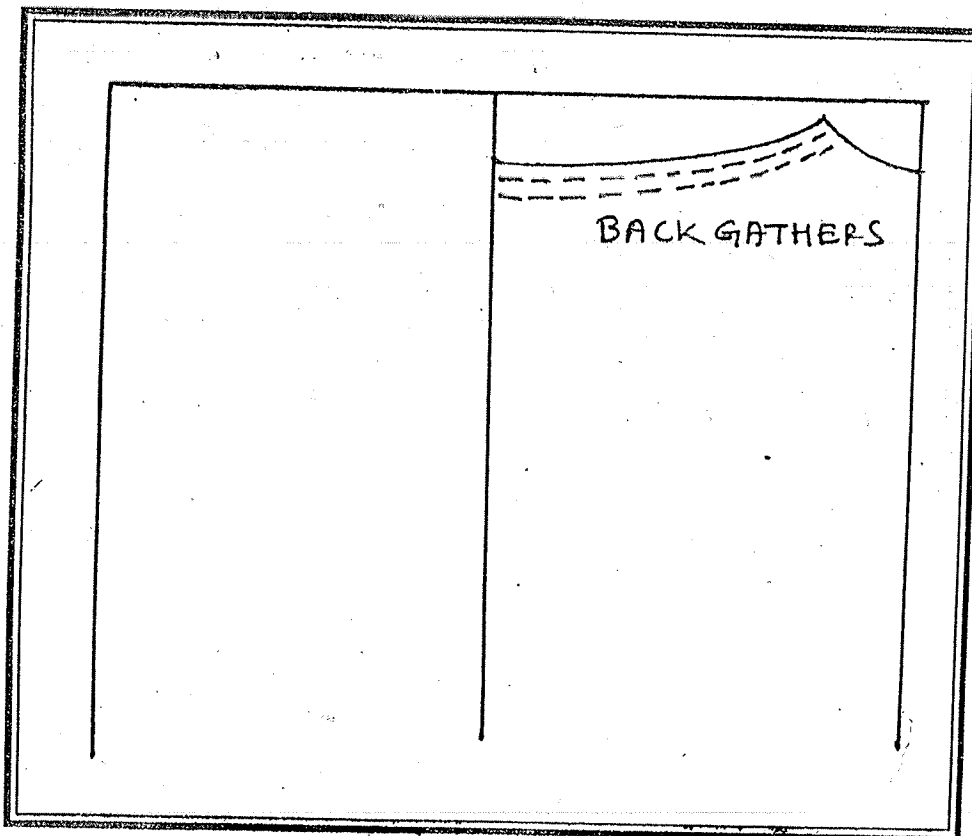
अब ३६ इंच चौड़ाई का कपड़ा लें और दिखाये गये तरीके से मोड़कर रखें। इस पर आगे व पीछे का योक  $9/2$  इंच सिलाई का दवाब लेते हुए काटें। इसी साइज की लाइनिंग काटें।



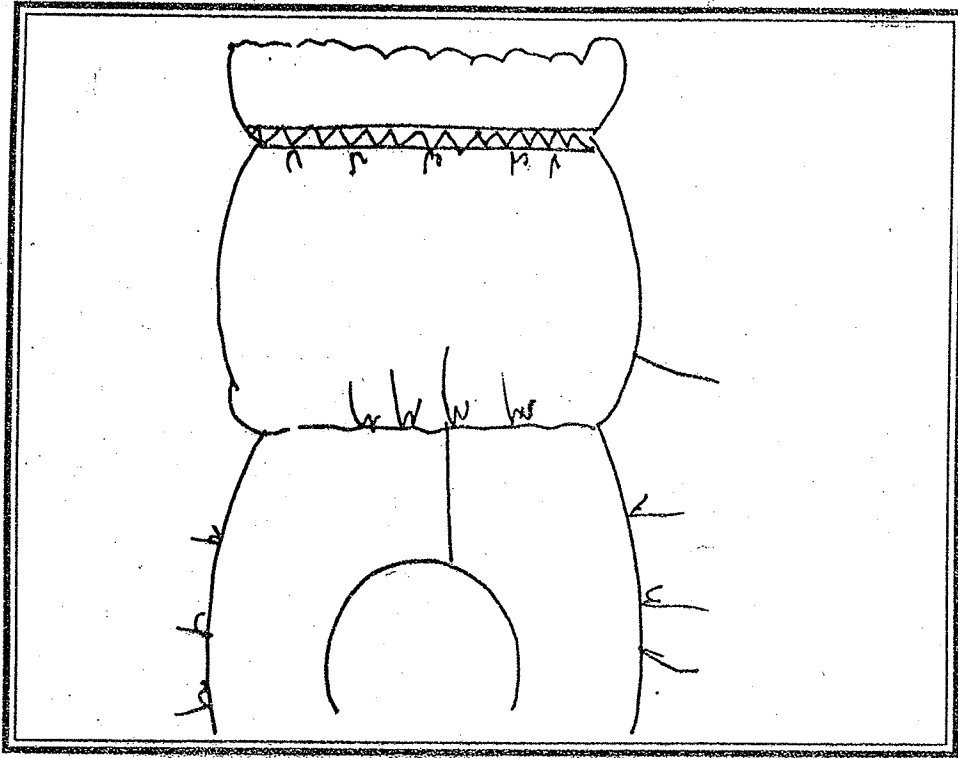
अब कपड़े को बीच से फोल्ड करें और सामने की चुन काटें।



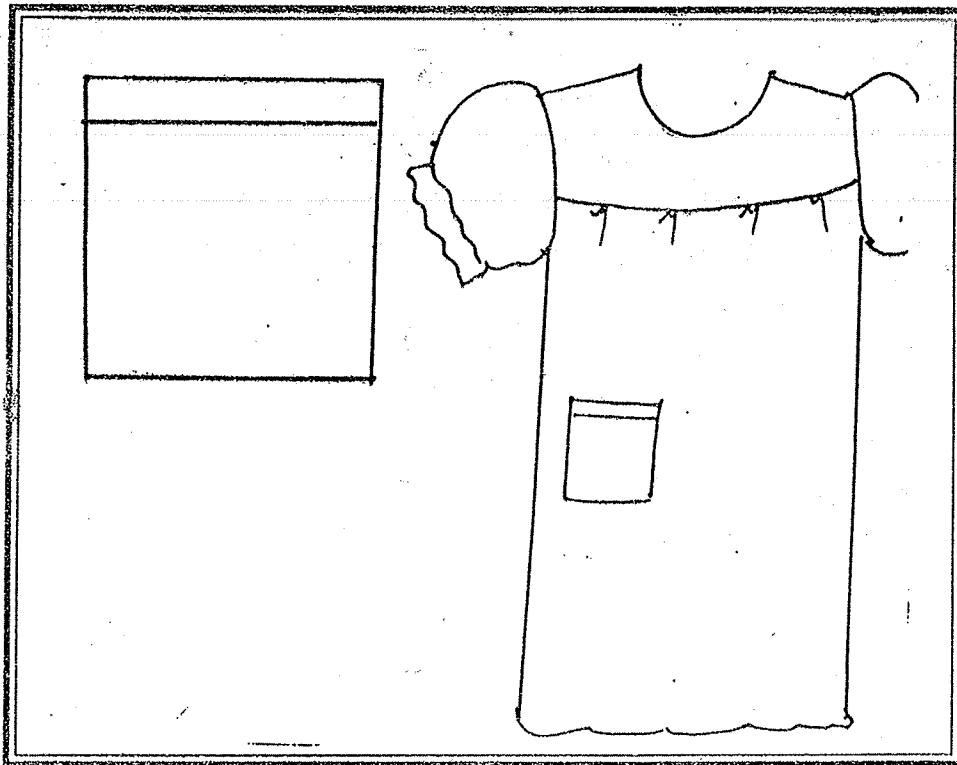
अब पीछे की चुन का ड्राफ्ट काटें।



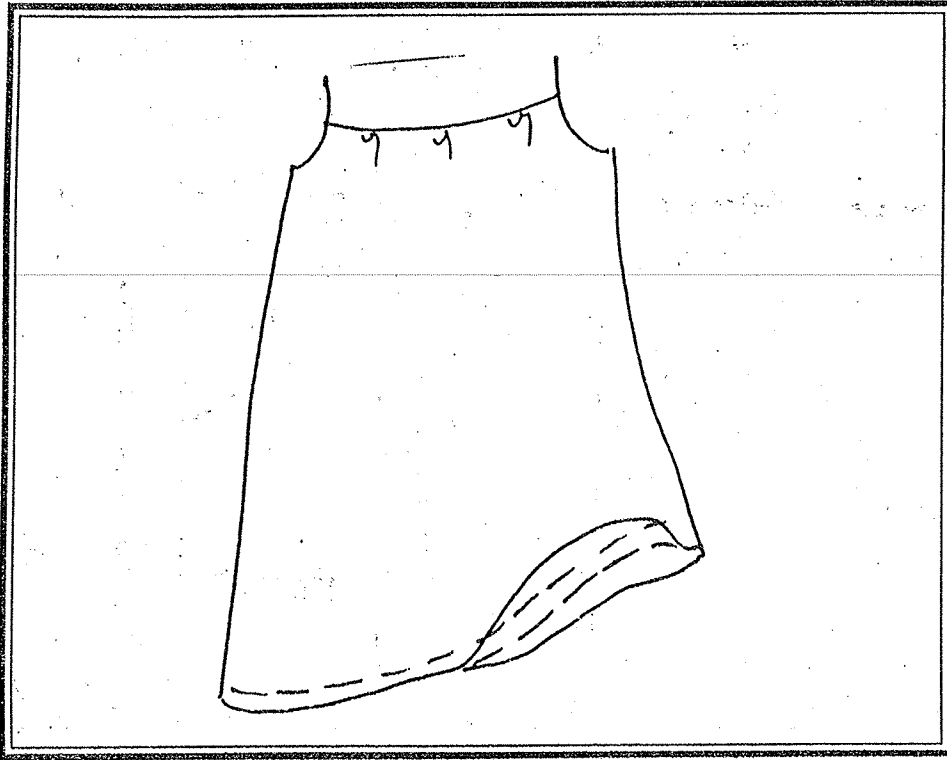
अब आस्तीन को बॉडिस से जोड़ें।



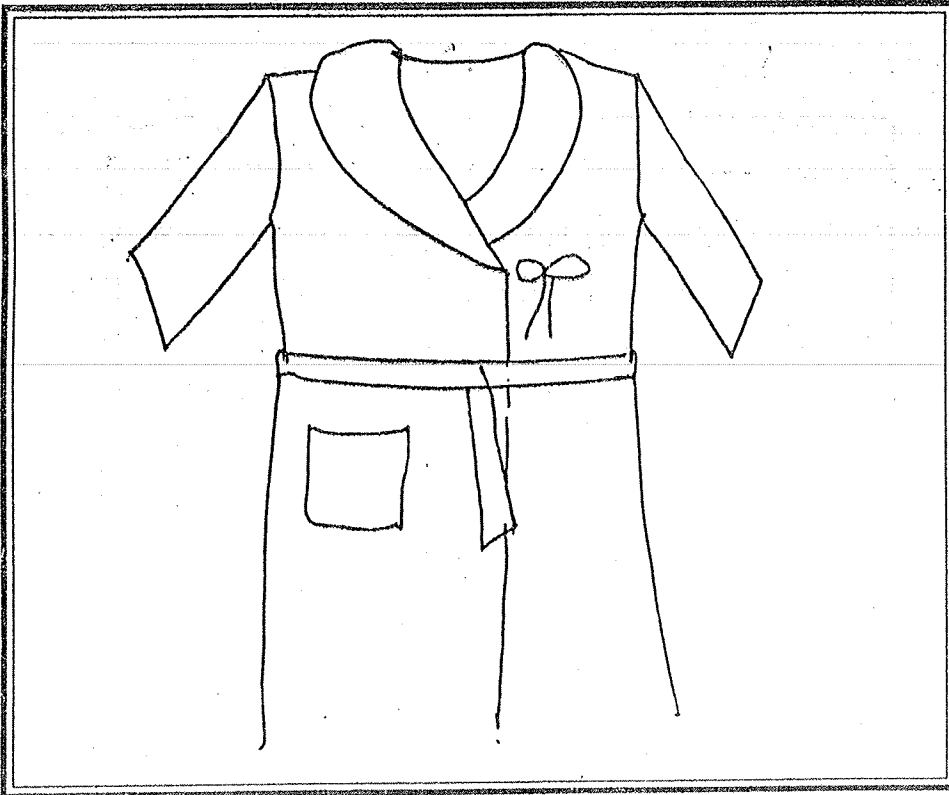
अब एक पॉकेट तैयार करके कन्धे से २० इंच नीचे पैच करें।



नीचे की हेम लाइन को मोड़े और हेम या मशीन करें।

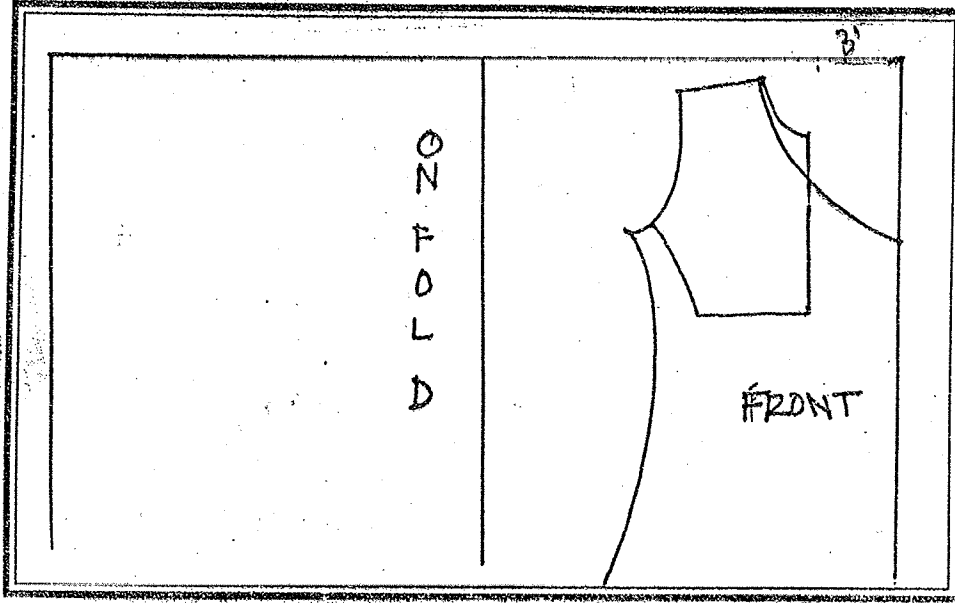


आइये अब नीचे दिये गये डिजाइन का गाउन बनायें।

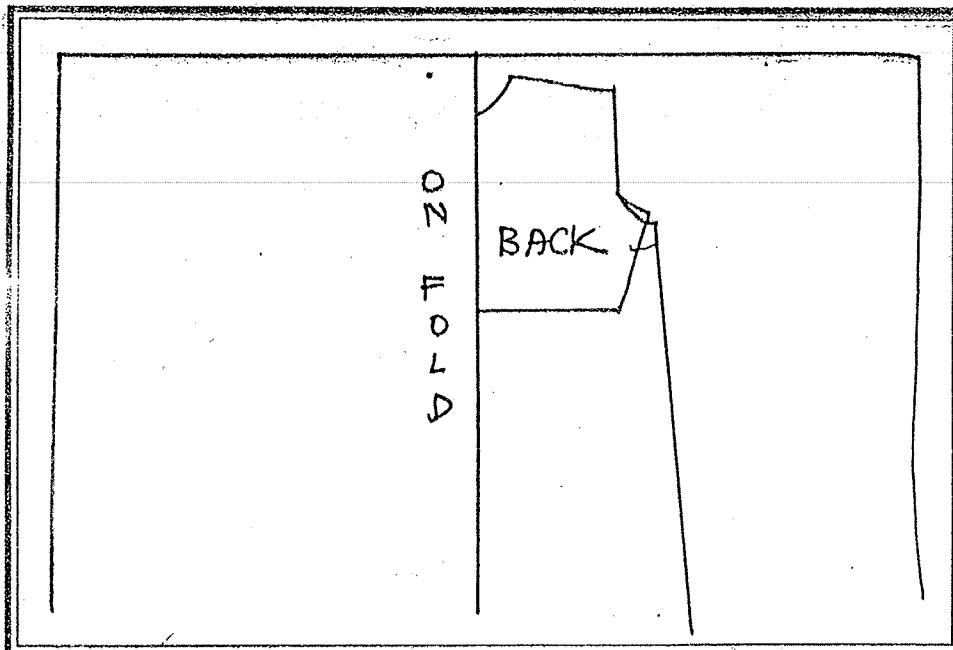




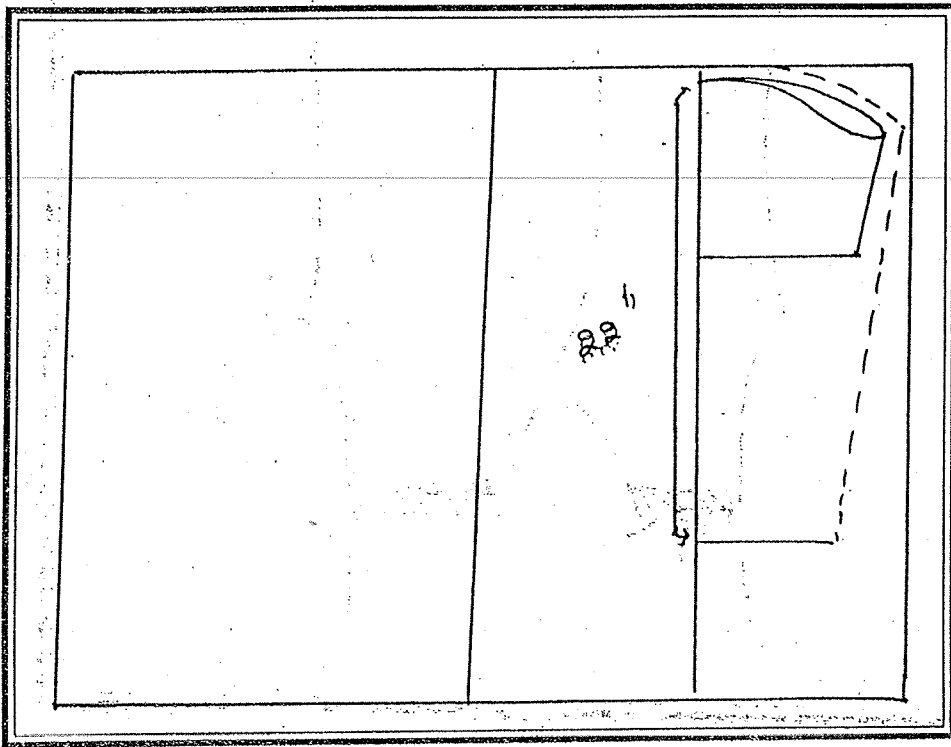
सामने का बेसिक बॉडिस ब्लाक लें और उसे कपड़े के किनारे से ३ इंच की दूरी पर रखें। यह दूरी ओवरलैप के लिए है। अब बगल से 'ए' आकार देते हुए कमर से नीचे का घेर बढ़ायें। लम्बाई जरूरत अनुसार रखें। गले के गोल आकार को 'वी' आकार में बदलें। १/२ इंच का दवाब सिलाई के लिए रखते हुए काटें।



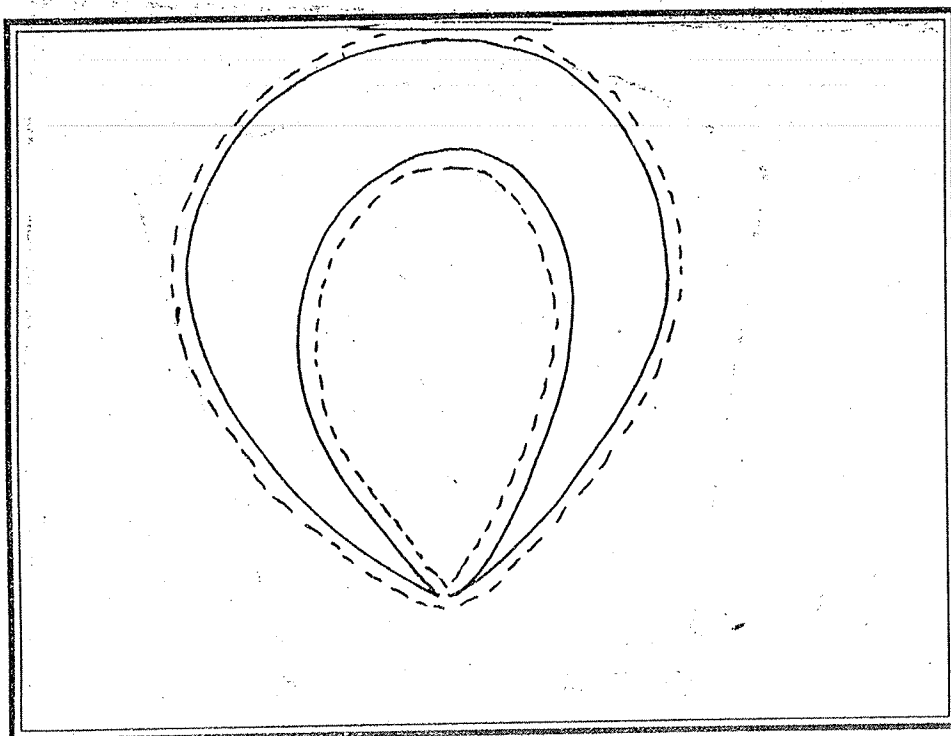
अब पीछे के पल्ले के लिए पीछे के ड्राफ्ट को बीच की फोल्ड लाइन पर रखें। सामने के 'ए' आकार के अनुसार पीछे का भी पल्ला शेप करें। लम्बाई व सिलाई का दवाब उतना ही रखते हुए कपड़ा काटें।



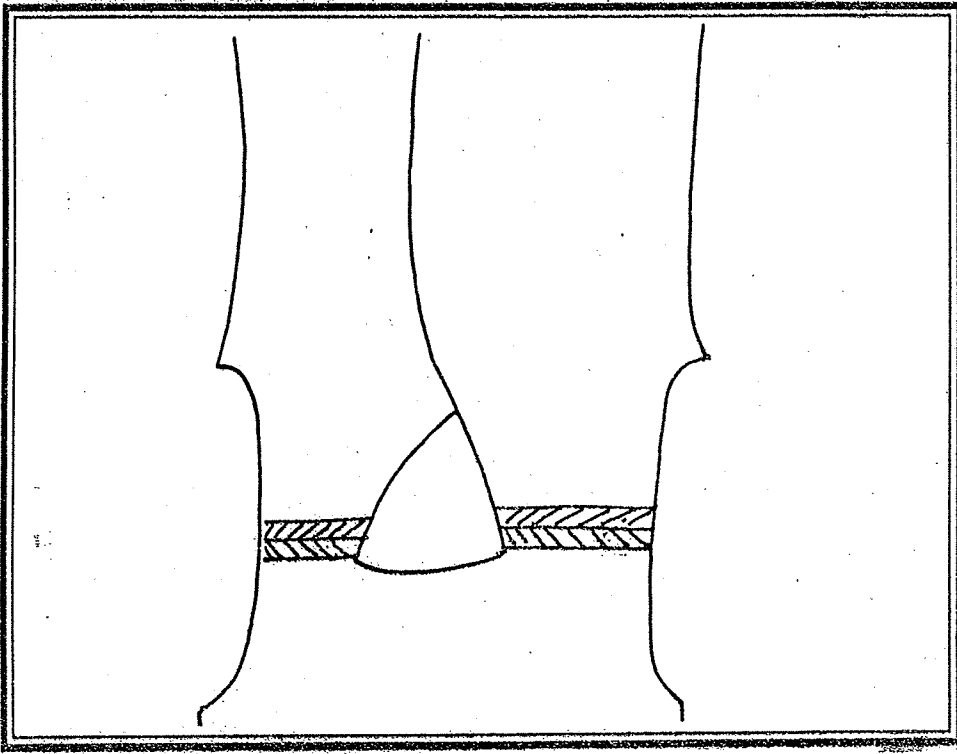
अब पूरी आस्तीन का ड्राफ्ट बनायें और १/२ इंच सिलाई के लिए कपड़ा रखते हुए काटें।



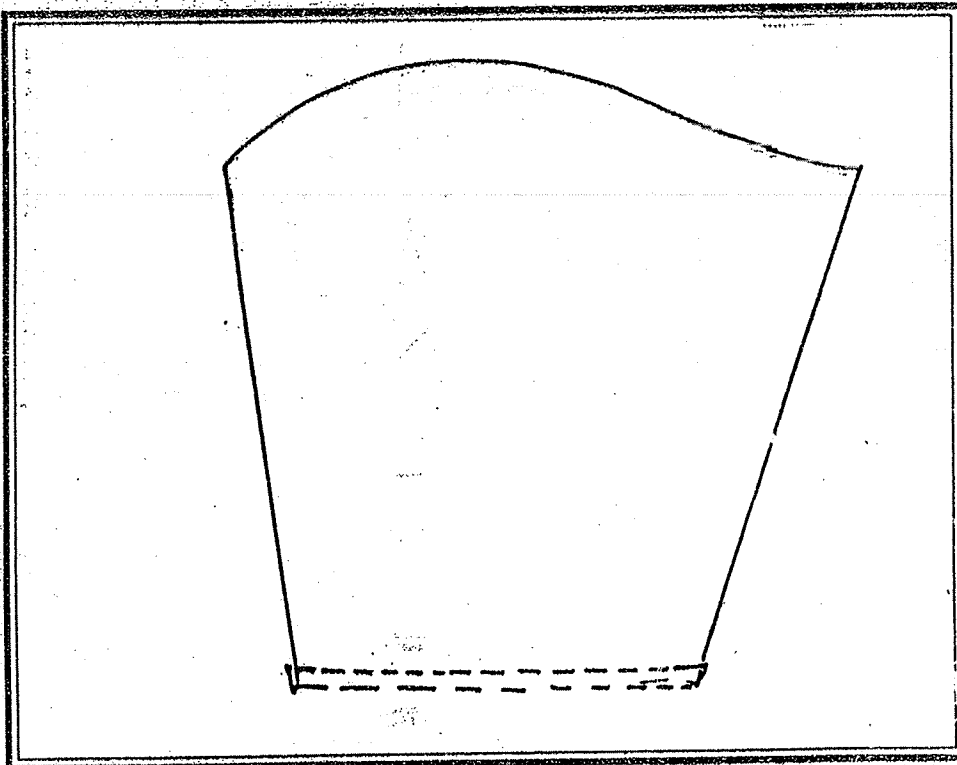
अब शाल कॉलर का ड्राफ्ट बनायें और दो टुकड़े १/२ इंच सिलाई के लिए दवाब रखते हुए काटें।



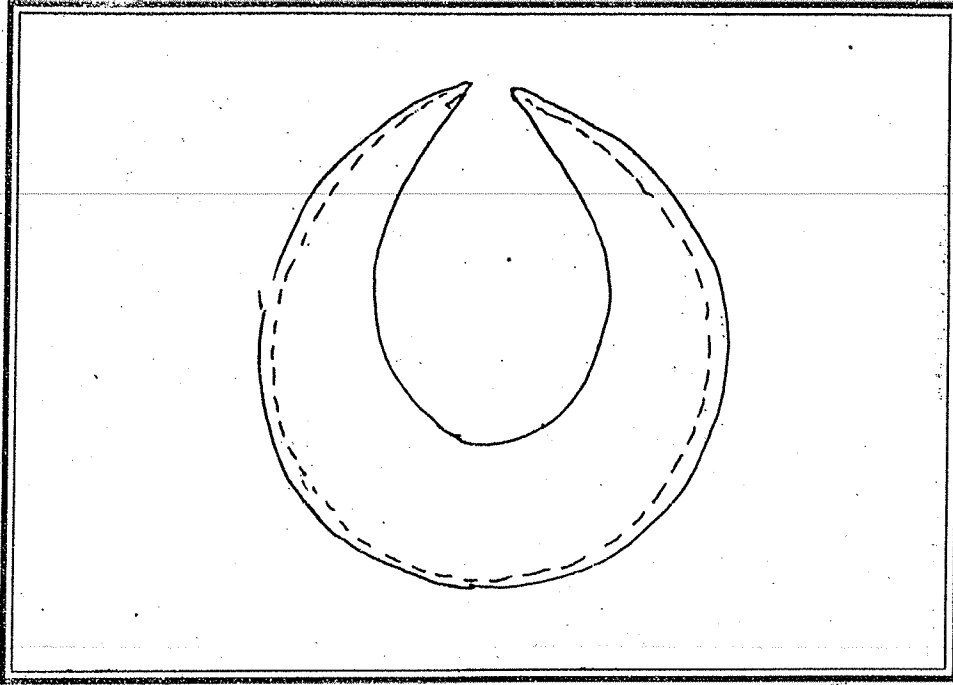
अब गाउन को सिलने के लिए सबसे पहले कन्धे जोड़ें।



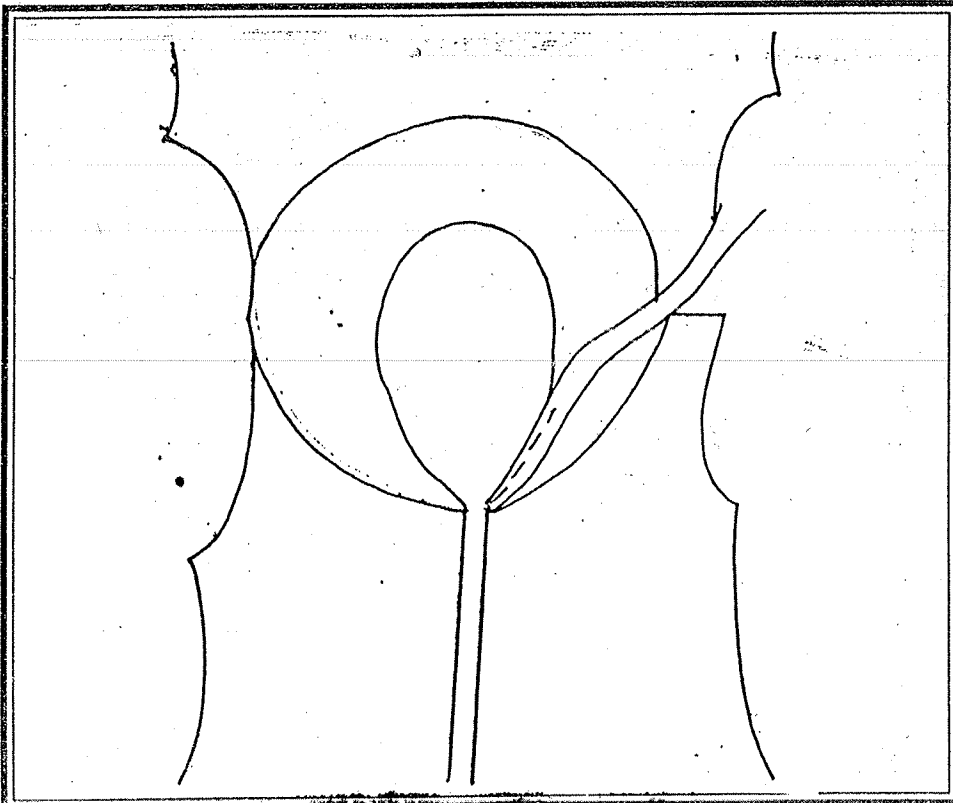
आस्तीन की हेमलाइन को डबल टॉप स्टिच करके फिनिश करें और बॉडिस से जोड़ें।



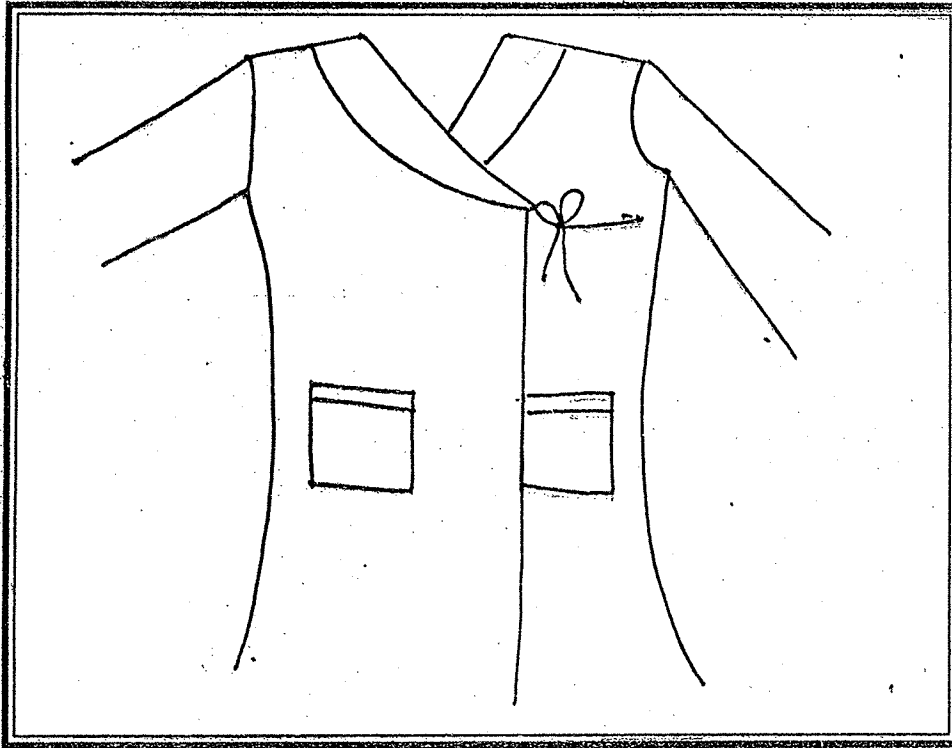
अब कॉलर का बाहरी किनारा सिलें और उसे पलट लें। अब इस कॉलर को गले पर जोड़ें।



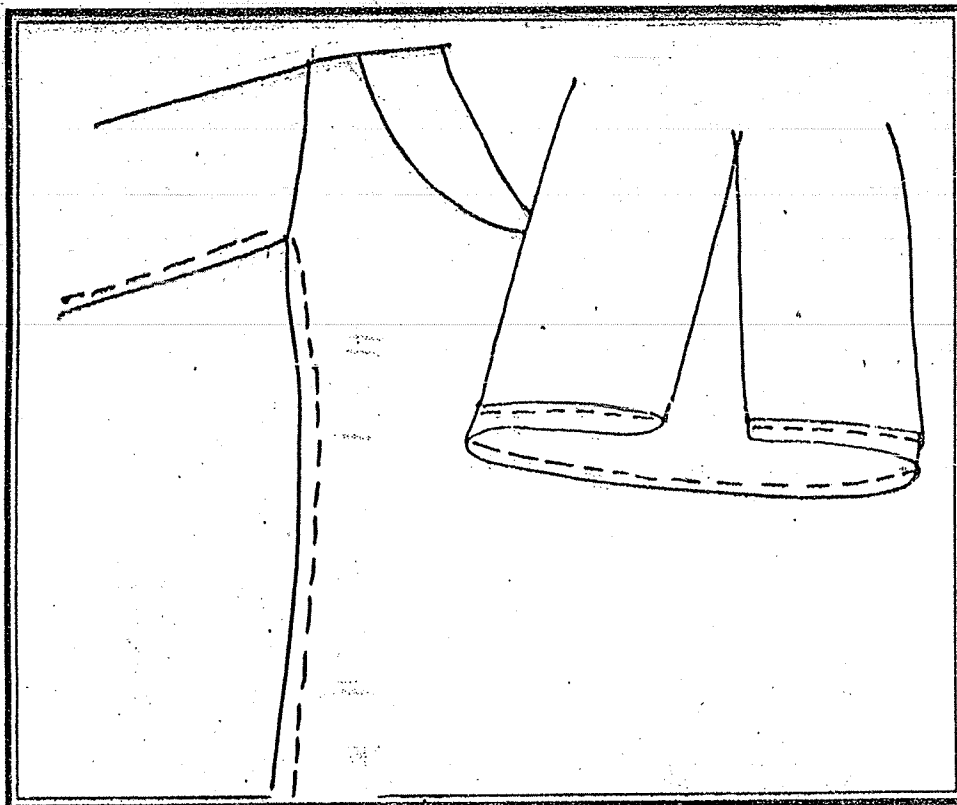
गले में पाइपिंग लगाकर नेकलाइन का किनारा फिनिश करें।



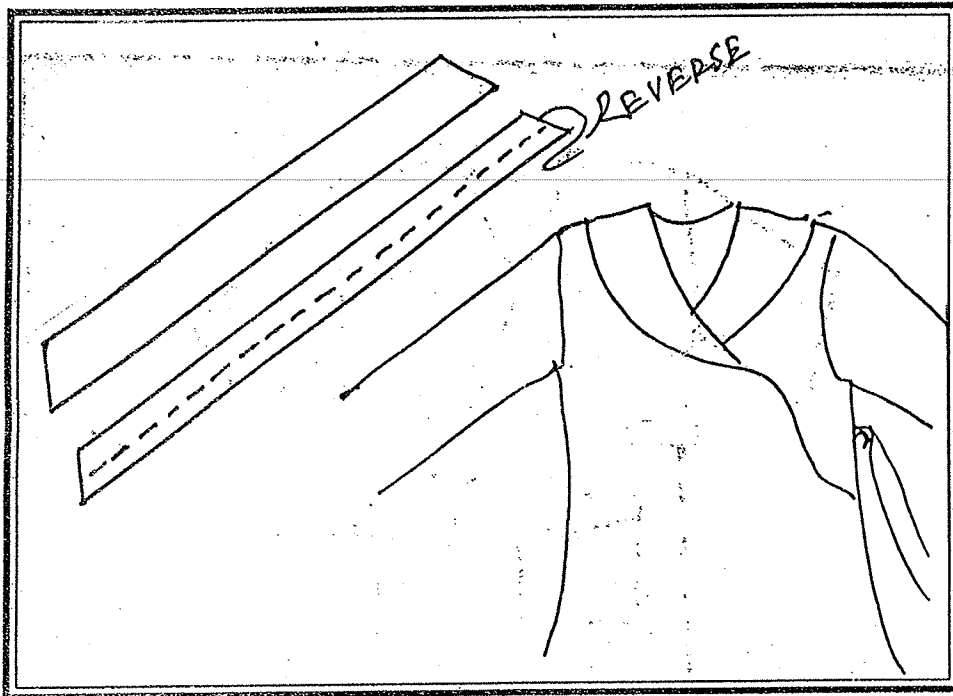
जैसे दिखाया गया है वैसे दो पॉकेट बनाकर लगायें।



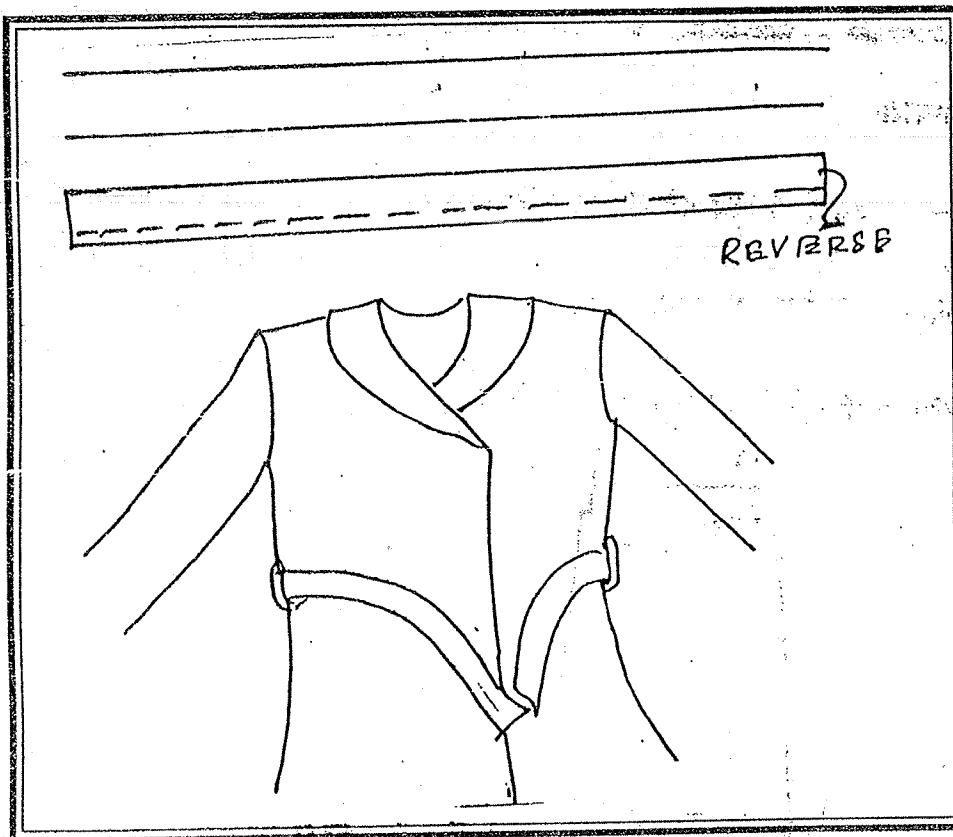
अब बगल की सिलाई लगाकर नीचे की हेम लाइन को डबल टॉप स्टिच के साथ फिनिशिंग करें।



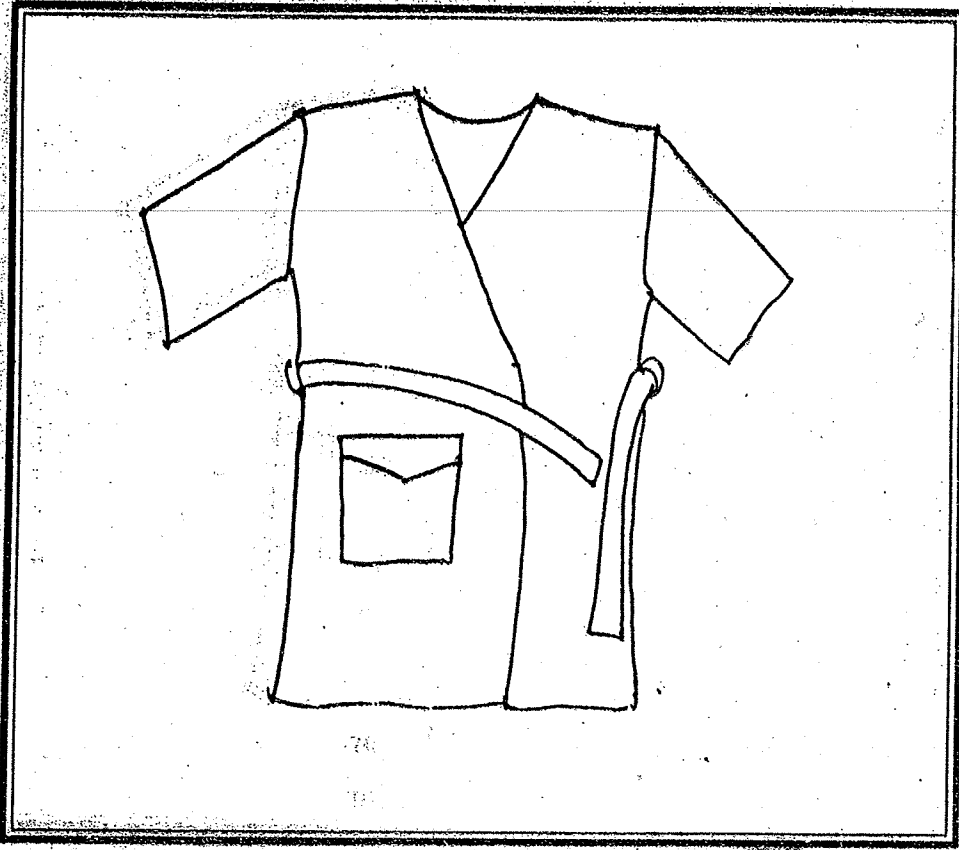
अब दो डोरियाँ उरेबी पट्टी की तैयार करें और एक सीधी तरफ अन्दर की सिलाई में लगायें और एक बाये तरफ बाहर की सिलाई में।



बेल्ट बनायें और लूप बनाकर गाऊन में लगायें।



बाथिंग गाउन के लिए ऐसा ही डिजाइन घुटनो तक की लम्बाई का तौलिये के कपड़े में काटें। इसमें डोरी न लगायें सिर्फ ऊपर की बेल्ट का प्रयोग करें।

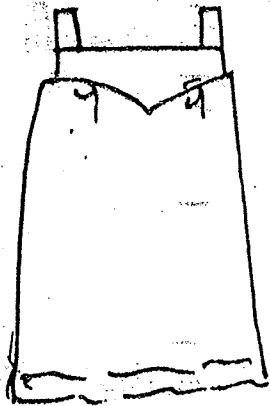


**अभ्यास-**

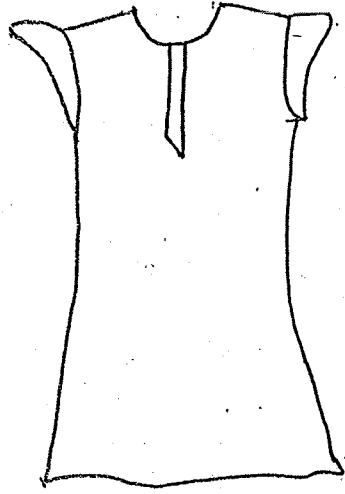
१- इकाई में दिये गये डिजाइन सिलें।

१६.४ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

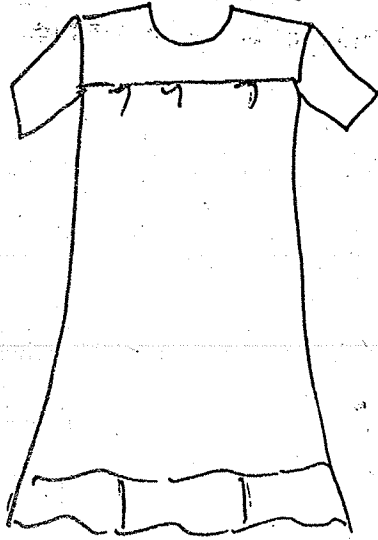
प्रश्न-१ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



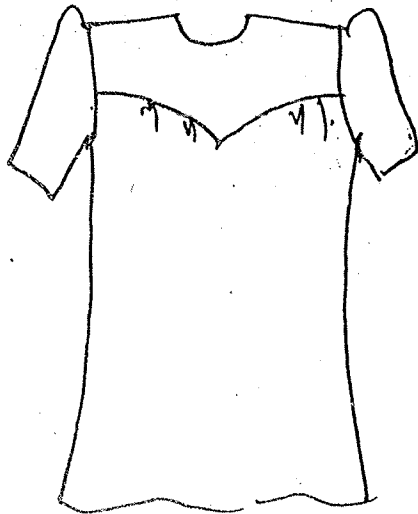
प्रश्न-२ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



प्रश्न-३ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।

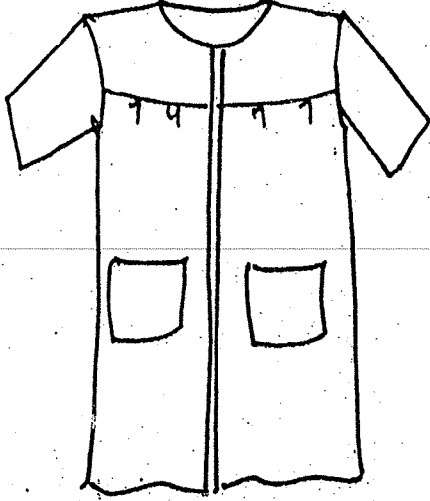


प्रश्न-४ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।





प्रश्न-५ नीचे दिये गये डिजाइन की सिलाई करें।



१६.५ स्वाध्ययन हेतु

१- गाला'ज जारापकर सिस्टम ऑफ कटिंग बाई श्री के० आर० जारापकर  
पब्लिकेशन, नवनीत पब्लिकेशन इण्डिया लिमिटेड।

